॥ ॐ॥

सतनाम साक्षी

जीवन दर्शन

(भाग 2)

सतगुरू स्वामी माधवदास जी महाराज

लेखक

श्रीमती लक्ष्मी केसवानी

श्री जमनादास केसवानी

प्रकाशक

प्रेम प्रकाश आश्रम ट्रस्ट,

प्रेम प्रकाश आश्रम,आदर्श नगर,

अजमेर,पुष्करराज व हरिद्वार

॥ ॐ॥

सतनाम साक्षी

जीवन दर्शन

सतगुरू स्वामी माधवदास महाराज

"भूमिका"

सतगुरू स्वामी माधवदास महाराज जी के जीवन दर्शन के इस द्‌वितीय भाग को उन्हीं के पवित्र चरण कमलों में प्रस्तुत करते हुए अति प्रसन्नता हो रही है। उन्हीं की महिती कृपा से यह दुर्लभ सेवा प्राप्त हो सकी है।

सतगुरू महाराज जी का जीवन दर्शन सागर के समान गहरा एवं बेअंत है। जैसे जैसे गहरी डुबकी लगाकर उनका अन्त प्राप्त करने की कोशिश की है वैसे वैसे उनके उच्च आदर्श रूपी अमूल्य मोती प्राप्त हुए है।

जैसी महान महिमा वाला उनका नाम है वैसा ही गूढ़ उनका जीवन दर्शन है। 'माधव' शब्द का यदि अर्थ करेंगे तो पायेंगे मा= माया, धव = पति अर्थात् माया के पति स्वयं परमात्मा। जैसे परमात्मा की माया बे अन्त है उसी प्रकार सतगुरू महाराज का जीवन दर्शन भी बेअन्त है। हमारी तुच्छ बुद्धि एवं इस कमजोर कलम को यह शक्ति नहीं है कि जो उनका गुणगान कर सके।

सात समुन्द्र मसि करूं, कलम करू बनारइ,

सारी बसुन्धा कागज करूं, गुरू गुन लिखिया न जाइ

सतगुरू महाराज जी के चरणों में यह विनीत प्रार्थना है कि यह विनीत सेवा उनकी हजूरी में सादर स्वीकार हो। यह तो सुदामें वाले सतू है जो उनकी ही रहमत से स्वीकार होंगे।

भगवान श्री कृष्ण ने श्रीमद् गीता में स्वयं कहा है कि जब जब धर्म की हानि होती है और भक्तजनों पर विपदा आती है तब तब भगवान स्वयं देह धारण कर धर्म की रक्षा हेतु एवं ज्ञान का प्रकाश फैलाने के लिये इस धरती पर जन्म लेते है।

इस प्रकार सन्त भी दूसरो का कल्याण करने हेतु मानव देह धारण कर अज्ञान के अंधकार को हटा कर ज्ञान का प्रकाश फैलाकर, तपती दिलों पर ठण्डा छींटा लगा कर आत्मज्ञान रूपी अमृत पिलाते है। सच्च तो यह है कि सन्त एवं परमात्मा में कोई भेद ही नहीं है कि सन्त परमात्मा के चलते फिरते रूप है।

सन्त गोविन्द हन, भेद न भाई

सन्त राम हन एको भाई।

सन्तश्रोमणि, ब्राह्मज्ञानी, कर्मयोगी, महाविद्वान परम पूज्य सतगुरू स्वामी माधवदास महाराज जी ने भी जिज्ञासुओ के कल्याण करने हेतु ही देव लोक से पधार कर मानष देह धारण कर प्रेम का अमर प्रकाश फैलाया।

सतगुरू महाराज जी सक्षात प्रेम के स्वरूप थे। उनके व्यक्तित्व में अलोकिक रूहानी आकर्षण था। जो भी प्रेमी एक बार उनके शरण में आता था वह प्रेमी रूपी प्याला पीकर मीरा के समान मस्त होकर दुनिया की सुद्ध बुद्ध भुलाकर उनकी भक्ति के रंग में रंगकर लाल हो जाता था। हर एक प्रेमी गोपियों के समान ऐसा महसूस करता था कि स्वामी जी केवल मेरे ही है। प्रेमियों को ऐसा प्रतीत होता था कि जन्म जन्म की प्यासी आत्मा को सीप के समान प्यार की वह स्वाति बून्द स्वामी जी ने पिलाकर सदा सदा के लिये तृप्त कर दिया है। इस

लिये ही प्रेमी देश विदेशों से खिंचकर उनके दिव्य दर्शन के लिये आते थे और बिछड़ते समय दुःखी होकर अश्रु बहाते थे।

परम पूज्य स्वामी दानी दाता थे। वे शाहों के शाह थे। जो भी उनके शरण में आता था वे उसे तृप्त कर देते थे। भोजन प्रसाद एवं उपहारों से सम्मान देकर सब आने वाले को तर कर देते थे। लेने वाले थक जाते थे परन्तु वे तो देते ही जाते। उनके द्वारा से कोई भी सवाली खाली नहीं जाता था, सब की झोलियां भर देते थे।

एक बार पूना लैंगवेज कॉलेज के अध्यापकों की एक टोली उत्तर भारत की सैर करती हुई आकर अजमेर पहुँची। उनके प्राध्यापक महोदय श्री वरयाणी उनको परम पूज्य स्वामी जी के दर्शन हेतु आश्रम पर ले आये। रात्रि का समय था सभी प्रेमी खा पी कर बैठे थे। परन्तु आप को एकदम भण्डारे तैयार करने का आदेश दिया। तब तक मेहमानों को आश्रम में स्थित रामायण प्रदर्शनी गीता प्रदर्शनी एवं सतगुरू महाराज जी के दर्शन करने के लिये कहा। लौटकर आने पर सभी को स्नेह से भोजन करवाया एवं विदाई के समय प्रसाद देकर पखर पहरा कर खर्ची दी। यह कौतक देखकर सब दंग रह गये कहने लगे कि सम्पूर्ण भारत का भ्रमण में उनके सन्त महात्माओं के दर्शन किये किन्तु ऐसा शाहों का शाह कहीं नहीं देखा। इस दर पर हमें कुछ देना चाहिये परन्तु परम पूज्य स्वामी जी लेने के बजाय देते ही जा रहे है और देकर खूब प्रसन्न हो रहे है। खुशी में नयन सजल हो गये और परम पूज्य स्वामी जी की शान में ये पंक्तियां कही।

दातार त तूँ बिया सब मगिणा

मींह मुंदाइता वसिणा, सदा वसीं तूँ ।

परम पूज्य स्वामी जी का जन्म संवत ११७१ ईसवी सन् १९९४ बैसाख महीने की १३ तारीख बुन्ध ग्राम तहसील हाला जिला हैदराबाद सिन्ध में पूजनीय दादा साहब गेहीमल

दासवानी के कुल में पिता साहब मूलचन्द जी के घर माता साहब देवी बाई के गर्भ से अमृत बेले ४ बजे हुआ था।

बालक की पहली पाठशाला घर होता है जहां वह माता पिता रूपी गुरू से ज्ञान का प्रथम पाठ पढ़ता है। परम पूज्य स्वामी जी ने प्रेम का वह पहला प्याला घर से ही पीया। उनके पिता साहब प्रभू के प्यारे थे। वे प्रात: काल उठकर भजन गाते थे और सायं काल प्रति दिन सत्संग में जाया करते थे। वह सत्संग में स्वामी जी को अपने साथ ले जाते थे। परम पूज्य स्वामी जी पर सत्संग का बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा जिस कारण उनका स्वभाव बहुत मीठा और शीतल हो गया।

उन दिनों भाग्य से सतगुरू स्वामी टेऊँराम जी का बन्ध गाँव में पधारपण हुआ। उसके पिता साहब बालक माधव को लेकर सतगुरू महाराज के दर्शन करने आये और बड़े प्रेम से उनका सत्संग सुना। बालक माधव ने ऐसे पूर्ण गुरू का दर्शन करने के पश्चात मन में यह संकल्प किया कि इस महान योगी को मैं अपना गुरू बनाऊँगा। उन दिन से संसार की माया मोह से उनका मन हटता चला गया और प्रभू चरणों में खिंचता चला गया।

जिसने नाम रूपी अमृत का आनन्द पा लिया उसका मन इस संसार रूपी खारे सागर में कैसे लगेगा। सो घर परिवार को त्याग कर आकर सतगुरू महाराज की शरण ली। जैसे हीरे की परख जौहरी करता है उसी तरह सतगुरू महाराज जी ने परम पूज्य स्वामी जी की आत्म ज्योति को परख कर उन्हें सदा के लिये अपने चरणों में शरण दे दी और उन्हें परम शिष्य बनाकर नाम का दान बख्शा।

अमरापुर दरबार पर रह कर परम पूज्य स्वामी जी ने अपनी गुरू भक्ति, साधना व सेवा से सतगुरू महाराज का मन जीत लिया। सतगुरू महाराज ने परम पूज्य स्वामी जी को सत्संग करने व प्रवचन देने में माहिर कर दिया। उनके गले में मिठास व वाणी में तासीर था जिसने प्रेमियों को मुग्ध कर दिया।

सतगुरू महाराज ने परम पूज्य स्वामी जी उच्च कोटि की रहनी व कहनी देख कर विचार किया कि अब माधव पूर्ण साधु बन गया है इसलिये इसे अपनी मज़िल पाने के लिये उचित स्थान पर भेजना चाहिये। ताकि संसार के लोक आत्मज्ञान एवं प्रकाश का पूरा पूरा लाभ उठा सकें। सो उन्हें आज्ञा की कि हैदराबाद में जाकर प्रेमियों को नाम की कमाई करवाओ।

सतगुरू महाराज की आज्ञानुसार हैदराबाद में आकर परम पूज्य स्वामी जी ने फुलेली पर एक सुन्दर आश्रम की स्थापना की, जहां सुबह शाम सत्संग कीर्तन होता था। समय पर सतगुरू महाराज स्वयं यहां आकर सत्संग करते थे। अन्त में सत्गुरू महाराज स्वामी टेऊँराम जी पुरूषोत्तम का पूरा माह यहां आकर परम पूजय स्वामी जी के पास रहे थे। उस समय सतगुरू महाराज जी का स्वास्थ्य खराब रहने लगा था। इस समय परम पूज्य स्वामी जी ने अपने सतगुरू महाराज की तन, मन और धन से पूर्ण श्रद्धा व लगन से सेवा की। आखिर टेऊँराम जी सवंत १९९९ जेष्ठ माह की तारीख चार तिथि छठ शनिवार के दिन परम पूज्य स्वामी माधवदास जी महाराज के आश्रम पर ज्योति जोत समाये। इसलिये समस्त प्रेम प्रकाश मण्डल ने सतगुरू स्वामी टेऊँराम जी के वरसी उत्सव मनाने का अधिकार प्रति वर्ष परम पूज्य स्वामी जी को दिया। उस दिन से यह वरसी उत्सव प्रेम प्रकाश आश्रम आदर्श नगर, अजमेर में बड़ी धामधूम से बड़े उत्साह से मनाया जाता है। इस अवसर पर देश विदेश से हजारो प्रेमी आकर सत्संग का लाभ उठाते है।

देश के बंटवारे के पश्चात सतगुरू महाराज स्वामी माधवदास जी ने आर्दश नगर,अजमेर में विशाल आश्रम बनवाकर उसमें सतगुरू महाराज स्वामी टेऊंराम जी की एक विशाल संगमरमर की अति सुन्दर मूर्ति स्थापित करवाई। भारत में सतगुरू महाराज की यह पहली मूर्ति थी। यह मूर्ति ज्योति वाली है जिनके दर्शन मात्र से मन की मुरादें पूर्ण होती है।

अपने सतगुरू महाराज का यश फहलाने हेतु परम पूज्य स्वामी जी ने पुष्कर राज में जो सभी तीर्थों का गुरू है जहां देश विदेश से लाखों यात्री आते हैं वहां एक शानदार संगमरमर का मन्दिर बनवाया जिस में चौबीस अवतारों की संगमरमर की सुन्दर सविस्तार मूर्तियां, रामायण प्रदर्शनी, गीता प्रर्दशनी एवं नवग्रहों का विवरण सहित मूर्तियां स्थापित करवाई। सुन्दरता एवं विशालता के कारण पुष्कर राज में आने वाला प्रत्येक यात्री यह मन्दिर स्नेह एवं श्रद्धा से देखकर आत्मिक आनन्द पाता है। इस आश्रम को बनवा कर परम पूज्य स्वामी जी ने अपने सतगुरू महाराज स्वामी टेऊंराम जी को एवं समस्त सिन्धी जाति को अमर कर दिया है।

परम पूज्य स्वामी जी ने आर्दशनगर अजमेर व पुष्करराज में अपने सतगुरू महाराज स्वामी टेऊंरामजी को अमर बनाने के लिये ही ये विशाल आश्रम बनवाये। परम पूज्य स्वामी जी स्वामी विवेकानंद के समान ही अपने परमात्मा स्वरूप सतगुरू महाराज के आदर्शो व शिक्षाओं का प्रचार कर उन्ही के द्वारा प्रारम्भ किये गये प्रेम प्रकाश को फैला कर परमार्थ के साधकों को इस रूहानी राह पर मार्गदर्शन प्रदान कर परम आनन्द प्रदान करना चाहते थे।

इसी उद्देश्य से परम पूज्य स्वामी जी ने तीर्थों के सरमोर हरिद्वार में भी अपने सतगुरू महाराज का आश्रम स्थापित किया, यह आश्रम हरकी पौड़ी के पास जेसाराम मार्ग पर गुजराती लाज के पास स्थित है। इस आश्रम के साथ एक स्वच्छ एवं सुन्दर धर्मशाला भी बनवाई गयी है जहां यात्री सुख पाकर परम पूज्य स्वामी जी का गुण गान करते हैं उनके शिष्यों ने अपने सतगुरू परम पूज्य स्वामी जी का नाम अमर करने के लिये इस धर्मशाला का नाम 'स्वामी माधवदास धर्मशाला' रखा है।

नाम का प्रचार करने एवं आध्यात्मिक मार्गदर्शन देने के साथ साथ सतगुरू स्वामी माधवदास जी महाराज ने समाज सुधार एवं समाज सेवा के अनेक कार्य किये। उनके दिल में दुखी प्राणियों के लिये दया एवं सहानुभूति थी। अजमेर में मयाणी अस्पताल उन्हीं की प्रेरणा

एवं सहयोग से बनी। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी गहरी रूचि थी, आदर्शन गर्ल्स डिग्री कॉलेज भी उन्ही की प्रेरणा से स्थापित हुआ। गरीब विद्यार्थियों की सहायता हेतु उनकी फीस भरते थे। कॉलेज में जाकर उन्हें पुस्तकें एवं वस्त्र देते थे। इस प्रकार अन्य कई दान के गुप्त कार्य करते थे।

सतगुरू स्वामी माधवदास जी महाराज अपने सतगुरू महाराज का यश फैलाते हुए एवं प्रेमियों को आत्मरूपी अमृत पिलाते हुए ११ जून १९९४ को यह संसारी चोला त्याग कर अनन्त समाधि में लीन हो गये। उनकी शोभा यात्रा सारे शहर में निकाली गयी। प्रेमियों ने अपने सतगुरू महाराज के स्वागत के लिये अनेक स्वागत द्वारा बनाये। उनके अन्तिम दर्शन करने हेतु एवं उनके चरण में श्रद्धा सुमन चढ़ाने के लिये अजमेर की जनता रास्ते के दोनों और पंक्तियाँ बनाकर खड़ी रही। प्रेमियों ने उनके ऊपर ऐसी तो फूलों की वर्खा की जो ऐसा लगने लगा कि रास्ते में उनके स्वागत के लिये गलीचे बिछाये गये है। उस समय अजमेर के प्रेमियों का मन मायूस लग रहा था। परन्तु ऐसे सत्पुरूषों के ज्योति जोत समाने पर दु:ख नहीं करना चाहिये क्योंकि:-

सन्त मरे क्या रोइये जो अपने घर जाय,

रोईये साकत बापड़ा जो हाटों हाट बिकाय।

परम पूज्य स्वामी जी महान योगी वैरागी एवं ज्ञानी थे। ऐसे महान पुरूष की बराबरी कौन कर सकता है। सो उनके गद्दी पर कोई भी नहीं बैठ सका। इसलिये आश्रम का कारोबार चलाने के लिये एक ट्रस्ट बनाई गई है जिसने परम पूज्य स्वामी जी की पवित्र याद में एक संगमरमर की सुन्दर समाधी बनवाई है। प्रेमियों के लिये यह समाधि तीर्थ स्थली बन गई है। सब श्रद्धालू यहाँ आकर बड़ी आस्था से उनके चरणों में सिर झुका कर मन की मुरादें पूर्ण करते है।

परम पूज्य स्वामी जी श्री कृष्ण भगवान की तरह ऐसी तो लीला रचा गये है कि हर प्रेमी यही कहता रहता है कि स्वामी जी की उस पर विशेष कृपा थी।

हम सब पूजनीय स्वामी गणेशानंद महाराज जी के अति अभारी है जिन्होंने वृद्ध अवस्था एवं निर्बलता के होते हुए भी इतनी लम्बी यात्रा कर अजमेर में पधार कर सतगुरू महाराज स्वामी माधवदास जी के जीवन सम्बन्धी बहुमूल्य एवं दुर्लभ जानकारी देकर हमारा मार्ग दर्शन किया है। परम पूज्य स्वामी गणेशानन्द ने परम पूज्य सतगुरू स्वामी माधवदास जी महाराज के साथ प्रारम्भिक सात वर्ष साथ रह कर भारत में रटन किया था। फिर उनसे अधिक परम पूज्य सतगुरू सवामी माधवदास जी महाराज जी के बारे में सही जानकारी और कौन दे सकता था। उन्हीं की असीम कृपा से यह पवित्र कार्य पूर्ण हो सका है।

हम श्री किशन मोटवानी एम.एल.ए. साहब राजस्थान विधान सभा एवं उनकी पूजनीय माता साहब जी के अति आभारी है जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर परम पूज्य स्वामी जी के बारे में बहुमूल्य जानकारी देकर इस पुनीत कार्य को सफल बनाने में सहयोग दिया है।

हम जयपुर की सन्त शिरोमणी पूजनीय दादी साहब वसी बाई के अति आभारी है जिन्होंने परम पूज्य सतगुरू स्वामी माधवदास जी महाराज के बारे में हृदय स्पर्शी प्रसंग बताकर हमारा मार्ग दर्शन किया है।

श्रीमती लक्ष्मी केसवानी एवं श्री जमनादास केसवानी निसन्देह यश के अधिकारी है जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर बड़ी जफाकशी से यह अमूल्य पुस्तक सिन्धी एवं हिन्दी भाषा में लिखकर अपने सतगुरू महाराज जी की यह विनीत व दुलर्भ सेवा की है। श्री प्रहलाद करमवाणी को हम धन्यवाद देते हे जिन्होंने सुन्दर चित्र बनाकर पुस्तक को आकर्षक बनाया है।

ॐ

श्री सतनाम साक्षी

ॐ श्री गणेशाय नम:

ॐ श्री गुरू परमात्मा ने नम:

ॐ श्री सरस्वती माता देवी ने नम:

ॐ श्री सर्व अन्तरयामी भगवान ने नम:

प्रार्थना

ए प्रभु परमेश्वर दयाल पाल तूँ,

अर्सी नियाज़ सां तो अगियां था नमूँ,

रखी वठु असांखे तूँ सदा भुलुनि खां,

सूंहों थी असांजो संईअ वाट दांहं।

करि महिर असांते ए साई सचा।

घुरूं रहम तोखां तूँ मंञु इलितजा।

भक्ति ज्ञान बुद्धि दे तूँ साईं सदा,

शेवा संदीअ राह में जीअं पेर पुखता।

मंगला चरण

सतगुरू शिव स्वरूप को, वन्दऊं वारों वार,

जास कृपा भए ज्ञान की, प्रकटे जोत अपार।

करंऊ वन्द गणेश को, वक्रतुण्ड है जोइ,

तास चरण के वन्द से, विध्न न लागे कोइ।

शारदा मात विद्या परद, रूप गुणन की खान।

वन्दऊँ तास चरण को, करऊँ रैन दिन गान।

सतगुरू स्वामी माधवदास जी महाराज ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मनेष्ठी, पूर्ण कामिल पुरूष मनुष्य देह धारण कर आये कल्याण करने करोड़ों का, सिन्ध देश की उस पवित्र भूमि पर जहां ऋषि मुनियों ने बैठ कर महान वेदों की रचना की और आत्मज्ञान की खोज की।

उनके सतगुरू महाराज १००८ सतगुरू स्वामी टेऊंराम महाराज जी, महा मण्डलेश्वर प्रेम प्रकाश मण्डल टण्डे आदम वालों ने ज्ञान एवं वैराग्य द्वारा अज्ञान रूपी निद्रा में सोये हुए लोगों को जगाया और उनके परम एवं पूर्ण शिष्य १०८ सतगुरू स्वामी माधवदास जी महाराज ने उच्च कोटि की करणी द्वारा निराकार को साकर रूप में प्रकट किया। उनकी गुरू भक्ति ने सिद्ध किया कि निराकार ही कभी भक्तों के कष्ट निवारण हेतु तो कभी भक्तों की अति प्रेम की प्यास मिटाते हेतु आकर प्रकट होते है।

सिन्ध देश में सतगुरू स्वामी माधवदास जी महाराज ने रटन कर प्रेमियों को नाम दान देकर व सतगुरू महाराज जी के शिक्षाओं का खूब प्रसार कर जिज्ञासुओं को परमार्थ की

राह पर चलकर इस मानुष जन्म को सफल बनाकर चौरासी के चक्र से छूट कर परमानन्द प्राप्त करने की राह दिखाई।

परन्तु कुदरत के खेल निराले है। १९४७ में देश आजाद हुआ। परन्तु उस के साथ सिन्ध के हिन्दुओं पर अचानक कहर बरपा हो गया। देश के नेताओं ने देश का बंटवारा किया। जिस का यह परिणाम निकला कि सिन्ध के हिन्दुओं को अपना धर्म बचाने के लिये अपने जमे जमाये घर अपनी प्यारी मातृभूमि, रोजी रोटी व मन्दिर गुरूद्वारे छोड़ कर भारत भूमि पर विवश होकर आना पड़ा।

प्रेमियों के पलायन करने के बाद सभी प्रेम प्रकाशी सन्त मन्दिर व गुरूद्वारे तथा पवित्र स्थान छोड़ कर धर्म की ध्वजा फहराने के लिये भारत वर्ष की पवित्र भूमि पर पहुँच गये।

परम पूज्य सतगुरू स्वामी माधवदास जी महाराज परम ज्ञानी एवं वैरागी थे। उन्हें सतगुरू महाराज ने सदा त्याग एवं वैराग्य का पाठ पढ़ाया था वे कहते थे कि साधु व सन्त देश काल के बन्धनों से मुक्त है। सारा ब्रह्माण्ड उनका घर है। सो इस घटना को हरि इच्छा मान कर आश्रम से केवल सतगुरू महाराज जी की मूर्ति लेकर हृदय में उन्हीं का स्मरण करते हुए इस लम्बे अज्ञात सफर पर निकल पड़े।

भारत की पवित्र भूमि पर पधारने के पश्चात परम पूज्य सतगुरू स्वामी माधवदास जी महाराज सोचने लगे कि किस दिश में जाना चाहिये। आखिर निश्चय किया कि इस अज्ञात यात्रा का शुभ आरम्भ श्री कृष्ण भगवान की रासलीला स्थली बृजभूमि से किया जाये। सो सीधे आकर वृन्दावन की रमणीक व मनमोहक भूमि पर पहुँचे। इस पवित्र भूमि के कण कण में श्री कृष्ण समाये हुए थे। चारो तरफ भक्तों की भीड़ लगी हुई थी। हर एक प्रेमी अपने आप को राधा का रूप मानकर श्री कृष्ण को पाने के लिये मस्ती में झूम रहा था। यहां

आठों पहर भजन कीर्तन की मौज मस्ती छाई हुई थी।

इस अंजान स्थान पर भी परम पूज्य स्वामी जी को उनके परम भक्त श्री झामनदास एवं उनकी धर्म पत्नी श्रीमती तोती बाई आकर मिले। उनके शुभ दर्शन कर गद्गद् होकर कहने लगे कि हमारे बड़े भाग्य हैं जो इस अन्जाम स्थान पर भी हमारे परमात्मा स्वरूप सतगुरू महाराज के हमें दर्शन हो गए। आपका दर्शन कर हमारा जन्म सफल हो गया। आप हमारे भगवान है। सन्त तो भगवान का ही रूप है। वे निराकार परमात्मा के साकार स्वरूप है। कहते है:-

'सन्त गोबिन्द हन भेद न भाई

सन्त राम हन एको भाई।'

ये प्रेमी परम पूज्य स्वामी जी के बड़े स्नेह एवं श्रद्धा से अपने निवास स्थान पर ले आये। और उनका खूब आदर सत्कार किया। कुछ दिनों के पश्चता उनके मनमेली सन्त स्वामी गणेशानन्द महाराज हरिद्वार से चलकर आकर उनसे मिले। परम पूज्य स्वामी जी सभी सन्तों का बड़ा आदर करते थे। सो स्वामी गणेशानन्द जी महाराज को बड़े स्नेह से अपने पास रखा।

यहां प्रात: काल उठकर भजन कीर्तन करने के पश्चात उन पवित्र स्थानों का दर्शन करने जाते थे जहां श्री कृष्ण भगवान ने रास रचाई थी।

उन्हें उन रमणीक झरनों की कलकल की ध्वनि में से श्री कृष्ण भगवान की मुरली की मधुर तान सुनाई देती थी तथा हवा के हर झोंके से कृष्ण की प्रिया राधा के घुंघरों की मधुर झंकार सुनाई देती थी, उन्हें सम्पूर्ण वातावरण कृष्णमय प्रतीत होता था। इस प्रकार घण्टों श्री कृष्ण भगवान के ध्यान में मग्न होकर खो जाते थे।

सायंकाल प्रतिदिन नियम से सत्संग करते थे। सत्संग में प्रेमियों को कहते थे कि हमारे बड़े भाग्य है जो हमें श्री कृष्ण भगवान की पवित्र भूमि के दर्शन हुए है।

एक दिन सत्संग में प्रेमियों को श्री कृष्ण भगवान की महिमा बताते हुए कहा कि श्री कृष्ण भगवान पूर्ण अवतार थे। उनकी जितनी महिमा गायी जाये उतनी कम है। श्री कृष्ण भगवान सोलह कला सम्पन्न थे।

प्रेमियों ने परम पूज्य स्वामी जी को निवेदन की कि कृपया हमें उन सौलह कलाओं के सम्बन्ध में ज्ञान देने की कृपा करें तथा उन्हें प्राप्त करने की विधि भी समझाने की कृपा करें।

परम पूज्य स्वामी जी ने प्रेमियों के आग्रह करने पर उन्हें बताया कि इस मनुष्य में चार कलाएं तो प्रकृति से प्रदत्त है और पांचवी कला परमात्मा से प्राप्त है। उस के उपरान्त शेष कलाओं को प्राप्त करने के लिये परमात्मा ने उसे बुद्वि बल दिया है जो वह अपने पुरूषार्थ द्वारा उन कलाओं को प्राप्त कर सतचित आनन्द स्वरूप को प्राप्त कर सकता है। अब हम उन सौलह कलाओं का विस्तार से वर्णन बताते है।

१. पहली कला (अन्न) है उन अन्न में से ही जीव उत्पन्न होते है। अन्न से ही तृप्ति होती है। अन्न को ही ब्रह्म कहते है। अन्न को ब्रह्म समझ कर ही उसे ग्रहण करना चाहिये तथा अन्न की निंदा नहीं करनी चाहिये। क्योंकि अन्न की निदां करने वाला ब्रह्म की निदां करने वाला के समान है। अन्न को झूठा भी नहीं बचाना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से अन्न का अपमान होता है।

अदभोज खान केवल अन्न से ही उत्पन्न होता है। यह एक कला का विकास है। इस में प्राणमय कोष नहीं होता है। इसलिये चलफिर नहीं सकता है। केवल अन्न ही उसका कारण है तथा यह जड़ है। इसको अन्नमय कोष कहते है।

२. दूसरी कला प्राण है। अन्न और प्राण मिलने से स्वतेज खान पैदा होती है। इस में केवल चलने फिरने की शक्ति होती है, इस को प्राणमय कोष कहते है।

३. तीसरी कला मन है, इसको मनोमय कोष कहते है अन्नमय, प्राणमय व मनोमय कोष के मिलने से अण्डज खान पैदा होती है अर्थात जो जीव अण्डे में पैदा होता है वे इस श्रेणी में आते है। जैसे कि पक्षी आदि जो मनसे एक दूसरे को प्यार करते है।

४. चौथी कला विज्ञान है। जिसे विज्ञानमय कोष कहते है। अन्नमय, प्राणमय, मनोमय तथा विज्ञानमय इन चारों के मिलने से जेरज खान उत्पन्न होती है जैसे कि चार पांव पर चलने वाले जीव हाथी, घोड़ा व पशु आदि उन से प्रेम के साथ साथ बुद्धि व समझ भी होती है।

५. पांचवी कला आनन्द है जिसे आनन्दमय कोष कहते है। ये पांच कोष मनुष्य मात्र में साधारण रूप से होते है।

६. छठी कला विभूति है अर्थात् ऐश्वरीय कला यह कला विद्या एवं कौशल से बढ़ती है। तथा मनुष्य के कर्म के अनुसार कम या ज्यादा होती है।

परन्तु भगवान श्री कृष्णचन्द्र में यह कला एक रस एवं पूर्ण है।

७. सातवीं कला धर्म है। धर्म के दस अंग है:-

(१) क्षमा (२) अहिंसा (३) दया (४)मृदु भाषा (५) सत्यवचन

(६) तप (७) दान (८) शील (९) सोच (१०) तृष्णा का त्याग

भगवान की रचित सम्पूर्ण सृष्ठि धर्म के अनुसार है। जिस प्रकार जहां भी धर्म कुछ कम होता है अथवा धर्म के नाश करने वाले पैदा होते है तब उस समय भगवान किसी न किसी रूप अथवा स्वयं अवतार धारण कर धर्म की रक्षा करते है।

भगवान श्री कृष्ण ने श्रीमद् भगवद् गीता के चौथे अध्याय के श्लोक ७-८ में स्वयं कहा है कि हे भारत! जब जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब तब ही मैं अनेक रूप को रचता हूँ अर्थात प्रकट करता हूँ। क्योंकि साधु पुरूषों का उद्धार करने के लिये और दूषित कर्म करने वालों का नाश करने के लिये तथा धर्म स्थापन करने के लिये युग युग में प्रकट होता हूँ।

८ आठवीं कला अर्थ है। जो धन उपार्जन के साधन हैं वे सब धर्म के अनुसार हों। समस्त अर्थ भगवान की कृपा से प्राप्त होता है। श्री कृष्णचन्द भगवान स्वयं परम अर्थ रूप हैं।

९ नवीं कला ज्ञान है। ज्ञान का अर्थ है अपने आपको जानना। यह ज्ञान भी भगवान की कृपा से प्राप्त होता है। यह सम्पूर्ण ज्ञान श्री कृष्णचन्द में व्याप्त है। भगवान स्वयं ज्ञान के प्रकाश हैं।

१० दसवीं कला तेज अथवा प्रकाश है। सारा संसार प्रकाशमय है तथा भगवान ही प्रकाशक हैं।

संसार में जो भी प्रकाश व ज्योति है वह सब भगवान की सता से ही है

भगवान श्री कृष्णचन्द ही समस्त विश्व के प्रकाशक हैं।

११ ग्यारवीं कला यश है। इन सब कलाओं को प्राप्त करने पर यश प्राप्त होता है।

भगवान श्री कृष्णचन्द यश के बेअन्त सागर हैं। संसार का कोई भी प्राणी उनके यश का अन्त नहीं पा सकता। वेद भी नियति नियति कह कर चुप हो जाते हैं। शेष नाग हजार मुख व दो हजार जुबान से भगवान का प्रतिदिन नया यश गाते हुए भी अन्त नहीं पा सकता।

१२ बारवीं कला योग है। योग चार प्रकार का है। हठ योग, मन्त्र योग, लय योग, राज योग

१.हठ योग किसे कहते हैं:- छः कर्म और पांच मुद्राओं को मिलाकर हठ योग कहते हैं। छः कर्म ये हैं:-

नेती, धोती, वस्ती, त्राटक, गज, नौली। पांच मुद्राएं हैं।

खचेरी, भूचरी, चाचरी, अगोचरी, अनमनी। मन्त्र योग किसे कहते हैं:-

नौ घण्टे एक स्थान पर बैठ कर 'गुरू मन्त्र' का जाप करना तथा सिद्ध आसन्न पर बैठकर सुरत गुरू के शब्द में, निरत गुरू की मूर्ति में, वृति गुरू के महावाक्य के अर्थ में लगाकर अपनी दृष्टि नाक के अग्र भाग में 'ॐ' अथवा किसी देवता की मूर्ति अथवा गुरू की मूर्ति में लगाना।

राज योग किसे कहते हैं:-

राज योग के आठ अंग होते हैं:-

१. यम, नियम, आसन्न, प्राणायाम, प्रतिहार, धारणा, ध्यान, समाधि

ये चारो योग योग्य गुरू द्वारा ही सीखने चाहिये। भगवान श्री कृष्णचन्द समस्त योगों के ईश्वर है।

१३ तैरवीं कला सर्विज्ञता है। भगवान श्री कृष्ण ही पूर्ण सर्विज्ञ है। ब्रह्मा के बछड़ो को अथवा ग्वालों को छिपाना इन्द्र का कोप करना आदि सर्विज्ञता है।

१४. चौदवी कला इच्छा शक्ति है। भगवान की इच्छाशक्ति को ही सृष्टि का कारण माना गया है। इस इच्छाशक्ति के चार रूप माने गये है। इच्छा, शक्ति, योग व माया। भगवान श्री कृष्ण को ये चारो प्राप्त है।

१५. पन्द्रवी कला सर्वत्र स्वतंत्रता है। भगवान श्री कृष्णचन्द सर्व व्यापी, सर्व शक्तिवान परम स्वतंत्र है।

१६.	सोलवी कला सर्वसिद्धि है। भगवान श्री कृष्ण को सर्व सिद्धि प्राप्त है। संसार के समस्त कार्य भगवान की कृपा से ही सिद्ध होते है।

इन सोलह कलाओं को प्राप्त कर यह मनुष्य परमानन्द स्वरूप को प्राप्त कर परम गति को प्राप्त करता है।

परम पूज्य स्वामी जी श्री कृष्ण भगवान की महिमा बताने के पश्चात प्रेमियों को कहने लगे कि चौरासी लाख योनियों को भोगने के पश्चात हमें यह दुर्लभ मानुष देह मिली है। यह हमारा जन्म तब सफल होगा जब यह प्यासी आत्मा परमात्मा में लीन होकर जन्म मरण के चक्र से मुक्त होगी।

परम पूज्य स्वामी जी के परम शिष्य श्री झामनदास ने परम पूज्य स्वामी जी से निवेदन किया कि हम गृहस्थी इस जन्म में परमात्मा को कैसे प्राप्त कर सकते है?

परमात्मा को प्राप्त करने के लिये साधु सन्यासी, वैरागी जंगलो व गुफाओं में जाकर घोर तपस्या करते है। परम पूज्य स्वामी जी उनको समझाकर कहने लगे कि हमारे सतगुरू महाराज स्वामी टेऊंराम जी महाराज जी ने गृहस्थियों को परमात्मा को प्राप्त करने के लिये बहुत सरल रास्ता बताया है। वह तरीका है परमात्मा को दिल व जान से प्यार करने का। परमात्मा को केवल भक्त का सच्चा प्रेम चाहिये। इसलिये परमात्मा को पाने के लिये दिल में प्यार की ज्योति जगानी है। इसी प्यार के प्रकाश द्वारा हमें अपनी ही उस प्रकाश से परमात्मा के दर्शन होंगे। सतगुरू महाराज जी ने इसी कारण अपने मण्डल का नाम ही रखा प्रेम प्रकाश मण्डल क्योंकि उन्हें यह अटूट विश्वास था कि दिल में प्रेम का प्रकाश जगाने से ही परमात्मा को प्राप्त कियाजा सकता है। यह कहकर प्रेमियों को यह भजन सुनाया।

शब्द १ (सुर भैरवी)

प्रभूअ खे थई प्रेम पियारो,

प्रेम सां प्रभु पाइ...

१. मोह माया जो मानु त्यागे,

दिल मां दम्भ विञाइ,

लोक कुटम्ब खा मुखिड़ो मोड़े,

लिंव सच्ची तूँ लाइ...

२. पाण प्रभू थो प्रेम खे चाहे,

प्रेम जी रास रचाइ,

प्रेम धागे सां दिल खे पोए

प्रेम पदार्थ प्रभू मांगे,

प्रेम ते प्रीति वसाई

३. प्रेम जी माल्हा खणी हथनि में,

प्रेम जी सुरित पठाई

प्रेम सां राम रीझाई...

४. माधव मोहन सां मिली

धुनि में ध्यान लगाई,

प्रेम हिन्दोरे हरदम वेही,

गुण गोविन्द जा गाई।

(अर्थ:- इस भजन में स्वामी जी कहते है कि परमात्मा को प्रेम ही भाता है इसीलियेतुम परमात्मा को प्रेम से प्राप्त करो। सबसे पहले तुम अपने से माया का मोह त्यागों तथा तुम्हारे दिल में जो अहिंकार है उसे निकाल दो। कुटम्ब परिवार व दुनियां से मुख मोड़ कर सच्चे परमात्मा से प्रीति लगाओ। प्रभू स्वयं केवल प्रेम चाहते है इसीलिये तुम केवल प्रेम की रास रचाओ। परमात्मा केवल तुम से प्रेम पदार्थ ही चाहते है इसीलिये तुम उसे प्रेम ही दो। तुम अपने हाथो में प्रेम की माला लेकर अपने अन्दर प्रेम का ही ध्यान लगाओ, तुम अपने हृदय को प्रेम के धागे से प्रोत दो और प्रेम से प्रभू रिझाओ। परम पूज्य स्वामी जी कहते है कि अपना मन मोहन से मिलाकर अपना ध्यान उसी के धुन में लगाओं। तुम सदा प्रेम के झूले में बैठकर गोबिन्द के गुन ही गाते रहो तो तुम्हें परमात्मा मिल जाए।)

यह भजन सुनकर परम पूज्य सवामी जी प्रेमियों को कहने लगे कि परमात्मा ने हमारे हृदय में प्रेम का बीज तो प्रारम्भ से ही डाल दिया है। प्यार करना मानव का स्वभाव है। इसी कारण हम अपने घर परिवार से प्यार करते हैं। परन्तु जब यह मनुष्य अपनी देह से अति प्यार करता है तो उस में अभिमान उत्पन्न होता है और जब वह दूसरे की देह से अति प्रेम करता है तो उस में काम वासना उत्पन्न होती है और जब वह पैसे से अति प्रेम करता है दतो उसमें लोभ पैदा होता है और जब वह पद से अति प्रेम करता है तो उस में अहंकार उत्पन्न होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि इस मनुष्य का किसी न किसी के साथ प्यार का लगाव है और इस सांसारिक प्यार से कोई न कोई विकार अवश्य उत्पन्न होता है जो हमारे दु:ख और अशान्ति का कारण बनता है।

परन्तु यदि हम परमात्मा से सच्ची प्रीति लगाएंगे तो हमें सच्चे सुख और आनन्द कर प्राप्ति होगी। हमें केवल अपनी वृति को बदलने की आवश्यकता है। जब किसान बहते हुए पानी का रूख अपने खेत की ओर करता है तब अनाज के अंबार लग जाते हैं। और वह माला माल हो जाता है। इसी प्रकार जब हम अपने मन की वृति को संसार की माया जाल से

हटा कर परमात्मा से जोड़ेंगे तभी हमे परमात्मा की प्राप्ति होगी और तभी हम जन्म मरण के चक्कर से छूटकर मुक्ति को प्राप्त करेंगे।

परम पूज्य स्वामी जी कहने लगे कि परमात्मा के लिये वह प्यार और पाने की चाह सच्ची होनी चाहिये और प्रबल होनी चाहिये। उसमें तड़प होनी चाहिये फिर कुछ भी मुशकिल नहीं है। परमात्मा के एक प्यारे ने यह सच्च कहा है कि 'मांगो तुम्हें वह दिया जायेगा, ढूंढो तुम अवश्य पाओगे, खट खटाओ तुम्हारे लिये दरवाजा खोल दिया जायेगा '।

परमात्मा के जिन प्यारों ने परमात्मा की सच्चे दिल से भक्ति की है, खोज की है, उन्होंने परमात्मा अवश्य पाया है। गुरू नानक साहब, सन्त रैदास, सन्त श्रोमणि कबीर साहब गृहस्थ में रहते हुए भी गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए परमात्मा की सच्ची भक्ति में इतने तो रंग गए कि इसी जनम में परमात्मा पाकर सभी गृहस्थियों के लिये मिसाल कायम कर गए।

परम पूज्य स्वामी जी प्रेमियों को कहने लगे कि परमात्मा को प्राप्त करने के लिये परमात्मा से केवल सच्ची प्रीति लगाने की आवश्यकता है। इसके लिये गृहस्थ त्यागकर जंगल में जाने की आवश्यकता नहीं है। सन्त श्रोमणि कबीर साहब उसके लिये बहुत बड़े मिसाल हैं। वे साहब दिनभर कपड़े बुनकर घर गृहस्थ का कारोबार चलाते थे और साथ साथ परमात्मा का स्मरण भी करते रहते थे। इस प्रकार स्मरण करते करते कितनी ऊंची मंजिल पर पहुंच गए। उनके सफलता का कारण थी उनकी परमात्मा के लिये सच्ची और गहरी तड़प।

एक जिज्ञासू ने परम पूज्य स्वामी जी से पूछा कि वह तड़प कैसी होनी चाहिये। उस पर स्वामी जी प्रेमियों को एक दृष्टांत द्वारा समझाने लगे।

दृष्टान्तः- एक शिष्य ने गुरू की बड़ी भक्ति की। एक दिन उस शिष्य ने अपने गुरू से पूछा कि महाराज मुझे भगवान के दर्शन कब होंगे। गुरू ने हंस कर उसकी बात टाल दी। एक

दिन गुरू ने शिष्य से कहा कि आज बहुत गर्मी है सो चल तो नदी में डुबकी लगाकर आये ,वे नदी में चले गये। शिष्य नदी में कूद पड़े और उसके पीछे गुरू भी नदी में कूद पड़े। गुरू ने अपने शिष्य का माथा कुछ समय के लिये पानी में ही दबाए रखा। शिष्य पानी से बहार आने के लिये छटपटाने लगा। थोड़ी देर के बाद गुरू ने शिष्य को छोड़ दिया और वह बाहर आकर शान्ति की सांस लेने लगा। अब गुरू ने शिष्य से पूछा कि जब तुम पानी के अन्दर थे तब तुम्हें सब से ज्यादा किसी चीज की आवश्यकता महसूस हुई। शिष्य ने उत्तर दिया कि तब गुझे सब से ज्यादा सांस लेने की आवश्यकता महसूस हुई। मैं सांस लेने के लिये तड़प रहा था। तब गुरू ने शिष्य से कहा कि जब तुम्हे परमात्मा के दर्शन की वैसी ही आवश्यकता और तड़प महसूस होगी तब ईश्वर अवश्य ही दर्शन देंगे।

परम पूज्य स्वामी जी प्रमियों से कहने लगे कि परमात्मा से हमारा प्यार नि:स्वार्थ एवं निष्काम होना चाहिये। परमात्मा को सर्वश्रेष्ठ, सर्वशक्तिमान एवं जीवन का उच्च आदर्श मानकर उनसे केवल यही मांगे कि हे मेरे परमात्मा मेरे हृदय में आप के लिये सदा प्यार बना रहे और मेरे दिल में तुम्हारे लिये अगाध भक्ति हो। सांसारिक प्रेम में पति पत्नी का प्यार ही सब से गहरा, सबसे प्रबल एवं परम आकर्षक माना गया है। इसी कारण ही भगवान के प्यारों ने परमात्मा को श्याम और स्वयं को राधा का रूप मानकर उनकी स्तुति की है। क्योंकि परमात्मा को पाने के लिये ऐसे ही प्रबल प्रेम की आवश्यकता है।

एक प्रसंग है कि जब भक्त श्रोमणि मीरा प्रेम दीवानी वृन्दावन में बांके बिहारी के मन्दिर में गिरधर गोपाल के दर्शन करने गई तब द्वारपाल ने उसे रोकर कहा कि गोस्वामी जी की आज्ञा है कि निज मन्दिर में कोई भी स्त्री नहीं जा सकती। तब मीराजी ने द्वारपाल से कहा कि तुम जाकर अपने गोस्वामी जी से पूछों कि वृन्दावन में मेरे श्याम के अलावा और कौन सा पुरूष पैदा हुआ है। वहाँ केवल एक पुरूष है वह है मेरे गिरधर गोपाल बाकि सब उपासक तो गोपियां है।

दरबान ने जब गोस्वामी जी को मीरा का यह संदेश दिया बि उस की आँखें खुली और स्वयं आकर क्षमा मांगकर मीरा जी को मन्दिर में ले गये।

मीरा जी की इसी अनन्य भक्ति के कारण वह अपने श्याम में सदा सदा के लिये समा गई।

जिस प्रकार भक्त श्रोमणि मीरा अपनी भक्ति के द्वारा अपने गिरधर से मिलकर एक हो गई युग युगान्तर के लिये अमर हो गई इसी प्रकार पूजा की सभी विधाऐं एक ही मंजिल, पूर्ण एकता में पहुँचती है। हम प्रारम्भ मे द्वेतवादी है। उस समय यह भावना रहती है कि ईश्वर एवं मैं अलग अलग दो विभूतियां है। दोनो के बीच में प्रेम का आगमन होता है। मनुष्य ईश्वर के तरफ बढ़ना शुरू करता है तथा ऐसा लगता है जैसे ईश्वर मनुष्य की ओर बढ़ना आरम्भ करता है।

मनुष्य अपने जीवन में सभी सम्बन्धों जैसे माता, पिता, मित्र व प्रेमी को अपनाता जाता है तथा वह स्वयं वह सब कुछ बनता जाता है और अन्तिम स्थिति में वह अपने आराध्य से मिलकर एक हो जाता है। 'मैं' 'तुम' हो और 'तुम' 'मैं' हूँ तेरी पूजा करते करते मैं स्वयं की पूजा करता हूँ और मैं अपनी पूजा करते करते तेरी पूजा करता हूँ। जहां से हम ने आरम्भ किया था वही अन्त भी होता है। वह परमात्मा जो किसी विशेष स्थान पर रहता था, उसने जैसे अनन्त प्रेम का रूप धारण कर लिया। स्वयं मनुष्य में परिवर्तन आ गया। वह ईश्वर की ओर बढ़ जाता है। जिन बेकार की वासनाओं से वह भरपूर था उस सब वासनाओं को दूर करता गया। वासनाओं के साथ स्वार्थ भी समाप्त हो गया अन्त में उसे प्रतीत हुआ कि प्रेम, प्रेमी तथा प्रीतम अर्थात् भक्ति, भक्त तथा भगवान तीनों एक ही है।

शाह अब्दुल लतीफ ने इस एकता को इस प्रकार व्यक्त किया है।

'जां पेही द्ठिम पाण में, करे रूह रिहाण,

नको दूँगर देह में नका केचियुनि काण

पुनुहूँ थियस पाण, ससुई ता सूर थिया।'

अर्थ:- जब ससुई प्यार के रंग में रंग जाती है तब प्रीतम और स्वयं में कोई बाधा प्रतीत नहीं होती न ही किसी प्रकार की मोहताजी महसूस होती है। वह तो स्वयं को भूल जाती है और अपने आप को ही प्रीतम के रूप में पाती है।

परम पूज्य स्वामी जी प्रेमियों को कहने लगे कि जब सब कुछ भुलाकर भक्त भगवान की भक्ति में लीन हो जाता है और भगवान से एक हो जाता है तब वह आठों पहर प्रेम की मस्ती में मस्त हो जाता है और दुनियां की किसी प्रकार की सुध नहीं रहती है। यहां पर स्वामी जी ने प्रेमियों को प्रेम की मस्ती का एक दृष्टान्त बताया।

दृष्टान्त:- एक समय की बात है, श्री कृष्ण भगवान अपने परम शिष्य विदुर के घर गये। संयोग वश उस समय घर पर विदुर भक्त नहीं थे। श्री कृष्ण भगवान ने दरवाजे पर आवाज दी। उस समय विदुर की पत्नी स्नान कर रही थी। भगवान श्री कृष्ण की आवाज पहचानकर जिस हाल में थी दौड़ती हुई श्री कृष्ण भगवान के पास चली आई। श्री कृष्ण भगवान ने उसे इस हाल में देखकर कहा कि तुम ऐसे कैसे चली आई? पहले तुम कपड़े पहनो फिर आओ इस पर उसने भगवान से कहा कि तुम्हारी आवाज़ सुनकर मैं सुधबुध भुला बैठी और बेबस होकर आपके पास दौड़ी आई। फिर कपड़े पहनकर उसने श्री कृष्ण भगवान का आदर सत्कार कर उन्हें आसन्न पर बिठाया। घर पर उस समय केलों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था। सो थाली में केले डालकर बड़े प्यार और श्रद्धा से भगवान को खिलाने लगी। उसका सम्पूर्ण ध्यान भगवान के दर्शन में लगा हुआ था। आँख तक नहीं झपक रही थी। सो उस मस्ती के आलम में वह केले छीलकर छिलके भगवान को खिलाती गई तथा केले फैकती गई। इतने में विदुर आकर पहुँचा। यह विचित्र कोतक देखकर आश्चर्यचकित हो गया। अपनी पत्नी से कहने लगा कि तुम यह क्या कर रही हो। भगवान को छिलके खिलाकर केले फेंकती

जा रही हो। अब उसको होश आया तथा अब वह भगवान को छिलकों के स्थान पर केले खिलाने लगी। इस पर श्री कृष्ण भगवान के कहा कि जो आनन्द और मिठास छिलकों के खाने में था वह केलों में नहीं आया। भगवान तो भाव का भूखा है।

यह दृष्टान्त सुनकर प्रेमियों को बड़ा आनन्द आया। श्री झामनदास ने परम पूज्य स्वामी जी से हाथ जोड़कर विनती की कि महाराज हम तो संसार की माया जाल में फंसे हुए है सो हमारे हृदय में भक्त श्रोमणी मीरा जैसी भक्ति तथा विदुर जैसी भक्ति एवं लगन कैसे पैदा होगी?

परम पूज्य स्वामी जी अपने प्रेमी का यह प्रश्न सुनकर कहने लगे कि हम उन वस्तुओं और व्यक्तियों को याद करते है जिनसे हमारा लगाव होता तथा प्यार होता है। परन्तु परमात्मा जो नाम, रूप और गुण से रहित, निर्गुण निराकार अविनाशी है और जिसके होने का हृदय में सूक्ष्म मात्र आभास मात्र होता है वह प्रारम्भ में अजनबी व अनजान सा लगता है। इस कारण उसे प्यार करने का कोई रास्ता नहीं मिलता है। किन्तु उसके निरन्तर स्मरण के अभ्यास द्वारा मन में उसके लिये प्यार पैदा कर सकते है। इस निरन्तर अभ्यास द्वारा 'वह'   हमारे निकट आता रहेगा। और समय आने पर हमारे अन्दर वह मस्ती और तड़प अवश्य पैदा होगी। और उस आकर्षण के पश्चात हमारा उसके साथ अवश्य मेलाप होगा।

परम पूज्य स्वामी जी कहने लगे कि हमें परमात्मा का स्मरण आठो पहर अवश्य करना चाहिये। हमें अपने निजी कार्य, कार्यालय, व्यापार समाज और परिवार के कार्य करते हुए यह स्मरण करना चाहिये कि ये सभी कार्य वह परमात्मा ही कर रहा है। वही हमारे हृदय में ब्राजमान होकर भोजन कर रहे है। वही सारा कारोबार कर रहे है।

परम पूज्य स्वामी जी कहने लगे कि इस अभ्यास द्वारा जो स्मरण चेतन मन से आरम्भ किया जाता है वह धीरे धीरे अवचेतत मन तक फिर अचेतन मन तक पहुँच जाता है और इस अवस्था के प्राप्त होने पर हमारा मन ईश्वमय हो जाता है और स्थाई रूप से ईश्वर

के अनुरूप बन जाता है। इस दशा में पहुँचने के पश्चात चेतन रूप से स्मरण करना इतना महत्वपूर्ण नहीं रहता क्योंकि अब हम हर समय उसी में लीन रहते है।

परम पूज्य स्वामी जी कहने लगे कि उनके नाम का स्मरण भी उन ही की कृपा से प्राप्त होता है। सो उन्हें दिन रात यही प्रार्थना करें कि हे: परमात्मा हम तुम्हारे बालक तुम से 'नामदान' मांगते है। यह कहकर प्रेमियो सें कहने लगे कि आओ हम मिलकर परमात्मा को यह प्रार्थना करें कि :-

शब्द (सुर मांझ)

हरि शल हमेशा सच्चो ध्यान दे तूँ,

सदा शान्त वारो सच्चो ज्ञान दे तूँ....

१. रहे तात तुंहिजी दींह राति दिल में,

सच्चे नाम पहिंजे जो नीशान दे तूँ....

३. सदा श्याम तुहिंजी रहे प्यास प्रभू,

असांखे त ईश्वर इहो दान दे तूँ....

४. रहे 'माधव' हरि नाम तुंहिजो,

सच्चो प्रेम पंहिजों त भगवान दे तूँ....

अर्थ:- (परमपूज्य स्वामी जी इस भजन में परमात्मा से प्रार्थना करते है कि हे! परमात्मा आप मुझे सदा आप का ही सच्चा ध्यान दो और शन्ति का सच्चा ज्ञान दो। दिन रात केवल आप का ही स्मरण रहे। और आप अपने नाम का संकेत दो। हे परमात्मा तुम अपने प्यार का ऐसा सहारा दो ताकि सदा तुम्हारी सूरत देखता रहूँ । हे परमात्मा तुम मुझे यह दान दो कि सदा

आप की ही प्यास बनी रहे। हे प्रभू तुम अपना सच्चा प्यार दो ताकि हरदम तुम्हारा ही नाम जपता रहूँ।)

परम पूज्य स्वामी जी प्रेमियों से कहने लगे कि प्यार करना सच्चे शूरवीरों का काम है क्योंकि सच्चे प्यार का रास्ता कभी भी सीधा और सरल नहीं होता है। प्यार जितना सच्चा और गहरा होगा रास्ता उतना ही कठिन होगा। जितना अधिक प्यार आप परमात्मा से करेंगे उतनी ही कठिनाईयों और परीक्षाएं वह आपकी राह में भेंजेंगे। सोने को शुद्ध करने के लिये उसे आग में तपाया जाता है।

परमार्थ की राह पर चलने के लिये तन, मन और धन की कुर्बानी देने के लिये तैयार रहो। किसी भी वस्तु को प्राप्त करने के लिये उस का मूल्य देना पड़ता है। वस्तु जितनी मूल्यवान होगी मूल्य उसका उतना ही अधिक देना पड़ेगा। परमात्मा को प्राप्त करने के लिये अपनी इच्छाओं को रोकना पड़ता है। मोह ममता को त्यागना पड़ेगा। निन्दा व तानों को सहना पड़ेगा।

परम पूज्य स्वामी जी कहने लगे कि परमात्मा का साक्षात्कार करने के लिये उसे अपने मन मन्दिर में ब्राजमान करने के लिये सब से आवश्यक है कि हम अपने सिंघासन की सफाई करें। अपने हृदय से ईर्षा व नफरत निकाल कर निर्मल करना होगा। हर एक प्राणी में उसकी ज्योति मानकर उस से प्यार करें। जब तक हृदय में नफरत का बीज है तब तक उस में प्यार का अंकुर फूट नहीं सकता। जैसे एक म्यान में दो तलबारें आ नहीं सकती उसी प्रकार परमात्मा के लिये प्यार और किसी भी प्राणी के लिये नफरत एक साथ रह नहीं सकते। जब तक हमारे दिल में किसी के लिये भी नफरत है तब तक हमारा मन भजन में व परमात्मा के स्मरण में कदाचित नहीं लग सकता। इसलिये सद्भावना और प्यार से दिल को साफ कर निर्मल बनाओं ताकि हमारा प्रियतम आकर उस साफ सिघांसन पर ब्रजामान हो सके। यह बात समझाने के लिये परम पूज्य स्वामी जी ने एक दृष्टान्त दिया।

दृष्टान्त बहुत दिनों की बात है हैदराबाद में मुरलीधर नाम का एक सेठ रहता था। उसका धर्म की ओर बहुत झुकाव था। उसने बहुत मन्दिर बनवाए। उसने एक आश्रम बनवाया जिस में विद्धान सन्यासी रहते थे। सेठ मुरलीधर का एक दूसरे सेठ लखमीचन्द के साथ झगड़ा था। वह झगड़ा जमीन का था। झगड़ा बढ़ते बढ़ते अदालत में पहुँच गया। केस चलने लगा। कई वर्षो तक केस चलता रहा। सेठ मुरलीधर केस भी लड़ता रहा और कारोबार भी चलता रहा। उसके बनाये हुए आश्रम में प्रतिदिन सत्संग होता था। सेठ मुरलीधर नियम से प्रतिदिन वहां कथा सुनने जाता था। कथा सुनते सुनते उसे संसार से वैरागय हो गया। गुरू जी से पूछकर वह आश्रम में रहने लगा। एक कमरे में रहने लगे। भोजन घर से आता था जिसे खाकर वह दिनभर जाप करता रहता था। बहुत समय ऐसा करते करते हो गया। एक दिन उस ने गुरूजी से कहा कि यदि आप की कृपा हो जाये तो मैं सन्यास ले लूं । गुरूजी ने कहा कि मुरलीधर तुम अभी सन्यास लेने के लायक नहीं हुए हो।

सेठ मुरलीधर सोचने लगा कि मैं घर तो नहीं जाता हूँ परन्तु भोजन घर से मंगवाता हूँ। अब भोजन घर से नहीं मँगवाऊंगा। यही एक नौकर रख लूंगा। वही भोजन बनाएगा। इसी तरह कुछ दिन ऐसा चलता रहा। अब वह सोचने लगा कि अब मेरा सम्बन्ध घर से नहीं रहा। सो गुरू जी से कहने लगे कि अब मैं सन्यास ले लूं? गुरूज ने कहा कि अभी वह समय नहीं आया है।

सेठ मुरलीधर ने सोचा शायद मैं नौकर से खाना बनवाता हूँ इसलिये गुरूजी सन्यास लेने की आज्ञा नहीं दे रहे। यह भी छोड़ दूंगा। भिक्षा लेकर खाऊँगा और दूसरी आराम की वस्तुएं भी त्याग दूगां। अब उसने यही किया। प्रात: काल बस्ती जाकर भिक्षा ले आता था और दिन भर आत्मचिन्तन में मस्त रहता था। ऐसा करते हुए काफी समय बीत गया। फिर गुरू महाराज को निवेदन किया कि मुझे सन्यास ग्रहण करने की आज्ञा दो। सतगुरू महाराज ने सोचकर कहा कि सेठ साहब अभी नहीं । सेठ मुरलीधर ताजुब में पड़ गया कौनसी कमी रह गई है। सोचकर देखा और फिर अपने आप को कहा मैं घर घर जा कर भिक्षा लाता हूँ परन्तु मैं

सेठ लखमीचन्द के घर पर भिक्षा लेने नहीं गया हूँ। इस कारण दुश्मनी की पुरानी भावना मेरे दिल में अभी शेष है। इस भावना को त्यागना होगा। और दूसरे दिन प्रात: लखमीचन्द के घर पहुँच गया। जाकर अलख जगाया। भगवान के नाम पर भिक्षा दो। सेठ लखमीचन्द के नौकर सेठ मुरलीधर को अपने द्वार पर देखकर दौड़ते हुए सेठ लखमीचन्द के पास गये। हांफते हांफते कहने लगे कि सेठजी सेठ मुरली आप के द्वार पर भिक्षा लेने आया है। सेठ लखमीचन्द ताज़ुब में पड़कर बोला कि ऐसा कैसे हो सकता है? आप को भ्रम हुआ है। कोई दूसरा होगा। नौकरों ने कहा कि वह सेठ मुरलीधर ही है। आप कहें तो उसे खाने में ज़हर मिलाकर दे दें। सदा के लिये झगड़ा समाप्त हो जायेगा। सेठ लखमीचन्द ने नौकरों को घमकाकर कहा कि नहीं , मुझे स्वयं देखने दो उसने देखा कि मकान के दरवाजे पर सेठ मुरलीधर झोली फैलाकर खड़ा है। मुरलीधर ने उसे देखा और कहा कि सेठ जी! भिक्षा दो। लखमीचन्द दौड़कर आगे बढ़ा, और चिल्लाकर बोला मुरलीधर! लखमीचन्द ने उसे अपने सीने से लगा लिया। मुरलीधर ने झुककर उसके पांव छुए। लखमीचन्द भी उसके पैरों पर गिर पड़ा और उसे कहा मुरलीधर मेरे साथ बैठकर भोजन करो। मुरलीधर ने कहा।

नहीं सेठ साहब! मैं तो भिखारी बनकर आया हूँ, भिक्षा लेने आया हूँ। मेरी झोली में बस भिक्षा डालो।

उस समय नौकर दौड़ता हुआ आया और बोला कि आप के नाम एक तार आया है। देखो इस तार में क्या लिखा है। सेठ लखमीचन्द ने तार खोलकर पढ़ा । तार मुरलीधर के बेटों की थी जो कलकता से आई थी, जस में लिखा था कि हमारे पिताजी हमें छोड़कर चले गये हैं। जमीन का झगड़ा अभी समाप्त नहीं हुआ है परन्तु अब हम इस जमीन को लेकर क्या करेंगे? इस तार द्वारा हम इस जमीन का अधिकार छोड़ते है। हमारे पिताजी हमारे पास नहीं है। आप हमारे पिता समान हैं मेहरबानी कर आप हमें अपनी ही सन्तान समझें हमें अपने सिर पर आप का हाथ चाहिये और आप हमें संभाले। सेठ लखमीचन्द रोकर बोला कि नहीं , नहीं ऐसा नहीं होगा। उनको लिखो कि जमीन आप की है मुझे कुछ नहीं चाहिये। मैं उनका

पिता बनकर उनकी रक्षा करूंगा। आज वे न केवल सेठ मुरलीधर के पुत्र हैं परन्तु वे मेरे भी पुत्र हैं। उस के बाद जब मुरलीधर भिक्षा लेकर मुड़ा तो देखा सामने गुरू महाराज खड़े हैं। उनके हाथ में गेरूवस्त्र थे। मुरलीधर को सीने से लगाकर बोला कि अब तुम सन्यास के योग्य हो। अब ये गेरू वस्त्र पहनो। यह दृष्टान्त बताकर परम पूज्य स्वामी जी ने प्रेमियों से कहा कि जब तक मन में नफरत है तब तक भजन एवं स्मरण से क्या लाभ होगा? उस से कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। यदि परमात्मा का स्मरण करना है तो मन से नफरत निकालनी होगी। ईर्ष्या बैर भाव को दूर हटाओ फिर देखो कितना आनन्द आता है स्मरण और भजन में।

परम पूज्य स्वामी जी प्रेमियों से कहने लगे कि भजन और स्मरण करते हुए जब जिज्ञासु परमार्थ की राह पर चलता है तब उसे मार्गदर्शन की आवश्यकता प्रतीत होती है। क्यों कि आत्मा और परमात्मा का सम्बन्ध बहुत ही सूक्षम एवं नाजुक है। उसको समझने के लिये मनुष्य की साधारण बुद्धि को सामर्थ्य नहीं है। उसकी स्थिति मृग के समान हो जाती है, जैसे कस्तुरी मृग के नाभी में होती है जब उसे कस्तुरी की खुशबू आती है तब वह उस पर मस्त होकर उसकी तलाश में इधर उधर भटकने लगता है। तड़पने लगता है। परन्तु अपनी नाभी में कस्तुरी होते हुए भी उसे पा नहीं सकता है क्यों कि उस को इसका ज्ञान नहीं आता है।

उसी प्रकार परम पिता परमेश्वर जो सर्वव्यापी हर जगह विद्यमान हैं सो हमारे हृदय में ही ब्राजमान है। आवश्यकता है बाहर मुखता त्याग कर अन्तर मुख होने की। फिर ज्ञान रूपी प्रकाश से सूक्षम नेत्रों द्वारा हम उस दिव्य ज्योति के दर्शन कर सकते हैं। अन्दर जाकर उस खजाने के द्वार के खोलने की चाबी सत्गुरू के पास है। सतगुरू की ही महर मया से वह 'नाम' रूपी चाबी लेकर जिज्ञासू अन्तर के पट खोलकर अपने प्रीतम के दर्शन कर सकता है। सतगुरू महाराज परमात्मा के स्वरूप हैं। उन्होंने त्याग एवं तपस्या द्वारा परमात्मा का साक्षात्कार कर उसे प्राप्त किया है। वे स्वयं सच्चखण्ड के वासी हैं तथा अपने जिज्ञासू प्रेमियों का मार्ग दर्शन कर उन्हें मंजिल प्राप्त करने में सहायता करते हैं। सतगुरू द्वारा

दिया गया 'नाम उस नाव के समान है जिसके द्वारा जिज्ञासू यह संसार रूपी सागर पार कर उस पार ब्रह्म परमात्मा में लीन हो जायेगा।

वे प्रेमी बड़भागी हैं जिन्हें यह परमार्थ की राह मिली है। और उस राह पर सम्भल कर चलने के लिये सतगुरू के रूप में रहबर मिला है। बड़े भाग्य से 'नाम रूपी सहारा मिला है।

परन्तु राह भी मिली, भाग्य से रहबर भी मिला और बड़े भाग्य से 'नाम' रूपी सहारा भी मिला, परन्तु यदि जिज्ञासू सतगुरू महाराज द्वारा बताई गयी राह पर चलकर प्रतिदिन कमाई नहीं करेगा और ऐकाग्र चित्त से 'नाम' का स्मरण नहीं करेगा तो मंजिल पर कैसे पहुंचेगा? सामने कितने ही स्वादिष्ट पकवान पड़े हों परन्तु भूख तो उन्हें खाने से मिटेगी। कितने ही शास्त्र पढ़ो, सत्संग सुनो, पूजा पाठ करो परन्तु जब तक स्वयं आसन्न पर बैठ सही तरीके से समरण भजन और 'नाम' का समरण नहीं किया है तब तक परमात्मा का साक्षात्कार नहीं हो सकता है। सन्त श्रोमणि कबीर साहब ने इस पद में यही बात कही है।

वस्तु कहीं ढूंढे कही,

केही बिध आवे हाथ,

कह कबीर तब पाइये,

जब भेदी लीजे साथ।

यह पद बताकर प्रेमियों को यह बात अच्छी तरह से समझाने के लिये यह दृष्टान्त बताया:-

दृष्टांत:- एक मोहल्ले में एक वृद्ध महिला रहती थी। वह अकेली ही रहती थी। सब मोहल्ले वाले उसकी इज्जत करते थे और दुख सुख में उसकी सेवा सहायता भी करते थे। एक दिन संध्या के समय वह वृद्धा सरकारी बत्ती के नीचे गली में कुछ तलाश कर रही थह। वहां

से गुजरने वाले एक पड़ौसी ने उस से पूछा अमां। क्या ढूंढ रही है? उत्तर दिया मेरी सुई गुम हो गई है, उसे ढूंढ रही हूँ। सो सहानुभूति वश उस पड़ौसी ने कहा अमा! मैं आपकी सुई ढूंढने में सहायता करता हूँ। ऐसा कहकर वह भी बत्ती के नीचे सुई ढूंढने लगा। इस प्रकार जो भी पड़ौसी वहां से गुजरा वह सहानुभूति वश उनके साथ सुई ढूंढने लगा। सभी ने बड़ा परिश्रम किया परन्तु सुई का नामों निशान नहीं था। इतने में एक समझदार व्यक्ति वहां से गुजरा। उस ने रूक कर सभी से पूछा कि आप सब लोग क्या ढूंढ रहे हैं? इस पर सभी ने उत्तर दिया कि बूढ़ी अमां की सुई गुम हो गई है हम सब उसे ढूंढ रहे हैं। इस पर उस व्यक्ति ने कहा रूको, पहले बूढ़ी अम्मा से पूछो तो सही कि उसने सुई कहां पर खोई है?ऐसे बेकार हाथ मारने से सुई नहीं मिलेगी। अब उस समझदार ज्ञानी पुरूष ने बूढ़ी अम्मा से पूछा कि अम्मा आप ने सुई कहां पर गिराई है? उसपर बूढ़ी अम्मा ने उसे उत्तर दिया कि भैया! सुई तो मेरे घर के अन्दर गिरी है। इस पर उस सयाने ने कहा कि अम्मा जब आप की सुई घर के अन्दर गिरी है तो आप उसे घर के बाहर कैसे ढूंढ रही हैं? यदि वर्षो तक बाहर सुई ढूंढेगे तो वह कदाचित नहीं मिलेगी। जो वस्तु जहां है ही नहीं तो वह वहां कैसे मिलेगी? इस पर बूढ़ी अम्मा ने उत्तर दिया कि भैया मैंने सुना है कि खोई हुई वस्तु रोशनी में मिलती है। मेरे घर में तो रोशनी है ही नहीं । बाहर रोशनी देखकर मैं सुई ढूंढ ने लगी। इस पर उस सयाने ने कहा कि अम्मा सुई ढूंढ ने के लिये हमें रोशनी घर में करनी होगी। और जहां सुई गिरी है वहीं ढूंढनी होगी। सही जगह पर ढूंढ ने से ही वह वस्तु प्राप्त होगी।

दृष्टांत बताकर परम पूज्य स्वामी जी प्रेमियों को कहने लगे कि हमें परमात्मा अपने अन्दर में सतगुरू महाराज से नाम रूपी प्रकाश लेकर स्मरण रूपी कमाई कर मेहनत से ढूंढना होगा। यदि बूढ़ी अम्मा की तरह उसे बाहर ढूंढ गे तो मंजिल पर पहुँच नहीं पाएंगे। सत्संग में जाना बहुत आवश्यक है क्योंकि सत्संग से हमें अमृत रूपी जल मिलता है जिससे नाम रूपी अंकुर हरा होगा। और इस अंकुर को बढ़ाने और हरा भरा रखने के लिये सत्संग रूपी अमृत भी आवश्यक है। परन्तु वह अमृत तब उपयोगी होगा जब हम नाम रूपी बीज बोकर

खेत तैयार करेंगे। इस प्रकार ‘नाम’ और स्मरण का महत्व बताकर परम पूजय स्वामी जी ने प्रेमियों को यह राज़ इस भजन द्‌वारा खेलकर समझाया।

भजन

स्वास सुमरिण सोरे

दातरू जलु तूँ दोरे दातरू लहु दोरे

१. स्वास अमोलक माणिक मोती,

जगत दामा तह तहिं में जोती

दिसु वजूद में वोडे दातरू लहु दोरे

२. स्वासनि माला सिक सां सोरिजि

लौके लिकाए चरिखों चोरिजि

जाणी अलख खे ओरे दातरू लहु तूँ दोरे

३. माधव ही तू स्वास सुआणिजि

वठी गुरूअ खां शब्द उचारिजि

कन्धु कुल्हनि खा कोरे - दातरू लहु दोरे

वृन्दावन की तीर्थस्थली में परम पूज्य स्वामी जी ने प्रेमियों को हर रोज सायं काल सत्संग रूपी अमृत पिताकर मस्त कर दिया। प्रेमियो की भीड़ दिनों दिन बढ़ती जा रही थी। भीड़ बढ़ती भी क्यों नहीं । परम पूज्य स्वामी जी श्री कृष्ण भगवान की भक्ति में रंगकर स्वयं कृष्णमय बन गये थे। उनके ह्रदय में हरदम प्रेम का सागर हिलोरे मार रहा था। जो भी प्रेमी सत्संग में आता था उसको इतना तो स्नेह देते थे कि यह समझने लग जाता था कि

सतगुरू महाराज की केवल मेरे ऊपर ही विशेष कृपा है। यहां वही श्री कृष्ण भगवान वाली लीला लगी हुई थी। जैसे राम लीला करते हुए हरेक गोपी यह समझने लगती थी कि श्री कृष्ण केवल मेरा ही है और मेरे साथ ही रास रचा रहा है। वैसी ही लीला स्वामी जी के प्रेमियों के साथ भी थी।

परम पूज्य स्वामी जी को इस कृष्णमय वातावरण में खूब आनन्द आ रहा था।

प्रतिदिन प्रातःकाल वृन्दावन के मन्दिरों में जाकर भगवान श्री कृष्ण ने नाना रूपों के दर्शन कर परम पूज्य स्वामी जी गद्गद् होते थे। घण्टों ध्यान में मग्न होकर बेसुध हो जाते थे।

यह सब कुछ होते हुए भी परम पूज्य स्वामी जी के हृदय में पुराणे प्रेमियों के लिये खिंचाव लगा हुआ था। एक दिन अपने मनमेली साथी स्वामी गणेशानन्द जी को कहा कि भाई। इतना आनन्द होते हुए भी अब हमारा दिल यहा से उठ गया है। हमें हमारे प्रेमी पुकार रहे है। इसलिये हम यहां से चलेंगे। स्वामी गणेशानन्द जी ने परम पूज्य स्वामी जी से पूछा कि यहां से प्रस्थान करने के बाद कौन सी मंजिल की ओर चलेंगे? परम पूज्य स्वामी जी ने कहा कि सुना है कि हमारे बहुत सारे प्रेमी अजमेर में है इसलिये हम अजमेर चलना चाहते है। अजमेर के पास पुष्कर राज तीर्थराज भी है जहां चलकर विश्व में एक मात्र ब्रह्माजी का मन्दिर के दर्शन कर पवित्र सरोवर में डुबकी लगाऐंगे।

दूसरे दिन सत्संग के पश्चात प्रेमियों को बताया कि अब हम आप से विदा होते है यह सुनकर सभी प्रेमी बहुत निराश हुए। हाथ जोड़कर नम नेत्रों से दीन मन होकर परम पूज्य स्वामी जी से अनन्य विनती की कि स्वामी जी हम से कौन सा खता हुई जो हम से मुहं मोड़कर आप जा रहे है। यदि इस प्रकार विरह का बिछोड़ देना था तो हमें इस प्रकार अपने प्रेम की डोरी में क्यों बांधा। स्वामी जी आप ने तो श्रीकृष्ण के भान्ति ही बर्ताव किया है जिसने सभी गोपियों को अपने प्रेम की डोरी में बांधकर मस्त बनाकर वियोग का दुख दे

दिया। सभी प्रेमियों ने उनके चरण पकड़कर रो रोकर क्षमा मांगी। उन्हें वहीं पर रहने के लिये आग्रह करने लगे। कहने लगे हम से आप का वियोग बर्दाशत नहीं होगा। इस परदेश में हमें केवल आप का सहारा है। हमें अनाथ बनाकर मत जाईये।

परम पूज्य स्वामी जी उन्हें सान्तवना दे कर समझाने लगे कि हम आत्मा से सदैव आप के साथ है।हमें अन्दर से आवाज़ आई है इसलिये आप हमें सहर्ष जाने दे। साधु रमते ही अच्छे लगते है। हमारा आशीर्वाद सदा आप के साथ है। आप प्रतिदिन नियम से बताई गई विधि के अनुसार ध्यान एवं स्मरण करते रहे। आप देखेंगे कि हम सदा आपके साथ है।

सभी प्रेमियों ने भारी मनसे परम पूज्य स्वामी जी को मालायें पहनाकर बड़े आदर से भाव भीनी विदाई दी, वहां से विदा होकर वे सीधे अजमेर पधारे। अजमेर पहुँचते ही उनकी भेंट उनके परम शिष्य दीवान शौकतराय से हुई। दीवान शौकतराय हैदराबाद में परम पूज्य स्वामी जी द्वारा दिये गये कमरों में रहते थे और उनकी खूब सेवा करते थे। दीवान साहब परम पूज्य स्वामी जी के यहां दर्शन कर खूब गद्गद् हुए और हाथ जोड़कर विनती की कि हम तो आप की प्रतीक्षा में आखें बिछाये बैठे थे। आप के प्रेमी पलपल आप को याद कर रहे है। कृपया हमारी क ुटिया में चलकर उसे पवित्र कीजिये। सन्त और भगवान तो प्रेम के भूखे होते है सो दीवान साहब की प्रेमपूर्ण पुकार सुनकर उनके घर चले आये। सभी घर वाले उनका स्वागत कर बहुत प्रसन्न हुए। दूसरे दिन प्रात:काल पुष्कर के लिये प्रस्थान किया। वहाँ पहुंचकर ब्रह्माघाट पर श्रद्धा से सरोवर में डुबकी लगाकर दही और जलेबी मंगवाकर विधि विधान से पूजा अर्चना कर ब्राह्मणों को खूब दक्षिणा दी। उसके पश्चात ब्रह्मा के मन्दिर जाकर दर्शन कर सीधे उस स्थान पर आये जहां कुछ समय पूर्व तीर्थयात्रा कर के सतगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के साथ आकर डेरा जमाया था। यह बालू का ढेर बिल्कुल टण्डेआदम वाली दरबार जैसा ऊँचा और विशाल था। यहां पहुँचकर अपने मनमेली संत स्वामी गणेशानन्द जी से कहने लगे यह स्थान कितना सुन्दर और विशाल है। दिल में यह आस है कि यहां टण्डेआदम जैसा ही अमरापुर दरबार जैसा सतगुरू महाराज की याद में

विशाल आश्रम बनवाएं। पुष्कर राज तीर्थगुरू है। तीर्थ करने के बाद हरेक श्रद्धालू यात्री यहा डुबकी लगाने के पश्चात ही यात्रा पूर्ण समझता है। इसलिये यहां यात्रियों का तांता लगा रहता है। ऐसे स्थान पर आश्रम बनवाकर सतगुरू महाराज के शिक्षाओं का प्रचार करना चाहिये। सतगुरू महाराज जी हमारे इस संकल्प को अवश्य पूर्ण करेंगे। यह संकल्प कर परम पूज्य स्वामी जी अजमेर लौट आये। परम पूज्य स्वामी जी अजमेर पधारने की खबर जैसे उनके प्रेमियों को पड़ती गई वैसे वे सब उनके शरण में आने लगे। और उन्हें निवेदन किया कि इस संकट के समय उनका मार्ग दर्शन करने की कृपा करें।

परम पूज्य स्वामी जी ने प्रेमियों का स्नेह व श्रद्धा देखकर आशा गंज में जहां आज कल हासी बाई धर्मशाला है वहा एक स्थान लिया। यहां प्रतिदिन सत्संग कर दु:खी दिलो को सहारा देते थे। सभी प्रेमी अपनी मातृभूमि छोड़कर बेघर होकर रोजी रोटी और मकान की समस्याओं से झूझ रहे थे। उनके पांव उखड़ चुके थे। कभी निराश और हताश होकर परम पूज्य स्वामी जी के पास उनके आशीर्वाद के लिये आते थे। परम पूज्य स्वामी जी परम आशवादी थे सो उनको सदा ही सांत्वना देने रहते थे।

एक दिन सत्संग में प्रेमियों को सांत्वना देते हुए कहा कि परमात्मा जो कुछ करते है उस में कोई न कोई रहमत अवश्य होती है। इसलिये हमें उनकी रज़ा पर राजी रहना चाहिये। उनको समझाने के लिये गुरू नानक साहब के जीवन का दृष्टान्त बताया:-

दृष्टान्त:- एक दिन गुरू नानक साहब बाला मरदाना के साथ रटन करते हुए एक गांव में पहुँचे। गाँव वाले नास्तिक थे। उन्होंने न तो उनके सत्संग के तरफ ध्यान दिया और नहीं उनकी सेवा की। वहां से प्रस्थान करते समय गुरू नानक साहब ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि 'सदा इस गांव में बसे रहो।' रटन करते करते दूसरे गांव में पहुँचे वहा के प्रेमी ईश्वर भक्त थे। उन्होंने बड़े श्रद्धा व स्नेह से उनका सत्संग सुना और दिल व जान से उनकी सेवा की और उन्हें निवेदन किया कि दो चार दिन रहकर उन्हें सत्संग रूपी अमृत पिलावें। वहां से चलते

समय उनको आशीर्वाद देकर कहा कि 'यहां से बिखर जाओ।' जब गांव से बाहर आये तब बाला मरदाना ने उन्हें निवेदन किया कि महाराज हमारी एक शंका है कृपया आप उसका समाधान करें। पहले गांव वालों ने आप की कोई आव भक्त ही नहीं की और आपने उन्हें यह आशीर्वाद दिया कि इस गाँव में ही बसे रहो। दूसरे गांव वार्ल ईश्वर भक्त थे और आप की बड़े स्नेह और श्रद्धा से सेवा की उन बेचारों को आप ने बद्दुआ दी कि तुम लोग बिखर जाओ। गुरू महाराज इस बात का रहस्य हमें खोल कर समझाईये। तो हमें शान्ति मिले।

इस पर गुरू नानक साहब ने उन्हें समझाकर कहा कि पहले गाँव वाले नास्तिक थे इस कारण उन्हें आशीर्वाद देकर कहा कि आप इसी गाँव तक सीमित रहो जिससे यह बुराई आगे नहीं फैले। दूसरे गाँव वाले ईश्वर भक्त और संत सेवी थे। इसलिये उन्हें आशीर्वाद दिया कि बिखर जाओं ताकि उनकी अच्छाई और खुबशू चारो दिशाओं में फैल जावें।

दृष्टान्त बताकर परम पूज्य स्वामी जी प्रेमियों को समझाकर कहने लगे कि परमात्मा ने शायद यह परीक्षा की घड़ी इसीलिये भेजी है ताकि हम सम्पूर्ण भारत भूमि पर बिखर कर सिंधू सभ्यता की सुगन्धि फैलाकर प्रेम का प्रकाश कर धर्म की ध्वजा लहरायें। इस तरह परमात्मा की रज़ा को मीठा जानकर यह शब्द कहा:-

शब्द (राग कलंग भैरवी)

करतार सन्दों ही भाणो,

मन दुख सुख संगत माणे...

१. कोई राजा रण बलधारी

पल में थिए सो पेनू बिखारी

वते मंगेदों दर दर दाणो...

२. कोई पेनू पिने पिनाऊं पल में,

थिए सो शाहन शाह

विहे तऽखत देई तिलाणो...

३. कोई मूर्ख मस्त फिरे थो,

कोई पंण्डित रोज़ रड़े थो

ही सब कर्मनि जो काणो...

४. माधव भाणो आहे भारी,

मञिणो सब खे नर हुजे नारी

चाहे मूर्ख हुजे सयाणो...

अर्थ:-जो कुछ भी जीवन में होता है वह सब परमात्मा की इच्छा से होता है इसलिये हमें दुख और सुख को समान समझकर उसके तरफ से भेजी गई सोगात समझकर स्वीकार करना चाहिये। परमात्मा की लीला अपरपार है कोई राजा महाराजा महाबली पल भर में भिखारी बनकर दर दर भीख मांगता रहता था। और कोई भीख मांगने वाला भिखारी पल भर में शहनशाह बनकर शाही तख्त पर राज करता है। कोई मूर्ख आदमी मस्त होकर आनन्द पाता है तो कोई पण्डित धके खाता रहता है। यह सब कर्मों का खेल है। स्वामी जी कहते है भाग्य व भावी बड़ी प्रबल है, बलवान है। उसे सबको मानना होगा। चाहे वह नर हो या नारी वह मूर्ख या बुद्धिमान हो।

इस कष्ट की घड़ी में भी प्रेमियों ने परम पूज्य स्वामी जी की यथा शक्ति तन मन व धन से खूब सेवा की। कभी कभी उन्हें ग्यारस सत्य नारायण अथवा अन्य किसी अवसर पर घर पर बुलाकर सत्संग करवाकर खूब सेवा करते थे। प्रेमी सिन्ध की तरह परम पूज्य स्वामी

जी की सेवा कर दक्षिणा देना चाहते थे परन्तु इस कष्ट की घड़ी में कभी कभी वे स्वयं को विवश पाते थे। सभी प्रेमियों की यह हार्दिक इच्छा थी कि परम पूज्य स्वामी जी हैदराबाद जैसे विशाल आश्रम की स्थापना करें। परम पूज्य स्वामी जी उनके मन के भाव समझकर कहते थे कि भगवान और संत तो केवल भाव के भूखे है। आपके ये श्रद्धा और भक्ति के भाव लाखों से भी ज्यादा मूल्यवान है। आप दिल छोटा नहीं करें। दुख के बाद सुख और रात के बाद दिन अवश्य आता है। जब वे दिन नहीं रहे तो ये दुख के दिन भी गुजर जायेंगे। कठिन परिश्रम, सच्ची लगन एवं दृढ़ निश्चित से हम पहले से भी आगे बढ़ जायेंगे। आप दिल छोटा बिल्कुल नहीं करें। यदि आप लोगों की भावना सच्ची है तो एक दिन सिन्ध के समान एक विशाल आश्रम की स्थापना अवश्य होगी। इस समय आपकी यह श्रद्धा और सच्ची भावना हमारे लिये सबसे बड़ी पूंजी है। उनके दिल को ढ़ाढ़स देने के लिये परम पूज्य स्वामी जी ने उन्हें एक दृष्टान्त बताया।

दृष्टान्तः- एक दिन एक दानी सेठ को रास्ते पर एक बूढ़ा भिखारी मिला। सर्दी के कारण उसके होठ तक नीले हो गये थे। उसके हाथ सूज गये थे। उसकी यह हीन दशा देखकर सेठ का दिल पिघल गया वह वहीं का वहीं खड़ा रह गया।

भिखारी ने दीन मन होकर हाथ बढ़ाकर उस से दान मांगा। सेठ का ह्रदय दया से भर गया उसे कुछ देने के लिये उसने अपने कोट के जब में हाथ डाला परन्तु उसे बटुआ नहीं मिला।

सेठ बहुत शर्मिन्दा हुआ, वह बहुत बड़ी उलझन में पड़ गया। कुछ समय विसमय में पड़ने के पश्चात उसने भिखरी की तरफ देखा और उसके दोनो हाथ अपने हाथों में पकड़कर कहा कि आज में अपना बटुआ घर पर भूल आया हूँ। इसलिये मैं तुम्हें कुछ भी नहीं दे सकता मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ। मेरे मित्र बुरा मत मानना।

भिखरी की आंखो से दो बूंद आंसू बहकर नीचे गिर गये। उसने बहुत ही अपनेपन से सेठ की ओर देखा और उसके हाठों की मुस्कान आ गई। वो दोनों हाथों से सेठ के हाथों को धीरे से दबाकर बोला कि शर्मिन्दा होने की कोई बात नहीं है। मुझे आज बहुत ही मिला है जिस का मूल्य पैसों से बहुत ज्यादा है। ईश्वर आप को खूब बढ़ावें।

भिखरी तो चला गया परन्तु सेठ कुछ समय के लिये वहां आश्चर्यचकित होकर खड़ा रहा। उसको लगा कि आज दान उसने नहीं परन्तु भिखारी ने उसे दिया था।

दृष्टान्त बताकर परम पूज्य स्वामी जी प्रेमियों को कहने लगे कि यदि आप की ऐसी ऊँची भावना है और अपने यह संकल्प किया है कि सतगुरू महाराज का मन्दिर बनना चाहिये तो आपका यह संकल्प अवश्य सिद्ध होगा। इस प्रकार प्रेमियों की मायूस दिलों में नई आशा जागी कि एक दिन यहां भी सिन्ध की भान्ति अमरापुर जैसी दरबार अवश्य बनेगी।

आशा गंज में सत्संग करते करते प्रेमियों की भीड़ बढ़ती ही जा रही थी। प्यासे प्रमी दूर दूर चलकर परम पूज्य स्वामी जी के शुभ दर्शन कर व उनके अमृत वचन सुनकर दिल को ठण्डा करते थे। उन प्रेमियों में श्री भार्गव साहब इन्जीनियर जो हाथीबाटा में रहते थे वे नित नियम से श्रद्धा पूर्वक सत्संग में आने लगे। प्रतिदिन सत्संग के बाद रूककर परम पूज्य स्वामी जी की सेवा करते थे। इस प्रकार सेवा करते वह परम पूज्य स्वामी जी के निकट आने लगा और परम पूज्य स्वामी जी की भी उनपर कृपा दृष्टि थी। परम पूज्य स्वामी जी का यह शिष्य श्रद्धालू होने के साथ साथ ज्ञानवान भी था। उसकी यह हार्दिक तमन्ना थी कि हनुमान बनकर आठों पहर सतगुरू महाराज की सेवा करूं। और उनके चरणों में रहूं।

श्री भार्गव साहब की योग साधना में रूचि थी। वह प्राय: परम पूज्य स्वामी जी से योग साधना के सम्बन्ध में प्रश्न पूछता रहता था। जब उसने देखा कि परम पूज्य स्वामी जी को योग साधना में न केवल रूचि है परन्तु गहरा ज्ञान भी है। सो एक दिन अवसर पाकर डरते डरते परम पूज्य स्वामी जी से कहा कि मेरे मन में योग साधना सीखने की बड़ी प्यास है।

परन्तु सायं काल जब भी मैं आता हूं तब यहां प्रेमियों की भीड़ लगी रहती है। उस समय प्रत्येक प्रेमी की यह चाह रहती है कि वह अधिक से अधिक समय आपके चरणों में बैठकर आपके अमृत वचन सुने और आपका शुभ दर्शन कर आनन्द लेवे। कई प्रेमी उस समय एकान्त में अपनी समस्या लेकर आपसे मार्गदर्शन लेना चाहते हैं। मुझे आप से कुछ निवेदन करने के लिये घण्टों प्रतीक्षा करनी पड़ती है। इसीलिये सांय काल तो यह प्यास नहीं बुझाई जा सकती। यदि आप की मेरे ऊपर कृपा हो जाये तो मैं प्रातःकाल आपकी सेवा में उपस्थित होकर ज्ञान की इस गंगा में डूबकी लगाऊं।

परम पूज्य स्वामी जी भार्गव साहब का स्नेह, श्रद्धा एवं योग साधना सीखने की जिज्ञासा देखकर बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि हम आपके इस प्रस्ताव को सुनकर बहुत खुश हुए है। कल सेही इस शुभ कार्य को आरम्भ करेंगे। आप ठीक प्रात: पांच बजे स्थान पर पहुँच जाओ। हम भी ठीक समय पर आ जायेंगे।

दूसरे दिन भार्गव साहब के आने से पूर्व परम पूज्य स्वामी जी ने हवन की पूरी तैयारी कर ली। भार्गवा साहब के आने पर उस से कहा कि भाई। कोई भी शुभ कार्य करने से पूर्व परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त करने व कार्य को निर्विध्न पूर्ण करने के लिये हवन करना परम आवश्यक है। सो सबसे पहले हवन करेंगे और उसके पश्चात आज से ही योग अभ्यास आरम्भ करेंगे। सब ने श्रद्धा एवं स्नेह से वैदिक विधि अनुसार हवन किया और योग अभ्यास की शिक्षा आरम्भ की।

कुछ दिन योग अभ्यास करने के पश्चात श्री भार्गव साहब ने परम पूज्य स्वामी जी से निवेदन किया कि यदि आपकी आज्ञा हो तो योग अभ्यास के साथ व्यायाम शिक्षण का भी प्रबन्ध करें। इस हेतु रिंगस, घोड़ी व अन्य सामग्री को जुटाएं ताकि आज कल के युवा वर्ग यहां आकर व्यायाम कर आपसे योग अभ्यास की शिक्षा प्राप्त कर के स्वास्थ्य लाभ के साथ आत्म उन्नति भी कर सकें।

परम पूज्य स्वामी जी अपने इस परम शिष्य की लगन और योग अभ्यास में अटूट आस्था देखकर बहुत प्रसन्न हुए और उसे सामग्री जुटाने की सहर्ष आज्ञा दे दी। बस थोड़े ही दिनों में व्यायाम करने के सभी साधन उपलब्ध हो गए। अब यह स्थान युवा वर्ण के लिये आकर्षण का केन्द्र बन गया। नवजवानों की संख्या बहुत दिनों दिन बढ़ती जा रही थी। परम पूज्य स्वामी जी प्रत्येक युवा को स्वयं व्यक्तिगत मार्ग दर्शन प्रदान कर व्यायाम की सही विधि समझाते थे। इस कार्य में श्री भार्गव साहब परम पूज्य स्वामी जी के साथ परम भक्त हनुमान के समान सदा साथ रहते थे।सो एक दिन उसने परम पूज्य स्वामी जी से निवेदन किया कि सतगुरू महाराज हमें योग साधना को समझने की गहरी प्यास है। हम यह समझना चाहते है कि योग साधना का अर्थ क्या है। इसे किस प्रकार शुद्धता से किया जाता है और योग साधना करने से क्या लाभ है। परम पूज्य स्वामी जी परम ज्ञानी एवं सिद्ध योगी थे सो उन्हें योगी थे सो उन्हें योग साधना के सम्बन्ध में गहराई से समझाते हुए कहा कि सबसे पहले हम योग साधना का अर्थ समझेंगे। योग शब्द का अर्थ है 'जोड़ना' यह जीव आत्मा परमात्मा का अंश है। उस जीवन आत्मा को परमात्मा से जोड़ने को योग कहते है और जिन साधनों से इस आत्मा को परमात्मा से जोड़ते है उसे हम योग साधना कहते है।

यह प्यासी आत्मा जन्म जन्मातर से अपने पिरीतम परमात्मा से मिलने के लिये तड़प रही है और यह प्यास केवल मनुष्य जन्म में ही बुझ सकती है। इस रहस्य की खोज सबसे पहले महऋृषि कपिल मुनि ने की थी। महऋृषि कपिल मुनि जन्म से ही सिद्ध थे। उसने जन्म लेते ही अपनी माता जी देवहूति को ज्ञान देकर मुक्ति दिलाई महऋृषि कपिल मुनि ने घोर तपस्या कर यह खोज की कि इस संसार में पच्चीस तत्व है जिन में से चौबीस जड़ है और इन में से एक तत्व चेतन है। इस चेतन तत्व के शक्ति से शेष चौबीस तत्व चलाइमान है। वह चेतन तत्व है आत्मा।

इस के पश्चात महऋृषि पांतजली ने उस आत्मा का साक्षात्कार करने के लिये घोर तपस्या की। बहुत परिश्रम करने के बाद उसे आत्म साक्षात्कार हुआ। जिन साधनों द्वारा

उसे आत्मसाक्षात्कार हुआ उसके आठ अंग है। इस लिये उसे अष्टांग योग कहते है। ऋषि पातंजलि के अष्टांग योग के आठ अंग इस प्रकार है:-

(१) यम (२) नियम (३) आसन्न (४) प्राणायाम (५) प्रतिहार (६) धारणा (७) ध्यान (८) समाधि।

इन में प्रथम पंाच बाह्य साधन है और शेष तीन साधन आन्तरिक साधन हे। इन साधनों के बिना साधना पूर्ण नहीं हो सकती। इसलिये इन साधनों को गहराई से समझने की आवश्यकता है।

(१) यम अर्थात् त्यागना:- मन को निर्मल करने के लिये हमें दिल में से बैर भाव, ईर्षा तथा मोह त्यागना होगा। इसलिये यम के पाँच सौपान कहे गये है। जो इस प्रकार है।

१- अहिंसा किसी भी प्राणी को मन, वचन व कर्म से चोट या हानि नहीं पहुँचाना। जीव मात्र के लिये प्यार दया का भाव रखना।

२- सत्य:- मन, वचन व कर्म से सच्चाई से चलना झूठ कपट व मकारी दिल में से निकाल देना।

३- अचोर्य:- किसी की भी वस्तु जबर्दस्ती या चोरी छुपे प्राप्त नहीं करना, नहीं उसकी चाहना करना।

४- ब्रह्मचर्य:- मन, वचन एवं कर्म से किसी की ओर भी वासना या बुरी निगाह से नहीं देखना सत्य एवं संयम से रहकर अपने बल और वीर्य की रक्षा करना। गीता के तीसरे अध्याय में श्री कृष्ण ने अर्जुन को कर्मयोग समझाते हुए कहा है कि ईश्वर प्राप्ति की राह में साधक के लिये काम वासना सबसे बड़ी रूकावट है। इसलिये श्री कृष्ण भगवान अर्जुन से कहते है कि हे अर्जुन! तुम पहले इन्द्रियों को वश में रखकर ज्ञान व विज्ञान को नाश करने वाले इस काम को सम्पूर्ण बल लगाकर मार दो।

५- अपरिग्रह:- धन संग्रह की लालसा का त्याग करना, कितना भी कष्ट आवे किनतु किसी से भी दान नहीं लेना। दान लेने वाला सदा दीन रहता है।

यम के पश्चात ऋषिराज ने अन्त:करण की पवित्रता के लिये पांच नियम बताये हैं। जिन के धारण करने से अभ्यासी का मन शुद्ध होकर परमात्मा के चरणों में आसानी से लग सकता है। वे नियम इस प्रकार हैं।

(१) शौच (२) सन्तोष (३) तप (४) स्वाध्याय (५) ईश्वर परिणीधान

१ शौच:- शरीर व हृदय को पवित्र रखना, नियम से स्नान करना, कपड़े साफ रखना और अपने आस पास की सफाई का ध्यान रखना। यह बाह्य सफाई है। हृदय में सबे लिये सद्भावना रखना व पवित्र विचार रखना आन्तरिक स्वचछता है। हृदय परमात्मा के निवास का सिंहासन है, यदि उस में गन्दे विचार होंगे तो उस गन्दगी में परमात्मा कैसे रह पायेंगे। इसलिये साधक को कभी भी हृदय में अपवित्र विचारों को स्थान नहीं देना चाहिये। श्रीमद् भगवद् गीता के पन्द्रवे अध्याय में श्री कृष्ण भगवान ने कहा है कि जिन्होंने अपना अन्त:करण शुद्ध नहीं किया है ऐसे अज्ञानी पुरूष यत्न करते हुए भी इस आत्मा को नहीं जानते है।

२. सन्तोष जो मिल उस में खुश रहना। ज्यादा लोभ नहीं करना और अधिक तृष्णा से बचने को संतोष कहा गया है। जब तक संतोष नहीं आया तब तक मन माया जाल में भटकता रहेंगा और जब तक मन में शान्ति नहीं आई है तब तक मन ईश्वर के चरणों में नहीं लगेगा। सन्त कबीर ने सन्तोष का महत्व बताते हुए यह दोहा कहा है।

गोधन, गजधन, बाजिधन और रतनधन खान,

जब आवे सन्तोष धन, सबधन धूड़ि समान।

कबीर साहब कहते है कि इन्सान के पास हाथी घोड़ा और हीरे जवाहरात की खान हो परन्तु जब तक उसके पास सन्तोष नहीं आया है तब तक वह और अधिक प्राप्त करने के लिये मृगार्तिष्णा की भान्ति इस संसार के मरूस्थल में मन की झूठी प्यास बुझाने के लिये व्यर्थ ही दौडता रहेगा। परन्तु जब उसके पास सन्तोष आ गया तो ये संसार के पदार्थ धूल के समान दिखेंगे। इसलिये इन्सान को चाहिये कि दूसरे के भाग्य से बराबरी नहीं करनी चाहिये। परमात्मा को यही प्रार्थना करनी चाहिये कि :-

साई इतना दीजिये जा में कुटम्ब समाई,

मैं भी भूखा ना रहूँ, नहीं साधु भूखा जाई।

३- तप:- इन्सान के जीवन में दुख सुख व उतार चढ़ाव आते रहते है सब दिन एक समान नहीं रहते है। जैसे दिन के बाद रात और रात के बाद फिर दिन आता है वैसे ही दुखों के बाद सुख और सुखों के बाद दुख आते रहते है।

प्रकृति परिवर्तनशील है। कभी गर्मी है तो कभी सर्दी है। यह चक्र तो चलता रहता है। इसलिय जिज्ञासू को दुख सुख सहर्ष सहन करना चाहिये। नहीं तो दुख में घबराना चाहिये और नहीं सुख में इतराना चाहिये सदा समभाव में रहकर सब कुछ उस परमात्मा की ओर से भेजा हुआ मानकर सब्र से सहन करना चाहिये। दुख सुख को सहन करने की शक्ति पैदा करना और मन को विषयों से रोकने को तप कहते है।

४- स्वाध्याय:- धार्मिक पुस्तकरें का अध्ययन एवं सत्पुरूषों की संगति को स्वाध्याय कहते हैं। अपने मन को ईश्वर के चरणों में लगाना और मन को पवित्र रखने के लिये नियम ये धार्मिक पुस्तकों का पाठ करना चाहिये और सत्पुरूषोंकी संगति में रहना चाहिये। जब रामायण का पाठ करते है तब हम महऋषि वालमीकि के चरणों में बैठकर मर्यादा पुरूषोतम श्री राम के दर्शन करते हैं और उनका गुण गान सुनते है। जिस समय हम श्रीभद् भगवद्गीता

का पाठ करते हैं। तब हम मुनीश्वर भगवान श्री कृष्ण के पवित्र चरणों कमलों में बैठकर उनके मुखारवन्द से गीतारूपी अलोकिक तत्वज्ञान सुनते हैं। जिस से यह जीव आतमा मुक्त होकर परम धाम को प्राप्त होगी। कहते हैं कि 'जैसा संग वैसा रंग' इसलिये सदा सत्पुरूषों के संगति में रहना चाहिये नैतिक और उच्च कोटि के पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिये जिस से हमारा मन निर्मल हो। मन पर संस्कारों का गहरा प्रभाव पड़ता है। सतोगुणी सत्पुरूषों के सम्पर्क में आने से मन को शान्ति मिलती है तथा तमोगुणी लोगों के सम्पर्क में आने से मन पर बुरे संस्कार पड़ते हैं। और मन अशान्त रहता है इसलिये सदा अच्छे विचारवान पुरूषों की संगति में रहना चाहिये। परन्तु तमोगुणी व्यक्तयों से सदा किनारा करना चाहिये। चाहे वे हमारे सगे सम्बन्धी क्यों न हों। इस प्रकार अच्छे पुस्तकों को पढ़ना चाहिये। गन्दे पुस्तकों को हाथ भी नहीं लगाना चाहिये।

५ ईश्वर परिणीधानः- ईश्वर में अटूट विश्वास रखना, उनके शरण में जाना और उनको प्राप्त करने की लग्न को ईश्वर परिणीधान कहते है। यह मानुष देह हमें केवल आत्मसाक्षात्कार करने और परमात्मा को प्राप्त करने के लिये ही मिली है। इसी मानुष देह में हम उसे पा सकते है। परमात्मा को प्राप्त करने के लिये सबसे आवश्यक है उनमें अटूट विश्वास एवं उनके सत्ता में विश्वास। जिसने विश्वास रखा उसी ने पाया। सामी साहब ने भी ऐसा कहा हैः-

वदो जाण वेसाहु, सामी सभ कहिं खूं,

वेद पुराण मथे करे, कढियों इहो राइ,

अन्तरमुख अची करें समिझी करि समाउ

छदि वदाई वाउ, त सहजे मिलनी सुपिरीं।

अर्थ:- स्वामी साहब कहते है कि विश्वास को सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानों क्यों कि वेद और पुराण का मन्थन करने के बाद यह बात कही गई है। उसी विश्वास के सहारे तुम अन्तरमुख होकर उसको समझकर उसकी तलाश करो। तुम मन में से दम्भ और अभिमान को त्याग दो तो तुम्हें परमात्मा प्राप्त हो।

इसलिये जिज्ञासू को परमात्मा में पूर्ण विश्वास करना चाहिये और हृदय में उसको पाने की तड़प पैदा कर उसकी शरण में जाना चाहिये। श्री कृष्ण भगवान ने श्रीमद् भगवद् गीता के अठारवें अध्याय में अर्जुन से कहा है।

हे अर्जुन। तुम अपना मन मेरे अन्दर लगाओं मेरे भक्त बनो, मेरी पूजा करो एवं मुझे ही प्रणाम करो। ऐसा करने से तुम मुझे ही प्राप्त करोंगे। यह मैं तेरे से सच्ची प्रतिज्ञा करता हूँ कि क्योंकि तुम मेरे परम प्रिय सखा हो।

यम एवं नियम के सम्बन्ध में खोलकर समझाने के पश्चात श्री भार्गव साहब ने परम पूज्य स्वामी जी से कई बार निवेदन कर पूछा कि योग साधना करने के लिये यम और नियम का क्या महत्व है। परम पूज्य स्वामी जी ने जिज्ञासुओं को समझाते हुए कहा कि यम और नियम के साधनों को करने से हमारा अन्तःकरण शुद्ध होता है। इन साधनों के द्वारा हमारा मन निर्मल होता है। जेसे किसान बीज बोने से पूर्व खेत में हल चलाकर खाद डाकर उसे तैयार करता है। और उसके बाद ही बीज छटकता है और अंकुर निकलते है। बिना खेत की तैयारी के यदि बीज डालेंगे तो वह तो व्यर्थ जायेगा और कोई भी लाभ नहीं होगा। इसलिये इस राह पर चलने वाले जिज्ञासू को परमात्मा को प्राप्त करने से पहले इन साधनो द्वारा अपने हृदय को तैयार करना होगा। जो भी सन्त महात्मा ईश्वर के प्यारे है वे इस राह पर चले है उन सब ने यही साधना करने पर मंजिल प्राप्त की है। फिर भली उन्होंने इन साधनों को यम और नियम का नाम नहीं दिया है। इस राह में अन्दर की सफाई परम

आवश्यक है। इस के बिना मंज़िल पर पहुँच नहीं सकते है। सामी साहब ने अन्दर की सफाई के सम्बन्ध में कहा है:-

गुरगम जंहि कयो, शीशे शुद्ध अन्दर जो,

अनभइ आत्म देव जो तंहिं परिलाव पियो,

अन्दर बाहर हिकड़ो, दिसे की न बियो,

कारजु सिद्ध थियो, सामी तंहिं सापुरूष जो।

अर्थ:- स्वामी साहब कहते है कि जिस जिज्ञासू ने अपने मन के शीशे को साफ किया है उसी के परमात्मा का वह अनहद शब्द सुनाई दिया है। उसे अन्दर बाहर में उसी परमात्मा के दर्शन होते है उसी सत्पुरूष के कारज सिद्ध होते है।

सामी साहब का यह श्लोक सुनाने के पश्चात परम पूज्य स्वामी जी ने इस बात को और अच्छी तरह समझाने के लिये यह दृष्टान्त दिया:-

दृष्टान्त एक राजा भगवान बुद्ध का श्रद्धालु भक्त था। उसके स्नेह एवं श्रद्धा के कारण भगवान तथा गत उनके पास समय समय पर आते रहते थे। राजा भी भगवान बुद्ध हृदय से आदर सत्कार करते थे। एक बार राजा ने भगवान बुद्ध से दीक्षा देने के लिये विनती की। भगवान ने उसे कहा कि अभी वह समय नहीं आया है। यह सुनकर राजा बहुत दुखी हुआ। सोचने लगा कि मैं भगवान का प्रिय शिष्य हूँ। मैं उनकी स्नेह एवं श्रद्धा से सेवा करता हूँ। फिर भगवान मुझे दीक्षा क्यों नहीं देते। भगवान बुद्ध उसके मन के भाव समझ गए। उसकी यह शंका दूर करने के लिये जब वे दूसरी बार आये तो राजा को आज्ञा की कि आज हम खीर खाएँगे। राजा बड़ स्नेह एवं श्रद्धा से सोने के कटोरे में खीर लेकर आया। भगवान ने अपना पात्र आगे कर राजा को उस में खीर डालने की आज्ञा दी। कटोरा देखकर राजा ने भगवान बुद्ध को नम्रता पूर्वक निवेदन किया कि भगवान यह बर्तन तो मैल से भरा हुआ है इसमें खीर

डालने से खीर गन्दी हो जायेगी, इसलिये आप आज्ञा दे तो पहले इस कटोरे को साफ करूं और फिर इस में खीर डालं ू इस पर भगवान ने राजा को समझाते हुए कहा कि जिस तरह गन्दे कटोरे में डालने से अमृत रूपी खीर गन्दी होकर बेकार हो जाती है उसी प्रकार मल विक्षेप वाले मैल से भरे हृदय में ‘नाम’ रूपी बीज भी बेकार हो जाता है। दीक्षा लेने से पहले हृदय एवे अन्तकरण: को शुद्ध करना परम आवश्यक है।

यह दृष्टान्त सुनकर जिज्ञासुओं को परम पूज्य स्वामी जी की यह शिक्षा अच्छी तरह से समझ में आ गई और परम पूज्य स्वामी जी को विश्वास दिलाया कि उनके आदेशानुसार यम और नियम के साधनों का पालन कर अपने अन्तःकरण को शुद्ध करेंगे।

इसके पश्चात परम पूज्य स्वामी जी उन्हें योग साधना के तीसरे सोपान आसन्न के बारे में ज्ञान देने लगे।

आसन्न योग साधना के लिये एक स्थान निश्चित करना पड़ेगा। वह स्थान एकान्त और शान्ति वाला होना चाहिये। किसी कोने में अथवा छत पर यह बनाना होगा। वहां कुश, कम्बल अथवा अन्य कोई ऊनी वस्त्र बिछाना चाहिये ताकि पृथ्वी छूने से योग द्वारा सिंचित शक्ति प्रवाहित न हो। इस स्थान पर पद्म आसन्न, अर्द्ध पद्मासन्न अथवा अर्द्ध पद्मासन्न योग साधना के लिये सबसे सुविधाजनक आसन्न है। यह इस प्रकार करना चाहिये। दाहिना पाव खींचकर अन्दर की और रखना चाहिये और बायां पाव दाहिनी जांघ पर रखना चाहिये। इस प्रकार बैठने पर यह ध्यान रखना है कि रीड़खम्भ बिल्कुल सीधा हो। कमर पीठ और गर्दन और सिर बिल्कुल सीधे एक लाईन में हो। शरीर न ज्यादा अकडा हुआ हो और नहीं ज्यादा ढीला हो। इस प्रकार जब साधक बैठता है तब मस्तिष्क में से शक्ति उतर कर मेरूदण्ड की सूक्षम नाड़ियों द्वारा नीचे की ओर प्रवाहित होती है और धीरे धीरे शरीर के समस्त अंगों में फैल जाती है। तथा प्राणी, इन्द्रयों और मन का अन्दर की ओर आकर्षित कर खींचते है। इस से साधक को ऊपर बहुत लाभ होता है। यह चुम्बकीय शक्ति साधक को ऊपर चढ़ाने में बहुत

सहायता करती है। इसलिये आसन्न से आराम से सीधे बैठने की बहुत आवश्यकता है। रीड खम्भ को सीधा रखकर बैठने, चलने और गर्दन को सीधा और ऊँचा रखने से आत्म विश्वास बढ़ता है तथा शरीर निरोग रहता है।

परम पूज्य स्वामी जी साधकों को आसन्न के बारे में ज्ञान के बाद उन्हें ध्यान योग में सहायक मुद्राओं का आवश्यक ज्ञान देने लगे। मुद्रा को हमारे मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य एवं बुद्धि पर गहरा प्रभाव पड़ता है। ध्यान करने के साथ साथ साधक मुद्राओं का अभ्यास का दोहरा लाभ उठा सकता है।

स्वामी जी कहने लगे कि हमारा यह शरीर पांच तत्वों से बना है। वे तत्व है अग्नि, वायु आकाश, पृथ्वी और जल। हमारे हाथ की पाँचों उंगलियों में वे तत्व अलग अलग समाये हुए है। हाथ के अंगूठे में अग्नि तत्व समाया हुआ है। अंगूठे के पास वाली पहली उंगली में वायु तत्व बीच वाली बड़ी उंगली में आकाश तत्व उसके पास वाली चौथे नम्बर वाली उंगली में पृथ्वी तत्व और अन्तिम छोटी उंगली में जल तत्व समाया हुआ है।

अंगूठे के साथ इन उंगलियों को अलग अलग मिलाने से विभिन्न मुद्राऐं बनती है जिन मुद्राओं के साधने से शरीर के समस्त रोग दूर हो जाते है। ज्ञान मुद्रा द्वार मन की एकाग्रता, स्मरण शक्ति बढ़ती है। मास्तिष्क को शक्ति मिलती है और उससे सम्बन्धित रोग दूर होते है और नींद अच्छी आती है ध्यान में बैठते समय दोनों हाथ सीधे कर के घुटनों पर रखने चाहिये। उस समय हथेलियां ऊपर की ओर हो अब अंगूठे और पहली वाली उंगली के सिरों को आपस में मिलाने से ज्ञान मुद्रा बनती है शेष उंगलियों को सीधा रखना चाहिये। समस्त योगी जन ध्यान के समय इसी मुद्रा में बैठते है। इस से मन शान्त एवं एकाग्र होता है।

परम पूज्य स्वामी जी साधकों को मुद्राओं के सम्बन्ध में ज्ञान देने के बाद कहने लगे कि परमार्थ की राह पर चलने वालों को अपने शरीर के स्वास्थ्य का पूर्ण ध्यान रखना परम

आवश्यक है। क्योंकि शरीर द्वारा ही समस्त क्रियाएं की जाती है। शरीर के स्वस्थ रहने पर ही हम परमात्मा का भजन कर सकते है। इसलिये शरीर को स्वस्थ रखने के लिये कोई न कोई व्यायाम करना परम आवश्यक है। योगासन्न अन्य समस्त व्यायामों से श्रेष्ठ है क्योंकि थोड़े से परिश्रम द्वारा शरीर के समस्त आन्तरिक अंगो में योगासनों के माध्यम से उन्हं क्रियाशील कर उनमें अधिक चुस्ती पैदा की जा सकती है। योगाभ्यास द्वारा शरीर निरोग रहता है। बीमारी दूर होती है। शारीरिक क्रियाऐं अच्छी तरह से चलती हैं। हाजमा अच्छा होता है रक्त का दौरा अच्छा होता है। मन को शान्ति मिलती है और जीवन में उत्साह बढ़ता है। इसलिये अपने सामर्थ्य के अनुसार योगासन्न अवश्य करने चाहिये यदि समय कम मिले तो केवल एक ही व्यायाम अर्थात सूर्य नमस्कार करना ही पर्याप्त है।

सूर्य नमस्कार :- सूर्य नमस्कार अर्चना भी है तो व्यायाम है, इस में चार योग आसन्न तथा तीन प्राणायाम समाये हुए है। इसके साथ इस आसन्न द्वारा हम शक्ति एवं प्रकाश के देवता सूर्य भगवान की भी पूजा करते है। इस से हमें शक्ति एवं शान्ति प्राप्त होगी यह अर्चना सूर्य भगवान के बारह नामों का जाप करते हुए की जाती है:-

(१) ॐ मित्राय नम: (सब का मित्र) (२) ॐ रविये नम: (प्रशंसा के योग्य) (३) ॐ सूर्याय नम: (जगत के संचालक) (४) ॐ भावने नम: (प्रकाश प्रदान करने वाले) (५) ॐ खगाय नम: (आकाश में गमन करने वाले) (६) ॐ पोषणों नम: (पालन पोषण करने वाले) (७) ॐ हरिण्य गर्भाय नम: (स्वर्ण जैसे चमक देने वाला) (८) ॐ मरीची नम: (रोग नाश करने वाले) (९) ॐ आदित्याय नम: (आकर्षण करने वाले) (१०) ॐ सूत्रे नम: (उत्पन्न करने वाले) (११) ॐ अर्काय नम: (पूजने के योग्य) (१२) ॐ भास्कराय नम: (प्रकाशपुंज)

उपरोक्त बारह नामों का जाप हाथ जोड़कर एक एक कर करना है। सबसे पहले हाथ जोड़ कर सूर्य की अर मुख करके एक नाम का जाप कर इस आसन्न को आरम्भ करना है।

सूर्य नमस्कार की बारह स्थितियों इस प्रकार है जो हम आप को करके बताते है जिससे आप को अचछी तरह समझ में आ जाए।

यह सूर्य नमस्कार प्रात:काल निराहार मुंह करना चाहिये। प्रारम्भ में केवल दो बार सूर्य नमस्कार करना चाहिये। हर एक सप्ताह एक सूर्य-नमस्कार बढ़ाना चाहिये। तीन महिनों के बाद बारह बारह बार सूर्य नमस्कार प्रतिदिन करना चाहिये। हर बार सूर्य भगवान की अर्चना का मंत्र मन में कहना है। यह ध्यान रखना है कि सूर्य नमस्कार हमेशा अपने सामर्थ्य के अनुसार ही करना चाहिये। इस आसन्न को करने से शरीर में स्फूर्ति मन में प्रसन्नता व जीवन में उत्साह बढ़ेगा। आत्म विश्वास की वृद्धि से जीवन आनन्दमय होगा। यह आसन्न छोटे बड़े स्त्री पुरूष आदि सब आराम से कर सकते है। यदि समय नहीं मिले और अन्य आसन्न करना सम्भव नहीं हो तो केवल सूर्य मनस्कार करने से ही शरीर निरोग, मन प्रसन्न तथा आत्म उन्नति होगी।

आसन्नों के सम्बन्ध में विस्तार से ज्ञान देने के पश्चात परम पूज्य स्वामी जी साधकों को प्राणायाम के सम्बन्ध में बताने लगे।

प्राणायाम:- प्राणायाम अष्टांग योग का चौथा अंग है। यह योगाभ्यास की बहुत ही महत्वपूर्ण एवं ऊँची कड़ी है।

प्राण का अर्थ है जीवनी शक्ति। सभी जीव धारियों का आधार प्राण ही है। योग की भाषा में इस प्राण को नियम से चलाने एवं वश में करने को प्राणायाम कहा गया है। प्राण एक प्रकार की विद्युत शक्ति है जो शरीर, मन व बुद्धि को चलाती है एवं नियम में रखती है।

शरीर की पवित्रता के लिये जैसे स्नान आवश्यक है वैसे ही मन की पवित्रता के लिये प्राणायाम आवश्यक है। प्राचीन ऋषियो मुनियों के मतानुसार मन एवं प्राण एक दूसरे पर आधारित है। एक पर अधिकार पा लेने पर दूसरा अपने आप अधिकार में ही जायेगा। मन को

एका एक वश में कर लेना कठिन है। इसलिये प्राण को वश में कर के उसके द्वारा मन का वश में किया जाता है। तथा उसे एकाग्र किया जाता है।

कठोपनशिद में शरीर को रथ, मन को लगान, इन्द्रियों को घोड़ा ,विषय को पथ, बुद्धि को सार्थी कहा गया है रथ में बैठी हुई आत्मा को स्वामी कहा गया है। यदि आत्मा रूपी रथ का स्वामी समझदार नहीं है तथा बुद्धि रूपी सार्थी द्वारा इन्द्री रूपी घोड़ों को वश में नहीं करता है तो कभी भी मंज़िल पर नहीं पहुँच सकता है। अर्थात् घोड़ो के समान इन्द्रियां जहां चाहेंगी उसे खींच कर ले जायेंगी। और जाकर रसातल में पटकेंगी। प्राण रूपी शक्ति प्रवाह जैसे बुद्विरूपी सार्थी के हाथों में इन्द्रियों रूपी घोड़ों को वश में करने के लिये लगाम हे। योग में सफलता प्राप्त करने के लिये इन्द्रियों को वश में करना परम आवश्यक है।

यह बात भली भान्ति समझाने के लिये साधकों को यह दृष्टांन्त बताया।

दृष्टान्तः- एक राजा था उसके पास एक समझदार मंत्री था। किसी कारण राजा उस से नाराज हो गए। राजा ने मंत्री को एक मीनार के शिखर पर कैद कर रखने के आदेश दिया। राजा के आदेश का पालन किया गया। मंत्री वहां कैद होकर मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगा। मंत्री की पत्नी पतिव्रता नारी थी, रात्रि को मीनार के नीचे आकर कैदी मंत्री से पूछने लगी कि मैं इस दशा में आप की किस प्रकार रक्षा कर सकती हूँ। इस पर मंत्री ने उसे कहा कि कल रात्रि को एक लम्बी मोटी रस्सी, एक मजबूत डोरी एक बण्डल सूत, रेशमी पतली डोरी, एक भं्रम तथा थोड़ी सी शहद ले आना। मंत्री की पत्नी यह सब सुनकर आश्चर्यचकित हो गई और सोचने लगी इस सब चीजों से इतने बड़े मीनार से कैसे उतरा जायेगा। खैर दूसरे दिन वह पति की आज्ञानुसार सब सामग्री लेकर आई। उसके पति ने कहा कि सबसे पहले तुम रेशमी डोरी भ्रंग के एक टांग में बान्धों और एक बूंद शहद भ्रंग के मूछों पर लगाकर उसका मुंह ऊपर की और कर उसे मीनार की दीवार पर चढ़ा दो। उस पतिव्रता नारी ने अपनी पति की आज्ञानुसार यह सब कर लिया। अब उस कीड़े ने अपना लम्बा रास्ता तय करना शुरू कर लिया। अपने

सामने अपनी ही मूछों पर लगी हुई शहद की सुगन्ध सूंघ कर उसकी लालच में वह धीरे धीरे ऊपर चढ़ने लगा और आखिर जाकर मीनार की चोटी पर पहुँचा। मंत्रीजी ने एकदम उसे पकड़ लिया। और उसके साथ रेशमी डोरी को भी झपट लिया। उसके बाद अपनी पत्नी से कहा कि जो सूत बण्डल में है वह दूसरे रेशमी डोर से बाध दो। इस प्रकार वह भी उसके हाथ आ गया।

इस उपाय से उसने डोरी और रस्सी भी पकड़ ली। अब कुछ भी कठिन नहीं था। रस्सी बांधकर मंत्री नीचे चला आया वहां से भाग छूटा।

हमारी देह में सांस छोड़ना और लेना ही रेशमी डोरी के समान है। उसके धारण करने या उसको संयम में लाने से पहले स्नायु शक्ति प्रवाह मायने सूत का बण्डल ,उसके बाद मनोवृत्ति रूपी डोरी अन्त में प्राण रूपी रस्सी पकड़ सकते है। प्राणों को जीतने के पश्चात मुक्ति प्राप्त होती है।

दृष्टान्त बताकर परम पूज्य स्वामी जी कहने लगे कि रूहानी सफर में प्राणों पर अधिकार करने का बहुत बड़ा महत्व है। प्राणों द्वारा ही चित्त की वृत्तियों का संचालन होता है। हमारे शरीर में जो भी क्रियाएं होती है वे सब हमारे शरीर की ग्रंथियों द्वारा होती है। उन ग्रंथियों से एक प्रकार कर रस निकलता है जिसे हारमोन कहते है। उसी हारमोन द्वारा ही हमारे मन में तृष्णा व अनेक प्रकार की इच्छाए उत्पन्न होती है तथा उन को पूरा करने की चाह पैदा होती है। उन ग्रंथियों का सीधा सम्बन्ध प्राण वायु से है। जब चिंता अथवा गुस्सा आता है तब सांस लेने की गति धीमी हो जाती है। यदि हम उस समय लम्बे सांस लेना शुरू करेंगे तो गुस्सा गायब हो जायेगा और चिन्ता दूर हो जायेगी। इससे सिद्ध होता है कि चित्त को शान्त करने और मन की एकाग्रता के लिये प्राणों को वश में करना बहुत आवश्यक है और यह प्राणायाम द्वारा ही सम्भव है।

परम पूज्य स्वामी जी ने प्राणों के महत्व को समझाने के लिये यह भजन सुनाया।

जिगयासू सांस जी माला सोरि

सुवास जी माला सोरि जिगयासू...

१. सुवास जी माल्हा सोरि सवेरो

आसणु मारे वेहु तूँ अकेलो

मिली मोहन सां करि तूँ मेलो

ओर उन्हींअ सां ओरि....

२. सुवास जी बोली सही सुञाणिजि

अठई पहर अन्दर में आणिजि

चिन्ता थीन्दइ चूरि...

३. सुवास अन्दरि हिक सिप आहे

सिप अन्दर हिकु मोती आहे

मोतीअ में हिक जोती आहे

जोतीअ सां जीउ जोड़ि ...

४. सुवास जी माल्हा फेर सदाई

कंहिं कंहिं गुरूमुख सूझी पाती

कहे टेऊं जिन सुरत मिलाई

तनु मनु तिनि तां घोरि ...

अर्थ:- इस भजन में कहते है कि ऐ जिज्ञासू तुम सांस की माला फेरो अर्थात सांस के आरोह व अवरोह पर ध्यान देकर तुम स्मरण करो। यह सांस की माला तुम प्रात:काल उठकर जपो उस

समय तुम एकान्त में बैठकर अपने प्रियतम परमात्मा से तन की तार मिलाओ। यह जो सांस के अन्दर अजपा जाप चल रहा है तुम उसे पहचनाना और आठों पहर अन्दर यह माला फेरते रहना। अपना मन उससे मिलाने से तुम्हारी सारी चिन्ता चूर हो जायेगी। सांस रूपी इस सीप पूरक व रेचक के बीच में कुम्भक है और उसी के अन्दर एक मोती है और उसी मोती के अन्दर परमात्मा की ज्योति है तुम अपना ध्यान उसी ज्येति के साथ जोड़लो। सांस की माला हर एक के अन्दर आठोपहर चल रही है परन्तु किसी किसी गुरूमुख ने उसे पहचान कर उसके साथ अपनी तार जोड़ी है और जिसने इस के साथ अपनी सुरत मिलाई है वे अपनी मंजिल पर पहुँच गये वे मुक्त होकर परमात्मा से मिलकर एक हो गये। ऐसे महान पुरूषों पर तुम अपना तन मन वार दो।

परम पूज्य स्वामी जी ने भजन बताने के बाद साधकों से कहा कि हमारे परम पूज्य सतगुरू स्वामी टेऊंराम जी महाराज ने इस भजन में साफ साफ बताया है कि परमात्मा से मिलने के लिये सांस की माला फेरनी होगी।

अब आईये यह विचार करें कि यह सांस की माला कैसे फेरी जाये जिस से यह रूहानी सफर पूरा करके परमात्मा से मिल सकें।

प्राणों की गति को चार भागों में बांट सकते है।

1. परक (सांस अन्दर लेना)

2. कुम्भक (सांस अन्दर रोकना अर्थात अन्त: कुम्भक)

3. रेचक (सांस बाहर छोड़ना)

4. सोन्यक (सांस को बाहर रोकना अर्थात बाह्य कुम्भक)

जब प्राण की ये चारो क्रियाएं नियम से की जाती है तब उसे प्राणायाम कहते है। प्राणायाम की अनेक विधियां है जिन में से आठ मुख्य है।

१. नाड़ी शोधन २. कपालबाती ३.भस्तरीका ४.उजाई ५.भ्रमारी ६.शीतली ७. शीसतकारी ८. सूर्य भेदन

योगाभ्यासी अपनी रूचि एवं प्रकृति के अनुसार इस विधियों में से किसी एक विधि का चुनाव कर के अभ्यास करते है। गृहस्थी के लिये नाड़ी शोधन तथा सूर्य भेदन विधि का अभ्यास अधिक लाभकारी है।

प्राणायाम का मुख्य साधन नासिका है। नासिका की दायी ओर सूर्य नाड़ी अथवा पिंगला होती है। बाई ओर को चन्द्र नाड़ी अथवा इड़ा कहा जाता है। इनका प्रभाव अलग अलग है। सूर्य नाड़ी गरम है और चन्द्र नाड़ी शीतल है। जब हम सूर्य नाड़ी द्वारा सांस लेते है तब अन्दर में गरमी पैदा होती है। औरजब चन्द्र नाड़ी द्वारा सांस लिया जाता है तब अन्दर से शीतलता आती है।

शरीर में जब सूर्य तत्व बढ़ जाता है और चन्द्र तत्व घट जाता है तब शरीर में गरमी उत्पन्न होती है और उदर सम्बन्धी रोग होते है। और जब शरीर में चन्द्र तत्व अधिक और सूर्य तत्व कम हो जाता है तब शरीर में शीतलता आ जाती है और कफ सम्बन्धी रोग उत्पन्न होते है।

प्रकृति अपने आप एक नाड़ी खोलकर दूसरी बन्दकर शरीर की आवश्यकता अनुसार यह सन्तुलन रखकर शरीर को निरोग रखती है।

दांयी और (करवट) लेटने से चन्द्र नाड़ी की गति तेज हो जाती है और बांयी करवट लेटने से सूर्य नाड़ी की गति तेज हो जाती है।

अभ्यासी प्राणायाम के अभ्यास से प्राण की गति को वश में कर यह सन्तुलन बिठाता है जिस से रूहानी तरक्की होती है।

परम पूज्य स्वामी जी साधको से कहने लगे कि अब हम योगाभ्यास का शुभारम्भ प्राणायाम से करते है। प्राणायाम करने में किसी प्रकार की जल्दबाजी नहीं करनी है। धीरे धीरे एक एक कदम आगे बढ़ाना है।

सब से पहले किसी खुले स्थान पर जहां स्वच्छ वायु हो वहां कम्बल या गरम कपड़ा बिछाकर बैठना चाहिये। बैठते समय पद्मासन्न, अर्द्ध पद्मासन्न या सुखासन्न में बैठना चाहिये। कमर रीड़खम्ब, गर्दन व सिर एक सीध में रखना चाहिये।

कुछ दिन दोनों नास्काओं द्वारा बिना कुम्भक अर्थात् बिना सांस रोके पूरा सांस भरों और छोड़ो। सांस लेते समय और छोड़ते समय उस पर ध्यान दो और यह अनुभव करो कि सांस अन्दर जा रहा है और सांस बाहर निकल रहा है। अपना ध्यान नासिका के अग्र भाग पर दो। सांस लेते समय 'सो' और छोड़ते समय 'हम' का जाप करो। यह प्रयास करो कि सांस लेते और छोड़ते समय बराबर लगे। सांस नाभी से लेने के लिये पेट को दबाओं।

यह अभ्यास करने के पश्चात जब आनन्द आने लगे तब अलग नासिकाओं द्वारा अभ्यास आरम्भ करना चाहिये। सब से पहले सीधे हाथ के अंगूठे से बांयी नासिका बंद कर धीरे धीरे गहरा सांस अन्दर लो। अब दांयी छोटी उंगली से बायी नासिका बंद कर अंगूठा हटा कर दांयी नासिका खोल दो। और धीरे धीरे सांस बाहर निकालो। सांस छोड़ते समय पेट को दबाओं जिससे सांस पूरी तरह से बाहर निकालो अब दांयी नासिका से सांस अन्दर लो और पेट को ढीला छोड़ो और फिर दांयी नासिका बंद कर बांयी नासिका खोलकर सांस छोड़ो। प्राणायाम का यह एक चक्कर माना जायेगा। प्रारम्भ में यह अभ्यास प्रतिदिन नौ बार करना चाहिये। धीरे धीरे प्रति सप्ताह बढ़ाकर ३०-३५ बार प्रतिदिन करना चाहिये। इस अभ्यास में सांस को रोकना नहीं है अर्थात कुम्भक नहीं करना है। यह अभ्यास तीन माह तक करना चाहिये। इस प्राणायाम को नाड़ी शोधन प्राणायाम कहते है।

नाड़ी शोधन प्राणायाम का अच्छा अभ्यास करने के पश्चात इस में कुम्भक करना है। अब धीरे धीरे सांस अन्दर लो। सांस अन्दर लेने के बाद उसे यथा शक्ति अन्दर रोको। रोकने के पश्चात सांस बाहर निकालो अर्थात रेचक करो। पेट को दबाकर सांस पूरी तरह बाहर निकालो। सांस छोड़ने के बाद उसे बाहर रोकना है, इसे सोनियक अर्थात बाह्य कुम्भक कहते है। प्रारम्भ में यह प्राणायाम प्रतिदिन दो बार करना है धीरे धीरे बढ़ाकर पांच बार करना है। गृस्थियों के लिये इतना ही पर्याप्त है। इसको सूर्य भेदन प्राणायाम कहते है।

जिस समय कुम्भक करते है उस समय यह कल्पना करनी चाहिये कि इस कुम्भक द्वारा हम कुण्डलिनी को जगा रहे है। जोगियों के अनुसार हमारे शरीर में एक रूहानी शक्ति है। एक विद्युत शक्ति है जिसे कुण्डलिनी कहते है। वह कुण्डलिनी मूलाधार चक्र के पास सुप्त अवस्था से सोये हुए सांप की भांति कुण्डली मार कर सो रही है। कुम्भक कर उसके सिर पर प्राण शक्ति का प्रहार कर जगाना है। उस शक्ति को जगाने के पश्चात उसको मेरूदण्ड में स्थित सूक्ष्म सुषिमना नाड़ी द्वारा सात चक्कर भेय कर मस्तक के सिर में स्थित सहसरार में पहुँचाना है। हमारे शरीर में ये चक्कर इस प्रकार है।

१. मूलाधार चक्र - मेरूदण्ड के निचले सिरे पर

२. स्वादिष्ठान चक्र - नाभि प्रदेश से चार उंगली नीचे

३. मणिपुर चक्र - यह चक्र नाभि प्रदेश में स्थित है।

४. अनाहत चक्र - यह हृदय के पास स्थित है।

५. विशुध चक्र - यह कण्ठ के नीचे स्थित है।

६. आज्ञा चक्र - यह दोनों आखों के बीच में स्थित है।

७. सहसरार - यह उल्टे कमल के समान सिर के ऊपरी भाग में स्थित है।

कुण्डलनी को जगाने और उसे एक एक चक्कर पार करवाकर सहसरार तक पहुँचाना की क्रिया प्रबल इच्छा शक्ति तथा ऊँची कल्पना शक्ति से की जा सकती है।

सन्त कबीर साहब ने इस रूहानी सफर को अपने इस पद को बड़े सुन्दर ढ़ंग से विवरण किया है।

अर्द्ध अर्द्ध की गंगा यमुना, मूल कंवर को धट

शट चक्र की गागरी, त्रबेणी संगम बाट,

नाद बिन्दु की नावरी, नाम नाम कंहार

कहइ कबरी गुण गायले, गुर गम उतरै पार।

इस पद में संत कबीर फरमाते है कि यह शरीर छः चक्कर रूपी गागर है गंगा- यमुना इड़ा व पिंगला के संगम पर दसवें द्‌वारा की ओर जाने का रास्ता है मूलाधार के पास घाट है तथा नाद और बिन्दू की नाव में बैठकर राम नाम के गुण करते हुए गुरू द्‌वारा बताए हुए ज्ञान द्‌वारा ही तुम मंजिल पर पहुँच सकते हो।

सन्त श्रोमणी कबीर साहब के मतानुसार भी यह सफर मूलाधार चक्र से आरम्भ होता है। जहांकुण्डलिनी रूपी रूहानी शक्ति सो रही है। इड़ा और पिंगला द्‌वारा प्राण शक्ति से मूलाधार चक्र तक उस सोयी हुई कुण्डलिनी को जगा कर सुष्मना नाडी द्‌वारा उसे छःचक्कर पार करवाकर सहसरार तक पहुँचाना है। जहां नित अमृत वर्षा हो रही है। आत्मा वह अमृत पीकर तृप्त हो जायेगी।

जिन चक्रों को योगियो ने उल्लेख किया है उनके मतानुसार मूलाधार चक्र कुण्डलिनी के ऊपर चार दल के कमल के समान है उसके ऊपर स्वादिष्टान चक्र है जो छःदलों वाला कमल है, इसके ऊपर मणिपुर चक्र है जो दस दल के कमल के समान है। उसके ऊपर हृदय के पास जो अनाहत चक्र है यह बारह दलों वाला कमल है। उसके ऊपर गले के पास विशुद्‌व चक्र

है वह सोलह दलों वाला कमल है उसके ऊपर दोनों भिर्वों के बीच में आज्ञा चक्र है उसके केवल दो दल है। योगी जब ये छः चक्कर योग के बल से पार करता है तब उसे मस्तिष्क में रहने वाले 'शून्य चक्र' में प्रवेश करने की आज्ञा प्राप्त होती है। उसे सहसरार चक्र भी कहते है। यह हजार दलों वाले कमल के समान है। इस स्थान पर जीवन आत्मा और परमात्मा का मेल होता है।

परम पूज्य स्वामी जी साधकों को प्राणायाम के सम्बन्ध में बताने के बाद कहने लगे कि अब हम आपको योग साधना के पांचवे अंग प्रतिहार के सम्बन्ध में बताएंगे।

प्रतिहारः- प्रतिहार का अर्थ है एक तरफ से हटाकर खींचकर दूसरे तरफ लाना। अर्थात मन की बिखरी हुई शक्तियों को खींचकर मन के स्थान पर लाकर रोकने के प्रयास को प्रतिहार कहते है।

यह योग साधना का पांचवां अंग है। ये पांचों ही बहरंग अर्थात् बाह्य साधन कहलाते है। आने वाले तीन साधन आन्तरिक साधन है। बिना प्रतिहार उन तीन साधनों को साधने में सफलता नहीं मिलती। इसलिये योग साधना में प्रतिहार का बहुत महत्व है। प्रतिहार एक दिन में सिद्ध नहीं हो सकता है। निरन्तर अभ्यास करने से और बहुत कोशिश करने पर मी महिने और वर्ष लग जाते है।

मन आदत के वशभूत होकर बार बार बाहर भागने की कोशिश करता है और थोड़ी ही भूल होने पर वह भाग भी जाता है। मन के भाग जाने पर साधक को यह पता ही नहीं चलता कि वह कहां भाग गया। जब थोड़ी देर के बाद उसे होश आता है तब उसे पता चलता है कि मन तो वहां है ही नहीं । वो तो अमुक स्थान पर जा पहुँचा।

साधको ने परम पूज्य स्वामी जी से पूछा कि मन ऐसा क्यों करता है? परम पूज्य स्वामी जी उन्हें समझाकर कहने लगे कि मन बहुत ही चंचल है। वह बन्दर के समान चुलबुला है। इसे बन्दर की तरह एक स्थान पर टिकाऊ नहीं है। वह हर समय उछल कूद

करता रहता है। मन हाथी की तरह बलवान है उसे रोकना बड़ा कठिन काम है। बड़े बड़े यौद्धा मन के आगे मात खा गए। इसलिये कोइ्र भी यह दावा नहीं कर सकता कि मैं क्षण पल में मन को वश में कर लूंगा। यह बात समझाने के लिये परम पूज्य स्वामी जीने साधकों को पुराणो की यह कथा सुनाई।

दृष्टान्तः- एक दिन राजा परीक्षित ने ऋषि वेद व्यास से प्रश्न पूछा कि हे मुनीश्वर। मेरे पूर्वज इतने निर्बल थे जो बार बार मन से मात खाते रहे। इस पर ऋषिवेद व्यास ने उसे समझाकर कहा कि राजन! मन को वश में करना बड़ा दुर्गभ कार्य है। कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि मैंने मन को वश में कर लिया है। मन बड़ा चालाक व चतुर है। वह क्षण पल में इन्सान को भुलावे में डाल देता है राजन! आप भली इस बात को आज़मा के देखों और सुनो! तीन महिने के बाद एक सौदागर आप के पास घोड़े बेचने आयेगा। आप और सब घोड़े अवश्य खरीद करना परन्तु उससे काला घोड़ा मत लेना। यदि आपको पसन्द आ ही जावेतो आप उसे खरीद लेना परन्तु उस पर सवारी बिल्कुल नहीं करना। यदि आप उस पर सवारी कर भी ले तो पूर्व दिशा में कदाचित मन जाना। परन्तु यदि पूर्व दिशा में जाना ही पड़े तो किसी स्त्री से बिल्कुल मत बोलना, बोलना ही पड़े तो उसे अपने साथ तो बिल्कुल मत लाना पर यदि उसके जिद के कारण उसे लाना ही पड़े तो उससे शादी कदाचित मन करना परन्तु यदि शादी का योग बन भी जावे तो भी उसके कहने पर मत चलना यदि उसके कहने पर चलोगे तो अनर्थ हो जायेगा।

ऋषि राजा से विदा होकर रवाना हो गया। कुछ दिन बाद वास्तव में एक घोड़ों का व्यापारी राजा के पास बहुत अच्छे घोड़े लेकर आया। घोड़े एक से एक आला किस्म के थे। परन्तु उन सब में एक काले रंग का घोड़ा सर्व श्रेष्ठ था। क्या तो उसका कद काठी और क्या उसका गठीला शरीर था। दरबारियों की तो उसमें से आंख ही नहीं निकल रही थी। सभी दरबारियों की यह प्रबल इच्छा थी कि राजा को यह घोड़ो अवश्य लेना चाहिये। परन्तु राजा ने कहा कि हम यह काला घोड़ा कदाचित नहीं लेंगे। इस पर दरबारियों ने राजा से निवेदन

किया कि आप भली इस पर सवारी मत करना परन्तु यदि यह घोड़ा हमारे तबेले में होगा तो दूसरे राजा आप की प्रशंसा करेंगे। राजा का मन अब उसे भुलावे में डालने लगा सो कहने लगा कि दरबारियों के कहने पर घोड़ा खरीद कर लेते हैं तबेले की शोभा बढेगी। हम उस पर सवारी नहीं करेंगे। यह तर्क देकर राजा ने आखिर वह काला घोड़ा लेकर फंस गया। वह मन के भुलावे में आ ही गया।

थोड़े दिनों के बाद राजा तबेले में घोड़ों की देखभाल करने गया। वहां सईस ने उस काले घोड़े की बड़ी प्रशंसा की। कहने लगे कि हमने ऐसा घोड़ा जिन्दगी भर नहीं देखा है। जैसी उसकी सुन्दरता बेजोड़ है वैसी ही इसकी सवारी लासानी है। आप एक बार इस पर तो सवारी करके देखो। राजा ने दिल में कहा कि एक बार तो सवारी करके देखते हैं। अधिक से अधिक पूर्व की दिशा की ओर नहीं जायेंगे।

राजा अभी घोड़े पर बैठा ही था कि घोड़ा हवा की तरह उड़ गया। घोड़ा मनमौजी था सो सीधा पूर्व की दिशा की ओर चल पड़ा। राजा ने घोड़े को मोड़ने का भरसक प्रयास किया परन्तु घोड़ा अड़ियल था सो राजा की एक न चली। वहां जंगल में राजा को किसी स्त्री के रोने की आवाज सुनाई दी। आगे जाकर देखा तो एक अति सुन्दर स्त्री अकेली रो रही थी। राजा ने पहले सोचा कि इस स्त्री से बोलना नहीं है। परन्तु मन फिर इसे छलने लगा। सोचने लगा मैं इस देश का राजा हूँ। किसी बेसहारे स्त्री की सहायता करना मेरा कर्तव्य है। सो आगे बढ़कर उस स्त्री के पास गया और उससे पूछा कि तुम इस प्रकार अकेली इस घोर जंगल में क्यों रो रही हो। इस स्त्री ने उत्तर दिया कि मेरे घर परिवार वाले मेरे से बिछड़ गये है और अकेले में डर लगने के कारण मैं रो रही हूँ। आप इस देश के राजा हैं। आप इस संकट की घड़ी में मेरी सहायता करें। कृपया मुझे अपने साथ ले चलो वरना शेर चीते मुझे खा जायेंगे। मैं आपकी दासी बनकर सेवा करूंगी। राजा ने सोचा इस अबला की इस दीन दशा में सहायता करनी चाहिये। महल के किसी एक कोने में पड़ी रहेगी। सो यह सोचकर उसे अपने साथ ले आये। राजा इस प्रकार मन के भुलावे में आ गया।

इस स्त्री ने अपने व्यवहार एवं सेवा द्वारा सभी को ऐसे तो मोह लिया कि सब उसकी प्रशंसा करने लगे। दरबारी राजा को कहने लगे कि यह स्त्री तो साक्षात् लक्ष्मी का रूप है, यह तो आप की पटरानी बनने के योग्य है। राजाने सोचा जब सब कह रहे है तो इस के साथ शादी कर ही लेता हूँ। परन्तु इसका कहना नहीं मानूगां। राजा ने सुख के उस स्त्री के साथ शादी कर ली।

एक दिन उस स्त्री ने राजा से कहा कि महाराज गरीब से गरीब भी जब शादी करता है तब अपने सगे सम्बन्धियों और मित्रों को अवश्य दावत देता है आप यदि और कुछ नहीं करना चाहते है तो कम से कम साधु महात्माओं और गुरू ब्रह्मण को तो भोजन करवाओ। राजा ने सोचा कहती तो सच्च है। इस में कौन सा हरजा है। ब्रह्मा भोज कर ही लेते है यह तो पुन्य का काम है। सो एक दिन साधु सन्तों और महात्माओं को निमंत्रण देकर भोजन पर बुलवाया।

जब राजा स्वयं साधु सन्तों को अपने हाथ से भोजन करवाने लगा। तब उस स्त्री ने राजा से विनती की कि मैं आप की अर्द्धांगिनी हूँ सो मुझे आज्ञा दीजिये तो मैं भी आपके साथ सेवा करूं सन्तों को भोजन करवाऊँ। राजा को इस में कोई भी बुराई नहीं नजर आई सो उसे सेवा करने की आज्ञा दे दी। रानी की अद्भूत सुन्दरता देखकर साधु महात्मा आश्चर्य चकित हो गए। उनकी आँखे खुली की खुली रह गई। वे जंगल के निवासी सो उन्होंने ऐसी सुन्दर स्त्री कभी नहीं देखी थी। उनकी रानी में से आँखे ही नहीं हट रही थी। यह स्थिति देखकर रानी राजा को कहने लगी कि आपने ये कैसे महात्मा बुलवाये है जो मुझे इस प्रकार ताक रहे है। ये तो कोई गुण्डे और बदतमीज़ इन्सान नज़र आते है।

यह हाल देखकर राजा को बहुत गुस्सा आया वह गुस्से से आग बबूला हो गए। कहने लगा इनकी क्या मजाल जो ये मेरा अपमान करें। रानी मेरी इज्जत है। रानी के साथ बदतमीज़ी कर इन्होंने मेरा अपमान किया है। मैं इनका सिर कलम कर दूंगा। सो राजा ने

तलवार मयान से खींच ली और साधुओं को मारने को दौड़ा। इतने में ऋषि व्यास प्रकट हो गए। और राजा का हाथ रोककर बोले कैसी रही। आखिर आप भी मन के भुलावे में आ ही गए। यदि मैं आप को नहीं रोकता तो आप तो अनर्थ कर देते। आप ने जो कहा कि मेरे पूर्वज इतने निर्बल थे कि मन के आगे झुक गए। अब आप बताईये कि इस पापी मन ने आपसे क्या क्या नहीं करवाया। सतर्क करने के पश्चात भी आप एक के बाद एक मन के भुलावे में आते रहे। ये सुनकर शर्म से राजा का सर झुक गया।

यह दृष्टान्त बताकर परम पूज्य स्वामी जी साधको को कहने लगे कि मन की चंचलता के बारे में छठे अध्याय में अर्जुन ने भगवान श्री कृष्ण से विनती की है कि हे मधुसूदन यह ध्यान योग जो आपने समताभाव से बताया है सो मन के चंचल होने के कारण उसके अधिक समय तक कायम रहने की स्थिति नहीं देखता हूँ। क्योंकि हे श्री कृष्ण! मन बड़ा चंचल कठोर स्भाव वाला व हठी तथा बलवान है इसलिये मैं समझता हूँ कि मन को वश में करना वायु को वश में करने के समान कठिन है।

आखिर ऐसे चंचल और हठी मन को वश में कैसे करें? उसको अन्तर्मुख कैसे करें? परमपूज्य स्वामी जी कहने लगे कि मन को वश में करने व अन्तर्मुख करने का एक बहुत ही सरल रास्ता है कि सत्संग का सहारा लिया जाये। ऐसे सतगुरू की शरण लेनी चाहिये जिसने स्वयं तपस्या कर मन का वश में किया हो। उनके तप और वैराग्य द्वारा उनके चारों और एक आभा मण्डल बन जाता है। जब कोई श्रद्धालु उनके निकट जाता है तब वे अपने तेजस किरणों द्वारा उसके मन के मैल को जलाकर भस्मकर उसके हृदय को निर्मल बना लेते है।

इसलिये मन को शुद्ध एवं निर्मल रखने के लिये सत्पुरूषों की संगति में रहना चाहिये। परन्तु यदि सत्वृतिवाला साथी नहीं मिले तो एकान्त में रहना चाहिये। क्योंकि मन का रूप पानी जैसा है। जैसे पानी जिस पात्र में डाला जाता है व उस पात्र की शक्ल अखित्यार कर लेता है जैसे ग्लास में डालने से ग्लास जैसी थाल में डालने से थाल जैसी और घड़े में डालने से घड़े

जैसा आकार ग्रहण कर लेता है इस प्रकार मन भी भलों की संगति से भला और बुरों की संगति से बुरा बन जाता है।

इसलिये मन को वश में करने के लिये सत्संग और सत पुरूषों की शरण मे जाना परम आवयक है। इस बात को स्वामी साहब ने अपने इस पद में बहुत खोलकर समझाया है।

जंहि जीतयो मन, मिली साध संगत सां

स्वामी तंहिजे मुख में निकिरे सार वचन

रहे सदा प्रसन्न संसे रे सन्सार में।

अर्थ:- स्वामी जी कहते है जितने साधु सन्तों के संगति में जाकर अपने मन को जीत लिया है उसके मुख से सदा सार की बातें निकलती है और वह संसार के प्रपंचो से मुक्त होकर सदा प्रसन्न रहता है।

शक्तिशाली विचार चाहे वह अच्छा हो अथवा बुरा वह अपने चारों ओर का वातावरण अपने अनूकूल बना लेता है जितने लोग उस वातावरण की सीमा में आते जाते है वे उसके अनुकूल बन जाते है। शान्ति और आनन्द में रंगा हुआ महापुरूष शंत और अनंदमय वातावरण बनाता है। लोग उनके समीप जाकर शान्ति और आनन्द पाते है। उन महापुरूषों के सामने मन का वश नहीं चलता है। वह बिना आघात किये वहां जकड़ा रहता है। इस का नाम ही सत्संग है। जिसे भाग्य से ऐसा सत्संग तथा सत्पुरूषों का संग मिल जाये तो फिर उसका कारज सहज से सिद्ध हो जाता है। वर्षों का काम चन्द दिनों में हो जाता है।

यदि ऐसा सुअवसर नहीं मिलते तो उसके लिये दूसरा उपाय भी है। इस उपाय द्वारा भी दिनों दिन मन में निर्मलता आती रहती है। और मन कुछ समय थककर अपने स्थान पर आकर टिक जाता है। उसपर जीवन आत्मा का अधिकार हो जाता है। यह क्रिया भी सहज है।

जैसे कि इस स्थूल देह को बनाने के लिये पांच ज्ञानेन्द्रया है। वे उत्तम एवं सूक्षम है। इन्द्रियों से मन सूक्षम है तथा उत्तम है। मन के संलल्प से इन्द्रिया विषयों की ओर प्रवृत्त होती है।

इसलिये इन्द्रियों से मन सूक्षम व उत्तम है। मन में बुद्धि द्वारा ही इच्छा उत्पन्न होती है और निश्चय होता है।

इसलिये मन से बुद्धि सूक्षम व उत्तम है। बुद्धि को जीवन आतम प्रकाशित करती है। इस सब पर उसका अधिकार और सभी उसके अधिकार में है। और सभी उसकी आज्ञा में चलते है। इसलिये बुद्धि से जीवात्मा सूक्षम एवं उत्तम है।

अब हमने देखा कि मन आत्मा से ही शक्ति लेकर कर्म करता है जब मन इस शक्ति से शक्तिशाली बनता है तो इस शक्ति से उसे बांधा भी तो जा सकता है। यदि मन को इम चंचल व चुलबुला घोड़ा माने जो किसी रस्सी से बन्धां हुआ हो फिर यह विश्वास होना चाहिये कि कहीं भी भाग नहीं सकेगा। फिर ऐसे घोड़े को खुला छोड़ देना चाहिये और थकने पर दो चाबुक मारने में कोई नुकसान नहीं है। समय आयेगा जब वह थककर गर्दना झुकाकर आकर सामने खड़ा हो जायेगा। उस सयम आप उससे मन चाहा कार्य करवा सकेंगे। यही क्रिया मन के साथ करनी है।

आप यह सोचें कि आप आत्मा है और मन आप की सवारी का चुलबुला घोड़ा है। वह शक्ति रूपी रस्सी से बंधा हुआ है। उसे खुला छोड़कर दौड़ने दो बाहर जाना चाहे तो उसे जाने दो और अन्दर रहना चाहे तो अन्दर रहने दो। मन को रोकने को प्रयास नहीं करो। इसे खड़े रहकर दर्शन बनकर तमाशा देखते रहो। मन को छेड़ो मत। जो करना चाहे करने दो परन्तु स्वयं को उससे अलग समझो। आप देखेंगे कि थोड़े दिनों में उसकी उछलकूद कम हो जायेगी। और उसमें थोड़ी थोड़ी शक्ति आ जायेगी। परन्तु इस क्रिया को छोड़ों मत जब तक

पूर्ण शक्ति न आवे। यह प्रतिहार की एक अच्छी विद्या है। इससे मन पर शीघ्र अधिकार हो जाता है।

परम पूज्य स्वामी जी साधकों को मन को अन्तर्मुख बनाने की ये दो सहज विधियां बताने के पश्चात कहने लगे कि मन को मोड़ने के बाद इस चंचल मन को किसी एक बिन्दु या केन्द्र पर टिकाना होगा। मन रूपी चुलबुले घोड़े को किसी खूंटे से बांधना पड़ेगा। इस क्रिया को योग की भाषा में धारणा करते है। अब आईये उस पर गइराई से विचार करें।

धारणा:- धारणा धारण करने अथवा पकड़ने को कहते है। मन की शक्तियों को समेटकर एक केन्द्र पर लगाने को धारणा कहते है। यह क्रिया करते समय मन स्वाभव अनुसार बाहर भागता है। उसे प्रतिहार द्वारा निश्चित किये गये स्थान पर टिकाना ही धारणा है। धारणा के लिये केन्द्र स्थूल अथवा सूक्षम में से लिया जा सकता है। स्थूल केन्द्र को हम अपने नेत्रों से देख सकते है। परन्तु सूक्षम केन्द्र की तो केवल कल्पना की जा सकती है स्थल केन्द्र हमारा देखा हुआ है किन्तु सूक्षम केन्द्र हमारे इन स्थूल आंखों से दखा हुआ नहीं है। इसलिये उसकी तो कल्पना करनी होगी। आगे अभ्यास करते करते हमारी दृष्टि जितनी सूक्षम होती जायेगी उतना उस कल्पना की वस्तु का असली रूप हमारे सामने आता जायेगा। एक दिन वह स्वयं हमारे सम्मुख प्रकट हो जायेगा। उस समय जो रूप हमारे कल्पना में बनाया था वह लुप्त हो जायेगा और असली रूप सामने आ जायेगा। इस में कुछ समय लग सकता है परन्तु निश्चय पूर्वक प्रयास करने पर सफलता अवश्य मिलेगी।

मन को एकाग्र करने के लिये हम बाहर की कोई भी वस्तु ले सकते है और अन्दर की भी कोई वस्तु ले सकते हैं। परन्तु दोनो के लाभ अलग अलग हैं। कई लोग सूर्य अथवा चन्द्रमा पर त्राटक करते हैं। कई तो दीपक की लौ पर दृष्टि जमाते हैं। कुछ लोग दीवार पर काला गोला बनाकर उस पर नजर जमाते हैं। ऐसा करने से मन की शक्तियां जागती हैं। परन्तु इस से रूहानी तरक्की नहीं होती है। इसलिये इसे आसुरी योग कहते हैं।

दैवी योग में बाहर से वृति को समेटकर अन्दर में लगाते हैं। इसके लिये भी अन्दर कोई केन्द्र बनाना पड़ता है। मनका केन्द्र ही सबसे श्रेष्ठ है। मन हृदय में निवास करता है इसलिये इस कार्य के लिये हृदय को ही सर्व श्रेष्ठ माना गया है। यह समझाकर परम पूज्य स्वामी जी ने साधकों को यह भजन सुनाया जिसमें बताया है कि प्रभू को दर्शन हृदय में करो।

भजन

दिल में थिए दीदार हरीअ जो

ऐन अन्दर जा खोल

१. हरदम तोसा हरी रहे थो

बाहिर ना तूँ गोलि

सही सुञाणिज दम पहिंजे खे

जंहिजों मल्ह अमोल ...

२. सर्व व्यापी सर्व स्नेही

साखी रूप अतोल

तुहिंजो तोमें साहिबु आहे,

झंगल जबल ना गोलि...

३. जंहिं कारण तूँ झंगल झागीं थो

सो आहे तुंहिजों कौल

वेही वैरागी वटि तुंहिजे

बोल बटे के बोलि...

४. दम दम सां जो दम हले थो

तंहिमें राम रतोल

माधव माणिज साहिबु सोई

शान्ति रूप अदोल...

अर्थः- परम पूज्य स्वामी जी इस भजन में कहते है कि तुम अन्दर की आंखो खोलों और अपने अन्दर झांको तो आपको परमात्मा तो आपके साथ हरदम में रहते है इसलिये तुम उसे बाहर मत ढूंढो। तुम अपने सांस को सही तरह पहचानों क्योंकि यह सांस अमूल्य है। परमात्मा तो सर्व व्यापी और सर्व स्नेही है और वे तो सर्व के साक्षी है और वही सर्व स्वापी, सर्व स्नेही परमात्मा आपके अन्दर ही है इसलिये तुम उसे जंगलों और पर्वतों में मत ढूंढो। जिस कारण तुम जंगलों में भटकते हो वह तो तेरे पास है बस किसी कामिल गुरू के पास बैठकर उसकी कृपा से उसके दर्शन अपने अन्दर ही करो। यह जो सांस की स्मरणी चल रही हे उसी में ही परमात्मा समाये हुए है। स्वामी जी कहते है उसी परमात्मा को पहचानों तो तुम्हे परमानन्द प्राप्त हो।

यह भजन सुनाकर परम पूज्य स्वामी जी साधकों को कहने लगे कि राज योग में धारण के दो अलग अलग रास्ते बताये गये है। एक उपासना और दूसरा योग। उपासना करने वाला अपने हृदय में केन्द्र बनाकर उसमें ध्यान लगाकर परमात्मा के दर्शन करने का प्रयास करता है। इस रास्ते से परमात्मा के दर्शन शीघ्र होते है। योग का रास्ता अपनाने वाला साधक अपना ध्यान 'आज्ञा चक्र' अर्थात 'दसवें द्वारे' अर्थात दोनों भृवों के बीच में जमाते है। वहां ध्यान जमाने वालों को कुछ सिद्धियां भी प्राप्त होती है परन्तु मंजिल पर पहुँचने में कुछ समय लगता है। साधक को जब सिद्धियाँ प्राप्त होती है तब उसमें अहंकार उत्पन्न होने का

भय है और अहंकार आने से गिरावट होती है, इसलिये इन सिद्धियों में कभी भी नहीं फंसना चाहिये। ध्यान सदा अपनी मंजिल अर्थात परमात्मा की प्राप्ति पर ही होना चाहिये।

धारणा के समय ध्यान जमाने के लिये किसी आवलम्ब अथवा सहारे की आवश्यकता है। उसके दो रूप है। एक साकार दूसरा निराकार। साकार रूप से हम परमात्मा के किसी भी रूप का सहारा ले सकते है। या उसके लिये सतगुरू महाराज के संजीव स्वरूप का ध्यान करना भी बहुत सहज है क्योंकि उनके दर्शन हम इन स्थूल आंखों द्वारा नित्य करते रहते है। ऐसे स्थिति में उस मूर्ति को धारण करना सहज है। परमात्मा के लिये निराकार रूप का ध्यान करने के लिये उनके तेज का ध्यान किया जाता है। उनका और उनके अलोकिक ज्योति के दर्शन करने का प्रयास किया जाता है।

दोनो रास्ते एक ही मंजिल पर पहुँचाते है। ये दोनों रास्ते मन के लिये सहारे मात्र ही है। जब आत्म साक्षत्कार होता है तब इन सहारों की कोई भी आवश्यकता नहीं होती है, तब परमात्मा का निज स्वरूप साधक के सामने साफ सुथरा सामने आ जाता है।

परम पूज्य स्वामी जी कहने लगे कि निराकार भक्ति से साकार भक्ति सरल है। इसलिये साकार भक्ति का सहारा लेकर आसानी से मंजिल पर पहुँच सकते है। श्री कृष्ण भगवान ने श्रीमद् भगवाद्गीता के बारवें अध्याय में साकार भक्ति को सहज बताते हुए अर्जुन से कहा कि:-

हे अर्जुन! मेरे में मन का एकाग्र कर सदैव मेरे ध्यान भजन में जो भक्त अति उत्तम श्रद्धा से मुझ सगुण रूप परमेश्वर में लीन होकर भजन करता है, उस भक्त को मैं योगियों में अति श्रेष्ठ योगी मानता हूँ।

'उस सचानन्द गहन निराकार ब्रह्म में आसक्त चित्त वाले पुरूष को साधना में बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ता है। क्योंकि देह धारियों को अनदेखे अलख की गति बहुत कष्टों से प्राप्त होती है।

परम पूज्य स्वामी जी गीता के श्लोक बताकर कहने लगे कि साधक के लिये साकार भक्ति बहुत सरल है। हृदय में सतगुरू महाराज के नूरी स्वरूप को धारन कर सांस द्वारा गुरू मंत्र का जाप करने से बहुत शीघ्र आत्म साक्षात्कार होता है।

इस प्रकार धारणा के समय मन को पूर्ण रूप से एकाग्र, एक बिन्दु पर इस प्रकार धारण करना है कि उस समय कोई दूसरा विचार या चिन्ता हृदय में नहीं आवे। उस समय यदि यह चंचल मनबाहर भाग जावे तो प्रतिहार द्वारा उसे उस केन्द्र बिन्दु पर टिकाना है। इस प्राकर मन को एकाग्र करने से साधना सफल होगी। यह बात समझाने के लिये साधको को महाभारत की कथा सुनाई।

दृष्टान्तः- गुरू द्रोणाचार्य कौरवों और पांडवों को अस्त्र और शस्त्र की शिक्षा देते थे। एक दिन गुरू जी ने सब की परीक्षा ली। परीक्षा लेने के लिए एक पेड़ पर चिड़िया रखकर उसे निशाना बनाने के लिये कहा।

अब उन्होंने एक राजकुमार को बुलाकर निशाना साधने के लिये कहा। सबसे पहले उसने दुर्योधन को बुलाया। तीर चलाने से पूर्व उससे पूछा कि तुम क्या देखते हो। दुर्योधन ने उत्तर दिया कि गुरू जी मैं आपको, सभी राजकुमारों को पेड़ को, पेड़ पर बैठी चिड़िया की और उसकी आँख देख रहा हूँ। गुरू द्रोणाचार्य ने उसे एक तरफ खड़े रहने के आदेश दिया। इस प्रकार वह एक एक राजकुमार को बुलाकर यही प्रश्न पूछता रहा। उसके अत्तर में किसी ने कहा कि मैं सब कुछ देख रहा हूँ। किसी ने कहा कि मैं पेड़ और चिड़िया देख रहा हूँ किसी ने कहा कि मैं पेड़ पर बैठी चिड़िया देख रहा हूँ।

आखिर गुरूदेव ने अर्जुन को बुलाकर यही प्रश्न पूछा। उस पर अर्जुन ने उत्तर दिया कि इस समय मैं केवल चिड़िया की आँख देख रहा हूँ। जिस पर मुझे निशाना बनाना है। इस के सिवा मुझ इस समय कुछ भी नहीं दिखता है। गुरू द्रोणाचार्य अर्जुन के इस उत्तर पर

बहुत प्रसन्न हुए। उसकी पीठ थपथपाकर उसे शाबाशी देकर कहा कि तुम ही इस परीक्षा में उत्तीर्ण हुए हो।

यह दृष्टान्त बताकर परम पूज्य स्वामी जी साधकों को कहने लगे कि साधना के समय हमें भी अर्जुन के समान अपना सम्पूर्ण ध्यान एक स्थान पर एकाग्र चित्त से लगाना है तभी हम सफलता मिल सकती है। धारणा की अवस्था में साधक 'मैं' औ 'मेरा' भुलाकर अपने परमात्मा के चरणों में समर्पित कर देता है उसे आत्म साक्षात्कार होता है।

परम पूज्य स्वामी जी साधकों को धारणा के सम्बन्ध में भली भांति समझाने के पश्चात अब ध्यान के सम्बन्ध में समझाने लगे। क्योंकि अन्य सभी साधनों में 'ध्यान' का सबसे पहले अधिक महत्व है। दूसरे सभी साधन तो केवल 'ध्यान' की स्थिति प्राप्त करने के लिये किये जाते है रूहानी सफर का असली पड़ाव तो ध्यान ही है। इस लिये हम इसके बारे में गहराई से विचार करेंगे।

ध्यान:- जिस प्रकार सोने को तापने से उसका खोट समाप्त हो जाता है और शुद्ध और साफ हो जाता है। इस प्रकार ध्यान करने से मन का राजस रूपी मैल साफ हो जाता है और सतोगुण का प्रकाश उत्पन्न हो जाता है।

धारणा की स्थिति में ईश्वर की उपासना करते करते जब धारणा की स्थिति हृदय कमल में होती है तब जीव आत्मा में मग्न हो जाती है, ईश्वर से साक्षत्कार होता है। उसके फलस्वरूप मन निविर्षय हो जाता है। जीव आत्मा सागर के समान गम्भीर एवं स्थिर हो जाती है। मन संसार के व्यवहार को भूलता जाता है। और बालक के समान भोला और निर्विकार हो जाता है।

ध्यान से योगी के मस्तिष्क में ज्योति उत्पन्न होती है। उसका शरीर, मस्तिश्क, ज्ञान, चेतनता और विश्वास, ये सभी इस परमात्मा के चिन्तन में एकाग्र हो जाते हैं। उस समय साधक को परमानन्द की अनुभूति होती है। ऐसा साधक सन्तुलित, विनम्र और

शान्तचित वाला होता है। वह अपने सभी कर्मों को प्रभू को अर्पण करता है और कर्म के फल से मुक्त हो जाता है।

ध्यान के पश्चात परम पूज्य स्वामी जी साधकों को समाधि के सम्बन्ध में बताने लगे।

समाधि:- ध्यान की गहरी अवस्था जिस में अपना भी ज्ञान नहीं रहे और न ही बाह्य वस्तुओं का ज्ञान रहे ऐसी अवस्था को समाधि कहा जाता है। इस समाधि को उपनिषदों में सुसुप्त कहा जाता है। इस अवस्था में पहुँचकर मन बिलकुल शान्त हो जाता है। और मन के शान्त होते ही इन्द्रियां और बुद्वि भी शान्त हो जाती है। और साधक तत्व ज्ञान और साक्षात्कार का अधिकारी हो जाता है। यह साधनों का अन्त और सिद्वि का आरम्भ है। आगे बुद्धि योग की शुरूआत है। इसके पश्चात साधक को ब्रह्मज्ञान एवं ब्रह्म विद्या मिलती है।

ऐसी समाधि तक पहुँचने से साधक को अन्दर में अलौकिक शक्तियों का अनुभव होता है। मन की कई सोयी हई शक्तियाँ जाग्रत होकर उसके सामने आती है जिस के द्वारा वह सांसारिक और अलौकिक कार्य कर सकता है परन्तु इन शक्तियों को सांसारिक पदार्थों को प्राप्त करने में लगाने से साधक परमात्मा से दूर चला जाता है। इसलिये उन को आरे आँख उठाकर भी नहीं देखना चाहिये। ये विभूतियां योग के लिये बाधक है। ये सब रास्ते की वस्तुएं है जो साधक उनमें फंसेगा वह आत्म उन्नति नहीं कर सकता है।

परम पूज्य स्वामी जी साधको को यह गूढ़ ज्ञान सरल करके बताने लगे ताकि साधक उसका अभ्यास सरलता से कर सकें। बारह सेकन्ड जब किसी केन्द्र पर मन एकाग्र करते है तब वह एक धारणा बनती है। जब धारणा की स्थिति बारह गुना हो जाती है तब एक ध्यान बनता है। जब ध्यान की स्थिति बारह गुना अर्थात् जब मन आधे धण्टे तक एकाग्र होता है तब एक समाधि बनती है।

योग साधना की शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात साधकों ने परम पूज्य स्वामी जी को करबद्ध सादर विनती की कि अब हमें कृपा कर दीक्षा देकर विधि पूर्वक नाम दान की कृपा करें ताकि योग साधना के समय नाम स्मरण कर मंजिल पर पहुँच सकें। उनकी विनती स्वीकार कर परम पूज्य स्वामी जी ने उन्हें नाम दान की कृपा कर कुछ अवश्यक हिदायतें कहीं।

सब से पूर्व प्रातः काल ब्रह्म महूरत में उठकर आवश्यक कार्यो से निवृत होकर मृगछाला, कुश अथवा ऊनी वस्त्र या कम्बल बिछाकर अर्द्ध पद्म आसन्न अथवा सुखासन्न में बैठकर कमर, पीठ गर्दन और सर को एक सीध में कर बैठना चाहिये। अब सांस को ध्यान देते हुए सांस लेते समय 'सो' और छोड़ते समय 'हम' का स्मरण करना चाहिये स्मरण करते समय भिर्वों के बीच में आज्ञाचक्र अथवा हृदय में परमात्मा के किसी भी स्वरूप का अथवा सतगुरू महाराज के नूरी स्वरूप का ध्यान करना चाहिये। निराकार भक्ति करने के लिये उस साकार स्वरूप के स्थान पर दिव्य ज्योति के दर्शन करने चाहिये। इस प्रकार सायंकाल संध्या के समय भी ध्यान करना चाहिये। जिस समय दिन समाप्त होता है उस रात्रि आरम्भ होती है उस समय को संध्या कहते है। उस समय मन शान्त होता है। ऐसे समय पर आसानी से ध्यान एकाग्र होकर परमात्मा के चरणों में लगता है।

साधक जो आत्मिक उन्नति चाहते है इस लोक में सुख शान्ति और परलोक सुधारना चाहते है। उनको नाम की कमाई नियम से प्रतिदिन अवश्य करनी चाहिये। साधना करने से ही सिद्धि प्राप्त होगी।

'नाम दान' लेना अथवा सतगुरू की शरण लेने का अर्थ है कि आपके एक उच्च कोटि के विद्यालय में प्रवेश ले लिया है। अब प्रवेश प्राप्त करने के पश्चात विद्यार्थी परिश्रम से एक एक कक्षा उत्तीर्ण करता है। उस उच्च कोटि के विद्यालय से प्रवेश लेने के पश्चात यदि परिश्रम नहीं करेगा तो वह विद्यार्थी फेल हो जायेगा और उसको प्रवेश लेने से कोई लाभ नहीं होगा। इस प्रकार साधक भली किसी भी उच्च कोटि के सतगुरू से 'नाम दान' लेवे

परन्तु जब तक सुबह, सायं काल आसन्न पर बैठकर कमाई नहीं करेगा नाम का स्मरण नहीं करेगा। तब तक उसकी आत्मिक उन्नति नहीं हो सकती।

योग साधना तथा भक्ति के महत्व को भली भान्ति समझाने के लिये परम पूज्य स्वामी जी ने साधकों को यह भजन सुनाया।

भजन

रहिणीअ सां योगी सिद्धीअ खे था पाईनि

फुरिणा सब मिटाए ब्रह्म में समाईनि

१. धरे ध्यान दिल में ॐ जे अखर जो

प्राणनि खे रोके टिक में टिकाईनि....

२. विहन से वैरागी पद्म आसन्न ते

वृतिअ खे त द्वारे दसवे लगाईनि...

३. सुणी साज़ सुहिणों अनहद जे आवाज़ जो

शब्द साणु सुरिती मोड़े त मिलाईनि....

४. सिद्धिअ साण साधे 'माधव' मुद्राऊँ

अखण्ड जोति अनुभव अन्दर में जगाईनि...

अर्थ:- परम पूज्य स्वामी जी इस भजन में कहते है कि योगी अपनी रहनी और साधना द्वारा ही सिद्धि प्राप्त करते है। वे अपने मन से सभी प्राकर के संशय मिटा कर ब्रह्म में लीन हो जाता है। वे योगी दिल में ॐ का ध्यान कर अपनी वृति सास रोक कर अपने लक्ष्य में लगाते है। वे वैरागी पद्म आसन्न पर बैठकर अपनी वृति को दसवें द्वारे लगाते है। वे लोग उस ध्यान

की स्थिति में अपने अन्दर में 'अनहद नाद' का सुन्दर साज सुनकर अपनी सुरत बाहर से हटाकर अन्दर से उसके साथ मिलाते है। वे योगी अपनी सिद्धि मुद्राओं को साथ कर अपने अन्दर उस अखण्ड अनुभव ज्योति को जगाते है।

इस भजन द्वारा परम पूज्य स्वामी जी ने साधकों को योग साधना की रहस्यमय विधि बहुत खोलकर समझाई है। यह भजन साधक के लिये ज्ञान का सागर है। इस ज्ञान के सागर को परम पूज्य स्वामी जी ने इस भजन रूपी गागर में समाकर साधकों को बताया है। इस भजन का हरेक पद् अनुकरणीय है तथा धारण करने योग्य है। इस प्रकार इसका अनुसरण कर साधक सिद्धि प्राप्त कर सकता है।

परम पूज्य स्वामी जी साधकों को समझाकर कहने लगे कि योग साधना करते हुए एवं नाम का स्मरण करते हुए साधक को अलौकिक आत्मिक अनुभव होते है तथा उसे कुछ सिद्धियां प्राप्त होती है। उनकी चर्चा किसी से नहीं करना चाहिये। ये अनुभव केवल अपने सतगुरू महाराज को बताकर उनसे उचित मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिये। वैसे नाम का स्मरण लोगों से छिपाकर करना चाहिये। अपने कमाई की बात हमेश गुप्त रखनी चाहिये। इस सम्बन्ध में सामी साहब ने भी हिदायत दी है-

दरि दरि कीन बुधाई सामी सिक पिरियुनिजी

त लऊं लऊं मंझि लखाई मूरत महबूबनि जी।

सामी साहब इस पद में कहते है कि तुम्हारे मन में जो परमात्मा का प्रेम है उसका तुम ढंढोरा मत पीटो तुम अन्तमुर्ख होकर अपनी प्रीत उस परमात्मा से छिपाकर लगाओं तो फिर तुम्हारे रोम रोम में तुम्हें उस परमात्मा के दर्शन होगे।

परम पूज्य स्वामी जी साधको को कहने लगे कि योग साधना करने वाले जिज्ञासु को अपने आहार की ओर भी विशेष ध्यान देना चाहिये। क्योंकि जैसा अन्न वैसा मन। इसलिये

भोजन सादा सात्विक ही करना चाहिये। सात्विक भोजन की व्याख्या भगवान श्री कृष्ण ने गाता में करते हुए अर्जुन को बताया है कि:-

आयु, बुद्धि, बल, स्वास्थ्य, सुख एवं रूचि बढ़ाने वाला, रसदायक, पूर्ण पक्का हुआ, शक्ति वर्द्धक पदार्थ सात्विकी पुरूष को अच्छे लगते है।'

परम पूज्य स्वामी जी कहने लगे कि साधक को परमार्थ के पथ पर चलने के लिये तथा परमात्मा को प्राप्त करने के लिये अपने रहन सहन और आचार विचार की ओर विशेष ध्यान देना होगा। भगवान श्री कृष्ण ने इस समबन्ध में श्रीमद् भगवद् गीता में कहा है कि:-

जो किसी से बैर भाव नहीं रखता, जो सभी का मित्र है, जिस के हृदय में सभी के प्रति दया भाव है, जिसका अहंकार चला गया है जो सदा सन्तुष्ट है, जो योग युक्त है तथा दृढ़ निश्चिय वाला है जिसका मन और बुद्धि ईश्वर में अर्पित हो चुका है वे मेरे प्रिय भक्त है। जो व्यक्तियों से खिन्न नहीं होते और न ही लोग उनसे खिन्न होते है। जिन्होंने अधिक दुख और खुशी, डर व भड़कना त्याग दिया है ऐसे भक्त मुझे प्रिय है। जो किसी के सहारे नहीं है जो विचारवान एवं दक्ष है जो सुख दुख में सम है, जिनका दुख चला गया है जो निन्दा व प्रशंसा में सम रहते है अर्थात् न निन्दा सुनकर दुखी होते है और न ही प्रशंसा सुनकर फूलते है, कम बोलने है और अधिक चुप रहते है, जो मिले उसी में सन्तुष्ट होते है जिन का घर गृहस्थी से विशेष लगाव नहीं है। जिनका सारा जगत ही घर है जिनकी बुद्धि स्थिर है। ऐसे व्यक्ति ही मेरे प्रिय भक्त है। ऐसे जिज्ञासू ही योगी बन सकते है।

परम पूज्य स्वामी जी जिज्ञासुओं को कहने लगे कि इस प्रकार योग साधना करने पर जब आपको सिद्वि प्राप्त हो, ज्ञान प्राप्त हो, यश प्राप्त हो तथा धन प्राप्त हो तब तुम सदा शान्त और विनम्र बने रहना। अपने आप को दूसरों से ऊपर उठा हुआ एवं श्रेष्ठ मानकर, ज्ञान, यश तथा धन का घमण्ड मत करना क्योंकि अहंकार आने से व्यक्ति की अवन्नति

होती है और वह गिर जाता है। परम पूज्य स्वामी जी ने साधको को अहंकार के सम्बन्ध में सामी साहब का यह श्लोक बताया।

सुदीअ मंझिरवुवार, थिया बेख, गृहस्थी लोक सभु

मनी वेठा मन में वधि लिखेद वहिंवार,

जागी दिसनि कीन की साखी सिरजणहार

सामी पाईन छारि, था समिझ वराए सिरजणहार।

स्वामी साहब इस श्लोक में कहते है कि इस जगत में जिस किसी ने अहंकार किया है वह गिरा है, चाहे वो योगी हो सन्यासी हो अथवा गृहस्थी। जिस किसी ने अभिमान किया उसकी आंखे उस मद में बंद हो जाती है, वे उस सर्वशक्तिमान प्रभू को भूल बैठे है। ऐसे लोगों की बुद्धि नष्ट हो जाती है और वे बरबाद हो जाते है।

यह श्लोक बताने के पश्चात परम पूज्य स्वामी जी साधको से कहने लगे कि ज्ञानवान पुरूष को पेड़ों से सबक सीखना चाहिये। जैसे फलदार पेड़ फल लगने पर अधिक झुकता है। उसी प्रकार विद्या ग्रहण करने पर हमारे स्वभाव में अधिक नम्रता आनी चाहिये। हमारे व्यवहार में मिठास आना चाहिये। हमें अपने आपको ऊँचा नहीं समझना चाहिये। हमें सभी को समान समझना चाहिये। सभी को सम्मान देना चाहिये। अहंकार आने पर अभ्यासी की क्या दशा होती है यह बात समझाने के लिये पुराणों से एक दृष्टान्त बताया।

दृष्टान्तः- महऋषि याज्ञवल्क के आश्रम में सेकडों विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे। यहां पर साधकों को वेदों की उच्च शिक्षा दी जाती थी। उन विद्याथियों में महऋषि के दो खास शिष्य थे गुरूशेवी तथा कुशाग्रबुद्धि वे दोनों शिष्य बुद्धिमान एवं परिश्रमी थे। वे दोनों अपने गुरूदेव की बड़ी श्रद्धा से सेवा करते थे।

परन्तु कुछ दिनों से उनके व्यवहार में परिवर्तन देखकर गुरूदेव को चिन्ता होने लगी। वे अपने साथियों से बात करते समय अपने ज्ञान एवं विद्धता का दिखावा करने लगे। उन में अहंकार आ गया था। अहंकार आने पर ज्ञान कचरे में पड़े सोने के समान हो जाता है। ज्ञान आने पर तो नम्रता आनी चाहिये। महऋषि सोचने लगे कि इनका यह खोट निकलना पड़ेगा। यह सोचकर एक दिन उनसे कहने लगे कि मेरे पास जो विद्या थी वह मैं आपको सिखा चुका। परन्तु अभी भी उच्च शिक्षा शेष है जो आप लोगों को सीखनी चाहिये। इस पर शिष्यों ने पूछा कि यह शिक्षा किस से सीखने चाहिये। महऋषि जी बोले इस संसार में राजा जनक जैसे ब्रह्मज्ञानी दूसरा कोई नहीं है सो आप उनके पास जाओ और हमारा संदेश दो वे आपको ब्रह्म विद्या सिखाएंगे।

गुरू जी से आज्ञा लेकर दोनों शिष्य सीधे मिथला नगरी में आये। राजा जनक की दरबार में पहुँचकर द्वारपाल को कहा कि हम महऋषि याज्ञवल्क के शिष्य है राजा जनक से मिलकर महऋषि का संदेश उन्हें देना चाहते है। शिष्यों को तत्काल राजा के सामने उपस्थित किया गया। राजा ने उनसे पूछा कि आप कौन है ओर यहा कैसे आना हुआ है। दोनो ने राजा को बताया कि वे महऋषि के शिष्य है ओर गुरू के आज्ञा से यहां आये है।

राजा ने दरबारियों को आदेश दिया कि इन्हें शाही अतिथिग्रह में शान मान से रहाया जाये। हम इनसे बाद से मुलाकात करेंगे। राजा के सेवकों ने उन्हें इतर से स्नान करवाकर सोने के पलंगों पर नरम गद्दों पर बिठाकर छतीस पकवानों का भोजन करवाया। इस प्रकार वे बड़े मजे से रहने लगे। ऐसा करते करते चार दिन बीत गए परन्तु राजा ने उनसे मुलाकात नहीं की। दोनो एक दूसरे से कहने लगे कि आज चार दिन बीत गए परन्तु राजा से भेंट नहीं हुई है खैर हमारी खूब आव भगत हो रही है सो आनन्द आ रहा है। इतने में राजा के सेवकों ने आकर उन्हे कहा कि राजा ने आपको याद किया है। मेहरबानी करके आप दरबार में चलें। राजा ने उनहें उचित आसन्न पर बिठाकर पूछा कि महिऋषि जी बिल्कुल ठीक हैं? मेरे लिये उनकी क्या आज्ञा है। इस पर गुरू सेवी ने उन्हें बताया कि गुरूजी ने हमें आप के पास ब्रह्म

विद्या सीखने के लिये भेजा है। यह सुनकर राजा गम्भीर हो गये। थोड़ा सोचकर उन्हें कहा कि आपको इस हेतु तीन दिन और प्रतीक्षा करनी होगी। दोनों ने कहा कि इसमें कोई हानि नहीं है जहां चार दिन आराम से निकल गए वहां तीन दिन और निकल जाऐंगे।

शाही अतिथिगृह में शाही ठाठ बाठ के साथ रहने में उन्हें खूब आनन्द आया। सोचा कि तीन दिन और मजे लेंगे। परन्तु इस बार राजा ने अपने सेवकों को आदेश दिया कि इन्हें साधारण अतिथिगृह में रखा जाये। यहां पर तो सब कुछ सादा था। भोजन के समय उनके सम्मुखचार मोटी रोटियाँ और दाल रखी गई। यह देखकर दोनों बड़े नाराज हुए। और राजा के लिये भला बुरा कहकर कहने लगे कि राजा ने हमारा अपमान किया है। इस प्रकार तीनों दिन वे राजा के लिये भला बुरा कहते रहे। कहने लगे कि राजा तो अज्ञानी है जो हमारे साथ ऐसा बुरा बर्ताव किया है।

तीन दिन के पश्चात राजा ने उन्हें बुलाकर कहा कि मुझे बहुत दुख है जो ये तीन दिन आपको कष्ट उठाना पड़ा। आपको जमीन पर सोना पड़ा। दाल रोटी खानी पडी। इस पर दोनों शिष्यों ने कहा कोई बात नही है। वह समय भी कट गया। अब आप हमें ब्रह्म विद्या सिखाईये। इस पर राजा ने उन्हें कहा कि अभी आप ब्रह्म विद्या सीखने के अधिकारी नहीं बने है। इसलिये इस समय मैं आपको यह विद्या देने में असमर्थ हूँ। इस पर दोनो शिष्यों ने कहा कि हमने इतने दिन रहकर महऋषि के आश्रम में तपस्या की है। सो हमारे अन्दर कौन सी कमी है? इस पर राजा ने कहा कि ये तीन दिन मैंने आपको साधारण अतिथिगृह में रखकर आपकी परीक्षा लेनी चाही। आप वहां रहकर बहुत नाराज हुए और शाही अतिथिगृह में एशो आराम से रहकर आनन्दित हुए। इस से यह सिद्ध हुआ कि आप में अभी सम भाव उत्पन्न नहीं हुआ है। आपने इतना तप कर अपने शरीर को व्यर्थ में कष्ट दिया है।

यह सुनकर गुरू सेवी और कुशाग्रबुद्धि की शर्म के मारे गर्दन झुक गई। उन्होंने यह महसूस किया कि उनमें अहंकार आ गया था। अहंकार के अंकुर उनके हृदय में उभर गये थे।

सो महऋषि याज्ञवल्क ने उनका अहंकार दूर करने के लिये, उनकी गिरावट को रोकने के लिये, उनकी ही भलाई के लिये राजा जनक के पास भेजा था। हम अपने सतगुरू महाराज के बहुत आभारी है जिन्होंने हमें गिरावट से बचा लिया। अहंकार के अंधकार में सारा ज्ञान नष्ट हो जाता है। यह दृष्टान्त सुनाकर परम पूज्य स्वामी जी ने साधकों को नम्रता पूर्व नित्य नियम से अभ्यास कर आत्म उन्नति की राह पर चलने का आशीर्वाद दिया।

इस प्रकार परम पूज्य स्वामी जी प्रात: काल योगाभ्यास ओर सायं काल सत्संग करते रहे। सारा दिन भक्तों की भीड़ लगी रहती थी। सबकी मुरादें पूर्ण होने लगी। परन्तु परम पूज्य स्वामी जी के मन में ऐसे स्थान की तलाश थी जहां शान्ति हो, विशालता हो तथा पहाड़ों की तलहटी हो। ऐसे स्थान पर सतगुरू महाराज के आश्रम बनवाने की अभिलाशा थी उनके मन में। संयोग वश श्री भागचन्द उनके सत्संग में आने लगा और उनके मन की मुराद पूर्ण हुई। उनके संकल्प सिद्ध होने का समय आ गया। एक दिन श्री भागचन्द ने साहस करके परम पूज्य स्वामी जी से विनती की कि मेरे घर वालो की यह हार्दिक अभिलाषा है कि आपकी कृपा से हमारे सब कार्ज सिद्ध हुए है सो आप आदर्श नगर चलकर हमारे कुटिया को पवित्र करें, हमारे यहां चलकर भोजन स्वीकार करने की कृपा करें। और सायं काल वहीं पर सत्संग की दीबाण लगावे। सभी प्रेमियों को हमारी ओर से निमंत्रण दे कि वे वहां आकर सत्संग सुने और प्रसाद पावे। हमारा स्थान काफी बड़ा है और वहा खुला मैदान भी है जहां आसानी से सत्संग हो सकेगा।

संत जन तो प्रेम के वश में होते है सो उनका सच्चा प्रेम तथा श्रद्धा देखकर उनका निमंत्रण स्वीकार कर प्रेमियों को कहा कि कल हम सत्संग की दीबाण आदर्श नगर में सेठ भागचन्द के घर पर लगाएंगे। सेठ भागचन्द ने भी प्रेमियों को स्नेह से सत्संग के लिये निमंत्रण दिया और कहा सत्संग के पश्चात हाथ प्रसादी होगी।

दूसरे दिन योगाभ्यास के पश्चात सेठ भागचन्द तांगा लेकर परम पूज्य स्वामी जी को मान शान से लेने आया। परम पूज्य स्वामी जी उसके साथ उनके घर पर पधारे। दोपहर को भोजन कर विश्राम किया और सायं काल सत्संग की दीबाण लगाया। यहां पर शहर के प्रेमियों के अतिरिक्त आदर्श नगर के भी बहुत प्रेमी आये थे जिनमें सेठ सोभराज भी आये हुए थे।

आदर्श नगर के प्रेमियों को परम पूज्य स्वामी जी के सत्संग रूपी अमृत से खूब आनन्द आया। सो सत्संग के पश्चात सभी मिलकर परम पूज्य स्वामी जी के सेवा में उपस्थित हुए और निवेदन किया कि सत्संग सुनकर हमारी प्यासी आत्मा वर्षों के बाद अति तृप्त हुई है। हमारी विनम्र निवेदन है कि यहां रहकर हमें प्रतिदिन यह सत्संग रूपी अमृत पिलाने की अनुकम्पा करें। श्री भागचन्द जी ने परम पूज्य स्वामी जी से निवेदन किया कि हमारा मकान काफी बड़ा है। हम एक कमरा आपकी सेवा में अर्पित करते है और इतना बड़ा मैदान भी है जहाँ पर्याप्त मात्रा में प्रेमी समा सकते है। हमें कृपा कर यह सुअवसर अवश्य प्रदान करें ताकि हमारा परलोक सुधर सकें।

परम पूज्य स्वामी जी को सत्संग के लिये यह खुला, विशाल एवं शान्ति वाला वातावरण बहुत अच्छा लगा सो वहीं रहकर सत्संग का दीबाण लगाने का निश्चिय कर लिया।

परम पूज्य स्वामी जी का यह निर्णय सुनकर उनके परम शिष्य श्री भार्गव साहब का दिल बैठ गया। भारी मन से उनको विनती कर कहा कि सतगुरू महाराज यदि आप यहां रहंगे तो योग शाला का क्या होगा? इस पर उसे सांत्वना देकर कहा कि हमने तुम्हारी स्नेह एवं श्रद्धा देखकर योगाभ्यास का शुभ कार्य आरम्भ किया है। हम उसको निरन्तर जारी रखेंगे। हमने यह निर्णय लिया है कि हम निर्धारित समय पर योगशाला पहुँचकर युवा साधकों को अभ्यास करवाकर उनके शारीरिक एवं आत्मक उन्नति में सहयोग देंगे।

परम पूज्य स्वामी जी प्रतिदिन प्रात: काल स्नान कर पैदल ही पैदल नाम का स्मरण करते हुए ठीक समय पर आशा गंज में योगशाला पर पहुँच जाते थे। उनके श्रद्धालु प्रेमी उन्हें निवेदन कर कहते थे कि आदर्श नगर से आशागंज की इतनी लम्बी दूरी पैदल चलकर क्यों तय करने का कष्ट करते है। आप हमें आदेश करें तो हम आपको वहां पहुँचाने की व्यवस्था करें। उस दिन सायं काल सत्संग में उन श्रद्धालु भक्तों को उनके स्नेह एवं श्रद्धा के लिये धन्यवाद देकर इस भजन द्वारा उत्तर दिया।

भजन

दरिवेशनि जी अजब खयाली, जाणनि से दरिवेश।

१. कदहिं घुमन से नंगे पेरें, कदहिं शाहाणे वेस

कदहिं गेडूअ जा कपिडा पाए, लाल फिरन त लबेस

२. कदहिं झुलाइन छत्तर सिरते, कदहिं भभूती बेस

कदहिं मुंडाइन सिर खे साईं, कदहिं रखाइन केस

३. कदहिं रहन से अन्दर गुफा जे, कदहिं घुमनि था देस,

कदहिं माठ में मनु लगाए, कदहिं करनि उपदेश।

४. 'माधव' मस्त रहनि से मौजी, चड्र लोंटग आदेश

दरिवेशनि जा राया सच पच जाणनि से दरिवेश

अर्थ:- इस भजन में स्वामी जी कहते है कि दरवेश और संत महात्माओं के विचार विलक्षण होते है और उनको साधारण व्यक्ति समझ नहीं सकता उनके विचारों का दरवेश ही समझ सकते है। कभी तो वे नंगे पाव चलते है और कभी मस्ती में आकर शाही ठाठ बाठ में रहते है। और कभी सब कुछ त्याग कर गेरूवे वस्त्र धारण करते है। कभी वे छत्तर झुलाते है और कभी

भभूत रमाते है। कभी वे अपना सर मुण्डाते है तो कभी जटांए धारण करते है। कभी कभी वे गुफाओं में जाकर अन्तरध्यान हो जाते है और कभी देश के रटन के लिये निकल पड़ते है। कभी वे मौन धारण कर शान्त हो जाते है तो कभी लोग को उपदेश देते है। स्वामी जी कहते है कि वे सदा अपनी मस्ती में रहते है। उनका अन्त वे दरवेश ही जानते है।

परम पूज्य स्वामी जी वास्तव में पहुँचे हुए दरवेश थे। वे परोपकार के लिये कितने भी कष्ट सहन करने के लिये तैयार थे। प्रेमियों के पुकार पर प्रातः काल योगाभ्यास करवाते थे। दिन में शहर के प्रेमियों के दुख दूर करते थे। और सायं काल आदर्श नगर में सत्संग की दीबाण लगाकर प्रेमियों को खूब आनन्द प्रदान करते थे। उनकी सत्संग की सुगन्धि धीरे धीरे आर्दश नगर के स्थानीय लोगों में फैलने लगी। अब उनके सत्संग में बाबू हनुमान प्रसाद, श्री जगदीश प्रसाद जी ,मास्टर साहब बाबू मुरलीधर एवं श्रीमान झा साहब, सेठ साहब नित नियम से आने लगे। ये सब आर्दश नगर की जनता के प्रिय नेता थे। वे सब परम पूज्य स्वामी जी को बहुत आदर देते थे और सदा सेवा के लिये तत्पर रहते थे।

शनिवार को परम पूज्य स्वामी जी विशेष सत्संग करते थे। उस दिन शहर से एवं आर्दश नगर से बड़ी संख्या में प्रेमी आते थे। एक शनिवार को प्रेमियों को समझाकर कहने लगे कि इस समय हमारी परीक्षा की घड़ी आई है। देश के बटंवारे के कारण हमें अपने मकान, धन दौलत तथा जमे जमाये व्यवसाय छोड़कर भटकना पड़ा है। आपके सामने मकान, रोजगार, तथा बच्चों की पढ़ाई की समस्याएं है। सबसे बड़ी समस्या पैसे की है। परन्तु ये सब कष्ट हमने अपने धर्म को बचाने के लिये सहर्ष लिये है। इस लिये दिल छोटा नहीं करना चाहिये। क्योंकि यदि हम अपने धर्म पर कायम रहे तो शीघ्र ही पहले से भी अधिक सुखी होंगें। केवल विश्वास रखने की आवश्यकता है। प्रेमियों को विश्वास दिलाने के लिये परम पूज्य स्वामी जी ने उन्हें यह दृष्टान्त सुनाया।

दृष्टान्त:- एक बड़ा साहूकार था। वह दानी एवं दयालु था। उसके सदावृत की प्रसिद्धि चारो और फैली हुई थी। कोई भी सवाली उसके दर से खाली नहीं जाता था। दान पुण्य के अतिरिक्त वह पूजा पाठ भी नियम से करता था।

भगवान अपने सच्चे भक्तों से अवश्य परीक्षा लेते है। सो एक दिन कुलक्ष्मी को अबला नारी के वेश में भगवान ने सेठ के पास भेजा। कुलक्ष्मी ने दीन मन होकर सेठ साहब से विनती की कि मैं अबला बेसहारे आपकी तारीफ सुनकर आपके शरण में आई हूँ। कृपा कर मुझे बेसहारे अबला को अपने चरणों में स्थान दें। मैं एक कोने में पड़ी रहूंगी और आपकी सेवा करूंगी।

सेठ साहब दयालू थे सो उस अबला के दीनता को देखकर उसे अपने पास रहने की आज्ञा दे दी। वह मजे से वहां रहने लगी। सेठ साहब जैसे नियमानुसार भगवान के आगे पूजा कर रहा था तब लक्ष्मी प्रकट होकर सेठ साहब से कहने लगी कि सेठ साहब! आपने कुलक्ष्मी को अपने पास शरण दी है इसलिये मैं आप से आज्ञा लेती हूँ। मैं कुलक्ष्मी के साथ रह नहीं सकती। अब आप निर्णय लो कि आप कुलक्ष्मी को निकाल रहे है या मुझे आज्ञा दे रहे है। इस पर सेठ ने लक्ष्मी से कहा कि माता शरणागत की रक्षा करना मेरा धर्म है। मैं अपने धर्म पर कायम हूँ। इसलिये मैं कुलक्ष्मी को निकाल नहीं सकता। अब यहां पर रहने या जाने का निर्णय आपको स्वयं लेना है। सेठ के इस उत्तर को सुनने के पश्चात लक्ष्मी वहां से चली गई। लक्ष्मी के चले जाने के पश्चात सेठ के यहां धन घटता गया। उसे व्यापार में हानि होने लगी। उसका पैसे में हाथ तंग होने लगा। परन्तु सेठ ने इस पर दिल भी दिल छोटा नहीं किया। वह परमात्मा की रज़ा पर राज़ी रहने लगा।

कुछ दिनों के पश्चात जैसे वह नियमानुसार पूजा कर रहा था तो उसके सामने समृद्धि देवी प्रकट हुई। और सेठ को कहने लगी सेठ साहब! आपके यहां से लक्ष्मी विदा हो गई है सो मैं तो लक्ष्मी के सिवाय रह नहीं सकती, इसलिये मैं आपसे विदा लेती हूँ। यह कहकर समृद्धि

देवी अलूप हो गई। इस दिन के पश्चात बरकत पड़ना ही बंद हो गई। खेत सूखने लगे अकाल पड़ने लगे। कारखानों में आग लग गई। चारों ओर से घाटे के समाचार आने लगे। ऐसी संकट की घड़ी में भी सेठ साहब अपने धर्म पर कायम रहे और उफ भी नहीं कहा।

थोड़े दिनों के पश्चात सेठ साहब जैसे पूजा कर रहे थे यश देवता उनके सामने आकर प्रकट हुए। और कहा कि सेठ साहब! आपने लक्ष्मी देवी तो विदा हो गई और उसके पीछ समृद्धि देवी भी अलविदा हो गई। भाई! मैं तो वहां रहता हूँ जहा लक्ष्मी देवी और समृद्धि देवी निवास करती है। इसीलिये मैं आप से आज्ञा लेता हूँ। उस दिन के पश्चात सेठ की बदनामी होने लगी। सम्पूर्ण यश और नाम मिट्टी में मिल गए। लोग सराहना के स्थान पर बुराई करने लगे। परन्तु सेठ साहब ने सब कुछ धैर्य के साथ सहन किया।

अन्त में पूजा करने समय उनके सामने धर्म प्रकट हुआ और कहने लगा कि सेठ जी! आप से लक्ष्मी, समृद्धि और यश पहले ही विदा हो चुके है, अब मै भी आप से विदा होना चाहता हूँ। इस पर सेठ जी ने हाथ जोड़कर धर्म से विनती की कि जब लक्ष्मी ने मेरे से विदा ली तो मैने उसे से कुछ भी नहीं कहा। और जब समृद्धि गई तो मुझे गम नहीं हुआ। जब यश मुझे छोड़कर चला गया तो भी मैं उसे नही रोका। परन्तु मैं आप को नहीं जाने दूगां। आप की अर्थात् धर्म की रक्षा हेतु ही मैने कुलक्ष्मी को अपने यहां शरण दी। शरणागत की रक्षा हेतु मैंने इतने कष्ट झेले। परन्तु मैने उफ तक नहीं की। क्योंकि धर्म सबसे सर्वोपरि है, रामायण में भी भगवान श्री राम ने कहा है:-

रघु कुल रीति सदाचली आई

प्राण जाये पर वचन न जाई।

यह सुनकर धर्म बहुत प्रसन्न हुआ। और उसे आशीर्वाद देकर कहा कि हम ने तो केवल आपकी परीक्षा लेनी चाहिए। आप उस परीक्षा में सोने के समान तप कर खरे उतरे है। धम्र पर कायम रहने के कारण हम सब आपसे प्रसन्न हुए है। इतने में लक्ष्मी देवी, समृद्धि

देवी और यश देवता प्रकट होकर कहने लगे कि हम सब तो धर्म के पीछे है। आप ने धर्म को अपने पास कायम रखा। और धर्म के खातिर इतने कष्ट सहे इसलिये हम सब आप के पास लौट के आये है। और सदा आपके पास रहेंगे। सेठ का धन धान्य पहले से अधिक हो गया। हर वस्तु में बरकत पड़ने लगी। अब उनका यश दूर दूर तक गाया जाने लगा। इतने में कुलक्ष्मी सेठ जी के पास आकर हाथ जोड़कर कहने लगी कि मैं आपसे क्षमा मांग कर आज्ञा लेती हूँ। सेठजी को उसने कहा कि भगवान आपसे परीक्षा लेना चाहते थे इसलिये मुझे आपके पास भेजा गया था। सेठजी! जहां धर्म है वहां मैं नहीं रह सकती हूँ। इसलिये अब मैं जाती हूँ फिर कभी आपके पास नहीं आऊंगी।

परम पूज्य स्वाजी जी प्रेमियों को समझाकर कहने लगे कि हम भी धर्म की रक्षा के लिये अपने घर, वतन, धन-दौलत, मन्दिर गुरूद्वारे कुर्बान कर यहां आये है। हम अपने धर्म पर कायम है। इसलिये सब कुछ पहले से भी सवाया होगा। धन दौलत भी आयेगी यश भी मिलेगा बस केवल धैर्य रखने की आवश्यकता है। परमात्मा के दर पर देर है परन्तु अन्धेर नहीं है। फिर मन्दिर गुरूद्वारे बनेंगे और खूब मेले लगेंगे।

परम पूज्य स्वामी जी के ऐसे प्रभावशाली प्रवचनों का वहां के स्थानीय लोगों पर बहुत गहरा असर पड़ा। एक तो उनका अलोकिक व्यक्तित्व, मधुर वाणी तथा गहरे ज्ञान ने सभी प्रेमियों की वशीभूत कर लिया। वे किसी भी प्रकार परम पूज्य स्वामी जी को आर्दश नगर में बसाने की योजनाऐं बनाने लगे। जिससे कि यह भूमि बस जाये, फले फूले और तीर्थस्थल बन जाये।

यह सोचकर वहां से प्रभावशाली लोगों की बैठक बुलाई और यह प्रस्ताव रखा कि पहाड़ी वाली भूमि में से परम पूज्य स्वामी जी को एक हिस्सा आश्रय के लिये दिया जाये। सर्व समति से यह प्रस्ताव पारित किया गया कि पहाड़ी वाली सम्पूर्ण भूमि के तीन हिस्से किये जाये जिस में से एक भाग रामकृष्ण मठ को, एक भाग सत्यनारायण जी के मन्दिर को और

कोने वाला एक भाग परम पूज्य स्वामी जी को लिखा पढ़ाकर दान के रूप में दिया जाये जिससे वे वहां आश्रम बनवाकर स्थायी रूप से आदर्श नगर में रहकर यहां के प्रेमियों को सत्संग रूपी अमृत पिलाकर परमार्थ की राह पर चलाते रहे।

सोसायटी के कार्यकर्ताओं ने मिलकर परम पूज्य स्वामी जी की सेवा में उपस्थित होकर यह शुभ समाचार बताकर भूमि के कागज़ात सौंप दिये। परम पूजय स्वामी जी ने यह सब सतगुरू महाराज की असीम कृपा मानकर सभी को सतगुरू महाराज की ओर से पखर पहनाकर खूब आशीर्वाद दिया।

दूसरे दिन सायं काल सत्संग में प्रेमियों को यह खुशखबरी सुनाकर कहा कि सतगुरू महाराज ने हम पर असीम कृपा की है। वे समर्थ है, अन्तर्यामी है वे निबलों के बल है, दीन दयाल है। उनके दर पर देर नहीं है, देर तो हमारे पुकारने की में है। सतगुरू महाराज ने हमारी पुकार सुनकर हमारी विनती स्वीकार की है। यहां पर पहुँचने के पश्चात यही तमन्ना थी कि सतगुरू महाराज का आश्रम बने। परन्तु इस दीन हीन दशा में यह सपना कठिन ही नहीं परन्तु असम्भव प्रतीत हो रहा था। जब उनकी कृपा हुई तो परमात्मा आर्दश नगर के प्रेमियों के घट में जा बैठे तथा यह विशाल भूमि आश्रम के लिये दान में दी है, इस पहाड़ी की छत्र छाया में सतगुरू महाराज का स्वर्ग जैसा आश्रम बनेगा। यह सब मेरे सतगुरू महाराज जी की असीम कृपा है। जो इस दीन हीन दशा में कृष्ण के समान इस सुधामा में के साथ आकर सहाय हुए है। भाव विभोर प्रेमियों को यह भजन सुनाया।

भजन (राग भैरवी)

चवे श्याम सुन्दर त सुधामा

अहिड़े हाल रहिएं बिना माल रहिएं

आएं कीन हली हिन देश में

१.	तो त दीहुं विञायो दुख में

तो त रात गुजारी बुख में

रोई हाल कया हद झीणा,

पंहिजो बदनु गारियुई हिन बेस में....

२.	नका पगिड़ी मथे ते आहे

सजो लटो बि लिंङनि ते नाहे

फाटी पेर पिया से त चीरूं थिया

कीअं वक्त काटियुइ हिन देस में...

३.	हाइ मित्र पातुई दुख भारी

रोई श्याम चवे त मुरारी,

काटियई दीहं किथे आएं कीन हिते

हाय मित्र रहियें तूँ मेस में....

४.	अची गले मिलियों गिरधारी

रोई रतु अखियनु मां जारी,

नेणे टिमिया तंहि मा चरण भिजिया

थी 'माधव'	प्रेम जे पेश में।

यह दर्द भरा भजन गाकर परम पूज्य स्वामी जी का दिल सतगुरू महाराज के याद से भर आया और आंखें नम हो गई। वातावरण बहुत भारी हो गया। सब प्रेमी भी भाव विभोर हो गए और उनकी भी आंखे नम हो गई।

परम पूज्य स्वामी जी प्रेमियों को सांत्वना देकर कहने लगे कि सतगुरू महाराज की असीम कृपा से हमें बहुत ही सुन्दर स्थान पर टण्डे आदम वाली अमरापुर दरबार जैसी विशाल भूमि मिली है। अब आश्रम बनाने के लिये समय और साधनों की आवश्यकता है। हमें विश्वास है कि सतगुरू महाराज अपने कारज आकर स्वयं पूर्ण करेंगे। सब कुछ उनके ऊपर है। हम तो केवल निमित मात्र है। करने करवाने वाले वे स्वयं है।

समय गुजरते देर ही नहीं लगी। अब सतगुरू महाराज जी की वर्सी उत्सव का समय आ गया। सतगुरू महाराज जी का भारत में पहला वर्सी उत्सव १९४९ में होने वाला था। एक कमरे में रहते हुए सतगुरू महाराज के विशाल वर्सी उत्सव का संकल्प ले लिया। मेला उसी मान शान एवं धूमधाम से लगेगा ऐसा विश्वास था उनको।

परम पूज्य स्वामी जी ने चुम्बकीय व्यक्तित्व एवं कार्य संचालन की अद्भुत शक्ति थी। वे समस्त कार्य दूरदर्शियता एवं पूर्ण योजना बनाकर करते थे। सो मेले के उत्तम प्रबन्धक हेतु आर्दश नगर एवं नगर के प्रेमियों की एक सभा बुलवाई। उस सभा में श्री सोभराजमल बाबू मुरलीधर, बाबू हनुमान प्रसाद, मास्टर साहब विशेष थे। सबसे विचार विर्मश कर अलग अलग कार्य को बांटकर प्रत्येक कार्य के लिये समितियां नियुक्त की गई। तथा प्रत्येक कार्यकर्ता को कार्य की पूर्ण जिम्मेदारी सौंप कर पखर पहनाकर उन्हें सन्मानित किया। उनको समझाकर कहा कि ये सभी कार्य महत्वपूर्ण एवं महान है। कोई भी कार्य छोटा नहीं है। जूतों की देखभाल, प्याऊ चलाकर प्यासे प्रेमियों को प्रेम से ठण्डा पानी पिलाकर उनकी प्यास बुझाना और दूसरे सब सेवा के कार्य समान हैं। इस लिये बिना झिझक के

नम्रतापूर्वक यदि कार्य करेंगे तो हमारे ऊपर सतगुरू महाराज की असीम कृपा होगी। प्रेमियों को सेवा का महत्व समझाने के लिये यह दृष्टान्त बताया।

दृष्टान्तः- यह घटना चौथी पातशाही की है। गुरू महाराज के अखाड़े में श्री अर्जुन देव सम्मिलित हुए। उनको गुरू महाराज ने छोटे-छोटे कार्य सौंपे थे, जिन में बर्तन मांजना भी शामिल था। श्री अर्जुन देव प्रभात से उन कार्यों में लग जाते थे और रात्रि को जब अन्य शिष्य सो जाते थे तो भी वे अपनी सेवा में लगे रहते थे। वे किसी भी कार्य को छोटा समझकर परहेज नहीं करते थे। छोटे से छोटा कार्य मन लगाकर सफाई एवं सुन्दर व्यवस्था से करते थे।

जब दूसरे शिष्य मजे से गुरू महाराज जी का सत्संग सुनते थे तब ये साहब अपनी सेवा में व्यस्त रहते थे। इसलिये दूसरे शिष्य उन्हे तुच्छ समझते थे। और सोचते थे कि गुरू महाराज के दृष्टि में श्री अर्जुन देव की कोई हैसियत ही नहीं है।

परन्तु जब चौथी पातशाही के गुरू महाराज जी का अन्त समय आया तब उन्होंने परम्परा अनुसार अपने शिष्यों में से अपना उत्तराधिकारी चुना परन्तु उसकी घोषणा उन्होंने संगत के सामने नहीकी परनतु वसीयत लिखकर एक सन्दूक में बन्द कर उसकी चाबी अपने पास रखी। और संगत को आदेश दिया कि हमारे ज्योति जोत समाने के पश्चात यह सन्दूक खोलकर वसीयत पढ़ी जाये।

जो शिष्य उनके निकट रहते थे और समझते थे कि गुरू महाराज की उन पर विशेष कृपा है, उनमें हर एक यह समझने लगा कि गुरू महाराज मेरे लिये ही वसीयत करके गये होंगे।

परन्तु गुरू महाराज जी के ज्योत जोत समाने के पश्चात सन्दूक खोलकर वसीयत पढ़ी गयी तब सबके आश्चर्य की सीमा ही नहीं रही। उनको वसीयत के अनुसार गुरू महाराज श्री अर्जुन देव जी को अपना वारिस मनोनित कर गुरू गद्दी का अधिकार बनाके गये थे। यह

बात तो उनके सपने में भी नहीं थी। जिन्हें वे तुच्छ समझते थे गुरू महाराज जी उन्हें सरमोर समझकर गुरू गद्दी प्रदान कर गये। यह सब सेवा की करामात है।

यह दृष्टान्त बताकर कार्य कर्ताओं को कहने लगे कि सेवा सबसे ऊंची है। किसी भी कार्य को छोटा नहीं समझना चाहिये। कार्य को ऊंचा बनाने वाली हमारी ऊंची भावना है। यदि हम लगन और सच्ची भावना से सेवा करेंगे तो वह अवश्य सतगुरू महाराज के द्वार पर स्वीकार होगी। सभी कार्य कर्ताओं ने कार्य को पवित्र मानकर उसे तन मन और धन से पूर्ण करने का संकल्प लिया। और सब अपने कार्य में लगन से लग गए।

मेले की व्यवस्था हेतु श्री सोभराज और सेठ भागचन्द को बाला मरदाना के समान आठों पहर अपने साथ रखा। प्रत्येक कार्य की व्यवस्था एवं देख रेख परम पूज्य स्वामी जी स्वयं करने लगे।

यह मेला आदर्श नगर वासी श्री चन्द्र किशोर गर्ग के मकान पर लगाने का निर्णय लिया गया। मेले की घोषणा करते ही क्षण पल में भण्डारा भर गए। दानी प्रेमियों ने शक्कर, गेहूँ, चावल की बोरियाँ और तेल के पीपे पूज्य स्वामी जी के सेवा में भेंट कर दिये ओर दिल खोलकर भेटा (धन) की। सतगुरू महाराज ने अपने कार्य खुद कर लिये। किस को कुछ भी नहीं कहना पड़ा।

परम पूज्य स्वामी जी का हृदय प्रसन्न हो गया। वे मेले की तैयारी जोर शोर से करने लगे। मेले के निमंत्रण पत्र भेजने से पूर्व परम पूज्य स्वामी जी आदरणीय महा मण्डलेश्वर सतगुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज के पास आये और उन्हें विनम्रता पूर्वक विनती की कि भारत में सतगुरू महाराज का यह पहला वरसी उत्सव है। सभी श्रद्धालु प्रेमियों ने बुलन्द होसले के साथ वरसी उत्सव मनाने का संकल्प किया है, बाकी सब कुछ आपको ही संभालना है। मेले से कुछ दिन पूर्व पधार कर मेले का संचालन अपने ही कर कमलों द्वारा करने की कृपा करें।

परम पूज्य महामण्डलेश्वर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज परम पूज्य स्वामी जी का विनीत भाव एवं श्रद्धा देखकर बहुत प्रसन्न हुए। और उनको वचन दिया कि मेले में पहुँचकर हर प्रकार सहायता करेंगे। क्योंकि भारत में आने के पश्चात सभी सन्त जन एक दूसरे से बिछड़ गये है इसलिये सतगुरू महाराज की वरसी हम सब को मिलकर एक दूसरे के सहयोग से मनानी है, यह कार्य सभी को दिल व जान से करना है।

परम पूज्य महामण्डलेश्वर के इस सहानुभूति पूर्ण व्यवहार से परम पूज्य स्वामी जी को बहुत हिम्मत बंधी। लौटकर उन्होंने सभी संत जनो को निमंत्रण पत्र भेजे और उन्हें विनती कर आग्रह किया कि मेले में अवश्य पधार कर मेले की शोभा बढ़ाए। जिन प्रेमियों की ऐड्रेस मिली उनको मेले के पत्र भेजकर उनको यह दायत्व सौंपा कि वे उस नगर के सभी प्रेमियों को उनकी ओर से मेले में आने का निमंत्रण देकर मेले में आने का आग्रह करें। शहर की जनता को समाचार देने का कार्य नगर एवं आदर्श नगर के प्रेमियों को सौंपा। सभी सिन्धी भाषा के समाचार पत्र में मेले का कार्यक्रम छपवाया गया तांकि सभी प्रेमियों को मेले के कार्यक्रम का पता लग सकें।

प्रेमियों एवं सन्तों के रहने की व्यवस्था आदर्श नगर के प्रेमियों के घरों में की गई। परम पूज्य स्वामी जी स्वयं सभी आदर्श नगर के प्रेमियों के घरों में गये और उन्हें कहा कि यह वरसी उत्सव हम सबको मिलकर सफल बनाना है। मेले में आने वाले मेहमान समझकर उनकी दिल से सेवा करनी है। उनके रहने के लिये जितने अधिक कमरे दे सकते है देवें और जो भी सहयोग हो सकता है इस पुनीत कार्य में अवश्य दे दें। प्रेमियों ने परम पूजय स्वामी जी के चरणों में सम्पूर्ण मकान ही अर्पित कर दिये और अपने परिवार के लिये केवल एक एक कमरा ही रखा। परम पूज्य स्वामी जी उनकी सेवा भावना, त्याग एवं सहयोग पर बहुत प्रसन्न हुए और उनको धन्यवाद दिया।

दूर दूर से प्रेमी एवं संत जन मेले में शरीक होने के लिये आने लगे। सेठ भागचन्द एवं श्री सोमराज मल उनका स्वागत कर उन्हें यथा स्थान पर व्यवस्थित करते गये। परम पूज्य महामण्डलेश्वर स्वामी सर्वानंद जी महाराज मेले के आरम्भ से एक दिन पूर्व पधार गए वरसी मेले के कार्यक्रम की रूप रेखा उनके सेवा में प्रस्तुत की गई। दूसरे दिन मेले का शुभारम्भ परम पूज्य महामण्डलेश्वर सतगुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के कर कमलों द्वारा रामायण के अखण्ड पाठ के साथ किया गया। रामायण मण्डल की मण्डली ने सुरीले साज़ों के साथ रामायण का पाठ आरम्भ किया जिस में खुद भी झूम रहे थे तथा प्रेमियों को भी खूब झूमा रहे थे। उसके पश्चात गुरू ग्रंथ साहब एवं गीता के भी पाठ रखे गये। इससे सम्पूर्ण वातावरण ही भक्तिमय एवं सुगंधित हो गया।

सतगुरू स्वामी टेऊँराम महाराज जी की शोभायात्रा निकाली गई। जिस में सतगुरू महाराज की विशाल मूर्ति के साथ दूसरी अनेक सुन्दर एवं मनमोहक झांकियां निकाली गई। शोभायात्रा में भजन मण्डलियां स्वामी टेऊँराम जी के भजन गाती सतगुरू महाराज जी की जय जय कार मनाती हुई चल रही थी। आदर्श नगर के प्रेमियों ने जगह जगह पर स्वागत द्वारा बनाये थे जहां पर सन्तों के ऊपर फूलवर्षा की जा रही थी सम्पूर्ण वातावरण स्वर्गधाम जैसा लग रहा था श्रद्धालु प्रेमियां द्वारा जगह जगह पर प्रसाद भी बांटा जा रहा था। इस शानदार जलूस द्वारा सतगुरू महाराज जी के यश की सुगन्धि पूरे आदर्श नगर एवं अजमेर शहर में फैल गई।

सुबह शाम विद्वान पण्डितों के प्रवचन होते रहे। मेले के संचालकों का यह प्रयास रहा कि हर एक सन्त महात्मा को भजन कीर्तिन का अवसर मिल जाये। बीच बीच में परम पूज्य स्वामी जी भी सतगुरू महाराज की महिमा के भजन गाते थे और उनकी महिमा एवं शिक्षाओं पर प्रकाश डालते रहते थे। इस प्रकार एक ओर तो सभी प्रेमी सन्त महात्माओं के अमृत वचन सुनकर ज्ञान की गंगा में डुबकी लगाते रहे दूसरी और अखण्ड भण्डारे से प्रसाद पाकर तृप्त होते रहे।

अन्तिम दिन सुबह से शाम तक भजन कीर्तन की मौज लगी रही। उस समय परम पूज्य स्वामी जी ने अपने श्रद्धेय सतगुरू महाराज जी के चरणों में यह भजन गाकर श्रद्धा समुन चढ़ाये।

भजन (सुर तलंग)

सतगुरू तोखे सीस निमायां

चरण कंवल तुंहिजा चित लाया

१. सतगुरू तुंहिंजे दर ते सुवाली

दीन दयाल आंही तू वाली

पान्दु गिचीअ गलि पायां...

२. सतगुरू तुहिंजो भरियलु भण्डारो

आहे बाझारो खुलियलु द्वारो

कणी कृपा जीचाहियां

३. सतगुरू मूँते परम पया जो

रहे दया जो हथु मया जो

करिमनि कोट कटायां...

४. सतगुरू तोखे कयां सद्बार

जोड़ झार वारऊं वार

'माधव' नातो निभायां....

अर्थः- इस भजन में परम पूज्य स्वामी जी कहते है कि हे मेरे सतगुरू महाराज मैं अपना सीस आप के चरणों में झुकाता हूँ और अपने चित में आप के ही चरण कमलों का ध्यान करता हूँ। हे सतगुरू महाराज मैं आपके द्वार पर सवाली बनकर आया हूँ क्यों कि आप सबके वाली है मैं वारों वार आपको नमन करता हूँ। हे सतगुरू महाराज आपका भण्डारा भरा हुआ है आप तो कृपा निधान है मैं आपके उस भरे हुए भण्डारे में से केवल कृपा का एक कण चाहता हूँ। हे सतगुरू महाराज। आपके दया का हाथ यदि मेरे सर पर रहेगा तो मेरे सारे कर्म कट जायेंगे। मैं आपको वारोंवार हाथ जोड़कर विनती करता हूँ कि मेरे ऊपर आपकी कृपा दृष्टि बनी रहे और मैं सदा इस नाते को निभाता रहूँ।

परम पूज्य स्वामी जी के हृदय में अपने सतगुरू महाराज जी के लिये कितनी श्रद्धा एवं समर्पण का भाव था। एक पल के लिये भी उनके दिल में सतगुरू महाराज की याद नहीं बिसरती थी। हर कार्य में सफलता का श्रेय अपने सतगुरू महाराजजी को ही देते थे। हर समय उनके कृपा का हाथ अपने ऊपर रखने की विनती करते रहते थे। इस यज्ञ के सफलता का श्रेय भी अपने सतगुरू महाराज को देते हुए परम पूज्य महा मण्डलेश्वर स्वामी सर्वानन्द महाराज एवं बाहर से आये हुए विद्वानों का आभार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि आप सब हमारी विनती स्वीकार कर कष्ट उठाकर इस महायज्ञ में जो शरीक हुए है उसके लिए हम सब आपके अति आभारी है। क्यों कि आपके बिना यह यज्ञ कदाचित सफल नहीं हो सकता था। आपके पदारपण से ही यह सफल हुआ है। इस सुअवसर पर पधार कर इस उत्सव की शोभा बढ़ाई है। इस महायज्ञ में सभी सन्त महात्माओं की यथा शक्ति सेवा की गई है। परन्तु अनजाने में यदि कोई कमी रह गई हो तो क्षमा रकें तथा सारी संगत को यह आशीर्वाद दे कि इस प्रकार सन्त महात्माओं की सेवा कर अपना मानुष जन्म सफल बनाएं। यह कहकर सन्त महात्माओं की महिमा का एक दृष्टान्त प्रेमियों को बताया-

दृष्टान्तः- महाभारत का युद्ध समाप्त होने के पश्चात भगवान श्री कृष्ण ने पाण्डवों से कहा कि अपने पापों का प्रायश्चित करने ओर उनसे मुक्त होने के लिये अश्वमेध यज्ञ करें। उस

यज्ञ में सभी सन्त महात्माओं को निमंत्रण देकर बुलाओ। और विशाल ब्रह्मभोज की तैयारी करो। जब सभी सन्त महात्मा भोजन कर आशीर्वाद देंगे तब आसमान में घण्टा बजेगा। घण्टा बजने के पश्चात ही समझ जायेगा कि आपका यज्ञ सफल हुआ और पापों से मुक्त हो गए।

भगवान श्री कृष्ण की आज्ञानुसार विशाल अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें सभी सन्त महात्मा पधारे। ब्रह्म भोज के पश्चात सभी ने पाण्डवों को आशीर्वाद दिया। परन्तु उसके बाद भी आकाश में घण्टा नहीं बजा। बेचारे पाण्डव अश्चर्य में पड़ गऐ। सोचने लगे कि भगवान श्री कृष्ण ने भोजन नहीं किया है शायद उनके भोजन करने के पश्चत घण्टा बजे। सो भगवान श्री कृष्ण को भोजन करने के लिये विनती की। उनकी प्रार्थना पर भगवान श्री कृष्ण ने भोजन किया। परन्तु उसके अश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब उसके बाद भी घण्टा नहीं बजा। अब निराश होकर पाण्डवों ने श्री कृष्ण भगवान से विनती की कि वे अपनी योग विद्या से सोचकर बताऐं कि अभी कौन सी कमी शेष रह गई है। भगवान श्री कृष्ण ने ध्यान कर योग विद्या के बल से उनको बताया कि सुच नाम का एक सिद्ध महात्मा जंगल में रहता है वह कन्दमूल खाकर तपस्या कर रहा है। उनके भोजन करने के पश्चात ही यह यज्ञ सफल होगा और उसे बाद ही घण्टा बजेगा। सो आप जाकर उन्हें मनाकर ले आओ। आज्ञानुसार पाण्डव उनको मनाने गये। उन्हें निवेदन कर कहा कि महाराज! हमने अश्वमेध यज्ञ किया है कृपा कर चलकर ब्रह्म भोज स्वीकार करें। इस पर महात्मा ने कहा कि मैं उनके ब्रह्म भोज में शरीक होता हूँ जो मुझे एक सौ एक अश्वमेध यज्ञो का फल अर्पण करेगा। बेचारे पाण्डव असमंजस्य में पड़ गए। कहने लगे महाराज हमने तो एक ही अश्वमेध यज्ञ किया है सो भी पूर्ण नहीं हो रहा है सो हम आपको एक सौ एक अश्वमेध यज्ञ का फल कहां से देवे। महात्मा ने कहा कि मेरी तो यही शर्त रहेगी। अब आपकी मर्जी। बेचारे पांचा पाण्डव निराश होकर लौटकर आये। सारी हकीकत आकर भगवान श्री कृष्ण को बताई। यह सारा

वृतान्त सुनकर द्रोपदी ने उसके कहा कि आप चिन्ता मन करो, मैं महात्मा को मनाकर लाऊंगी।

दूसरे दिन प्रात: उठकर स्नान कर पवित्रता से भोजन बनाया और फिर नंगे पांव चलकर महात्मा के पास पहुँची और उन्हें निवेदन किया कि यज्ञ में पधार पर ब्रह्मभोज स्वीकार करें। महात्मा ने उससे कहा कि आपके पाण्डवों ने बताया होगा। मैं उन्हीं के यहां ब्रह्म भोज लेता हूँ जो मुझे एक सौ एक अश्वमेधों का फल देंगे। द्रोपती ने कहा कि मुझे आपकी यह शर्त मंजूर है। मैने आप जैसे सिद्ध महात्माओं से सुना है कि जब कोई जिज्ञासू पैदल चलकर पहुँचे हुए महात्मा के दर्शन करने जितने कदम चलकर आता है, उतने ही अश्वमेध यज्ञों का फल उसे मिलता है। अब मेरी आपको यह विनती है कि आप जैसे महात्मा का दर्शन करने के लिये मैं जितने कदम चलकर आई हूँ उतने अश्वमेध यज्ञों का फल मुझे मिलेगा। उसमें से एक सौ एक यज्ञों का फल आप ले लीजिये और शेष मुझे दे दीजिये।

महात्मा ने द्रोपदी का यह गूढ़ ज्ञान से युक्त उत्तर सुनकर उनके पीछे चुप चाप चलना आरम्भ कर दिया। द्रोपदी ने महात्मा के लिये श्रद्धा से अनेक पकवान बनाए थे। वे सब प्रेम से परोस कर उनके सामने रखे परन्तु महात्मा जी ने उन सबको एक साथ मिलाकर खाना आरम्भ किया। द्रोपदी दिल में सोचने लगी कि इतनी मेहनत से स्वादिष्ट पकवान बनाए परन्तु महात्मा ने इन सबको मिलाकर मजा बिगाड़ दिया। महात्मा ने भोजन कर लिया परन्तु फिर भी घण्टा नहीं बजा बेचारे पाण्डव दुखी होकर भगवान श्री कृष्ण से पूछने लगे कि अब क्या कसर रह गई है? इस पर भगवान श्री कृष्ण ने कहा कि यह सब द्रोपदी को खबर है। द्रोपदी मन को निर्मल करे तो धण्टा बजे। तब द्रोपदी ने दीन मन होकर महात्मा से क्षमा मांगी तभी घण्टा बजा और यज्ञ सफल हुआ।

दृष्टान्त बताकर परम पूज्य स्वामी जी प्रेमियों को कहने लगे कि यह यज्ञ परम पूज्य महामण्डलेश्वर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज एवं अन्य प्रेम प्रकाशी विद्वानो सन्तों के

पधारपण से ही सफल हो सका है। और जो प्रेमी दूर दूर से जितने कदम उठाकर ऐसे सिद्ध सन्त महात्माओं का दर्शन करने आये है और उनके अमोलक वचन रूपी अमृत पिया है उनको उतने ही यज्ञो का फल मिलेगा। जिन प्रेमियों ने इस यज्ञ में तन, मन और धन से आहूती दी है वे सब धन्यवाद के पात्र है। जिन प्रेमियों ने रात दिन एक कर इस वर्सी उत्सव को सफल बनाने का अथक प्रयास किया है हम सब उनके इस अमूल्य सेवा के लिये आभारी है।

अन्त में परम पूज्य स्वामी जी ने मेले के सभापति महामण्डलेश्वर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से निवेदन किया कि पलव डालकर सभी प्रेमियों को आशीर्वाद देकर मेले के समापन की घोषणा करें। परम पूज्य महामण्डलेश्वर स्वामी सर्वानन्द जी ने मेले के सफल आयोजन एवं उत्तम सेवाओं के लिये परम पूज्य स्वामी जी को बधाई दी एवं सभी सेवाधारियों को पखर पहनाकर उनके द्वारा की गई सुन्दर सेवाओं के लिये आशीर्वाद दिया।

परम पूज्य स्वामी जी ने विदाई के समय सभी सन्त जनों को यथा योग्य भेटाएं दी व पखर पहनाकर बड़े स्नेह से विदा किया। चलते समय परम पूज्य स्वामी जी ने परम पूज्य महामण्डलेश्वर सतगुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से विनती की कि अब आशीर्वाद देवें कि अगामी वर्ष वरसी उत्सव का मेला अपने ही आश्रम में लग सके। परम पूज्य महामण्डलेश्वर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने परम पूज्य स्वामी जी की इस महान भावना की बड़ी प्रशंसा की और कहा कि सतगुरू महाराज की आशीर्वाद का हाथ सदा आपके ऊपर है सो आपकी यह महान अभिलाषा अवश्य पूर्ण होगी। यह कहकर उन्हें प्यार से गले लगाकर आशीर्वाद देकर भावभीनी विदाई ली।

मेले के मेहमानों को प्यार से विदा करने के पश्चात परम पूज्य स्वामी जी फिर से नित्य नियम से सत्संग करने लगे। उनके सत्संग में दिनो दिन प्रेमियों की भीड़ बढ़ती जा रही थी। उसके साथ सेठ भागचन्द का प्रेम और श्रद्धा भी बढ़ती जा रही थी। वे परम पूज्य

स्वामी जी की सेवा के साथ सत्संग में आने वाले प्रमियों की भी खूब आव भगत करते थे। उनकी इतनी भक्ति एवं सेवा भावना देखकर परम पूज्य स्वामी जी ने उनको सभी प्रेमियों के सामने सत्संग में खूब धन्यवाद दिया। और कहा कि सेठ भागचन्द नें हमें अपने हृदय में जगह दी है जिसके लिये सतगुरू महाराज उनकी मनोकामना पूर्ण करेंगे व कारज रास करेंगे। यह कहकर एक दृष्टान्त प्रेमियों को बताया।

दृष्टान्तः- एक सन्त थे। उन्होने अपनी आवश्यकताएं अति सीमित कर दी थी। उनकी झोंपड़ी भी बहुत छोटी थी। उसमें केवल एक ही व्यक्ति सो सकता था।

एक दिन रात्रि के समय बहुत वर्षा हो रही थी। चारों ओर घोर अन्धकार छा रहा था। अचानक किसी ने दरवाजा खटखटाया। सन्त ने उठकर दरवाजा खोला। बाहर एक व्यक्ति गीले कपड़े से ठंड के मारे थर थर कांप रहा था। वह बेचारा रास्ता भूल गया था। उसने हाथ जोड़कर संत जी से निवेदन किया कि उसे एक रात अपनी झोपड़ी से सर ढकने की आज्ञा दे। सुबह होती ही वह अपनी राह चला जायेगा।

सन्त ने दरवाजा खोलते हुए कहा कि इस झोपड़ी में एक आदमी सो सकता है दो आदमी इस में केवल बैठ सकते है। सो हम दोनो बैठकर रात काटेंगे।

वह व्यक्ति अन्दर आ गया और संत ने भी दरवाजा बंद कर लिया। थोड़ी देर बाद दरवाजा फिर किसी ने खट खटाया। सन्त ने दरवाजा खोला और देखा एक व्यक्ति चोटी से एड़ी तक भीगा हुआ ठण्ड से कांप रहा था। इसने संत से आज्ञा लेकर रात काटनी चाही। और सुबह होने ही जाने के लिये कहा। सन्त ने उसे कहा कि यह कुटिया तुम्हारी अपनी है। बड़े हर्ष से यहां रात काटो। परन्तु मेरी कुटि बहुत छोटी है उसमें एक व्यक्ति के सोने की, दो के बैठने की और तीन के खड़े रहने की जगह है, आप निंसकोच अन्दर आओ हम तीनों खड़े रहकर रात काटेंगे। सचमुच उन तीनों ने खड़े रहकर धैर्य से रात काटी। सुबह होते ही दोनो मुसाफिर

संत जी का आभार व्यक्ति कर रवाना हो गए। उस सन्त की कुटिया भले ही छोटी थी परन्तु उसका हृदय बहुत विशाल था।

उसी प्रकार सेठ भागचन्द ने हमें रहने के लिये जगह दी उसके बाद सत्संग के लिये जगह दी और उसके बाद हमारे प्रेमियों के रहने के लिये जगह दी। जैसे प्रेमियों की संख्या बढ़ती गई वैसे वैसे ये अपने आपको समेटते चले गये। इसकी सेवा एवं त्याग सराहनीय है।

संयोग से उन दिनों सेठ वसणमल का सेठ भागचन्द के घर पर आना हुआ। उन्होंने परम पूज्य स्वामी जी का सत्संग सुना। उनके दिल में परम पूज्य स्वामी जी के लिये अगाध श्रद्धा जागी। उन्होंने सत्संग के पश्चात परम पूज्य स्वामी जी से आत्मचर्चा भी की। उस समय सेठ भागचन्द ने सेठ वसणमल को बताया कि इन थोड़े से दिनों में परम पूज्य स्वामी जी ने आदर्श नगर की जनता को वशीभूत कर लिया है। परम पूज्य स्वामी जी उनके हृदय में इस प्रकार समा गये कि उन्होंने परम पूज्य स्वामी को सदा के लिये यहां आकर अमृत रूपी सत्संग करने के लिये एक विशाल प्लाट मन्दिर बनवाने के लिये दान में दिया है।

सेठ वसणमल ने परम पूज्य स्वामी जी को निवेदन किया कि कृपा कर वह पवित्र स्थान दिखाएं जहां पर सतगुरू महाराज जी का मन्दिर बनेगा। उस समय परम पूज्य स्वामी जी सेठ भागचन्द एवं सेठ वसणमल को सोसायटी द्वारा दी गई ज़मीन पर ले आए जहां मन्दिर बनने वाला था। यह विशाल भूमि एवं पहाड़ों का रमणीक दृश्य देखकर सेठ वसणमल का दिल उमंग से भर गया। उसके भाव विभोर होकर परम पूज्य स्वामी जी से विनीत भाव से निवेदन किया कि इस यज्ञ में उसे सेवा का अवसर प्रदान करें। परम पूज्य स्वामी जी ने गद् गद् होकर उस सेवा का अवसर देकर आशीर्वाद दिया। सेठ वसणमल ने एकदम जेब में से पाँच हजार रूपये निकालकर परम पूज्य स्वामी जी के चरणों में रख दिये। दूसरे दिन सत्संग में प्रेमियों को यह खुशखबरी सुनाकर कहा कि सतगुरू महाराज ने सेठ वसणमल को भामाशाह बनाकर हमारी सहायता के लिये भेजा है। कल से ही मन्दिर के निर्माण का कार्य

आरम्भ किया जायेगा। यह कहकर भाव विभोर होकर परम पूज्य सत्संग महाराज जी के शान में यह भजन गाया।

भजन

तुहिंजे गंज में आ कमी कान काई,

तुहिंजो दरू संखा जो खुलियलु आ सदाई

१. करीं शाह प्यादार, प्यादनि खे दीं शाही,

जेका घुरा तुंहिजो थीन्दी नेठि साई...

२. तुहिंजे दर तां सुवाली वञे कीन खाली

जहिड़ी आश जहिड़ी तहिड़ी तूँ पुजाई...

३. वेचारा विरह में सवें सड़िया घुमनि था

उन्हनि जे अन्दर में तोई लिवं लगाई...

४. अलण आह जारी करी छो हिजर में,

जदनि जो जियापो जानब तूँ ई आहीं..

अर्थ:- भजन गाकर प्रेमियों को कहने लगे कि मेरे सतगुरू महाराज के यहां कोई कमी नहीं है उनके सखा के दरवाने सदा खुले हुए है। उनकी माया बेअन्त है। उनकी इच्छा से शाह प्यादे बन जाते है और प्यादों को बादशाही मिल जाती है। सब कुछ आपके हुकम से होता है। तुम्हारे दर से कोई भी सवाली खाली नहीं जाता जिसकी जैसी आशा होती है उसकी वैसी पूर्ण होती है। कई भक्त विरह की आग में जलकर तुम्हें याद कर भटक रहे है। उनके दिल में प्रेम की ज्योति तुमने ही जगाई है। हे परमात्मा! तुम सब के सहारे हो। तुम हम सब पर कृपा करना।

यह भजन गाकर परम पूज्य स्वामी जी प्रेमियों से कहने लगे कि हमारे सतगुरू महाराज सर्व शक्तिमान है सर्व व्यापक है। वे अपने कारज स्वयं की पूर्ण करते है। हमें केवल विश्वास रखकर संकल्प करना है फिर वे हमारी पुकार सुनकर आकर कष्ट में सहाय होते है।

उस दिन सायं काल सोमराज मल ,सेठ भागचन्द ,बाबू हनुमान प्रसाद, जमना बाबू, मास्टर सा. जगदीश प्रसाद, भार्गव सेठ और दूसरों को बुलाकर एक बैठक की कि अब मन्दिर के निर्माण का कार्य आरम्भ करना है। इसलिये सोच विचार कर योजना बनानी है। परम पूज्य स्वामी जी के मन में मन्दिर की रूप रेखा पहले से थी सो अब से विचार विमर्श कर यह निर्णय लिया कि सबसे पहले भूमि को नापकर यह तय करें कि हमें उस पर क्या बनवाना है। इसलियें प्रात:काल सभी को उस स्थान पर बुलवाया।

वहां से पहुँचकर प्रेमियों को कहा कि सब से पहले बीच में परम पूज्य सतगुरू महाराज का ऊँचा मन्दिर बनवाऐंगे जिस से दूर से भी प्रेमी सतगुरू महाराज के पवित्र दर्शन कर सकें और नमन कर श्रद्धा सुमन अर्पण कर सकें। इसके पास रहने के लिये कुटिया ,भण्डारा और रसोई बनवाई जायेगी। उसके साथ चारों और बाऊंडरी की दीवार बनवाकर काम पक्का करना होगा। सभी प्रेमियो को परम पूज्य स्वामी जी की यह योजना बहुत पंसन्द आई। और यह तय किया कि इस हेतु अब पक्का नक्शा बनवाया जाये। और उसे पास करवाया जाये। जब तक यह कार्य हो तब तक भूमि को समतल करने का कार्य आरम्भ किया जाये।

दूसरे दिन सत्संग में प्रेमियों को कहा कि अब सतगुरू महाराज के चरणों में सेवा करने का सही समय आया है हम सब मिलकर सेवा करेंगे। सेवा करने से हमारा मन निर्मल होगा और हमारा ध्यान उनके चरणों में लगा रहेगा। परम पूज्य स्वामी जी ने प्रेमियों को बताया कि जब टण्डोआदम में अमरापुर दरबार बन रही थी उस समय उन्होंने स्वयं अपने हाथों से सेवा की थी। उस समय सेवा करने में इतने तो लीन हो जाते थे कि खाने पीने की भी सुध नहीं रहती थी। दिल में उनके नाम का स्मरण और हाथों से उनकी सेवा करते रहते थे। उस सेवा

करने में इतना मिठास आता था कि यह भी पता नहीं चलता था कि कब सुबह हुई और कब शाम हुई।

प्रेमियों को कहा कि कल से यह सेवा का यज्ञ आरम्भ होता है। हम सब प्रातःकाल जल्दी प्लाट पर पहुंच जायेंगे। जो भी प्रेमी स्नेह और श्रद्धा से सतगुरू महाराज जी के इस यज्ञ में अपनी सेवा की आहूती देना चाहते हैं उनका स्वागत है। यह कहकर सेवा के महत्व का प्रेमियों को यह दृष्टानत बताया।

दृष्टानतः- एक राजा था। वह बड़ा दयालू व शिव भक्त था। उसकी यह हार्दिक इच्छा थी कि उसकी जनता भी शिव की भक्ति करे। राजा ने अपनी राजधानी में एक विशाल शिव मन्दिर बनवाया। उसमें एक बड़ा घण्टा लगवाया। फिर यह घोषणा करवाई कि घण्टा बजते ही सभी को प्रार्थना और आरती के लिये मन्दिर में पहुंच जाना है। प्रजा राजा को बहुत चाहती थी सो इसलिये उन्होंने उनके इस आदेश का पालन किया।

एक दिन की बात है कि एक मजदूर मन्दिर के अन्दर फावड़े से खुदाई कर रहा था। वह मन लगाकर तन मयता से अपना कार्य कर रहा था। वह अपने कार्य में ऐसा तो मगन था कि उसे मन्दिर के घण्टा का भी ध्यान नहीं रहा। राजा के सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया। बेचारे मजदूर ने बहुत मिनतें की, रोया गिड़ गिड़ाया परन्तु सिपाहियों ने उसकी एक भी नहीं सुनी। वे उसको राता के पास पकड़कर ले गये। और राजा ने इस बेकसूर मजदूर को आजीवन कारावास की सजा दे दी। बेचारा मजदूर रोता ही रहा परनतु किसी ने भी उसकी फरियाद नहीं सुनी।

रात्रि को राजा ने एक सपना देखा उसको कैलाश पर्वत पर भगवान शिव दिखाई दिये। भगवान शिव कह रहे थे कि 'हे राजन कर्म ही सबसे बड़ी भक्ति है। वह मजदूर बेकसूर है। तुम अपना आदेश अभी वापस ले लो। जो मन लगाकर अपना कार्य करता है वही मेरा सच्चा

भक्त है। राजा की आंखे खुल गई सुबह हो चुकी थी। राजा ने दरबार में पहुंचकर हुक्म दिया कि मजदूर को बाइज्जत बरी किया जाये।

इस दृष्टान्त का प्रेमियों के मन पर गहरा असर हुआ। वे सेवा का महत्व समझकर दूसरे दिन बड़ी संख्या में सेवा के इस यज्ञ में श्रद्धा से अपनी आहूती देने के लिये पहुंच गये। फावड़ो एवं तगारियों की व्यवस्था की गई एवं तरतीब से अपना अपनाभूूखण्ड बांटकर सब प्रेमी परम पूज्य स्वामी जी से आशीर्वाद लेकर कार्य में जुट गए। परम पूज्य स्वामी जी स्वयं कभी इस पवित्र यज्ञ क आहूती देने के लिये अपने हाथों से सेवा करने लगे। पहले तो प्रेमियों ने परम पूज्य स्वामी जी को निवेदन किया कि हम इतने सेवाधारी सतगुरू महाराज जी की सेवा कर रहे है। आप केवल आशीर्वाद का हाथ हमारे सर पर रखें बस यही बहुत है। परन्तु परम पूज्य स्वामी जी उन्हें समझाकर कहने लगे की भाई! यह हमारे सतगुरू महाराज जी की सेवा है सो यह हमें अवश्य ही करनी है। इसको करने से हमें आनन्द आता है। परम पूज्य स्वामी जी को इस प्रकार श्रद्धा से अपने सतगुरू महाराज की सेवा करता हुआ देखकर प्रेमियों में दुगना उत्साह पैदा हो गया। और सभी बड़ी लग्न से यह सेवा करने लगे। उस समय इस यज्ञ का दृश्य अलौकिक था।

थोड़े ही दिनों में यह ऊबड़ खाबड़ भूमि एक विशाल मैदान में बदल गई। सतगुरू महाराज की असीम कृपा से नक्शा भी पास हो गया। और परम पूज्य स्वामी जी ने सबसे पहले निज मन्दिर के निर्माण की आज्ञा दी। जमीन नापकर नीव खोदकर फर्श से करीब छः फीटऊपर आसार उठाकर बुलन्दी पर सतगुरू महाराज जी के मन्दिर का निर्माण कार्य आरम्भ किया गया। कार्य को शीघ पूर्ण करने की दृष्टि से और थोड़े समय में अधिक कार्य करने के लिये परम पूज्य स्वामी जी स्वयं तगारियां उठाकर यह महान सेवा करने लगे। परम पूज्य स्वामी जी को इस प्रकार सेवा करते हुए देखकर कारीगरों में उत्साह एवं श्रद्धा पैदा हो गई वे बिना रूके देर तक रूक दुगना कार्य करने लगे। यहंा भी उनके श्रद्धालु प्रेमी अपने सतगुरू महाराज को इस प्रकार स्वयं सेवा करते हुए देखकर उनके हाथों में तगारी लेकर खुद

करने की कोशिश करते थे। परन्तु परम पूज्य स्वामी जी उनको यह भजन सुनाकर सेवा करते रहते थे।

भजन

पोरिहियत थी पाणी भरियां मां

जे मंॄ पोरिहियत कनि

१. सिरू बि कन्दियस सेन्हों

बियंॄ देई बनि...

२. थोड़े पुजाणा तिनि जे

जीउ जियारियो जिनि...

३. सिरू बि कन्दियसि सदिको

घोरे मथां तिनि...

४. अहिड़े हाल हलनि जे

सादिक से सदिजनि...

अर्थ:- परम पूज्य स्वामी जी इस श्रद्धा और भक्ति से परिपूर्ण भजन में कहते है कि यदि सतगुरू महाराज मुझे अपने द्वार पर पनहारित बनाकर रखे तो मैं उनके दर पर पानी भरकर अपना जीवन सफल समझूंगा। फिर मैं सब कुछ कुर्बान कर अपना सिर उनके चरणों में चढ़ा दूंगा। मैं उनका आभारी हूँ जिनके सहारे मैं जी रहा हूँ। मैं उनके लिये अपना सर भी कुर्बान कर दूँगा। जो इस प्रकार रहते है चलते है वे ही सच्चे श्रद्धालू भक्त कहलाते है।

इस प्रकार कार्य बहुत तेज रफ्तार से चल रहा था। कुछ दिनों के पश्चात सेठ वसणमल परम पूज्य स्वामी जी के दर्शन के लिये आये। कार्य की प्रगति एवं परम पूज्य स्वामी जी की सतगुरू महाराज के लिये श्रद्धा एवं भक्ति देखकर बहुत प्रभावित हुए। परम पूज्य स्वामी जी को निवेदन किया कि मन्दिर के साथ साथ भण्डारे एवं कुटिया का कार्य भी आरम्भ करवाये। परम पूज्य स्वामी जी ने उन्हें उत्तर दिया कि अपनी गुदड़ी के अनुसार ही पैर पसारने चाहिये। सबसे पहले हमें सतगुरू महाराज जी के मन्दिर का कार्य सम्पन्न करना है। फिर यदि बचत हुई तो वो भी कार्य करवाऐंगे। इस पर सेठ वसणमल ने उन्हें हाथ जोड़कर विनती की जब तक आपका आशीर्वाद मेरे सर पर है तब तक किसी प्रकार की कमी नहीं होगी। आपको मेरी करबद्ध विनती है कि दिल खोलकर खर्चा करें। कल से ही कुटिया और भण्डारे का कार्य आरम्भ करवाने की कृपा करें एवं सतगुरू महाराज जी की मूर्ति बनवाने की आज्ञा करें। जिससे मन्दिर का निर्माण पूर्ण होने पर वे दोनों भी बनकर पूर्ण हो जायें। यह कहकर पाँच हजार रूपये परम पूज्य स्वामी जी के चरणों में रख दिये।

परम पूज्य स्वामी जी ने उसकी भक्ति एवं श्रद्धा की महान भावना पर प्रसन्न होकर उसे आशीर्वाद दिया। दूसरे दिन अधिक कारीगर लगाकर कुटिया और भण्डारे का कार्य आरम्भ करवाया।

यह कार्य चल ही रहा था कि परम पूज्य स्वामी जी ने परम पूज्य सतगुरू महाराज जी की एक बड़ी सुन्दर संगमरमर की मूर्ति बनवाने का विचार किया। पूछताज करने पर मालूम हो गया कि मूर्ति बनाने का कार्य जयपुर में अच्छा होता है। परम पूज्य स्वामी जी एकदम जयपुर पधारे। सभी मूर्ति कलाकारों की कला की परख कर एक अच्छे सिद्ध हस्त कलाकार को ढूंढ निकाला जिसकी सारे जयपुर नगर में बड़ी साख थी। उस कलाकार को सतगुरू महाराज जी की तस्वीर देकर उनके हृदय में जो सतगुरू महाराज की सजीव तस्वीर बन हुई थी उसका बयान कर उसे समझाया। कलाकार भी कल्पना का धनी था सो परम पूज्य स्वामी जी के हृदय में बनी हुई अपने सतगुरू महाराज जी की श्रद्धामय एवं प्राणमय सजीव मूर्ति

एकदम पकड़ गया तथा उन्हें निवेदन किया कि सभी कार्य छोड़कर वह सतगुरू महाराज की मूर्ति बनाने का कार्य आरम्भ कर देता है। आपने हमारे हृदय में सतगुरू महाराज जी के लिये मन में श्रद्धा एवं भक्ति उत्पन्न कर दी है। आज से सतगुरू महाराज जी हमारे भी सतगुरू है। हम पूर्ण लग्न से उन्हें साक्षात सन्मुख समझकर यह पुनीत कार्य आरम्भ करते है आप भली अपनी सुविधानुसार पधार कर हमें मार्गदर्शन प्रदान करते रहे।

सतगुरू महाराज जी को पूर्ण विश्वास था कि सतगुरू महाराज जी की मूर्ति तो लासानी बनेगी। वह हमारे हृदय में ब्राजमान उस सजीव मूर्ति के समान ही शानदार बनेगी। यह जिम्मेदारी कलाकारों को सौंपने के पश्चात प्रसन्नचित्त से परम पूज्य स्वामी जी अजमेर पधारे। निर्माण का कार्य जोर शोर से चल रहा था। एक तरफ परम पूज्य सतगुरू महाराज जी मन्दिर का कार्य चल रहा था दूसरे ओर कुटिया और भण्डारे का कार्य चालू था। परन्तु कुटिया और भण्डारा जल्दी ही बनकर ही तैयार हो गया। सतगुरू महाराज जी के मन्दिर में सीमेन्ट की आर.सी.सी. का मजबूत शाही गुम्बज बनने वाला था सो उस में कुछ समय लगने वाला था।

कुटिया तैयार होते ही परम पूज्य स्वामी जी कार्य की आठों पहर देख रेख करने हेतु एकदम कुटिया में रहने लग गए। अब तो सर्दी गर्मी में आठों पहर देख रेख कर कार्य को शीघ्रता से पूर्ण करवाने लगे। इस बीच में मूर्ति के लिये जयपुर में भी जाते रहते थे। वहां मूर्ति कलाकार को समय समय पर हिदायत देकर उत्साहित करते रहते थे। परम पूज्य स्वामी जी ने उस कलाकारों को भी अपने प्रेम की डोरी में बांध दिया था। सो वे बेचारे परम पूज्य स्वामी जी के दूसरे चक्कर से पूर्व ही निर्धारित कार्य से अधिक कार्य पूर्ण कर लेते ताकि परम पूज्य स्वामी जी प्रसन्न होकर उन्हें आशीर्वाद दे दें।

परम पूज्य स्वामी जी की लगन एवं अथक प्रयत्न से आखिर परम पूज्य सतगुरू महाराज जी का मन्दिर बनकर तैयार हो गया। अब केवल सतगुरू महाराज जी की मूर्ति की

स्थापना शेष रहती है। जयपुर के कलाकारों से मूर्ति पूर्ण होने का समय पूछ कर मर्हूत निकलवाकर प्रेम प्रकाश मण्डल के सभी सन्तों को एवं प्रेमियों को मूर्ति स्थापना उत्सव के निमंत्रण पत्र भेज दिये। परम पूज्य महा मण्डलेश्वर जी से परम पूज्य स्वामी जी जयपुर आते जाते अवश्य मिलते रहते थे। यह मर्हूत भी उन्हीं के परामर्श पर निकलवाया। फिर भी उन्हें उत्सव पर पधारने का निमंत्रण आदर पूर्वक व्यक्तिगत रूप से देकर पधारने के लिये विनती कर आये।

आखिर वह शुभ दिन आ ही गया। परम पूज्य सतगुरू महाराज जी की मूर्ति बनकर तैयार हो गई। परम पूज्य स्वामी जी अजमेर के प्रेमियों को साथ लेकर स्वयं जयपुर पधारे। सतगुरू महाराज जी की पवित्र मूर्ति देखकर परम पूज्य स्वामी का तन मन अति प्रसन्न हो गया। बड़ी सावधानी से ट्रक में मूर्ति उठवाकर अजमेर पधार गये।

मूर्ति के अनावरण का समय आ गया। दिसम्बर माह १९५० में बहुत बड़े उत्सव का आयोजन किया गया। इस शुभ अवसर पर समस्त प्रेम प्रकाशी संत एवं श्रद्धालू प्रेमी दूर दूर से अपने प्यारे सत्संग महाराज जी के दर्शन करने आश्रम में पहुँच गये। अजमेर नगर एवं आदर्श नगर के प्रेमी तो जैसे उमड़ पड़े हो। सतगुरू महाराज की जय जयकार से आसमान गूंज उठा। यह उत्साह की लहर चारों और फैल गई।

मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा के लिये हवन का आयोजन किया गया। दूसरे विद्वान पण्डितों के साथ अजमेर के प्रसिद्ध पण्डित एवं परम पूज्य स्वामी जी के प्रिय पे्रमी पण्डित भगवान दास शास्त्री भी पधारे हुए थे। हवन की वेदी के चारो ओर परम पूज्य महामण्डलेश्वर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, परम पूज्य स्वामी जी के प्रेमी मनमेली प्रेम प्रकाशी संत स्वामी चन्दनराम जी पूने वाले एवं स्वयं परम पूज्य स्वामी जी बैठे।

वैदिक विधि के मंत्रों का उच्चारण होने लगा। सारा वातावरण सुगन्धित हो गया। सभी प्रेमी इस पवित्र पूजा में सम्मिलित हुए। विधि विधान से हवन की समाप्ति के पश्चात

माल्यार्पण किया गया। तत्पश्चात सतगुरू महाराज जी की आरती की गई। उसके पश्चात प्रेमियों के दर्शन के लिये मन्दिर के पट खोले गये। सतगुरू महाराज जी के दर्शन कर दर्शनार्थियों की आंखें ठंडी हो गई। मूर्ति के अलौकिक ज्योति थी एवं विचित्र आभा थी जिसने दर्शनार्थियों को मंत्र मुग्ध कर दिया। सतगुरू महाराज के मुख मण्डल पर ज्योति झलक रही थी। इस मूर्ति के दर्शन कर प्रेमी ऐसे समझने लगें कि परम पूज्य सत्गुरू महाराज जी साक्षात ब्राजमान है। मूर्ति से प्रेमियों की आंख ही नहीं हट रही थी और इस शुभ दर्शन से दिल ही नहीं भर रहा था।

इस पवित्र शुभ अवसर पर पूज्य स्वामी जी के प्रसन्नता का कोई ठिकाना नहीं था। आज उनकी चिर साधना पूर्ण हुई थी। उनका संकल्प सिद्ध हुआ था। परम पूज्य सतगुरू महाराज बड़ी कृपा कर उनके द्वारे पधारे थे। जिन की आठों पहर अन्दर में याद थी। उन सतगुरू महाराज जी के साक्षात दर्शन होते रहेंगे और सतगुरू रूपी भगवान के अर्चना का सुअवसर प्राप्त होता रहेगा यह सोचकर उनके हृदय में अपार आनन्द की लहरें उठने लगी। उस शुभ अवसर पर यह भजन गाकर सतगुरू महाराज के पवित्र चरण कमल में श्रद्धा के सुमन चढ़ाये।

भजन

वाह वाह अजु दर्शन थियो

श्री सतगुरू महाराज जो

भाग जगिया कर्म फलिया

मुख दिठो सरिताज जो।

१. ताप ऐं सनताप सां

हीअ जान सारी थे जली

थी वेई सीतल ऐं सुन्दर

पाए गियानु गणराज जो

२. आश हुई मुहिंजे अन्दर में

शल मिलां हिकवार मां

अजु उमेदूँ सभि पुनियूँ

दर्शन पाए देवराज जो

३. हथ बधी हाणे निमी

'माधव' कयां प्रणाम थो।

शल रहे मुहिजे मथां

हथिडो गुरूनि जे बाझ जो

अर्थ:- आज कैसा शुभ दिन आया है जो सतगुरू महाराज के दर्शन हुए है। उनके दर्शन मात्र करने से मेरे भाग्य जाग गये और कर्म खुल गये है। उस सिरताज के शुभ मुख मण्डल के दर्शन से सब मंगल हो गया। पाप और सन्ताप से यह सारी जान जल रही थी। परन्तु सतगुरू महाराज से ज्ञान प्राप्त कर यह काया सीतल एवं सुन्दर हो गई। मेरे मन में यह आशा थी कि एक बार अपने सतगुरू महाराज से मिलूं । सो आज उस देवराज के दर्शन कर मेरी सारी मुरादें पूर्ण हो गई मैं हाथ जोड़कर अपने सतगुरू महाराज को यह विनती करता हूँ कि अपनी कृपा का हाथ सदा मेरे सर पर रहें।

परम पूज्य स्वामी जी के साथ दूसरे प्रेम प्रकाशी सन्तों ने भी परम पूज्य सतगुरू महाराज के चरण कमलों में श्रद्धा सुमन चढ़ाये। इस अवसर पर परम पूज्य महा मण्डलेश्वर सतगुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज जी ने स्तुति करने के पश्चात परम पूज्य स्वामी जी की अटूट

गुरू भक्ति को सराहते हुए कहा कि परम पूज्य स्वामी माधवदास महाराज जी ने अपने त्याग, तपस्या एवं दृढ़ संकल्प द्‌वारा भारत में यह सतगुरू महाराज की यह पहली सजीव सुन्दर एवं ज्योति वाली मूर्ति स्थपित करवाई है। यह सब इनकी गहरी गुरू भक्ति का परिणाम है। हम सम्पूर्ण प्रेम प्रकाश मण्डल की ओर से इस महायज्ञ केसम्पूर्ण होने पर उन्हें धन्यवाद देते है। सतगुरू महाराज के कृपा का हाथ सदैव इन पर रहेगा।

इस सुअवसर पर प्रेमियों के लिये भण्डारे की भी व्यवस्था की गई थी। प्रेमी प्रसाद पाकर सतगुरू महाराज जी के दर्शन पर प्रसन्न होकर अपने अपने घर लौटने लगे।

परम पूज्य स्वामी जी अब प्रतिदिन अपने सतगुरू महाराज जी की सेवा कर सत्संग करने लगे। परम पूज्य सतगुरू महाराज जी की मूर्ति स्थापना के बाद आश्रम की रौनक ही बढ़ गई। दूर दूर से प्रेमी सतगुरू महाराज के दर्शनों को आने लगे। हर रोज जैसा मेला लगा रहता था।

इस प्रकार सतगुरू महाराज के शिक्षाओं का प्रचार करते समय बहुत आनन्द से कट रहा था। अब दूसरे नगरों के रहने वाले प्रेमी परम पूज्य स्वामी जी को पुकारने लगे। उनका स्नेह एवं श्रद्धा देखकर उनकी प्यास बुझाने हेतु परम पूज्य स्वामी जी ने रटन का कार्यक्रम बनाया।

सबसे अधिक स्नेह एवं आग्रह सेठ पुरूषोत्तम दास जी का था। इसलिये सबसे पहले कलकत्ते रटन का कार्यक्रम बनाया। कलकत्ते पहुँचने पर सेठ पुरूषोत्तम दास एवं उनके परिवार के सदस्यों ने परम पूज्य स्वामी जी का हार्दिक स्वागत किया और उनकी खूब सेवा की।

कलकत्ते के प्रेमियों को जैसे परम पूज्य स्वामी जी के पधारने का पता लगा। वैसे वे उनके दर्शन हेतु दौड़ते हुए आये। यहाँ उनको अपनी श्रद्धालू भक्तिन दादी गोपी मिली जिसने हैदराबाद में सत्संग महाराज की कुटिया बनवाने के लिये नाक का हीरा उतार कर परम पूज्य

स्वामी जी को दिया था। यहांपे इन सन्त सेवी देवी ने परम पूज्य स्वामी जी को सत्संग करने तथा वहां पर परम पूज्य सतगुरू महाराज की मूर्ति स्थापना के लिये एक कमरा अर्पण किया। उसका त्याग एवं श्रद्धा देखकर उसे खूब आशीर्वाद दिया।

अब इस स्थान पर प्रतिदिन सत्संग होने लगा। प्रेमी स्नेह एवं श्रद्धा से प्रतिदिन सायं काल सत्संग में आने लगे। सत्संग की महिमा बताते हुए परम पूज्य स्वामी जी ने उन्हें यह भजन सुनाया।

भजन

अथई सत्संग शान्ति पाइण लाइ

पहिंजे मन जी मैल मिटाइण लाई

१. सत्संग में सच्चों ज्ञान मिले

ऐं आत्म जो पिणि ध्यान मिले

सच्चे नाम सन्दों त निशान मिले

हीअ राह राम रीझाइण लाई...

२. सत्संग समुन्ड में नाव अथई

सच्चे राम मिलण जी राह अथई

जे प्रभू पसण जी चाह अथई

रखु अगिते विख बधाइण लाई...

३. सत्संग में दुख दर्द मिटे

ऐ कोट जन्म जो कजऱ् मिटे

हिन देह दुखीअ जो मर्ज मिटे

हीअ दवा दर्द हटाइण लाई...

४. जे सत्संग में पेरू पाईदें

कदहिं माधव दोखों न खाईदें

सजो लोकु सुखी करे भाईदें

रखु नातो तोड़ि निभाइण लाई...

अर्थ:- परम पूज्य स्वामी जी इन भजन में सत्संग की महिमा बताते हुए कहते है कि सत्संग मन की शांति प्राप्त करने के लिये तथा मन की मैल मिटाने के लिये है। सत्संग में हमें आत्म ज्ञान प्राप्त होता है तथा आत्म साक्षत्कार होता है। सत्संग में परमात्मा को प्राप्त करने का रास्ता मिलता है। यही प्रभू की रिझाने की राह है। सत्संग इस संसार रूपी सागर में नाव के समान है। तथा अपने स्वामी से मिलने की सच्ची राह है। यदि तुम परमात्मा के दर्शन करना चाहते हो तो फिर सत्संग में आने के लिये कदम बढ़ाओं। सत्संग दुख दर्द मिटाता है और जन्म जन्मातर का कर्ज उतर जाता है। इसी से देह के रोग मिटेंगे। यह दवा दर्द मिटाने के लियेहै। यदि तुम सत्संग में आओंगे तो कभी भी धोखा नहीं खाओंगे। सारा लोक तुम्हें सुखी प्रतीत होगा। इसलिये तुम सत्संग के साथ अपना नाता जोड़ो और नाता जोड़कर अन्त तक उसको निभाना।

सत्संग की महिमा का भजन सुनाने के पश्चात परम पूज्य स्वामी जी प्रेमियों को कहने लगे कि बड़े भाग्य से हमे सत्संग रूपी अमृत प्राप्त होता है। उसका हमें अवश्य लाभ उठाना चाहिये। सत्संग से हमें मन की शान्ति मिलती है। मन का मैल साफ होता है और ज्ञान की प्राप्ति होती है। जिससे हमें आत्म साक्षात्कार होगा और परमात्मा को प्राप्त कर

सकेंगे। इस संसार रूपी सागर में सत्संग ही नाव के समान है। जिसके सहारे हम उसको पार कर परमात्मा से मिल सकते है। यदि आपको परमात्मा से मिलने की चाह है और इस रूहानी राह पर चलने की तमन्ना है तो फिर आपको सत्संग का सहारा लेना होगा। सत्संग में आने से हमारे सब दुख दूर हो जायेंगे। इस लोक में सुख पाकर परलोक सुधारेंगे। इसलिये नित्य नियम से सत्संग में आना चाहिये। यह मानुष जन्म हमें मिला ही परमात्मा को प्राप्त करने के लिये है। इसलिये हर पल उस परमात्मा का स्मरण कर अपना यह अमूल्य हीरे जैसा जन्म सफल करना है। दुनियां के काम काज भी करते रहो और परमार्थ की राह पर भी चलते रहो। यह सब कार्य बनेगा करते रहो। यदि परमात्मा के नाम के स्मरण में सुस्ती करेंगे और यह सोचेंगे कि पहले यह काम करने के बाद मैं स्मरण करूंगा तो फिर हमारे हाथ से यह बेला निकल जायेगी। और पश्चाताप करते रह जायेंगे। दुनियां के कारज पूरे होने के नहीं ंहै। इसलिये मन को समझाकर शीघ्र ही सत्संग का सहारा लेकर नाम का स्मरण करें। यह बात समझाने के लिये परम पूज्य स्वामी जी ने एक दृष्टान्त सुनाया।

दृष्टान्तः- एक दिन एक महात्मा रटन करते हुए गाँव में आये। घूमते घूमते गाँव में उन्हें एक श्रद्धालू भक्त मिला जो उन्हें अपने घर ले आया। वहां पर उसने बड़े स्नेह एवं श्रद्धा से महात्मा जी की खूब सेवा की। उस भक्त के आग्रह पर महात्मा जी ने देखा कि उस बेचारे की आर्थिक स्थिति बहुत तंग है। यह होते हुए भी उस श्रद्धालू भक्त ने अपना पेट काटकर भी महात्मा जी की खूब सेवा की। इसलिये महात्मा जी को उस पर दया आ गई। सोचा कि इस का यह कष्ट काटना चाहिये। यह सोचकर चलते समय महात्मा जी ने उस भक्त को पारसमणी देकर कहा कि यह पारसमणी ले, यह लोहे को सोना बना देती है। अब तुम्हें जितना भी सोना बनाना है बना लो। तीन महिने के बाद हम रटन से लौटेंगे और तुमसे यह पारसमणी वापस लेकर चले जायेंगे। सो एक बार का ध्यान रखना कि उसके बाद हम एक घड़ी के लियेभी ज्यादा तुम्हारे पास पारसमणी नहीं छोड़ेंगे। इसलिये इस अवधि में तुम्हें जितना भी सोना बनाना है बना डालो।

महात्मा जी उसे समझाकर अपने रटन पर चले गये। महात्मा जी के जाने के बाद भक्त बाजार में लोहे के व्यापारी से पूछा कि भाई! लोहा क्या भाव है? व्यापारी ने कहा, भाई! कल पाँच रूपये सेर था और आज छः रूपये सेर है। इस पर भक्त ने सोचा कि महंगा लोहा क्यों खरीद करूं। सो व्यापारी को कहा कि भाई लोहा जब वापस पाँच रूपये सेर होगा तब खरीदूगां एक सप्ताह के पश्चात फिर लोहा खरीद करने गया, भाव पूछा, व्यापारी ने कहा भाई! अब तो लोहा सात रूपये सेर है, अभी भाव कम नहीं हुआ है। बेचारा भक्त बड़े सोच में पड़ गया कि अब क्या करना चाहिये। लोहा तो महंगा होता जा रहा है, आखिर सोचा कि भली भाव उतरे तो फिर लोहा लेंगे।

लोहा दिनों दिन महंगा होता चला गया और यह भक्त लोहे के भाव के उतरने का इंतजार करता रहा। इस प्रकार असमंजस की स्थिति में तीन महिने पूरे हो गये। न तो भाव उतरा और न ही वह लोहा खरीद सका। ऊपर से महात्मा जी आ धमके। महात्मा जी ने सोचा था कि मेरे भक्त ने सोने के अंबार लगा दिये होंगे। झोपड़ी के स्थान पर एक शाही महल होगा और वह निर्धनता के शिकंजे से आजाद होकर खूब आनन्द में होगा।

परन्तु ये क्या हुआ? यहां तो वे ही ढाक के तीन पात। भक्त का हाल पहले से भी ज्यादा बेहाल था। यह देखकर उसे बहुत आश्चर्य हुआ। पारसमणी होते हुए भी यह कंगाल का कंगाल रह गया। उसने भक्त से पूछा कि भाई! तुम्हे हम पारसमणी दे कर गये थे। जिससे तुम तीन महीने में पूरे सोने के हो जाते। फिर तुमने यह सुनहरी अवसर गफलत में कैसे गंवाया। बेचारा भक्त दुखी होकर बोला कि महाराज! लोहा मंहगा हो गया था सो सोचा कि सस्ता होने पर लेकर सोना बनाऊँगा परन्तु लोहा तो सस्ता हुआ ही नहीं । उस पर महात्मा जी ने कहा कि भाई! यदि सौ रूपये सेर लोहा लेकर भी सोना बनाते तो भी सोना तो हजारों में बिकता, तुमने यह क्यों नहीं सोचा कि फिर भी यह सौदा सस्ता है।

खैर तुम्हारी तकदीर में कंगाली लिखी हुई है। उसको हम क्या कर सकते है। अब हमें पारसमणी वापस दे दो तो हम आगे जावें। पासमणी लेकर महात्मा अफसोस करता हुआ रवाना हो गया भक्त अपने हाथों से अवसर गवांकर हाथ मलता हुआ रह गया।

परम पूज्य जी दृष्टान्त देकर कहने लगे कि परमात्मा ने बड़ी कृपा कर हमें यह पारस जैसा यह मानुष जन्म व इन्सानी जामा दिया है कि हम परमात्मा का स्मरण कर जन्म मरण के चक्र से छूटकर मुक्ति प्राप्त करें। यदि हमने सुजाग होकर सत्संग का सहारा लेकर परमात्मा का स्मरण नहीं किया तो एक दिन काल आकर सर पर खड़ा होगा और हम उस भक्त की तरह हाथ मलते रह जायेंगे। इसलिये कितने भी कष्ट आवे परन्तु कष्ट उठाकर भी सत्संग में आकर परमात्मा का स्मरण नित्य करते रहोगे तो यह लोक सफल एवं परलोक सुहेला होगा।

इस प्रकार प्रेमियों को खींचकर नाम का स्मरण करवाते रहे। रहते रहते यहां के प्रेमियों को धीरे धीरे वहां के आश्रम की व्यवस्था समझाकर सुर्पद करते गये। जिससे उनकी अनुपस्थिति में भी सत्संग का दीबाण जगा रहे और सतगुरू महाराज जी की सेवा होती रहे। हर शनिवार को खूब प्रेमी आते थे। उस दिन को परम पूज्य सतगुरू महाराज का जन्मदिन मानकर खूब स्नेह एवं श्रद्धा से मनाते थे। उस दिन खूब ढोढा चटनी एवं प्रसाद बांटते थे। प्रेमियों को कहते थे कि यदि हर रोज आना सम्भव नहीं हो तो हर शनिवार पर अवश्य आवें।

वहां के प्रेमियों ने परम पूज्य स्वामी जी के वचन को खूब निभाया। उन्होंने सत्संग की दीबाण बराबर जगाए रखा। शनिवार के दिन को परम पूज्य सत्संग का जन्म दिन मानकर पूर्ण स्नेह एवं श्रद्धा से मनाते रहे।

कलकत्ते में रहते हुए सेठ परशोतमदास के सम्पूर्ण परिवार ने उनकी बड़ी स्नेह एवं श्रद्धा से सेवा की। सम्पूर्ण परिवार परम पूज्य स्वामी जी को भगवान मानकर उनकी स्नेह एवं श्रद्धा से पूजा करनेलगे। सम्पूर्ण परिवार में ऐसी तो श्रद्धा जागी कि सम्पूर्ण परिवार ने

उनसे बड़े श्रद्धा से नाम लिया और उनके चरण कमल धोकर उस जल को चरणामृत समझकर सब पी गए। परम पूज्य स्वामी जी उनकी भक्ति एवं विश्वास देखकर बहुत प्रसन्न हुए एवं उन्हें हृदय से आशीर्वाद दिया। उनकी असीम कृपा से यह परिवार खूब फलने फूलने लगा। उनके व्यवसाय में बरकत पड़ती रही। इस बरकत के साथ उनके भक्ति में भी वृद्धि होती रही और उनका विश्वास भी बढ़ता चला गया। उन्होंने सतगुरू महाराज की सेवा तन मन व धन से कर अन्त तक निभाया, सतगुरू महाराज जी के वरसी उत्सव पर हर साल सपरिवार आकर तन मन धन से सेवा करते रहते है। उनके हृदय में ऐसी तो श्रद्धा जागी जो १९७३ में श्रीमद् भगवद् गीता सिन्धी में छपवाकर परम पूज्य स्वामी जी की पवित्र सेवा में अर्पण की। उनकी सदा यह तमन्ना रहती थी कि अपने सतगुरू महाराज की खूब सेवा कर उन्हें प्रसन्न करें एवं उनका नाम अमर करें। अपने सतगुरू महाराज का नाम अमर करने के लिये इस परिवार ने परम पूज्य स्वामी जी की हरिद्वार वाली दरबार में नया रूप देकर वहां अपने सतगुरू महाराज जी की मूर्ति की स्थापना कर उनके नाम से एक धर्मशाल बनवाई जहां आकर प्रेमी सुख पाते है।

इस प्रकार कलकत्ते के प्रेमियों को नाम दान देकर सत्संग रूपी अमृत पिलाकर परम पूज्य स्वामी जी अजमेर लौटे। क्योंकि उनको यहां के आश्रम के व्यवस्था की चिन्ता थी। यहां के प्रेमी उनके दर्शन के लिये सीप के समान प्यासे आस लगाए बैठे थे। वे उनके पधारने पर बहुत खुश हुए। उनके पधारने से आश्रम में रौनक आ गई। उनके रटन पर रहते समय उनके प्रेमी बाबू मुरलीधर हनुमान प्रसाद आश्रम की देखभाल एवं व्यवस्था करते थे। ये श्रद्धालु भक्त हर रोज भजन भाव करते रहते थे एवं प्रेमियों को नित्य नियम से रामायण का पाठ सुनाते थे। यह व्यवस्था परम पूज्य स्वामी जी को बहुत अच्छी लगी।

परम पूज्य स्वामी जी के पधारने का समाचार सुनकर आदर्श नगर एवं अजमेर नगर के प्रेमी उनके शुभ दर्शन के लिये दौड़ते हुए आये। अपने सतगुरू महाराज जी के शुभ दर्शन कर बेहद प्रसन्न हुए। और उन्हे करबद्ध विनती की कि इस प्रकार इतने लम्बे समय तक हम

से बिछुड़ कर नहीं जाये। हम आपके दर्शन के बिना दुखी हो जाते है। परम पूज्य स्वामी जी उन्हें समझाकर कहने लगे कि आप नित्य नियम से आश्रम में आकर सतगुरू महाराज के पावन दर्शन कर सत्संग सुनकर नाम का स्मरण करते रहो। हमतो सदा आपके संग है।

कुछ दिन अजमेर में रहकर प्रेमियों की प्यास बुझाते रहे। परन्तु बड़ौदे के प्रेमी जिनमें दादी सती विशेष रूप से परम पूज्य स्वामी जी को बार बार वहां पधारने का आग्रह करती रही, परम पूज्य स्वामी जी उन प्रेमियों के स्नेहसिक्त पुकार को अधिक दिनो तक टाल नहीं सकें।

बड़ौदे पहुँचकर प्यासे प्रेमियों को दर्शन देकर सत्संग रूपी अमृत पिलाकर खूब मौज मचाई। परम पूज्य स्वामी जी के पहुँचने का समाचार प्रेमियों द्वारा सारे शहर में बिजली की तरह फैल गया। प्यासे प्रेमी परम पूज्य स्वामी जी के दर्शन के लिये दौड़ते हुए आये। सभी के दिल में परम पूज्य स्वामी जी के लिये अटूट श्रद्धा थी। वे सब उनकी सेवा करने में लग गए। परम पूज्य स्वामी जी प्रेमियों के निमंत्रण पर वारिशा कॉलोनी एवं अन्य स्थानों पर जाकर प्रेमियों को दर्शन देकर सत्संग करते थे। यहां पर परम पूज्य स्वामी जी के सम्पर्क में संत ऊदवदास जी आये। संत ऊधवदास जी के दिल में परम पूज्य स्वामी जी के लिये ऐसी तो श्रद्धा जागी तो बाला मरदाना की भान्ति आठों पहर उनके साथ साये के समान रहने लगे। वहां से अजमेर आते समय उनके साथ अजमेर आये और उन्हीं के साथ रहने लगे।

बड़ौदे में रहते समय दादी सती, दादी ज्ञानी बाई, व दादी लक्ष्मी बाई ने उनकी खूब सेवा की। यहां पर इस बार सेठ गागनदास नथरदास सागर टाकीज़ वाले परम पूज्य स्वामी जी के सम्पर्क में आये। ये परम पूज्य स्वामी जी के नये प्रेमी थे। किन्तु उनके अमृत रूपी वचन सुनकर ऐसे तो मुध्य हो गये थे कि उनको अपने साथ लेकर अपने बंगले में रहने की व्यवस्था की और उन्हें कर बुद्धविनती की कि हर रोज वहीं पर सायं काल सत्संग का दीबाण लगाएं। सत्संग के लिये बहुत अच्छी व्यवस्था थी। उनका स्नेह एवं श्रद्धा देखकर परम पूज्य

स्वामी जी यहीं पर रहकर प्रतिदिन सत्संग करने लगे। सत्संग में प्रेमियों को हर पल यही शिक्षा देते थे कि पल पल प्रभू का स्मरण कर यह मानुष जन्म सफल बनाएं। यह बेला हमारे हाथ फिर नहीं आएगी। इसलिये इस गफलत की नींद से जागकर इस मोह माया को त्याग कर परमात्मा से सच्ची प्रीति लगाओं। यह बात समझाने के लिये प्रेमियों को यह भजन सुनाया।

भजन (सुर भैवरी)

अथई साझुरि कर त सुजागी

छदे निन्ड घणी कर याद धणी,

माणि मुहबत वारे माग खे।

१. तो त दीहु विञायो घुमन्दे,

तो त राति विञाई सुमहन्दे

पहिंजो पाण कयइ कूडो माणु कयइ

लातइ मोह माया जे दाग खे...

२. हीअ उमिर वञे थी हलन्दी

तिखी नहर जीअ वहंदी

ध्यान घरि सिघो हलु पार सिघो

लंघे छोह छोलियुनि जे छाग खे...

३. दिसु पहर घड़ी हीअ पलक वेई

लदे लोक मंझा हीअ खलक वेई।

तुहिंजी अजु सुभाणे थीन्दी जाणु पुजाणी

कीअं झागींदे हिन झाग खे...

४. हीअ 'माधव' निन्द अभागी

जपि नाम गुरूअ जो जागी

अविद्या मोह वारी कटे तुरन्त जारी

वारि वारिस दे तूँ वाग खे...

अर्थ:- इस भजन में परम पूज्य स्वामी जी प्रेमियों को सुजाग करते हुए कहते है कि इस जीवन की प्रभात है इसलिये तुम गफलत की नींद से जागकर परमात्मा का स्मरण कर। और मुहौबत के मिठास का आनन्द उठाओ। तुमने अब तक दिन घूमकर गंवाया और रात सोकर गंवाई है। तुम अपनी झूठी मस्ती में रहे हो। तुमने मोह माया के जाल में फंसकर अपने आपको और अपने परमात्मा को भुलाकर अपने जीवन में दाऽग लगा दिया है। यह जीवन तो गुजरता जा रहाहै। यह तीखी नहर की तरह भागती जा रही है। इसलिये शीघ्र ही ध्यान करें और जल्दी पार चले चलो और इस संसार को लहरों को चीरता हुआ तूँ पार हो जा। देखों समय पल पल हाथ से जा रहा है, और इस संसार में से लोग गुजरते जा रहे है तुम्हारी भी उन जाने वालों के समान अन्त घड़ी आयेगी। फिर तुम गहरे सागर को कैसे पार करोंगे। स्वामी जी कहते है कि इस अभागी गफलत की नींद से जागो और परमात्मा के नाम का स्मरण करो। तुम अविद्या और मोह से जाल को काट कर शीघ्र अपनी यात्रा उस परमात्मा की ओर कर लो तो तुम्हारा यह मानुष जन्म सफल हो।

यह भजन सुनाकर उन्हें समझाकर कहने लगे कि भाग्य से हमें यह मनुष्य रूपी जामा मिला है। और बड़े भाग्य से हमें संतों का संग मिला है सो हम हर रोज सत्संग में आकर

परमात्मा का स्मरण करें। परमात्मा के स्मरण से हम संसार रूपी सागर पार कर सकते है। हम आठों पहर गफलत की नींद में गलतान होकर गोते खा रहे है। हम यह भूल गए है कि यह दुनियां मुसाफिर रवाना है। यहां से हरेक को एक दिन जाना है। सब कुछ यही रह जायेगा। कोई भी हमारे साथ नहीं जायेगा। केवल परमात्मा का नाम ही हमारा सहारा है। इसलिये शीघ्र ही सुजाग होकर पल पल परमात्मा के नाम का स्मरण करें। दिन रात उसी परमात्मा को पुकारें। एक पल भी व्यर्थ नहीं गंवाये। ऐसा नहीं हो कि वह बेला हाथ से निकल जाये और हम पछताते रह जाये।

यह बात समझाने के लिये परम पूज्य स्वामी जी ने उन्हें यह दृष्टान्त बताया।

दृष्टान्त:- एक जंगल में एक लकड़हार रहता था। हर रोज लकड़िया काटकर उसमें से कोयले बनाकर शहर में बेचने जाता था। इस प्रकार वह अपने परिवार का पालन पोषण करता था। एक दिन राजा शिकार करते हुए अपने साथियों से बिछुड़कर रास्ता भूल गया। रास्ते की तलाशी में भटकते भटकते राजा आकर लकड़हारे के पास पहुँचा। भूख और प्यास में व्याकुल होकर उसने लकड़हारे से खाने के लिये रोटी और पीने के लिये पानी मांगा। लकड़हारे ने उसकी हालत पर दया कर उसे पानी पिलाया और जो रोटी वह खुद के खाने को लाया था उसको खिला दी। राजा खाना खाकर और पानी पीकर बहुत प्रसन्न हुआ।और उसको कहा कि मैं इस देश का राजा हूँ। जब भी तुम्हें किसी चीज की आवश्यकता हो तो तुम बिना संकोच मेरे पास चले आना। तुमने जो मुसीबत के समय मेरी सहायता की है मैं उसके लिये तुम्हारा आभारी हूँ। यह कहकर रास्ता पूछकर राजा नगर की और लौट गया।

बेचारा लकड़हारा हर रोज लकड़िया काटकर अपना गुजर करता था। इस प्रकार करते करते जंगल में से लकड़िया समाप्त होने लगी। उसे यह चिन्ता सताने लगी कि अब गुजर कैसे होगा। तब उसको राजा वाली बात याद आई कि उसने कहा कि मुसीबत के समय वह मेरी सहायता करेगा। सो एक दिन तैयार होकर दरबार में पहुँच गया। दरबान को बोला कि

राजा को जाकर कहो कि जंगल से तुम्हारा लकड़हारा मित्र आया है। राजा ने यह समाचार सुनते ही उसे अपनी दरबार में बुला लिया। और सारा हाल चाल पूछा। लकड़हारे ने उसे निवेदन कर कहा कि जंगल से लकड़िया समाप्त हो गई है। अब मैं अपना गुजर कैसे करूंगा, इस चिन्ता ने मुझे बहुत समाया है। इसलिये सहायता के लिये मैं आपके पास आया हूँ।

राजा ने इस के दीन हीन हाल पर दया कर अपने मंत्री से विचार विमर्श किया कि इस गरीब की किस प्रकार सहायता की जाये जिससे वह जिन्दगी भर सुख से रह सकें। मंत्रियों ने राजा को राय दी कि इस को पास वाला चन्दन का वन दिया जाये। जिस से वह माला माल हो जाये।

सो राजा ने उसकी अच्छी आवभगत करने के पश्चात उसे चन्दन का वन दे दिया। लकड़हारा बहुत खुश हुआ राजा का आभार व्यक्त कर वह इस नये वन में पहुंच गया और लग गया अपने पुराने धन्धे में। यह अज्ञानी मूढ़ लकड़हारा हर रोज चन्दन की लकड़ियां काटकर उसके कोयले बनाकर शहर जाकर बेच आता था। इस प्रकार वह अपना गुजर बसर करने लगा।

बहुत दिनों के बाद राजा को एक दिन अपने लकड़हारे मित्र की याद आई। सोचने लगा कि अब वह चन्दन की लकड़िया बेचकर खूब मालामाल होकर सुखी जीवन काटता होगा। यह सोचकर अपने मंत्री को लेकर खोजने निकला। वहां पहुँचकर उसे कुछ भी नज़र नहीं आया। सारा मैदान साफ था। इस पर उसने मंत्री से पूछा कि भाई! यह चन्दन का वन कहां गायब हो गया? कहीं किसी गलत जगह पर तो नहीं आ गये है। इतने में उन्हें एक पेड़ के नीचे एक छोटी सी झोपड़ी नज़र आई। वे घोड़े लेकर वहां आये। वहां उन्होंने देखा कि वहां लकड़हारा फटे हाल लकड़ियां काटकर कोयले बना रहा था। यह देखकर राजा को बड़ा अफसोस हुआ कि यह अज्ञानी चन्दन की इन अमूल्य लकड़ियोंको जलाकर नाश कर रहा है।

राजा ने घोड़े से उतरकर उससे हाल चाल पूछा। लकड़हारे ने राजा से कहा कि राजन। आपका दिया हुआ यह वन भी समाप्त होने वाला है। मुझे यह चिन्ता सता रही थी कि इसके बाद क्या होगा। अच्छा हुआ जो आप यहां आ गये। राजा ने उसे कहा कि मेरे कहने पर तुम एक लकड़ी काटकर बाजार में बेचके आओ। लकड़हारा सोचने लगा कि एक लकड़ी कौन लेगा और लकड़ी का क्या मिलेगा? परन्तु राजा का कहना मानकर वह एक लकड़ी लेकर बाजार में आया और एक दुकानदार से पूछा कि भाई! यह लकड़ी लोगे? दुकानदार ने लकड़ी पहचान ली कि यह तो चन्दन की लकड़ी है। सो लकड़हारे को बोला कि इस लकड़ी के मैं तुम्हें दो रूपये दूगां। यह सुनकर लकड़हारा आश्चर्य में पड़ गया। आश्चर्य चकित होकर वह बोला कि तुम इस लकड़ी के दो रूपये दोगे? दुकानदार ने सोचा कि लकड़हारे को दो रूपये शायद थोड़े लगे है सो कहा कि यदि तुम्हे दो रूपये कम लगते है तो मैं तुम्हें चार रूपये दूगां। वहांपास वाले दुकानदार ने सोचा कि यह दुकानदार बेचारे लकड़हारे को ठग रहा है सो उसे बुलाकर कहा कि तुम यह लकड़ी मुझे दो मैं तुम्हें इसके दस रूपये दूंगा। लकड़हारे ने चिल्लाकर कहा कि दस रूपये! दुकानदार ने समझा कि दस रूपये थोड़े लगे है उसे सो उसे कहा कि मैं इस लकड़ी के पच्चीस रूपये दूगां।

यह सुनकर लकड़हारा ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। दुकानदार ने उसे पूछा कि तुम रोते क्यों हो इस पर लकड़हारा बोला कि मैं बरबाद हो गया। लुट गया मैंने ऐसी हजारों अमूल्य लकड़िया जलाकर कोयले बनाकर बर्बाद कर दी। मुझे यदि यह पता होताकि ये लकड़ियाँ इतनी मूल्यवान है तो उनमें से मैं माला माल हो जाता। परन्तु अब पछताने से क्या लाभ। वह अवसर तो हाथों से निकल गया।

परम पूज्य स्वामी जी यह दृष्टान्त बताकर प्रेमियों को कहने लगे कि यह मानुष देह अमोलक है। इसका हर पल, हर स्वांस अमूल्य है जिसका मोल किया नहीं जा सकता है। यदि हम संसार की झूठी माया जाल में फंसकर अपने स्वरूप को भूलकर झूठ कमायेंगे तो फिर अन्त समय उस लकड़हारे के समान सब कुछ गवांकर हाथ मलते रह जायेंगे। मालिक

ने हमें स्वासों को अमूल्यखजाना दिया है कि हर सांस में उस परमात्मा का स्मरण कर मुक्ति प्राप्त करें क्योंकि यह मानुष देह हमें बार बार नहीं मिलेगी इसलिये संतों के शरण में आकर सत्संग रूपी अमृत पीकर आत्म पद प्राप्त करें। इस बात को स्पष्ट करने के लिये यह पद कहा-

मानख जन्म अमोलक कहिं पातो पूरन पुनते,

सो भव सागर जे भीड़ में रेड़हे करि म रोल,

सामी सन्मति सां मिली लहु आतम पद अदोल,

हरहर अहिड़ो टोलु हथि इन्दुइ कीनकी

अर्थ:- सामी साहब इस पद में कहते है कि यह अमोलक दुर्लभ मानखजन्म बहुत बड़े पून्य के बाद हमें मिला है। उस अमूल्य जन्म को तुम इस झूठे संसार के माया जाल में बेकार मत गंवाओ। सामी जी कहते है कि तुम संतों की शरण में जाकर आतम पद को प्राप्त कर मुक्त हो जाओ। क्योंकि तुम्हें यह अमोलक जन्म बार बार नहीं मिलेगा।

इस प्रकार बड़ौदे में रहकर परम पूज्य स्वामी जी हर रोज प्रेमियों को सत्संग रूपी अमृत पिलाकर मस्त करते रहते थे। प्रेमी परम पूज्य स्वामी जी प्रेम की डोरी में ऐसे तो पक्के बंध गये थे कि वे परम पूज्य स्वामी जी को वहीं रहने के लिये आग्रह करने लगे। वहां के प्रेमियों में संत श्री ऊधवदास महाराज, सेठ गागनदास के समस्त परिवार वालों ने एवं दादी सती ने परम पूज्य स्वामी जी की खूब सेवा कर उनको प्रसन्न किया। परम पूज्य स्वामी जी की उनके ऊपर बहुत कृपा थी।

आखिर कुछ दिनों के पश्चात परम पूज्य स्वामी जी ने प्रेमियों से मिलाकर अजमेर प्रस्थान करने की तैयारी की। भारी मन से प्रेमियों ने उन्हें फिर से दर्शन के लिये विनती कर विदाई दी। सेठ गागनदास, संत श्री ऊधवदास महाराज, दादी सती और कुछ प्रेमियों ने परम

पूज्य स्वामी जी के साथ अजमेर चलने की तैयारी की। वहां से प्रस्थान करने से पूर्व परम पूज्य स्वामी जी ने बड़ौदे के समस्त प्रेमियों को हर शनिवार को परम पूज्य सत्गुरू महाराज के जन्मदिन को मनाने के लिये हिदायत दी।

सुख से परम पूज्य स्वामी जी अजमेर पधारे। सभी प्यासे प्रेमियों ने उनका खूब स्वागत किया। कुछ दिनों के पश्चात दादी सती ने परम पूज्य स्वामी जी को निवेदन किया कि उसकी ओर से गुरू ग्रन्थ साहब का अखण्ड पाठ रखायें। उसकी विनती सुनकर परम पूज्य स्वामी जी ने दरबार में गुरू ग्रन्थ साहब का अखण्ड पाठ रखवाया। पाठ साहब के रखवाने से आश्रम का वातावरण पवित्र हो गया। सतगुरू महाराज एवं सन्तों के अमृत वचन सुनकर प्रेमियों का हृदय शीतल हो गया। सुबह से शाम तक प्रेमियों की भीड़ लगी रहती थी।

दादी सती, सेठ गागनदास एवं बड़ौदे से आये हुए प्रेमियों ने गुरू ग्रन्थ साहब तथा संगत की खूब सेवा की। सुख से पाठ साहब का भोग डाला गया खूब प्रसाद बान्टा गया और भण्डारा किया गया। सब प्रेमी प्रसाद पाकर भण्डारे से भोजन कर भजन सुनकर प्रसन्न होकर अपने अपने स्थान पर लौट गये।

पाठ साहब का भोग डालने के पश्चात दादी सती ने परम पूज्य स्वामी जी से निवेदन किया कि गुरू ग्रन्थ साहब के लिये अलग कमरा बनवाएं। परम पूज्य स्वामी जी ने उसका नक्शा बनवाकर एकदम दादी सती के सामने ही यह शुभ कार्य आरम्भ करवा दिया। इस गुरूद्वारे के लिये मुख्य द्वार के पास स्थान सुनिश्चित किया गया थोड़े ही दिनों में वह कमरा बनकर तैयार हो गया। जहां गुरू ग्रन्थ के साथ साथ रामायण और प्रेम प्रकाश ग्रन्थ भी रखा गया।

यहां आश्रम में रहकर परम पूज्य स्वामी जी का अगाध् स्नेह पाकर उनका सत्संग रूपी अमृत पीकर एवं मान सन्मान पाकर सेठ गागनदास एवं दादी सती ऐसे अनुभव करने लगे जैसे स्वर्गपुरी में रह रहे हैं। उनका यहां से जाने का मन ही नहीं हो रहा था। परन्तु अपना

कर्तव्य पालन एवं परिवार की चिन्ता के कारण बड़े भारी मन से परम पूज्य स्वामी जी से आज्ञा मांगी। परम पूज्य स्वामी जी ने उन्हे आज्ञा देकर कहा कि अब यह प्रेम का अटूट सम्बन्ध अन्त तक निभाना। यह प्रेम की डोरी पक्की एवं पुख्ती थी इस में जो एक बार बन्ध गया वो सदा के लिये बन्धा रहेगा।

सेठ गागनदास का सम्पूर्ण परिवार अन्त समय तक परम पूज्य स्वामी जी की तन मन एवं धन से खूब सेवा करता रहा। परम पूज्य स्वामी जी की जोती जोत समाने के पश्चात उनके सुपुत्र श्री नारायणदास महीनों यहां आश्रम में आकर देखभाल करते हैं यह स्वामी जी का सेवक प्रेमियों को हर साल परम पूज्य सवामी जी के नये स्वरूप की तस्वीरें बनवाकर नये रूपों में परम पूज्य स्वामी जी के दर्शन करवाकर श्रद्धा सुमन चढ़ाते रहते हैं।

बड़ौदे से आने के पश्चात परम पूज्य स्वामी जी कुछ दिन आश्रम में रहकर आर्दश नगर एवं अजमेर के प्रेमियों को सत्संग का आनन्द देते रहें। अब फिर बम्बई के प्रेमियों ने परम पूज्य स्वामी जी को बम्बई में पधार कर प्यासे प्रेमियों को दर्शन देने के लिये निवेदन किया। यह प्रेम पूर्वक निमन्त्रण पाकर परम पूज्य स्वामी जी बम्बई रटन के लिये रवाना हो गये।

बम्बई पहुंचने पर परम पूज्य स्वामी जी को उनके पुराने प्रेमी सेठ ईसरदास गोपालदास दातवानी के सस्नेह निवेदन किया कि उनके कुटिया में रहकर पवित्र करें तथा सत्संग का दीबाण वहीं पर लगाकर प्रमियों को आनन्द प्रदान करें। परम पूज्य सवामी जी ने उनके स्नेह एवं श्रद्धा को देखकर उनका निवेदन सवीकार किया।

कुछ दिनों के पश्चात उनके श्रद्धालु प्रेमी मीरा की स्वरूप दादी खूबे की माता ने उन्हें उसके घर पर पधारकर वहीं सत्संग की दीबाण लगाने के लिये अनुनय विनती की जिस से वहां के प्रेमी परम पूज्य स्वामी जी के शुभ दर्शन कर सत्संग का लाभ ले सकें। यहां पर परम पूज्य सवामी जी के सम्पर्क में श्री देवनदास हरीरामाणी आये। दर्शन करते ही उसकीश्रद्धा का

सागर उमड़ पड़ा। यह प्रेमी उनके प्रेम में ऐसा तो मतवाला हो गया जो सब कुछ भुलाकर उन्ही के चरणों में रहकर खूब सेवा करने लगा। उनकास्नेह एवं श्रद्धा देखकर परम पूज्य स्वामी जी उन पर बहुत प्रसन्न हुए तथा उन पर आशीर्वाद का हाथ रखा। और उनकी विनम्र विनती पर उनके घर पधार कर उनकी कुटिया को पवित्र किया। श्री देवनदास की सेवा पर प्रसन्न होकर यह भजन कहा।

भजन

शेवा सभागनि खे मिले-शेवा सभागनि

१. जंहि जे अत्रण सतगुरू ऐं सन्त अचनि था

प्रेम ते परिसन थी परे रखनि था

जन्म जन्म सन्दा तिनि भाग खुलनि था

थो वरे चौतरफ वारो वेरागियुनि...

२. जंहिं जो मस्तक गुरूअ अगियां रोज़ निमे थो

सिक सां सच्ची शेवा करे चरन चुमे थो,

इन्दे वेन्दे सन्तु गुरू भोजन झिमे थो,

सचु त तिनि आ पातो मुहब्बती मागनि...

३. कहे टेऊँ कर्म जदहिं धर्म खुलनि था

तदहिं गुरूदेव ऐं सन्त मिलनि था

वत्रनि दुखिया दीहं सुखिया वाअ लगनि था

बिरह सन्दो बागु खिलु भागु बैरागियुनि

अर्थ:- इस भजन में सतगुरू महाराज जी कहते है कि भाग्यशाली लोगों को सौभाग्य से सेवा का सुअवसर प्राप्त होता है। जिस व्यक्ति पर प्रसन्न होकर सतगुरू महाराज अपने पवित्र चरण कमल रखते है उसके जन्म जन्म के भाग्य खुल जाते है और चारों ओर से लाभ ही लाभ होता है। जिस गुरूमुख का मस्तक सतगुरू महाराज के चरणों में हर रोज झुकता है और जो उनके चरण चूमकर स्नेह से सेवा करता है और जिस दर पर आते जाते सन्त और सतगुरू महाराज भोजन ग्रहण करते है वे ही सच्चे प्रेम के पात्रबनते है। सतगुरू महाराज कहते है कि जब हमारे धर्म का फल हमें मिलता है तभी गुरूदेव एवं संत हमें मिलते है। तब हमारे दुख के दिन समाप्त होते है और सुख प्राप्त होता है। तब विरह के दिन समाप्त होते है हमारा भाग्योदय होता है।

परम पूज्य स्वामी जी इस प्रेमी की सेवा, स्नेह एवं श्रद्धा पर बहुत प्रसन्न हुए सोचने लगे कि संस्कार इसके पूर्व जन्म के है। यह प्रेमी परमार्थ की राह पर अच्छी तरक्की कर सकता है। सो उसे कहने लगे कि भाई देवनदास हम तुम्हारी नम्रता एवं सेवा पर बहुतप्रसन्न हुए है। परन्तु बताओं कि तुमने नामदान लिया है या नहीं। उस पर श्री देवनदास ने नम्रता पूर्वक परम पूज्य स्वामी जी को बताया कि उसने अभी तक गुरू नहीं किया है। परम पूज्य स्वामी जी उसे समझाकर कहने लगे कि हम रूहानी राह पर गुरू के बिना एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते। अपने सतगुरू महाराज से नाम रूपी चाबी लेकर अन्दर से पट खोलकर आत्म साक्षात्कार कर अपना यह जन्म सफल कर सकते है। गुरू बिन गत नहीं है। यह मानुष जन्म बिना नाम स्मरण व्यर्थ है। गुरू की महिमा समझाने के लिये यह दृष्टान्त दिया:-

दृष्टान्त:- गुरू अमरदास जी शुरू से वैष्णव पंथे को मानते थे। उनकी तीर्थ यात्रा करने में गहरी आस्था थी सो हम दूसरे वर्ष गंगा स्नान के लिये जाते थे। जब बीसवी बार गंगा स्नान

कर लौट रहे थे। तब महरा गाँव के पास उनकी मुलाकात एक ब्रह्मचारी से हुई। दोनो ने मिलकर पेड़ के नीचे विश्राम किया और साथ साथ भोजन किया। उनका इतना आपस में प्रेम बढ़ गया जो ब्रह्मचारी गुरू महाराज जी के आग्रह पर उनके यहां रात भर रह गये। यहां सतगुरू महाराज ने बड़ीखातिरदारी की। ब्रह्मचारी उनकी निर्मलता, नम्रता एवं मधुर व्यवहार पर इतने मुग्ध हुए कि सोचने लगे कि वे किसी कामिल गुरू के शिष्य है। सो रात्रि को जब विश्राम करने लगे तब उनसे कहने लगे कि भाई। हम आपके व्यवहार पर बहुत प्रसन्न हुए है। अब हमें बताओं कि आपने यह सब ज्ञान कौन से गुरू से लिया है। इस पर श्री गुरू अमरदास जी ने उन्हें बताया कि भाई! मैंने तो अभी तक गुरू किया ही नहीं है। यह सुनकर ब्रह्मचारी से चीख निकल गई। कहने लगे कि आपने इस वृद्ध अवस्था तक अभी गुरू ही नहीं किया है। तुम निगुरे हो यह कहकर कर्म कूटने लगे। कहने लगे कि मेरा तो धर्म भ्रष्ट हो गया। मेरा गंगा स्नान व्यर्थ हो गया। मुझे यदि पता होता कि तुम निगुरे हो तो मैं तुम्हारे हाथ का पानी भी नहीं पीता। अब मुझे लौटकर गंगा स्नान करना पड़ेगा जिससे मेरे पाप धुल जायें। यह कहकर रात्रि को भी उसी समय अपना बिस्तर गोल कर गंगा जी की ओर चले गये।

ब्रह्मचारी का यह बर्ताव देखकर गुरू अमरदास जी के दिल को गहरी चोट लगी। सोचने लगे जीवन के इतने वर्ष मैंने स्मरण क्यों नहीं किया। चिन्ता में उन्हें सारी रात नींद नहीं आई।

अचानक प्रभात के समय उनके कान पर गुरूवाणी की मधुर (ध्वनि) पड़ी। वह गुरूवाणी बीबी अमरू पढ़ रही थी। बीबी अमरू गुरू अंगद साहब की सपुत्री थी जो हालही में उनके भतीजे के साथ शादी कर आई थी। वह हर रोज सुबह उठकर जपजी साहब और अन्य गुरूओं की वाणी पढ़ती थी।

उस समय बीबी अमरू जो गुरू वाणी पढ़ रही थी उसका अर्थ था जो पुरूष लोहे की कुटी जैसा नीच क्यों न हो परन्तु गुरू कहने से वह सोने के समान शुद्ध हो जाता है। वह अपने सतगुरू महाराज से नाम दान लेकर इतना तो निर्मल हो जाता है कि उसे और किसी वस्तु की चाह ही नहीं रहती।

गुरू अमरदास जी को यह शब्द सुनकर गहरी चोट लगी। सोचने लगे कि मेरा जीवन क्या गुरू के बिना व्यर्थ चला गया। जैसे शब्द समाप्त हुआ वे सीड़ियां उतरकर बीबी अमरू के पास आये। उससे पूछा कि पुत्री तुम यह किसका शब्द गा रही थी। इस पर बीबी अमरू ने बताया कि यह गुरू नानक साहब का शब्द था जिनकी गद्दी पर इस दासी के पिता साहब श्री गुरू अंगद साहब ब्राजमान है।

यह सुनकर गुरू अमरदास ने उसे विनती कर कहा कि हमें उनके पास अभी ले चलों क्योंकि हमारा हृदय उनके दर्शन के लिये तड़प रहा है। इस पर बीबी अमरू ने उनहें कहा कि इस समय मैं चलने में असमर्थ हूँ क्योंकि कुछ समय पहले में वहां से होकर आयी हूँ। फिर उनकी यह आज्ञा है कि उनके बुलाने पर ही मैं वहां जाऊँ। इसलिये कुछ दिन ठहर कर मैं आपको वहां ले चलूंगी।

परन्तु गुरू अमरदास जी ने उसे विनती कर कहा कि पुत्री! तुम हमें अभी वहांले चलो इससे जो पाप पड़ेगा वह हम अपने सर पर झेलेंगे। तुम कोई चिन्ता मत करो। ऐसा स्नेह देखकर बीबी अमरू उन्हें खण्डूर में ले आई जहां गुरू अंगद साहब ब्राजमान थे। गुरू अमरदास जी को बाहर ही खड़ा कर बीबी अमरू पूज्य पिता साहब से आज्ञा लेने के लिये उनकी दरबार में अन्दर गई। गुरू साहब तो अन्तर्यामी थे सो उसे देखते ही कहा कि पुत्री! जिन्हें अपने साथ लाई हो उन्हें बाहर क्यों खड़ा कर आई है? फिर वे स्वयं बाहर आकर उनसे संबंधियों की तरह मिले। परन्तु गुरू अमरदास ने उनके चरणों में बैठकर उन्हें अरदास कर

कहा कि हम आपके शरण में आये है कृपा कर हमें चरणों में स्थान देकर आशीर्वाद का हाथ हमारे ऊपर रखें।

फिर गुरू अमरदास जी ने वहां रहकर सत्गुरू महाराज जी की ऐसी तो लगन से सेवा की जो सतगुरू महाराज ने उन्हें अपनी कृपा से रंगकर लाल कर दिया और अन्त में उन्हें गुरू गद्दी बख्शीश की।

यह दृष्टान्त बताकर परम पूज्य स्वामी जी प्रेमियों को कहने लगे कि इस संसार रूपी सागर को पार करने के लिये सतगुरू रूपी मलाह की आवश्यकता है। प्रेमियों को सतगुरू की महिमा का यह श्लोक बताया-

अहिडी केरू करे, सामी बिना सत्गुरूअ

भगति जोग वेराग जा, डिए भण्डार भरे,

अनुभए जोत अन्दर में सुत्ह सिध बरे

पलक न थिए परे, रमता राम अखियुनि खूं।

श्री देवनदास को परम पूज्य सवामी जी का सत्संग सुनने के पश्चात अगाध श्रद्धा जागी और उनकी खूब सेवा करने लगे। एक दिन परम पूज्य स्वामी जी को विनती कर कहा कि कृपा करके मुझे नाम दान की बख्शीश देने की कृपा करें। जिससे मैं आपके चरणों का स्मरण कर अपना यह जीवन सफल कर सकूं ।

परम पूज्य स्वामी जी ने इस पमर भक्त की सेवा व श्रद्धा देखकर उन्हें नाम दाने की बख्शीश कर निहाल कर दिया। नाम दान लेने के पश्चात श्री देवनदास जी परम पूज्य स्वामी जी को परमात्मा का ही रूप समझकर खूब श्रद्धा से सेवा करने लगे। आठों पहर उन्हीं के ध्यान में रहकर श्रद्धा से स्मरण करने लगे। न केवल इतना परन्तु हर वर्ष सम्पूर्ण परिवार, धर्म पत्नी स्वर्गीय श्रीमती कलावन्ती, सुपुत्र भरत कुमार, धुरव कुमार, गोर्धन पुत्री चन्द्रा,

पुष्पा एवं कमला सहित सतगुरू महाराज जी के वरसी उत्सव पर आकर परम पूज्य स्वामी जी की खूब सेवा करने लगे। परम पूज्य स्वामी जी की भी इस परम भक्त पर अति कृपा थी।

इस प्रकार प्रेमियों की पुकार पर परम पूज्य स्वामी जी बम्बई का रटन करते रहे। क्योंकि परम पूज्य स्वामी जी कहते थे कि जितने अधिक शहरों का रटन मैं करूंगा उतना ही में सतगुरू महाराज के शिक्षाओं का प्रचार कर उनका यश फैला सकूंगा।

इस बार माता साहब मूली बाई करनानी जो सत्संग की बड़ी प्रेमी थी और परम पूज्य स्वामी जी को अवदूत महाराज की वरसी पर विशेष निमंत्रण देकर बुलाती थी इस बार उन्हें विशेष आग्रह पूर्वक बम्बई बुलवाया कि वहां आकर सत्संग रूपी अमृत पीलाकर तृप्त करें। परम पूज्य स्वामी जी भाद्रपद के चान्द पर यहां पधारे पूजनीय माता साहब मूली बाई परम पूज्य स्वामी जी के दर्शन कर बहुत प्रसन्न हुए। आते ही उन्हें निवेदन किया कि दूसरे चान्द तक पूरा एक महिना यहां रह कर सत्संग रूपी अमृत पिलावें। पूज्यनीय माता साहब को परम पूज्य स्वामी जी के सत्संग की खूब चाह थी।

हर रोज़ सांय काल सत्संग का आनन्द होने लगा। जैसेसतगुरू स्वामी टेऊँराम महाराज जी को भजन के साथ भोजन करवाने का शौक था उसी प्रकार परम पूज्य स्वामी जी भी भजन के साथ भण्डारा भी करवाते थे। सभी प्रेमी भजन के साथ भण्डारे का भी आनन्द उठाते थे। परम पूज्य स्वामी जी प्रेमियों से कहते थे कि जो पेट भर के प्रसाद खाएगा उसके भण्डार सदा भरे रहेंगे। उसके मन की मुरादें महाराज सब पूर्ण करेंगे।

इस अवसर पर परम पूज्य स्वामी जी ने आज्ञा की कि अखण्ड पाठ साहब चालू करो। और पाँच हमारे लड्डू बनवाकर पूज्य माता साहब को दो तो वे अपने हाथ से बांटकर दान करें। उस समय घर के नीचे मण्डप लगाकर सत्संग का दीबाण लगाया गया और लड्डू बांटे गये और अखण्ड पाठ चालू किया गया। पूज्य माता साहब ने अपने हाथो से लड्डू बांटे और उनके पांच सुपुत्रो ने परम पूज्य स्वामी जी से निवेदन किया कि पूज्य माता साहब से दान का

संकल्प करवाये। उनकी इच्छा के अनुसार दिल खोलकर दान करें। हम पूज्य माता साहब की हर तरह से आज्ञा मानने के लिये तैयार है। परम पूज्य स्वामी जी ने पूज्य माता साहब को कहा कि इस समय आपके पांचों सुपुत्र सर्व श्री लच्छीराम मोहनदास, मुरलीधर, लालचन्द एवं सब मिलकर आपसे संकल्प करवाते है कि ये आपके नाम से हरिद्वार में अन्न क्षेत्र चलवायेंगे। और अपने सुपुत्रों और पुत्र वधुओं को और जो भी आज्ञा करेंगे वे मानने के लिये तैयार है।

पूज्य माता साहब ने परम पूज्य स्वामी जी से कहा कि मेरी यह इच्छा है कि मेरे परिवार के सब सदस्य प्रतिदिन नियम से डेढ़ घण्टा सुबह घर में सत्संग का आनन्द रूप दीबाण लगाएंगे और प्रति दिन पूजा पाठ करेंगे। यह बात सभी ने सहर्ष स्वीकार की।

परम पूज्य स्वामी जी ने पूज्य माता साहब की ऐसी श्रद्धा भक्ति देखकर उन्हें यह भजन सुनवाया।

भजन

अन्त वेलो कजाइं सुहेलो-

इहो मुंहिजो अजर् आ

१. बिन्द्रावन जो थल हुजे

मुख में तुल्सी दलु हुजे

गंगा जो पिणि जल हुजे

इहो मुंहिजो अर्ज आ...

२. गीता जो पिणि ज्ञान हुजे

गुरू मूरत जो ध्यान हुजे

सोहम शब्द जो भान हुजे

इहो मुहिजों अर्जु आ...

३. 'माधव' स्वास सुहेलो कजाइं

दातर तूँ न दुहेलो कजाइं

शान्त सुख जो मेलो कजाइं

इहो मुंहिजो अरजु आ...

अर्थ:- स्वामी जी इस भजन में परमात्मा से निवेदन कर कहते है कि हे परमात्मा। आप अन्त समय तक सब अच्छा कना यही मेरा निवेदन है। उस अन्त समय मेरे समीप वृन्दावन की पवित्र भूमि हो, मेरे मुख में तुल्सी का दल हो और गंगा का पवित्र जल हो यही मेरी प्रार्थना है। उस अन्त समय में मेरे पास गीता का ज्ञान हो हृदय में गुरू महाराज की मूर्ति का ध्यान हो और हर स्वास में सोहम महावाक्य का आभास हो। यही मेरी विनती है। परम पूज्य स्वामी जी कहते है कि हे परमात्मा अन्त में मेरे स्वास आसानी से इस शरीर को छोड़कर आपके चरण कमल में समाहित हो जाये। और उस समय सबको शान्ति प्रदान करना यही मेरा निवेदन है।

परम पूज्य स्वामी जी प्रति दिन सत्संग में प्रेमियों को आत्म ज्ञान के सम्बन्ध में इस प्रकार खोलकर समझाने लगे।

अपने निज स्वरूप को पहचानने के ज्ञान को ही आत्म ज्ञान कहते है। जिस ज्ञान में स्थूल सूक्षम, कारण शरीर से अपने आपको न्यारा जानकर सतचित आनन्द रूप आत्मा को प्राप्त करने को आत्मज्ञान कहते है।

आत्मा का एक सामान्य रूप है दूसरा विशेष रूप है। जो सब में व्यापक एवं समाया हुआ है। वह सामान्य रूप है एवं जो सत्य रूप, चेतन रूप एवं आनन्द रूप है वह विशेष रूप है, अज्ञानी को आत्मा केवल सत्रूप प्रतीत होता है परन्तु ज्ञानवान को सतचित आनन्द रूप नित्य मुक्त नित्य शुद्ध रूप प्रतीत होता है। इसलिये सत रूप, चेतन रूप, विशेष आत्म स्वरूप को जानने को आत्म ज्ञान कहते है।

परम पूज्य स्वामी जी प्रेमियों को बताने लगे कि आत्मा के निवास का स्थान कहां है, आत्मा सामान्य रूप से प्रेमियों के बुद्‌वि रूपी गुफा में रहती है। जैसे अग्नि सामान्य रूप से सर्व व्यापक है परन्तु विशेष रूप से प्रकाशवान दीपक में है। दीपक में तेल, तेल में बाती और बाती में ज्योति का प्रकाश है। इसी प्रकार शरीर में अन्त:करण व अन्त:करण में बुद्धि एवं उस बुद्धि में आत्म ज्योति का प्रकाश है। इसलिये वह बुद्‌वि रूपी गुफा ही आत्मा के निवास का स्थान है।

उसके पश्चात परम पूज्य स्वमी जी कहने लगे कि उस आत्म स्वरूप का साक्षात् दर्शन कैसे करें? इस गूढ़ ज्ञान को समझाने के लिये परम पूज्य स्वामी जी ने प्रेमियों को यह भजन सुनाया।

झाती पाए पसु तूँ जीअ में

अन्दर सब इसरार प्रीतम...

१. अन्दर ब्रह्मा विष्णु महेश,

देवनि जो दीदार प्रीतम

२. अन्दर सूरज तारा कतियूँ

चन्ड सदों चमकार प्रीतम...

३. अन्दर गंगा जमना गोदावरी

काशी ऐ केदार प्रीतम...

४. अन्दर गोकुल गायूँ गोपियूँ

रास मण्डल रबसार प्रीतम...

५. कहे टेऊँ आहे तुहिंजे अन्दर

सारो ही संसार प्रीतम...

अर्थ:- परम पूज्य सत्गुरू महाराज जी कहते है कि तुम अपने अन्दर झांककर देखो तो तुम्हें सब अश्चर्य अपने ही अन्दर में दिख जायेंगे। तुम्हारें अपने ही अन्दर गंगा, यमुना व गोदावरी जैसी पवित्र नदियां है और अन्दर में ही महान तीर्थ जैसे काशी और केदार है। तुम्हारे अन्दर में ही भगवान श्री कृष्ण , गोकुल गांव उसकी गायें व गोपियों की रासलीला भी दिखेगी। सतगुरू महाराज जी कहते है कि तुम्हे तुम्हारे अन्दर में यह सारा संसार ही दिख जायेगा बस तुम एक बार अन्तरमुख होकर अन्दर झांक लो।

यह भजन बताकर परम पूज्य स्वामी जी प्रेमियों को कहने लगे कि आत्म साक्षात्कार करने एवं परमात्मा को प्राप्त करने के लिये हमें अपने अन्दर में झांकना होगा। क्योंकि परमात्मा हमारे अन्दर ही ब्राजमान है। इसलिये बाहर मुखता छोड़कर अन्दरमुख होना पड़ेगा। भटका हुआ इंसान मृग के समान कस्तूरी को ढूंढने के लिये व्यर्थ भटकता है उसे यह पता ही नहीं है कि कस्तूरी उस की नाभि में समायी हुई है। वह उसे बाहर ढूंढने पर कैसे मिल सकती है।

पेही जे पर्सी पाण पंहिजो पाण में

त नको मोती मूँढ को नको इश्वर बियो असीं

अन्दर भी असीं बाहिरि असी गोल्हियूँ

इस पद में परम पूज्य स्वामी जी कहते है कि यदि तुम अपने अन्दर झांक कर अपने आपको देखो तो तुम्हें आभास होगा कि तुम्हारे अन्दर और ईश्वर में कोई भी भेद नहीं है। जिसे हम बाहर ढूंढते है वह तो हमारे ही अन्दर है।

परम पूज्य स्वामी जी प्रेमियों को समझाकर कहने लगे कि अन्दर झांकने के लिये बाहर के नौ द्वार बंद कर हमें अपना ध्यान दसवें द्वारा लगाना होगा तभी हमें दर्शन होगा। यह गूढ़ बात समझाने के लिये प्रेमियों को यह दृष्टान्त सुनाया।

दृष्टान्त:- एक समय की बात है कि एक बस्ती में एक महात्मा जी आये। वह हर रोज बस्ती में सत्संग करते थे। उसके ज्ञान की प्रशंसा सुनकर बस्ती के बहुत से लोग उसके सत्संग में आने लगे। महात्मा जी ने सत्संग में इतना तो रस था जो उस राज्य का मंत्री भी प्रति दिन सत्संग में आने लगा। एक दिन राजा ने किसी कार्य वश मंत्री को बुलवाने के लिये घर पर किसी को भेजा। घर वालों ने उसे कहा कि वह उस समय सत्संग में गये हुए है। राजा के संदेश वाहक ने मंत्री को सत्संग में आकर राजा का आदेश सुनाया। मंत्री ने कहा कि राजा को जाकर कहो कि सत्संग सुनकर मैं शीघ्र उनकी सेवा में उपस्थित हो जाऊंगा। सत्संग समाप्त होने पर मंत्री राजा के दरबार में उपस्थित हो गए। राजा ने उस से पूछा कि तुम हर रोज सत्संग में क्यों जाते हो। मंत्री ने कहा कि महात्मा जी के सत्संग में जाने से मन को अपार शान्ति मिलती है।

यह बात सुनकर राजा भी दूसरे दिन सत्संग में आया। महात्मा जी के दर्शन कर एवं उनका सत्संग सुनकर राजा को भी परम आनन्द आया। उसने यह बात अपनी रानी से कहा कि महात्मा जी बहुत पहुँचे हुए एवं ज्ञानी है। उनके दर्शन करने से अपार शान्ति मिलती है। इस पर रानी ने कहा कि पहुँचे हुए ज्ञानी महात्मा के दर्शन उसे भी करवायें।

राजा ने रानी की बात सुनकर सोचा कि महात्मा जी को महल में बुलाकर रानी को दर्शन करवा देते है। सो महात्मा को बुलवाने के लिये एक संदेश वाहक को भेजा गया। किन्तु

महात्मा जी ने उसे यह कहकर लौटा दिया कि वे कहीं भी नहीं जाते है। जिसे दर्शन करना हो वह स्वयं यहांआवें। अब राजा बड़ी उलझन में पड़ गया कि क्या किया जाये। महात्मा जी महल में आना नहींचाहते और रानी पर्दे में होने के कारण वहां जा नहीं सकती। आखिर इस समस्या का हल ढूंढने के लिये राजा ने मंत्री को बुलवाया। मंत्री बहुत बुद्धिमान था। उसने विचार कर राजा को बताया कि महात्मा जी हर रोज प्रात: काल भिक्षा के लिये किसी एक घर में जाते है। वहां से भोजन कर अपने स्थान पर आकर ध्यान में बैठते है।

आप अपने सम्पूर्ण राज्य में ढंढोरा घुमवाओं की कल सभी अपने घर का दरवाजा बंद रखे और अब महात्मा जी घूमते घूमते अवश्य आपके द्वार पर आकर भिक्षा मांगेगे। इस प्रकार रानी महात्मा जी के दर्शन कर सकेंगी। राजा को मंत्री की यह बात बहुत पसन्द आई। और उसने यह ढंढोरा पिटवाया कि कल सभी अपने घर के अन्दर रहेंगे और कोई भी दरवाजा नहीं खोलेगा।

महात्मा जी नियमानुसार प्रात:काल भिक्षा करने के लिये निकले। सारा नगर बंद देखकर घूमते घूमते आकर महल के द्वारपर पहुँचे जहाँ राजा और रानी उनके स्वागत के लिये खड़े थे। उन्होंने महात्मा जी का हार्दिक स्वागत किया। स्नेह एवं श्रद्धा से उन्हें महल में ले आये एवं उनकी खूब सेवा की। महात्मा जी उनकी इस सस्नेह भावना पर बहुत प्रसन्न हुए। वे यह बात समझ गये कि उसे महल में बुलाने के लिये ही यह सारी योजना बनाई गई थी।

अब राजा ने हाथ जोड़कर महात्मा जी से निवेदन किया कि महाराज। कृपा कर यह बताईये कि भगवान के दर्शन कैसे होंगे ? इस पर महात्मा जी ने कहा कि भगवान अपने प्यारों को दो प्रकार से दर्शन देते है। एक तो विपति आने पर भक्त की सच्ची पुकार सुनकर जैसे भक्त प्रहलाद को विपतिके समय भगवान ने नरसिंह अवतार धारण कर दर्शन दिया।

और दूसरा प्रेम वश भगवान अपने भक्त को दर्शन देते है। जैसे भक्त नाम देव को उसके प्रेम के वश में आकर बावन बार दर्शन दिया।

परम पूज्य स्वामी जी यह दृष्टान्त बताकर प्रेमियों को कहने लगे कि राजाएवं रानी महात्मा जी के दर्शन तब कर सके जब उन्होंने शहर के अन्य सभी दरवाजे बंद करवाये। इसी प्रकार जब हम भी ये नौ द्वारे बंद कर अपना ध्यान दसवें द्वारे लगायेंगे तब वहां पहुँचकर हमें आत्म स्वरूप में साक्षात् दर्शन होंगे।

परम पूज्य स्वामी जी प्रेमियों को इस परमार्थ की राह पर सतगुरू की महिमा समझाकर कहने लगे कि जैसे पारस लोहे को सोना बना सकता है वैसे ही सतगुरू ही जिज्ञासा को इस संसार से पार कर मुक्त कर सकता है। पारस तो लोहे को केवल सोना ही बना सकता है किन्तु सच्चा गुरू अपनी कृपा दृष्टि से जिज्ञासू को अपने रंग से रंग कर अपने जैसा पारस बना देता है। अब प्रश्न आता है कि ऐसा सच्चा सतगुरू कैसे गुणो वाला होना चाहिये? ऐसा सच्चा गुरू परमात्मा स्वरूप वेदों के ज्ञान का ज्ञाता ब्रह्मश्रोत्री होना चाहिये। ब्रह्न एवं आत्मा के अद्वेत ज्ञान में जिसकी निष्ठा हो ऐसा ब्रह्मनेष्ठी हो। जिज्ञासु के बुद्वि में पाँच प्रकार के भेद है। (१) जीव और ईश्वर का भेद (२) जीव और जीव का एक दूसरे से भेद (३) जीव का जड़ से भेद (४) ईश्वर और जड़ का भेद (५) जड़ का जड़ से भेद। अनेक युक्तियों से इन भेद प्रान्त रूपी द्वेत को दूर कर अद्वेत शुद्ध का जिज्ञासू को साक्षात्कार कराए। जो शास्त्र की विद्या को भली प्रकार जाने व शास्त्र अनुसार शुभ गुणों को स्वयं धारण करे तथा जिज्ञासु को भी धारण करवाये। ऐसे सभी शुभ गुणों वाले को सच्चा सतगुरू कहते है।

ऐसे ब्रह्म, ज्ञानी ब्रह्मनेष्ठी सतगुरू से आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिये सतगुरू की सेवा की आवश्यकता है। श्रद्धा से सतगुरू को नमन करें। तन मन धन व वाणी सब सतगुरू को अर्पण करें। तन से सतगुरू की सेवा करें, आज्ञा का पालन करें। मन में सतगुरू के उपदेश को अच्छी तरह विचारे। सतगुरू को परमात्मा स्वरूप मानकर श्रद्धा एवं विश्वास रखे । धन

को सतगुरू के आज्ञानुसार शुभ कर्म में लगावे। वाणी से सतगुरू के गुणों का प्रचार करें। इस प्रकार सतगुरू की सेवा कर उनकी प्रसन्नता प्राप्त कर आत्मज्ञान को प्राप्त करे मोह के बन्धन से छूटकर मोक्ष पद प्राप्त करें ऐसे ज्ञान को प्राप्त करने के लिये सतगुरू की सेवा की आवश्यकता है।

इस प्रकार हर रोज परम पूज्य स्वामी जी सत्संग रूपी वर्षा कर प्रेमियों की तृप्त करते रहते थे। कुछ दिनों के बाद स्वामी चंदनराम जी विलायत से लौटकर बम्बई आये। परम पूज्य स्वामी जी एवं स्वामी चन्दनराम जी राम लखन की जोड़ी के समान थी। दोनों एक दूसरे का खूब मान सम्मान करते थे। स्वामी चन्दनराम जी ने पूने में सतगुरू स्वामी टेऊँराम जी की आलीशान दरबार बनवाई थी परम पूज्य स्वामी जी के आग्रह पर वे भी उनके साथ प्रेमियों को सत्संग रूपी अमृत पिलाने लगे। उस समय के आनन्द का बयान किया नहीं जा सकता है।

पूज्य माता साहब ने परम पूज्य स्वामीजी से निवेदन किया कि आप मेरे परिवार पर सदा अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखेंगे। और अपने सुपुत्रों को आज्ञा की कि परम पूज्य स्वामी जी को ईश्वर का रूप मानकर सदा उनकी तन मन और धन से सवा करते रहेंगे। पूज्य माता साहब की इस अन्तिम आज्ञा का सबने खूब पालन किया। यहां तक कि परम पूज्य स्वामी जी के ज्योति जोत समाने के पश्चात उनके सुपुत्र श्री दादा साहब श्री मुरलीधर करनानी अजमेर वाली दरबार पर रहकर उनका नाम अमर करने के लिये आश्रय की खूब सेवा कर यह नाता निभा रहे है।

बम्बई के प्रेमियों को सत्संग रूपी अमृत का आनन्द दिलाते हुए एक दिन परम पूज्य स्वामी जी के शरण में एक ऐसा प्रेमी आया जिसका न तो ईश्वर की सत्ता में विश्वास था और न ही महात्माओं में श्रद्धा थी। परन्तु अपनी बहन के आग्रह पर अनमना होकर उनके सत्संग में आया। पहले दिन वह परम पूज्य स्वामी जी के दर्शन करके बिना शंका समाधान

लौट गया। दूसरे दिन उनकी प्रिय बहन ने सत्संग के पश्चात परम पूज्य स्वामी जी से उसका परिचय करवाते हुए कहा कि यह मेरा भाई वाशी दीपा है जो इन्दोनेश्या से किसी काम से आया हुआ है।

श्री वाशीदीपा ने परम पूज्य स्वामी जी से निडरता से कहा कि महाराज। मैं अपनी बहन के कहने से यहां आया हूँ। मेरा ईश्वर तथा उसके भक्तों में कोई विश्वास नहीं है। मैं तो बिलकुल नास्तिक हूँ। परम पूज्य स्वामी जी उसकी सच्चाई एवं दिल की सफाई पर बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि हमें एक सच्चा एवं साफ दिल वाला नास्तिक हजार अन्ध विश्वासी व्यक्तियों से ज्यादा प्यारा है।

परम पूज्य स्वामी जी तो सर्वज्ञ एवं अंतर्यामी थे। सो उसके दिल का हाल जान गए। सो उसे कहा कि दिल का हाल खोलकर बताओ। तुम हमें बहुत प्रिय हो। उसे खूब आशीर्वाद देकर कहा कि मुसीबत अब टल चुकी है। तुम्हारे दोस्त ने तुम्हारी अनुपस्थिति में तुम्हारी खूब मदद की है। वाशी दीपा ने परम पूज्य स्वामी से उस दोस्त का नाम पूछा। परम पूज्य स्वामी जी के मुखारवन्द से उस मित्र का नाम सुनकर यह प्रेमी आश्चर्य चकित हो गया। सोचने लगा कि परम पूज्य स्वामी जी अंतर्यामी है एवं रिद्धि सिद्धि के मालिक है सो श्रद्धा से उनके चरण पकड़कर विनती की कि महाराज मैं आपके शरण में आया हूँ अपने चरणों का दास बना दीजिये।

इस प्रकार परम पूज्य स्वामी जी के शरण में आने के बाद उसका स्नेह व श्रद्धा दिनों दिन बढ़ते ही रहे। अब यह प्रेमी हर वर्ष सतगुरू महाराज के वरसी उत्सव पर सपरिवार एवं अपनी मित्र मण्डली के साथ आकर परम पूज्य स्वामी जी की तन मन व धन से खूब सेवा करने लगा। परम पूज्य स्वामी जी इस निडर बहादुर सच्चे प्रेमी को खूब प्यार करते थेएवं उसे खूब मान सम्मान देते थे। यह प्रेमी भी बिना झिझक हनुमान की भान्ति उनके चरणों में बैठकर हर बात सफाई से कह देता था।

परम पूज्य स्वामी जी का इस प्रेमी पर इतना तो प्यार एवं विश्वास था जो ज्योति ज्योत समाने से पूर्व उसे अपना प्रतिनिधि बना कर ट्रस्ट में छोड़ गए। इस प्रेमी के दिल में परम पूज्य सवामी जी के लिये अगाध श्रद्धा एवं पूर्ण विश्वास है। इनकी यह हार्दिक अभिलाषा है कि परम पूज्य स्वामी जी का यश चारों ओर फहलाकर उन्हें अमर बना दूं।

इस प्रकार बम्बई में अपने प्रेमियों को खूब प्यार देकर अपनी डोरी में पूर्ण रूप से बान्ध दिया। अब परम पूज्य स्वामी जी अजमेर लौट आये जो वहां के प्रेमी उन्हें प्रेम से बार बार पुकार रहे थे। सभी प्रेमियों ने उन्हें दीन मन होकर यह विनती की कि इस प्रकार लम्बे समय तक वियोग देकर हम से दूर नहीं जायें। हम आपके दर्शनों के लिये तड़पते रहते हैं। आंखे बिछाकर आपके आने की राह देखते रहते हैं। परम पूज्य सवामी जी ने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा कि अब हम यहां रहकर सत्गुरू महाराज की सेवा करते रहेंगे।

अजमेर में रहकर यहां के प्यारे प्रेमियों को सत्संग रूपी अमृत पिलाने के साथ साथ आश्रम का विसतार भी करते रहे। परन्तु जब कभी उन्हें फुरसत मिलती थी तब वे अपने मन मेली साथी श्री गणेशानन्द जी के साथ पुष्कर राज चले जाया करते थे। वहां बालू के उस टीले पर घण्टों बैठकर साधना करते थे जहां किसी जमाने में सतगुरू महाराज ने आकर धूणी रमाई थी।

स्वामी गणेशानन्द जी को परम पूज्य स्वामी जी ने कहा कि भाई! इस स्थान पर टण्डे आदम जैसा सतगुरू महाराज जी का आश्रम बनवाना चाहते हैं। जिस से उनका यश सारे भारत में फैल जाये। पुष्कर राज सभी तीर्थों का गुरू है। इस स्थान पर ब्रह्मा ने यज्ञ कर तपस्या की थी। सारे भारत में ब्रह्मा का मन्दिर केवल यहीं पर है। सभी श्रद्धालू यात्री चारों धाम कर यहां पुष्कर राज के पवित्र सरोवर में आकर डुबकी लगाते है। उसके बाद ही उसकी यात्रा सफल होती है। इसलिये यहां पर पर सदा मेला लगा रहता है। इसके अतिरिक्त यहां

कार्तिक पूर्णमासी पर विशाल मेला लगता है। उस समय देश विदेश से लाखों यात्री आकर पवित्र सरोवर में डुबकी लगाते है।

इसलिये हमारी यह हार्दिक अभिलाषा है कि इस पवित्र स्थान पर सतगुरू महाराज का ऐसा सुन्दर एवं विशाल आश्रम बनवाये जो सभी यात्री यहां आकर सतगुरू महाराज के दर्शन कर आनन्द पावें।

यह विचार कर पुष्कर राज नगरपालिका के अध्यक्ष से मिले और उसे कहा कि इस स्थान पर हम अपने सतगुरू महाराज का एक विशाल आश्रम बनवाना चाहते है। इसलिये यह भूमि हमें दीजिये। परन्तु अध्यक्ष ने कहा कि इतनी बड़ी भूमि हम आपको देने में असमर्थ है। नगर पालिका के नियमानुसार इतनी बड़ी भूमि हम किसी एक व्यक्ति को आवंटित नहीं कर सकते है। आप इसका तीसरा भाग ले सकते है। परम पूज्य स्वामी जी ने उन्हें समझाकर कहा कि हम अपने सतगुरू महाराज जी का विशाल आश्रम बनवाना चाहते है। आप जो भूमि देना चाहते है वह उसके लिये बहुत कम है। बेचारे अध्यक्ष ने दीन मन होकर परम पूज्य स्वामी जी से निवेदन किया कि हम अपने अधिकार के अनुसार ही भूमि आपको दे सकते है बाकि इतनी बड़ी भूमि देने का अधिकार केवल जिला कलेक्टर को है। सो आप भली उनसे मिले।

परम पूज्य स्वामी जी तो रिद्धि सिद्धि के मालिक थे। उनका यह महान संकल्प तो अवश्य पूर्ण होने वाला था। सो संयोगवश एक दिन कलेक्टर अपने परिवार सहित परम पूज्य स्वामी जी के दर्शन करने के लिये आदर्श नगर वाले आश्रम पर आये। परम पूज्य स्वामी जी ने उन्हें खूब मान सम्मान देकर पखर पहनाकर प्रसाद देकर आशीर्वाद दिया और फिर आश्रम पर आने के लिये कहा।

अब कलेक्टर जल्दी जल्दी आश्रम पर आने लगा। एक दिन कलेक्टर की पत्नी नेदीन मन होकर परम पूज्य स्वामी जी से कहा कि महाराज मेरे पति देव के टांग पर एक दाग है

जिसका इलाज हमने बड़े बड़े डॉक्टरों से करवाया है परन्तु कही से भी लाभ नहीं हुआ है। हम सब जगह से निराश होकर आज आपके शरण में आये है आप कृपा कर हम पर दया करें तांकि यह दुख दूर हो।

परम पूज्य स्वामी जी ने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा कि आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें। हमारे परम पूज्य सत्गुरू महाराज में अपार शक्ति है आप जाकर उनकी भभूत लगाओ तो आपके सब दुख दूर हो। अद्भूत चमत्कार हुआ। जो रोग डॉक्टरों के इतने उपचार के बाद भी लाइलाज हो गया था सो सतगुरू महाराज की कृपा से बिल्कुल ठीक हो गया। कलेक्टर का पूरा परिवार उनकी सेवा में उपस्थित होकर वारों वार उनका वन्दन करने लगा और कहने लगे कि महाराज! आपकी असीम कृपा से ही यह चमत्कार हुआ है। परन्तु स्वामी जी ने उन्हें कहा कि यह सम्पूर्ण कृपा मेरे सतगुरू महाराज जी की है। सो आप जाकर उनकी चरण वन्दना करो और आशीर्वाद लो। कितनी विनम्रता है कितना महान विनीत भाव है। अपने आपको कभी नहीं दर्शाया। सारा यश अपने श्रद्धेय सतगुरू महाराज को दिया। अपने सतगुरू महाराज के लिये कितना समर्पण भाव था। संत कबीर ने गुरू की महिमा बताते हुए भगवान और गुरू की इस प्रकार तुलना की है।

गुरू गोविन्द दोनों खड़े

काके लागू पांइ

बलिहारी गुरू आपणे

गोविन्द दियो दिखाइ

परन्तु परम पूज्य स्वामी जी का समर्पण भाव तो सहजू बाई के समान बहुत ऊंचा है। सहजू बाई तो गुरू को सर्वोपरि एवं सब कुछ मानती है उसके दिल में गुरू के सिवाय और किसी के लिये स्थान ही नहीं है। उसने गुरू का वर्णन एवं महिमा इस प्रकार की है-

'राम तजऊं पर गुरू न बिसारूं'

इस प्रकार परम पूज्य स्वामी जी आठों पहर अपने दिल में अपने सतगुरू महाराज का स्मरण एवं गुण गान करते रहते थे। उनकी गुरू भक्ति महान है।

सतगुरू महाराज जी के आगे नमन करने के पश्चात कलेक्टर एवं उसका परिवार आकर परम पूज्य स्वामी जी के चरणों में बैठा उस समय कलेक्टर की धर्मपत्नी भाव विभोर होकर परम पूज्य स्वामी जी से विनती करने लगी कृपा कर हमें अपनी सेवा का सुअवसर प्रदान करने की कृपा करें इस द्वार की सेवा कर हम अपने आपको धन्य समझेंगे। इस पर परम पूज्य स्वामी जी ने उन से कहा कि यदि आप सचमुच इस द्वार की सेवा करना चाहते हैं तो पुष्कर राज में सतगुरू महाराज के विशाल आश्रम के लिये भूमि दिलवाइये। इस पर बेचारा कलेक्टर चिन्ता में पड़ गया कयोंकि नियमानुसार इतनी बड़ी भूमि किसी एक व्यक्ति के नाम पर हो नहीं सकती थी। परम पूज्य स्वामी जी अन्तर्यामी थे सो उनके मन के भाव जान गये। सो उनको कहने लगे कि आप चिन्ता क्यों करते हैं? हमें तो भगवान वामन की भान्ति केवल तीन पग भूमि चाहिये जो आपके अधिकार में है। बेचारा कलेक्टर इस गूढ़ रहस्य को समझ नहीं सका। इस पर परम पूज्य स्वामी जी ने उन्हे खोलकर समझाया कि आप यह भूमि तीन सन्तों के नाम पर दे सकते हैं। एक भाग स्वामी गणेशानन्द जी के नाम दूसरा भाग स्वामी स्वयं प्रकाश जी के नाम और तीसरा भाग हमारे नाम पर कर दीजिये। यह बात सुनकर कलेक्टर बहुत प्रसन्न हुआ। उनके सर का भार हल्का हो गया और समझा कि इन प्रकार तीन भागों की भूमि देकर मैं परम पूज्य स्वामी जी की सेवा कर सकूंगा।

लिखा पढ़ी करवाने के पश्चात यह विशाल भूमि परम पूज्य स्वामी जी को मिल गई। उन दोनों संतों ने अपने हिस्से की भूमि परम पूज्य स्वामी जी के नाम कर उन्हें सौंप दी। अब इस विशाल भूमि की बन्दिश करने के लिये एक लम्बी बाऊंडरी वाल बनावाई गई। मेड़ता रोड़ एवं पुष्कर रोड़ पर दोनों और दो बड़े विशाल गेट बनवाये किन्तु पुष्कर नगर पालिका के

अध्यक्ष ने पुष्कर रोड वाले गेट पर आपत्ति की और उसे गिराने के लिये नोटिस दिया। परम पूज्य स्वामी जी तो धैर्य एवं संतोष की साक्षात मूर्ति थे सो किसी बात की चिन्ता न कर पास में से ही एक छोटा गेट बनवा डाला। परन्तु अध्यक्ष से किसी प्रकार शिकवा शिकायत नहीं की।

यह छोटा गेट बनवाने के पश्चता नगर पालिक के अध्यक्ष को दिखवाने के लिये अपने पास बुलवाया। अध्यक्ष परम पूज्य स्वामी जी के बुलाने पर जिस हाल में थे दौड़ते हुए उनकी सेवा में उपस्थित हो गये। वहां पहुंचकर परम पूज्य स्वामी जी के चरण पकड़कर शष्टांग प्रणाम कर जारों ज़ार क्षमा मांगने लगा। कहने लगा कि मेरेसे बहुत बड़ी खता हुई जो गेट का काम रूकवा कर आप जैसे महान संत की दिल दुखाई है। कुदरत मेरे ऊपर कहर बरपा कर रही है। मेरे एक पुत्र की नौकरी छूट गई। दूसरा लड़का बिस्तर पर पड़ा मौत से झूझ रहा है। उसको कोई दवा भी असर नहीं कर रही है। अब मैं अज़ानी आपके शरण में आया हूँ। मेरी खता क्षमा कीजिये। मैं आज ही आपकी सेवा में पुष्कर रोड़ पर विशाल गेट बनवाने का आदेश पास कर भेजता हूँ।

परम पूज्य स्वामी जी ने अध्यक्ष को सांत्वना देते हुए कहा कि आप किसी प्रकार की चिन्ता नहीं करें। सतगुरू महाराज सब ठीक करेंगे। उसे पखर पहना कर प्रसाद देकर कहा कि यह सतगुरू महाराज का प्रसाद जाकर अपने बच्चों को खिलाओं परमात्मा आपके सब कारज सिद्ध करेंगे। सतगुरू महाराज आपके सब कष्ट दूर करेंगे।

परम पूज्य स्वामी जी तो रिद्धि सिद्धि के मालिक थे। उनका वचन कभी खाली जाने वाला नहीं था। सो थोड़े दिनों के पश्चात अध्यक्ष महोदय मालायें एवं प्रसाद लेकर अपने दोनों पुत्रों के साथ परम पूज्य स्वामी जी की सेवा में उपस्थित हुआ। परम पूज्य स्वामी जी को यह खुश खबरी बताई कि जिस लड़के की नौकरी छूट गई थी उसकी नौकरी फिर से बहाल हो गई है। और उनका बीमार बेटा अब बिल्कुल ठीक होकर अपनी सेवा में उपस्थित हुआ है।

उसने परम पूज्य स्वामी जी के चरण पकड़कर कहा कि यह कष्ट आपकी ही आशीर्वाद से कटे है। मैं अज्ञानी आपकी शरण में आया हूँ। आपने कृपा कर हमें क्षमा किया है। अब हम सब आपके दर के गुलाम है। आप कृपा कर हमें सेवा का अवसर अवश्य देते रहें।

परम पूज्य स्वामी जी ने नगरपालिका से आदेश प्राप्त होने पर पुष्कर रोड पर विशाल गेट भी बनवाया साथ साथ रामायण प्रदर्शनी एवं मेड़ता रोड वाले कोने में गेस्ट हाऊस भी बनवाना आरम्भ किया।

इस कार्य की देख रेख करने के लिये परम पूज्यस्वामी जी हर रोज सुबह को पुष्कर राज जाते थे तथा सांयकाल हर रोज नियम से आदर्श नगर आकर सत्संग का दीबाण लगाते थे।

जब जब बीच बीच में अवसर मिलता था तब दूसरे शहरों में रटन कर अपने सतगुरू महाराज की शिक्षाओं का प्रचार भी करते रहते थे। अधिकतर छः महीने बाहर रटन करते थे और छः महिने यहां पर रहकर सत्संग करते थे। उनकी अनुपस्थिति में उनके प्रेमी नियम से सत्संग करते रहते थे। किन्तु उनके आने पर आश्रम में रौनक आ जाती थी। सभी प्रेमियों के चहरे चमक जाते थे। दूर दूर से प्रेमी स्नेह एवं श्रद्धा से आकर परम पूज्य स्वामी जी के दर्शन कर आत्म शान्ति प्राप्त करते थे। परम पूज्य स्वामी जी में भगवान कृष्ण की भान्ति एक अलोकिक चुम्बकीय शक्ति थी जो सभी को अपनी ओर आकर्षित करती रहती थी। गोपियों वाली रास लीला लगी हुई थी। हर एक प्रेमी प्रेम के इस सागर में डुबकी लगाकर आनन्द विभोर हो रहा था सारा वातावरण स्वर्गमय बना हुआ था।

कुछ दिनों के पश्चात परम पूज्य स्वामी जी के पास कुम्भ के मेले का निमंत्रण पत्र आया। परम्परा अनुसार परम पूज्य सत्गुरू महाराज स्वामी टेऊंराम जी के समय से ही इस विशाल मेले में प्रेम प्रकाश मण्डल को अलग से पण्डाल मिलता आया है। जहां प्रेम प्रकाशी

संत जाकर सत्संग का दीबाण लगाते हैं एवं अन्न क्षेत्र चलाकर प्रेमियों एवं संतों की खूब सेवा करते हैं ।

सो यह निमंत्रण पत्र प्राप्त कर परम पूज्य स्वामी जी अपनी मण्डली लेकर कुम्भ के मेले में अलाहबाद पहुँच गये। उस समय मेले में भारी वर्षा हुई। सारी रात बरसात होती रही। सभी संत तंबुओं में रह रहे थे। तम्बुओं में पानी भर गया सारी रात संतों ने पानी में बैठकर काटी।

इस कुदरती कहर का परम पूज्य स्वामी जी के स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा उन्हें तेज बुखार आया। प्रात:काल होते ही सारी संत मण्डली त्रवेणी में डुबकी लगाने के लिये तैयार हो गई। परम पूज्य स्वामी जी भी उनके साथ डुबकी लगाने के लिये तैयार हुए। अन्य संतों ने इस हाल में उन्हें विश्राम करने के लियेकहा परन्तु स्वामी जी परम श्रद्धालू थे तथा सदा आत्मा में स्थित रहते थे सो इस शारीरिक कष्ट की परवाह नहीं करते हुए पवित्र जल में डुबकी लगा ली। इसका प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर पड़ा। उनके एक पांव के अंगूठे मे कम्पन होने लगी। वे तो हठ योगी थे सो उनको इस बात की बिल्कुल चिन्ता नहीं रही। परमात्मा अपने भक्तों से उनकी भक्ती की परीक्षा लेने के लिये कोई न कोई सौगात अवश्य देते है। किन्ही से भक्त श्रोमणी सुदामें के समान दरिद्र बनाकर दाने दाने के लिये तरसाकर अपने धैर्य की परीक्षा लेते है। किन्ही को रावण के समान अपयश की आग में जलाकर खाक कर देते है। तो किसी को परमयोगी भीष्म पितामह के समान तीरों की सेज पर सुलाकर घोर काया का कष्ट देते है। जो भक्त इस अग्नि परीक्षा से पार हो गया वह ही उसे पाकर जन्म मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाता है।

परम पूज्य स्वामी जी ने भी इस शारीरिक कष्ट को उसकी सौगात समझकर सहर्ष गले से लगाया। तथा वे शान्ति से उनके भाणे पर राजी रहे और कभी भी उफ नहीं की। जब कभी कोई भक्त प्रेमी उनसे पूछता था कि आपकी तबीयत कैसे है तो मुस्करा कर उत्तर देते

थे कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ। कभी भी कोई शिकायत नहीं की। सब्र एवं शुक्र की वे साक्षात् मूर्ति थे।

यह कष्ट की सौगात कुम्भ के मेले से लेकर परम पूज्य स्वामी जी प्रसन्नचित्त अजमेर वाले आश्रम पर पधार गये। उन्होंने अपने इस कष्ट की भनक किसी को भी नहीं लगने दी। नियम से सत्संग की दीबाण लगाकर प्रेमियों को आनन्द देते रहे। और साथ साथ आश्रम के विकास एवं विस्तार के कार्य को भी करते रहे।

कुछ दिनों के पश्चात उनके परम भक्त श्री ठाकुरदास आशा ब्रदर्स वाले उनकी सेवा में उपस्थित हुए। इस भक्त ने परम पूज्य स्वामी जी को कानपुर चलने के लिये निवेदन किया। स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण अजमेर के प्रेमियों ने उन्हें आश्रम में रहकर विश्राम करने के लिये निवेदन किया। किन्तु इस परम भक्त के आग्रह को परम पूज्य स्वामी जी टाल नहीं सकें। उस दिन सत्संग में यह भजन सुनाकर अपना दृढ़ निश्चय व्यक्त किया।

भजन

छो थियूँ मूंखे झलियों मां थीं दियसि जोगयाणी

बिरह जो पाणी भरीदियस भेनरू

१. लिखियों लेख पूरब जन्म जो

अखर सुञाणी पढ़दियसि बाणी

रातडी विहाणी... छो थियूँ मूँखे झलियो

२. ताना लोकनि जा ताम थी भायां

दियनि दिहाणी कीन सा कमाई

वञा भौ सागर मां त उदाणी

छो थि यूँ मूंखे झलियों...

३. आयस आस करे देह अबाणे

परख पुराणी हुई सा दादाणी

साई मुहिंजे साह खे सीबाणी

छो थि यूँ मूंखे झलियो...

७. कहता टेऊँ रतुथी रूआं मां

ऐबनि हाणी नींह ते निमाणी

वतां दर गुरूनि जे त विकाणी

छो थियूँ मूंखे झलियो...

अर्थ:- परम पूज्य स्वामी जी इस भजन में कहते है कि मुझे आप लोग क्यों रोक रहे है मैं तो जोगन बनूंगी मेरी बहन मैं तो इस राह में विरह का पानी पीऊंगी यह सब पूरब जन्म का लिखा हुआ है। मैं अक्षर पहचानकर वाणी पढूंगी । अब तो रात भी समाप्त होने वाली है इसलिये मुझे मत रोको। इस प्रेम की राह में लोग जो ताने देते है उसे मैं सौगात मानती हूँ। लोग तो रोज ही देते रहते है। मैं तो इस भवसागर में उड़कर उस पार जाना चाहती हूँ। मैं बड़ी आस लेकर इस देश में आयी थी। यह जो पुरानी पखर है यह मेरे पूर्वजों की दी हुई है यह ही मुझे प्राणों से भी प्रिय है। सतगुरू महाराज कहते है कि मैं पश्चाताप के आँसू बहा रही हूँ मैं अनेक कमियों से भरी हुई केवल सच्चा प्रेम लेकर आयी हूँ मैं अपने सतगुरू महाराज के द्वार पर बिक चुकी हूँ इसलिये मुझे वही जाने दो रोको मत।

भजन पूरा कर प्रेमियों को कहने लगे कि भाई ठाकुरदास हमारे प्रिय प्रेमी कानपुर से चलकर हमें सस्नेह लेते आये है सो हम उसे निराश नहीं करेंगे। संत तो केवल भावना के भूखे

होते है। वे प्रेमियों की प्रेम की डोरी में बन्धे रहते है। इसलिये हम कानपुर अवश्य जायेंगे। इसलिये हमें रोको मत हमें स्नेह से जाने दो तांकि वहां से जल्दी लौटकर सतगुरू महाराज के चरणों में सेवा करें। श्री ठाकुरदास परम पूज्य स्वामी जी की यह घोषणा सुनकर खुशी से मारे उछल पड़े। परम पूज्य स्वामी जीके चरणों पर सर रखकर वारों वार वन्दना कर कहने लगे कि महाराज! आपने शरणागत की लाज रखी है। आपने हमारे यह निवेदन स्वीकार कर हम पर बड़ी कृपा की है। हम जन्म जन्मातकर आपके आभारी रहेंगे। हम आपके चरणों के दास है।

दूसरे दिन सुबह को परम पूज्य स्वामी जी श्री ठाकुर दास के साथ कानपुर के लिये रवाना हो गए। अजमेर से रवाना होने से पूर्व श्री ठाकुरदास ने परम पूज्य स्वामी जी के कानपुर पधारने का समाचार भेज दिया था। सो कानुपर के स्टेशन पर परम पूज्य स्वामी जी के स्वागत करने के लिये प्रेमियों का सागर उमड़ पड़ा। सभी प्रेमी हाथों में फूलों के हार लेकर आंख बिछाकर बेसब्री से गाड़ी के आने का इन्तजार कर रहे थे। वहां के स्थानीय लोग प्रेमियों से पूछने लगे कि आज यह जनसमूह का सागर कैसे उमड़ पड़ा है। कौन सा वी.आई.पी. आने वाला है ? परम पूज्य स्वामी जी के कानपुर स्टेशन पर पधारने से सारा वातावरण उनकी जय जयकार से गूंज उठा प्रेमी उनका दर्शन करने के लिये चारो तरफ से उमड़ पड़े। हर एक प्रेमी बड़ी श्रद्धा से उन्हें फूल मालायें पहनाकर खुशी से फूले नहीं समा पा रहे थे। स्टेशन से लेकर भाई पुरूषोत्तमदास के घर तक सारी सड़क फूलो से ऐसी छायी हुई थी जैसे परम पूज्य स्वामी जी के सवागत में फूलो के गलीचे बिछा रखे हो। सड़क के दोनों और से प्रेमी परम पूज्य स्वामी जी पर फूलो की वर्षा कर उनकी जय जयकार मना रहे थे।

भाई पुरूषोत्तमदास के सम्पूर्ण परिवार ने उनकी खूब स्वागत कर सेवा की। परम पूज्य उनके प्रेम वश होकर कानपुर में पूरे बीस दिन रहे। यहां रहकर हर रोज सांय काल सत्संग का दीबाण लगाते थे। कानपुर के प्रमी दूर दूर से आकर उनके दर्शन कर तथा सत्संग रूपी अमृत पीकर आनन्द विभोर हो जाते थे। एक दिन जैसे नियमानुसार सायंकाल सत्संग

कर रहे थे उस समय अचानक दुकान से एक नौकर आया और आकर ठाकुरदास को कुछ कहा, उसकी बात सुनकर थोड़े समय के लिये भाई ठाकुरदास घबरा गये, परन्तु जल्दी अपने आपको संभाल कर ध्यान से सत्संग सुनने लगे। और मन में कहने लगा कि यह सब कुछ दिया भी तो उसी का है। सो उसकी रक्षा भी वे स्वयं ही करेंगे। और यदि उन की इच्छा होगी तो सब कुछ जाने दो। इसमें हमारा क्या है? हम सत्संग का अवसर हाथ से क्यों जाने दें? नौकर कुछ समय दूर रहकर उनके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा।

परन्तु उसको सत्संग में लीन देखकर वह नौकर भाई रतनलाल के पास गया। और उसे कान में कुछ कहा। नौकर की बात सुनकर भाई रतनलाल भी थोड़े समय तक विचलित हुए परन्तु भाई ठाकुरदास को सत्संग में लीन देखकर स्वयं भी परम पूज्य स्वामी जी के चरणों में चित लगाकर बैठा रहा। बेचारा नौकर उनकी बेपरवाही देखकर चुपचाप दुकान पर लौट गया।

परम पूज्य स्वामी जी तो अन्तर्यामी थे सो प्रेमियों की पीड़ को समझ गये और इस दुख की घड़ी में भी उनकी श्रद्धा एवं भक्ति देखकर उनको सांत्वना देने के लिये यह दृष्टान्त देने लगे।

दृष्टान्तः- एक दिन जब विष्णु भगवान क्षीर सागर में शेष नाग की शैया पर विश्राम कर रहे थे तो उस समय भक्त श्रोमणी नारद भगवान नारायण नारायण करता हुआ आकर वहां पहुँचा। भगवान विष्णु को प्रसन्न चित्त देखकर कहने लगा कि भगवान मैं आठो पहर आपका ही ध्यान एवं स्मरण करता रहता हूँ। कृपा कर यह बताने की कृपा करे कि मेरे से भी प्रिय और भी कोई आपका भक्त है क्या? भगवान विष्णु ने मुस्कराकर कहा कि मुनीश्वर! इस बात की तो आपको ज्यादा खबर है, मैं आपको क्या बतांऊ। नारदजी को उनका यह रहस्यमय उत्तर सुनकर कुछ शंका हुई। दिल में कहने लगे कि समय आने पर अपने आप सब कुछ सिद्ध हो जोयगा कि भगवान का सबसे प्रिय भक्त कौन है।

नारदमुनि भगवान विष्णु की स्तुति कर मृत्यु लोक की ओर रवाना हो गया। मृत्यु लोक में घूमते घूमते आकर एक द्वार पर खड़े हो गये। वहां पर वृद्धा बार बार यही कह रही थी हे भगवान सब कुछ आपको अर्पण। थोड़े समय के बाद वह घर की झाड़ू लगाने लगी। कचरा उठाकर जब बाहर फैंकने लगी तभी कहा कि हे भगवान! तुम्हें अर्पण। नारद मुनि को यह देखकर बहुत गुस्सा आया कि यह अज्ञानी वृद्धा भगवान को कचरा अर्पण कर उनका घोर अपमान कर रही है। सो बिना सोचे समझे उसे एक जोरदार थप्पड़ लगा दी। बेचारी बुढ़िया ने थप्पड़ पड़ते ही कहा हे भगवान! तुम्हें अर्पण। नारद मुनि ने समझा कि यह बुढ़िया तो सठिया गई है जो थप्पड़ पड़ने के बाद भी कहते है कि हे भगवान तेरे अर्पण।

नारद मुनि मृत्यु लोक से घूम कर आकर विष्णु लोक में पहुँचा। भगवान उसी प्रकार अपने आसन्न पर ब्राजमान थे। किन्तु उनके गाल पर पांचों उगंलियों छपी हुठ देखकर अचरज में पड़कर पूछा कि भगवान! आज यह किसकी मजाल हुई कि आपके गाल पर इस प्रकार थप्पड़ मार कर गाल लाल कर दिया है। भगवान विष्णु मुस्करा कर बोले कि यह कृपा मेरे किसी परम भक्त की है। इस पर नारद मुनि गुस्से में आकर कहने लगे कि यह कैसा अज्ञानी भक्त है जिसने यह गुस्ताखी की है। भगवान फिर रहस्यमय ढंग से मुस्कराते हुए उनके तरफ देखते हुए बोले मुनीश्वर इस बात की खबर मेरे से ज्यादा आपको है।

नारद मुनि दीन मन होकर भगवान से विनती कर बोले कि भगवान! आप इस प्रकार पहेलियां नहीं बुझाओं। साफ साफ बताईये कि यह दु:साहस किस मूर्ख ने किया है। इस पर भगवान विष्णु कहने लगे कि हे मुनीश्वर यह कृपा आपने ही मुझ पर की है। नारद मुनि उलझन में पड़ गया कि भगवान यह क्या कह रहे है। मैं तो यहा था ही नहीं फिर मैंने भगवान के थप्पड़ कैसे लगाई होगी। नारद मुनि को इस प्रकार विस्मय में पड़ता हुआ देखकर भगवान विष्णु ने सारी घटना उसे खोलकर समझाते हुए कहा कि मुनीश्वर वह बुढ़िया मेरे परम भक्त आठों पहर मेरे ध्यान में मग्न रहकर सारा समय यह कह रही है क भगवान सब कुछ तेरे अर्पण। जिस समय गुस्से में आकर आपने उसको थप्पड़ मारी उस समय थप्पड़

लगते ही उसने कहा कि हे भगवान तेरे अर्पण। इस प्रकार वह थप्पड़ भी मुझे अर्पण कर दी। इसलिये वह आपकी मारी थप्पड़ उसे तो लगी नहीं परन्तु आकर मुझे लगी।

इस प्रकार जो भक्त हर समय भगवान की भक्ति या अपने सतगुरू महाराज जी के ध्यान में रहते है तो वे उनके कष्ट स्वयं सतगुरू महाराज अपने ऊपर ले लेते है।

अब परम पूज्य स्वामी जी ने यह दृष्टान्त समाप्त ही किया था कि वही नौकर हंसता कूदता वहां आया और भाई ठाकुर दास को बोला कि भगवान की कृपा से वह कठिन आपदा टल गई।

भाई ठाकुरदास ने परम पूज्य स्वामी जी से विनती कर कहा कि महाराज! आज आपने हम पर गुप्त कृपा कर बहुत बड़ी मुसीबत से बचा लिया जिस समय आपका सत्संग सुन रहे थे उस समय हमारे ऊपर बहुत मुसीबत आई हुई थी परन्तु हम सब आपके चरणों में बैठे हुए थे। हमने सोचा सतगुरू महाराज के शरण में आने के पश्चात हमारा बाल भी बांका नहीं होगा। आप तो अन्तर्यामी है। रिद्धि सिद्धि के मालिक है। आपने ऐसी कृपा की कि हम सब उस बहुत बड़ी मुसीबत से पार हो गए।

परम पूज्य स्वामी जी ने उनकी गुरू भक्ति एवं अटूट विश्वास देखकर उन्हें यह आशीर्वाद दिया कि आप सदा इसी प्रकार परमात्मा का ध्यान करते रहेंगे और परमात्मा आपके सब कारज अपने आप रास करेंगे। यह आशीर्वाद देकर प्रेमियों को यह भजन सुनाया।

भजन

हरि शल हमेशा सच्चो ध्यान दे तूँ,

सदा शान्त वारो सच्चो ज्ञान दे तूँ....

१. रहे तात तुंहिजी दींह रात दिल में

सच्चे नाम पंहिजे जो नीशान दे तूँ...

२. पसंू प्रभू तुंहिजी त सूरत सदाई

सच्चे प्रेम वारो सो परवान दे तूँ...

३. सदा श्याम तुंहिजी रहे प्यास प्रभू

असां खे त ईश्वर इहो दानु दे तूँ...

४. रहे 'माधव' हरि नाम तंहि जो

सच्चो प्रेम पंहिजो त भगवान दे तूँ...

अर्थ:- परम पूज्य स्वामी जी इस भजन में कहते है कि परमात्मा आप हमें अपना सच्चा ध्यान प्रदान करो और शान्ति वाला सच्चा ज्ञान प्रदान करो। दिन रात केवल आप ही की याद रहे दिल में। आप अपने नाम की सच्ची पहचान दे दो। हे प्रभू हम सदा आपकी ही सूरत देखते रहे। आप अपना सच्चा प्रेम हमें प्रदान करो। हे प्रभू हमारे दिल में सदा आपके दर्शन की प्यास बनी रहे यही दान हमें परमात्मा प्रदान करो। स्वामी जी परमात्मा से विनती कर कहते है कि हमारे दिल में सदा हरि का ही नाम सदा रहे ऐसा सच्चा प्रेम आप हमें प्रदान करो।

कानपुर में रहते हुए जब लखनऊ के प्रेमियों को परम पूज्य स्वामी जी के पधारने का पता चला तब वे प्रेमी स्वामी जी के चरणों में उपस्थित हो गए और उन्हें विनम्र निवेदन किया कि महाराज लखनऊ के प्रेमी भी आपके दर्शन के प्यासे है। कृपा कर वहां अपने पवित्र चरण घूमा कर उन्हें आशीर्वाद देने की कृपा करें। परम पूज्य स्वामी जी उनका स्नेह व श्रद्धा देखकर कुछ दिनों के लिए लखनऊ गये। वहां के प्रेमियों को सत्संग रूपी अमृत पिलाकर उन्हें यह कहकर आये कि हर शनिवार को सत्संग ,महाराज जी की आरती कर ढोढा चटनी बांटकर परमात्मा का नियम से भजन करते रहें। लखनऊ से लौट कर परम पूज्य स्वामी जी कुछ दिन कानपुर में रहे। यहां पर सेठ पुरूषोत्तमदास जी के सुपुत्रों ने उनकी खूब सेवा की।

परम पूज्य स्वामी जी उनकी सेवा पर बहुत प्रसन्न हुए और उनको खूब आशीर्वाद देकर अजमेर के लिये रवाना हो गये। क्योंकि उनको पुष्कर राज में सतगुरू महाराज के आश्रम बनवाने की चिन्ता थी।

कानपुर से लौटने के पश्चात परम पूज्य स्वामी जी पुष्कर राज वाले आश्रम के निर्माण में लग गये। रामायण प्रदर्शनी का हाल तैयार हो चुका था। परम पूज्य स्वामी जी इस रामायण प्रदर्शनी को इतना तो सुन्दर एवं आकर्षक बनवाना चाहते थे जिससे हरेक यात्री उसे देखकर मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम का दर्शन कर रामायण का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकें।

परम पूज्य स्वामी जी कहते थे रामायण हमारे सामाजिक जीवन का आदर्श है। रामायण की शिक्षाओं को ग्रहण करने से हमारा जीवन सुखी एवं आनन्दमय हो सकेगा। रामायण स्वर्ग की सीढ़ी के समान है। सभी शास्त्र में रामायण गंगा जल के समान अति पवित्र एवं पावन है।

इसलिये ऐसे पावन मन भावन ग्रंथ को सुन्दर एवं सरल तरह के करने के लिये परम पूज्य स्वामी जी ने बाल काण्ड में से श्रीराम के जन्म बाल क्रीड़ा एवं विवाह के पाँच मुख्य प्रसंग चुने। इसी प्रकार अयोध्या काण्ड में से पिताजी की आज्ञा से बनवास के प्रसंग चुने आर्णीय काण्ड एवंकिकन्दा कान्ड से सुग्रीव का शरण आना, सुन्दर काण्ड में से श्री महावीर हनुमान का, लंका दहन एवं माता जानकी के दर्शन के लंका काण्ड में से रावण वध के व उत्तर काण्ड में से श्री राम के राजतिलक के पाँच पाँच शिक्षा दायक एवं मनोहर प्रसंग चुने।

उनके आधार पर संगमरमर की सुन्दर मूर्तिया बनवाई। वे सब इस हाल में दीवारों पर चारों और लगवाई। इन तस्वीरों को लगाने से सारा हॉल चमकने लग गया। सम्पूर्ण रामायण के दर्शन हो रहे थे। ये सुन्दर सजीव मूर्तिया जैसे मूक भाषा में श्री राम की कथा कह रही थी सारा वातावरण ही राममय हो गया है। हरेक यात्री ये मूर्तियों देखकर श्री राम की महिमा

समझ जाता है। प्रत्येक तस्वीर के नीचे संक्षेप में विवरण भी लिखवाया गया है जिसे यात्री उसे पढ़कर अच्छी तरह से समझ सकें। राम भक्तों के लिये हर तस्वीर के ऊपर उस चित्र से सम्बन्धित रामायण से चुनी हुई चौपाइयां भी लिखवाई जिससे वे भक्त राम रस पीकर आनन्द विभोर होकर श्री राम में लीन हो जायें।

इस प्रकार रामायण प्रदर्शनी में हर तरह के जिज्ञासू के लिये सामग्री मौजूद है। जो केवल श्री राम लीला का दर्शन करना चाहते है वे इन सुन्दर तस्वीरों को देखकर अपनी आँखे ठण्डी कर सकते है। जो जिज्ञासू रामायण का संक्षेप में ज्ञान प्राप्त करना चाहते है वे विवरण पढ़कर उसे धारण कर अपना जीवन सफल बना सकते है। और जो रामायण रूपी सुखसागर में गहरी डुबकी लगाकर मोती प्राप्त करना चाहते हे वे लिखे हुई सुन्दर चौपाईयां पढ़कर श्री राम में लीन हो सकते है।

रामायण प्रदर्शनी तैयार हो जाने के पश्चात परम पूज्य स्वामी जी के हृदय से सतगुरू महाराज स्वामी टेऊंराम जी के विशाल, बुलन्द निज मन्दिर बनवाने की अभिलाषा थी। वे चाहते थे कि यह मेरे सतगुरू महाराज का मन्दिर ताजमहल के समान सुन्दर एवं अनोखा बने। ऐसे भव्य मन्दिर बनवाने के लिये अपार धन की आवश्यकता थी हर समय उस सुन्दर मन्दिर की तस्वीर उनके हृदय में रहती थी। बस अब कसर थी इस समय भामाशाह के प्रकट होने की।

एक दिन परम पूज्य स्वामी जी देहलीगेट वाली स्वामी बंसतराम जी के मन्दिर में सतगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जयन्ति उत्सव पर गये हुए थे। सतगुरू महाराज की जयन्ति उत्सव के मनाने का अधिकार स्वामी बसंतराम जी महाराज जी को मिला हुआ है। वरसी उत्सव मनाने का अधिकार परम पूज्य स्वामी जी को मिला हुआ है। परम पूज्य स्वामी जी तो मर्यादा की मूर्ति थे सो इस जयंति उत्सव पर सभी दिन नियम से आते थे और सभी कार्यक्रम में भाग लेते थे।

जैसे इस उत्सव से लौट रहे थे तो उस समय श्री भगवानदास मयाणी श्री गागनदास के साथ आकर परम पूज्य स्वामी जी के चरण वन्दना करने लगे। परम पूज्य स्वामी जी ने उन्हें खूब आशीर्वाद दिया और उन्हें आश्रम पर चलने के लिये कहा। श्री भगवानदास मयाणी तो परम पूज्य स्वामी जी के श्रद्धालू शिष्य थे सो एकदम आश्रम पर रहने के लिये राजी हो गये। परन्तु श्री गागनदास ने कहा कि हमारी तो जाने की टिकटे बुक है सो हम आश्रम में कैसे जा सकते है। इस पर श्री भगवानदास मयाणी ने उसे बताया कि परम पूज्य स्वामी जी मेरे सतगुरू महाराज है। मेंने हैदराबाद सिन्ध में पूज्य पिता साहब की आज्ञा से नामदान लेकर उन्हें अपना गुरू स्वीकार किया था। देश के विभाजन के बाद आज बहुत भाग्य से इनका शुभ दर्शन हुआ है।

पूज्य पिता साहब ने भी परम पूज्य स्वामी जी को अपना गुरू बनाकर नाम दान लिया था। पूज्य पिता साहब मुझे नौकरी दिलाने के लिये आशीर्वाद लेने के लिये परम पूज्य स्वामी के पास ले आये थे। परन्तु परम पूज्य स्वामी जी ने आज्ञा की के आप तो व्यापारी हो सो व्यापार कर खूब धन कमाओं। सतगुरू महाराज जी आपका भाग्य भला करेंगे। नौकरी में क्या रखा है उन्हीं की आज्ञा सत्य वचन जानकर उन्हीं की प्रेरणा से मैं विलायत गया और आज जो कुछ हमारे पास है वे सब आपकी आशीर्वाद से प्राप्त हुआ है। इसलिये हम कुछ दिन उनके चरणों में रहकर उनकी सेवा करना चाहते है।

परम पूज्य स्वामी जी इस श्रद्धालू प्रेमी को लेकर आश्रम में पधारे। उन्हें खूब स्नेह दिया मान सम्मान दिया और सदा सदा के लिये अपने प्रेम की डोरी में बांध दिया। एक दिन उन्हें पुस्कर राज वाले आश्रम पर ले गये। उन्हें वह स्थान बताया जहां सतगुरू महाराज ने आकर धूणी रमाई थी। वह स्थान दिखाकर कहा कि हम इस स्थान पर सतगुरू महाराज का एक विशाल ताजमहल जैसा संगमरमर का सुन्दर निज मन्दिर बनवाना चाहते है। जिससे सतगुरू महाराज जी का यश सारे भारत में फैल जाये।

यह बात सुनकर श्री भगवानदास मयाणी ने परम पूज्य स्वामी जी से विनीत भाव से विनती की कि इस पवित्र सेवा करने का मुझे अवसर देने की कृपा करें। इस सेवा के लिये और किसी प्रेमी से सहायता आवश्यकता नहीं है। आप कृपा कर इस शुभ कार्य को भली आज ही आरम्भ करवाईये। इस कार्य को करने में कभी भी कोई कमी नहीं आयेगी। किन्तु हमारा एक निवेदन अवश्य स्वीकार करने की कृपा करें। जो इस सेवा में और किसी का पैसा नहीं लगाएंगे। और हमारी इस विनीत सेवा को गुप्त रखने की कृपा करें। जिससे इस बात का आभास किसी को भी नहीं हो। आप हमारे महाराज है हमारे लिये परमात्मा स्वरूप है। हमें यह जो कुछ मिला है वह सब आपकी कृपा से मिला है इसमें से एक लोटी भरकर अपने चरणों में चढ़ाने की अनुमति प्रदान करने की कृपा करें। ताकि यह जन्म सफल हो सकें। यह गुरू दक्षिणा अपने चरणों में अर्पण करने का सुअवसर प्रदान करने की कृपा करें।

परम पूज्य स्वामी जी श्री भगवानदास मयाणी जी की गुरू भक्ति, श्रद्धा तथा उनके विनीत सेवा भाव पर बहुत प्रसन्न हुए। तथा उन्हें खूब आशीर्वाद दिया। शुभ महूरत निकलावाकर इस भागीरथ कार्य का विधिविधान से संकल्प करवाकर शुभारम्भ करवा दिया। श्री मयाणी जी ने अपने वचन को पूर्ण किया इस माहन कार्य को निरन्तर श्रद्धा से करते रहे। वे जब भी भारत में आते थे तब परम पूज्य स्वामी जी के साथ पुष्कर राज में आकर इस कार्य की प्रगति देखकर अति प्रसन्न होते थे।

यह भव्य एवं सुन्दर निज मन्दिर तैयार होने के पश्चात परम पूज्य स्वमी जी ने मन्दिर के बीच में परम पूज्य सतगुरू महाराज जी की संगमरमर की खड़ी, सजीव, ज्योति वाली मूर्ति स्थापित करवाई यह मूर्ति ऐसी तो सुन्दर एवं सजीव है जो इसमें से आंख ही नहीं निकलती।सतगुरू महाराज जी के इस स्वरूप के दर्शन पर प्रेमियों को अपार शान्ति मिल रही है।

इस सोम्य एवं सुन्दर मूर्ति की स्थापना के बाद दोनों ओर सतगुरू महाराज के अलग अलग स्वरूप की दो शाही बैठी हुई तस्वीरे स्थापित करवाई। जिस समय ये मूर्तियां स्थापित हो रही थी उस समय परम पूज्य स्वामी जी से पूछा कि एक ही स्थान पर सतगुरू महाराज की तीन मूर्तियां स्थापित करवा रहे है। इस पर परम पूज्य स्वामी जी ने उत्तर दिया कि हम चाहते है कि हम जहां पर भी बैठे वहां से हमें केवल अपने सतगुरू महाराज के ही दर्शन हों।

हमारे ह्दय में आठों पहर केवल सतगुरू महाराज ही बसते है। हम चाहते है हमें हर स्थान पर दिशा में केवल सतगुरू महाराज जी के ही दर्शन हो। सतगुरू महाराज जी की हम पर असीम कृपा है। सतगुरू महाराज की महिमा का यह श्लोक कहकर उनकी बढ़ाई की-

कामिल करम कयो तदहिं खुली आयूँ

दिसी पंहिजे जीव जो सो विंचूसभि वियो,

भासे कीन बियो, सामी चए सरूप रे।

अर्थ:- इस श्लोक में गुरू की महिमा करते हुए सामी साहब कहते है कि सतगुरू जब कृपा करते है तभी हमारे ज्ञान रूपी आंखें खुलती है तभी हम परमात्मा के दर्शन अपने अन्दर ही कर लेते है। जिससे हमें आत्म शान्ति मिलती है। जब गुरू की कृपा होती है तब हमारे मन से सभी प्रकार की शंकाए समाप्त हो जाती है और हमें परमात्मा के सिवाय और कुछ भी नहीं दिखता है।

सतगुरू महाराज की ये सुन्दर मूर्तियां स्थापित करवाने के पश्चात परम पूज्य स्वामी जी ने सतगुरू महाराज की जीवन लीला की चौबीस बड़ी तस्वीरें बनवाकर चारों और लगवाई तांकि जिज्ञासुओं को सतगुरू महाराज के जीवन लीला एवं महिमा का ज्ञान मिल सकें।

सतगुरू महाराज जी की प्रदर्शनी तैयार करवाने के पश्चात परम पूज्य स्वामी जी ने सोचा कि मुख्य हाल में सनातन धर्म के सम्बन्ध में जानकारी देनी चाहिये क्योंकि सतगुरू

महाराज स्वामी टेऊँराम जी सनातन धर्म के प्रचारक एवं रक्षक थे। इसके अतिरिक्त परम पूज्य स्वामी जी कहते थे कि सिन्ध घाटी की उच्च कोटि की सभ्यता के वारिस है। जिस सभ्यता का संसार में कोई सानी नहीं है। हमने उस सिन्धू नदी का पानी पिया है जिसके किनारे बैठकर ऋषियों मुनियों ने पवित्र महान आदि ग्रंथ वेदों की रचना की थी।

देश के बटंवारें के बाद धर्म की रक्षा हेतु जब हम अपनी मातृभूमि छोड़कर भारत भूमि पर पहुँचे तब यहां के लोगों को हमारे धार्मिक विश्वास एवं धर्म परायणता की जानकारी नहीं थी। वे हमें उस इज्जत और अपनेपन की निगाह से नहीं देखते थे। जिसके हम अधिकारी थे। वे हमारे धर्म को अपने धर्म से अलग मानते थे। क्योंकि हम पाकिस्तान से पलायन कर आये थे।

इसलिये परम पूज्य स्वामी जी ने सोचा कि इस महान आश्रम में सनातन धर्म के महान ग्रंथों जैसे रामायण, श्रीमद् भगवत गीता व श्रीमद भगवत का ज्ञान ऐसे सुन्दर तरह आकर्षक तस्वीकरों द्वारा दिया जाये जिससे कि इस आश्रम में आने वाले हर यात्री को यह जानकारी मिले कि सिन्धी समाज का सनातन धर्म में कितना विश्वास है।

परम पूज्य स्वामी जी परम ज्ञानी एवं धर्म परायण थे। उनकी यह मनोकामना थी कि जो भी जिज्ञासू इस आश्रम में आवे उसे सनातम धर्म की गहराई, विशालता एवं ईश्वर की सत्ता में अटूट विश्वास के सम्बन्ध में ज्ञान मिलना चाहिये। और अवतार बाद सनातन धर्म का आधार है। इस सम्बन्ध में भगवत गीता में श्री कृष्ण भगवान ने स्वयं कहा है कि :-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत

अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मांन सृजाम्यहम्

परित्राणाय साधूनां विनाशचय दुष्कृताम्

धर्म संस्थाप पनार्थाय संभावामि युगे युगे।

अर्थ:- हे भारत! जब जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात् प्रकट करता हूँ। क्योंकि साधु पुरूषों का उद्धार करने के लिये और दूषित कर्म करने वालों का नाश करने के लिये तथा धर्म स्थापन करने के लिये युग युग में प्रकट होता हूँ।

इसलिये परम पूज्य स्वामी जी ने इस निज मन्दिर के प्रवेश हाल में चौबीस अवतारों की स्थापना अति सुन्दर तरीके से करवाई। चौबीस अवतारों की सुन्दर सजीव संगमरमर की तस्वींरे बनवाकर हर हाल के दीवारों पर इस प्रकार लगावाई जिस से जो भी यहां प्रवेश करें उनकी दृष्टि इन सुन्दर तस्वीरों पर अवश्य पड़े। तस्वींरे इतनी तो सुन्दर एवं आकर्षण है कि जिज्ञासू आंख ही नहीं हटा सकते है।

उन मूर्तियों के पास में इन्द्रधनुषी रंगों में उन अवतारों के बारे में बहुमूल्य जानकारी लिखवाई है। इसकी जानकारी बहुत कम लोगों को है। इस विवरण में मुख्य रूप से यह ज्ञान दिया गया है कि भगवान ने अवतार क्यों लिया अर्थात किस कारण अवतार लिया, भगवान ने किस रूप में अवतार लिया तथा अवतार धारण कर किस प्रकार धर्म की रक्षा की।

इन अवतारों का दर्शन कर और उनका यह विवरण पढ़कर जिज्ञासुओं के मन में ईश्वरीय सत्ता में तथा धर्म केविषय में अवश्य विश्वास हो जायेंगे।

इन चौबीस अवतारों का दर्शन करने के पश्चात हर यात्री यह आशा लेकर लौटते है कि भगवान धर्म की रक्षा करने, इस पाखण्ड, अनाचार एवं अत्याचार से धरा को मुक्त कराने के लिये अवश्य ही कलंकी रूप में अवतार धारण कर सबका उद्धार करेंगे।

यह आशा की किरण मन में जगाकर जैसे जिज्ञासू निज मन्दिर की सीढ़ियां पार करेंगे तो सामने उसको गीता प्रदर्शनी के दर्शन होंगे। परम पूज्य स्वामी जी कहते थे कि श्रीमदभ्गवतगीताश्री कृष्ण भगवान के मुखारवन्द से निकली हुई वह अमृतधारा है जिसके ज्ञान से जिज्ञासु जन्म मरण के चक्कर से मुक्त होकर परम पद प्राप्त करता है।

इस गीता प्रदर्शनी के बीच में श्री कृष्ण भगवान एवं राधिका की सुन्दर तस्वीर स्थापित की हुई है। तथा संगमरमर की दीवारों पर चारों और श्रीमदभ्गवतगीता के सात सौ संस्कृत में मूल श्लोक सुन्दर लेख में लिखे हुए है। गीता के गूढ़ तत्व ज्ञान को सरल तरह से समझाने के लिये प्रत्येक अध्याय का संक्षेप में सार हिन्दी में लिखवाया गया है। जिससे जन साधारण उसे समझा कर उससे लाभ उठा सकें। परम पूज्य स्वामी जी की यह अभिलाषा थी कि प्रत्येक अध्याय पर एक ऐसा चित्र बनवायें जिसको देखकर जिज्ञासू उस अध्याय के सार व भाव को समझ जावें।

इस प्रकार इस महान ग्रंथ के सार एवं संदेश को जन जन तक पहुँचाने के लिये परम पूज्य स्वामी जी ने मूल संस्कृत के श्लोक, हिन्दी में प्रत्येक अध्याय का सार तथा हर अध्याय को खोलकर समझाने के लिये उससे सम्बधित चित्र बनवाने की योजना बनाई।

गीता प्रदर्शनी के द्वार पर सम्पूर्ण गीता का सार बड़े एवं सुन्दर अक्षरों में लिखवाया जिसे जिज्ञासू पढ़कर सब कुछ परमात्मा के चरणों में अर्पण कर परम आनन्द प्राप्त कर सकें। वह सार इस प्रकार है-

गीता सार

व्यथ्र चिन्ता क्यों करते हो? किसी से व्यर्थ क्यों डरते हो? तुम्हें कौन मार सकता है? आत्मा न ही जन्म लेती है और न ही मरती है।

जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह भी अच्छा हो रहा है। जो होगा वह भी अच्छा ही होगा। तुम बीते हुए पर मत पश्चाताप करो। भविष्य की चिन्ता छोड़ दो। यह समय तो गुजर ही रहा है।

तुम्हारा क्या गया जो रोते हो? तुम क्या लाये थे जो तुमने गंवा दिया? तुमने क्या पैदा किया था जो नाश हो गया? न तुम कुछ लाये, जो लिया यहीं से लिया, जो दिया यहीं पर

दिया। जो लिया सो उस (भगवान) से लिया। जो दिया उसको दिया। खाली हाथ आये, खाली हाथ चलेंगे। जो आज तेरा है कल किसी और का था, परसों किसी और का होगा। तुम उसे अपना समझकर मगन हो रहे हो। बस यह खुशी ही तेरे दुखों का कारण है।

परिवर्तन संसार का नियम है। जिसको तुम मृत्यु समझते हो यही जीवन है, एक क्षण में तुम करोड़ों के मालिक बनते हो, दूसरे ही क्षण तुम दरिद्र बन जाते हो। मेरा तेरा छोटा बड़ा अपना पराया मन से मिटा दो, विचार से हटा दो, फिर सब तेरा है, तुम सब के हो।

न शरीर तुम्हारा है, न तुम शरीर के हो। यह आग, पानी ,वायु, पृथ्वी, आकाश से बना है और उसीमें मिल जायेगा। परन्तु आत्मा स्थिर (स्थाई) है। फिर तुम क्या हो? तुम अपने आपको भगवान को अर्पण कर दो यही सबसे उत्तम सहारा है। जो उसके सहारे को समझता है वह भय चिन्ता दु:ख से सदा मुक्त है।

जो कुछ तुम करते हो वह भगवान को अर्पण करता चल इस से तुम सदा जीवन मुक्त हो के आनन्द का अनुभव करोंगे।

गीता का यह सार लिखवाने के पश्चात परम पूज्य स्वामी जी कहने लगे कि गीता प्रदर्शनी के पश्चात अब हम नौ ग्रहों की स्थापना करना चाहते है। क्योंकि हमारे शास्त्रो ग्रहों का बहुत बड़ा महत्व है। जन्म से लेकर मृत्यु तक जो भी कारज होते है, उन्हें पूर्ण करने से पूर्व नौ ग्रहों की पूजा की जाती है। इंसान के लाभ हानि में ग्रहों का बड़ा योग दान होता है। ग्रहों की दशा राजा में से रंक और रंक में से राजा बना देता है। इसलिये ग्रह शान्ति के लिये बड़े बड़े अनुष्ठान किये जाते है। इसलिये परम पूज्य स्वामी जी ने उन नौ ग्रहों के लिये नौ कक्ष बनवाने की आज्ञा दी।

जिस समय उन कक्षों का नींव का पत्थर रखकर पूजा की तैयारी की जा रही थी। उस समय अचानक दो मोटरें प्रेमियों से भरकर आयी। उन प्रेमियों ने बताया कि वे स्पेन से आये है। किसीकार्य वश जयपुर आये हुए थे। वहां से टैक्सी कर परम पूज्य स्वामी जी के दर्शन

करने आदर्श नगर गये थे। जहां पर उन्हें पता लगा कि परम पूज्य स्वामी जी पुष्कर राज गये हुए है। सो हम दौड़ते हुए उनके शुभ दर्शन के लिये यहां आये है। परम पूज्य स्वामी जी ने विधि विधान से उनसे नौ ग्रहों के कक्षों की स्थापना की पूजा करवाई तथा नींव का पत्थर रखवाया उन्हें प्रसाद देकर पखर पहनाई तथा भोजन करवाकर खूब मान सम्मान दिया। उस प्रेमी ने स्नेह एवं श्रद्धा से परम पूज्य स्वामी जी के चरणों में एक ब्लैक चेक भेंट स्वरूप प्रस्तुत करते हुए निवेदन किया कि इन कक्षों पर जो भी खर्चा हो वह इस चेक में भरकर मेरी भेंट समझकर स्वीकार करने की कृपा करें।

परम पूज्य स्वामी जी ने वह चेक लेकर उसे दोहरा किया दोहरा करने के बाद चौलड़ा किया। फिर उसे प्रेमी को निकट आने का संकेत दिया। जब वह प्रेमी निकट आया तब वह चेक उसके जेब से डालकर कहा कि हमारी अमानत समझकर आप इसे आशीर्वाद समझकर अपने पास रखो। बेचारा प्रेमी आश्चर्य में पड़ गया कि परम पूज्य स्वामी जी मेरी यह श्रद्धापूर्वक भेंट क्यों नहीं स्वीकार कर रहे है। परम पूज्य स्वामी जी ने उन्हें जैसे तैसे समझाकर रवाना कर दिया।

उस प्रेमी के जाने के पश्चात हमने परम पूज्य स्वामी जी से विनती की कि इस समय कार्य बहुत जोर शोर से चल रहा है। आप उस प्रेमी की भेंट स्वीकार कर इस यज्ञ में लगा सकते थे। परम पूज्य स्वामी जी ने कहा कि यह बहुत गहरे रहस्य की बात है। जिसे हमने गुप्त रखा है। समय आने पर आपको अवश्य पता लग जायेगा।

थोडे समय के बाद वे कक्ष बनकर तैयार हो गये। उस समय परम पूज्य स्वामी जी के परम भक्त श्री भगवानदास मयाणी आश्रम में आये हुए थे। उनके परिचय करवाते हुए कहा कि हमने इस परम भक्त को वचन दिया था कि पुष्कर राज वाले आश्रम पर केवल इनहीं का पैसा लगेगा। इस कारण हमने अपने वचन को निभाने के लिये उस दिन स्पेन वाले प्रेमियों से इन कक्षों के बनवाने के लिये भेंट स्वीकार नहीं की।

परम पूज्य स्वामी जी श्री भगवान मयाणी को कहने लगे कि हमने अपने वचन को निभाते हुए आप की सेवा गुप्त रखी है। अब आप हमें स्वर्गवासी पूज्य पितासाहब पूज्य माता साहब तथा पूज्य भाई साहब के फोटो दे दो तो हम उनके पुतले बनवाकर इन कक्षों में से सबसे प्रथम कक्ष में स्थापित कर आप जैसे दानवीर भामाशाह के पूर्वजों का सम्मान करें जिन्होंने आप जैसे सुपात्र को जन्म दिया है।

उसके पश्चात परम पूज्य स्वामी जी ने हमारा परिचय करवाते हुए श्री भगवानदास मयाणी को बताया कि ये जमनादास केसवाणी उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी केसवानी है जो सचमुच लक्ष्मी का स्वरूप है। यह सम्पूर्ण परिवार, सर्दी, गर्मी, देर सवेरे लगन से पुष्कर राज वाले आश्रम की सेवा कर रहे है। हमने बड़े चाव से इन्हें अपना शिष्य बनाया है। सतगुरू महाराज जी के इस महान कार्य में आप धन व मन से सेवा कर रहे है ये तन और मन से सेवा कर रहे है।

जैसे हमने आपकी सेवा गुप्त रखी है वैसे ही इनकी सेवा भी हमने लोगों से छिपाकर गुप्त रखी है। हम पुष्कर राज वाले आश्रम की सम्पूर्ण सेवा इन्हीं से लेते है। इनके मन में अटूट गुरूभक्ति है इसलिये ये लोग पुष्कर राज पर कार्य करवाकर प्रति दिन सायं काल आदर्श नगर वाले आश्रम पर आकर हमारी खूब चाव से सेवा करते है। इन्होंने हमारी विनीत सेवा कर हमारा मन जीता है। सतगुरू महाराज यह नाता करें अन्त तक निभाये।

उस के पश्चात परम पूज्य स्वामी जी ने वचनानुसार नव ग्रहों वाले कक्षों में से प्रथमकक्ष में मयाणी परिवार के तीन पुतले स्थापित करवाये। दूसरे कक्षों में विनायक भगवान श्री गणेश, भगवान शिव शंकर, माता दुर्गा, रामा पीर और अन्य देवताओं की संगमरमर की मूर्तियां स्थापित करवाई।

बाकी नौ ग्रहों के लिये तीन कक्ष रखे जहां हरेक कक्ष में तीन तीन ग्रहों की सुन्दर एवं सजीव मूर्तियां स्थापित करवाई। हरेक ग्रह के ऊपर उस ग्रह की पूर्ण जानकारी दी जैसे उस

ग्रह की चिन्ह क्या है वह ग्रह सूर्य से कितना दूर है उसका आकार व रंग कैसा है वह ग्रह कौन सी राशि का स्वामी है, उस ग्रह का हरेक राशि में कितना ठहराव है। उस ग्रह का प्रभाव कम करने के लिये कौन सा रत्न पहनना चाहिये और कौन से धातु का दान करना चाहिये। उस ग्रह की कौन से ग्रह से मित्रता और कौन से ग्रह से शत्रुता है और ग्रह शान्ति के लिये कौन से मंत्र का जाप करना चाहिये। और कितनी बार करना चाहिये।

यह सब जानकारी इस लिये दी गई है कि जैसे जिज्ञासू उसके द्वारा ग्रह शान्ति कर अनिष्ठ को दूर कर सुख और शान्ति की जीवन बिता सकें। यह बहुमूल्य ज्ञान इस प्रकार लोक कल्याण की भावना से परम पूज्य स्वामी जी ने दिया।

१. सूर्य- सूर्य चौथे आकाश पर व मण्डल के बीच में स्थित है। आकृति गोल और रंग लाल है, सिंह राशि के स्वामी हैं। यह हरेक राशि में एक माह रहता है। प्रभाव कम करने के लिये हरिवंश पुराण का पाठ सुनना चाहिये रत्न माणिक धारण करना चाहिये और धातु सोने का दान करना चाहिये। मित्र गृह: चन्द्र, मंगल, व बृहसपति तथा शत्रुग्रह शनि, राहु व शुक्र हैं।

मन्त्र:- ह्ी्रं जपाकु सुमसंकाशं का काश्यापेयं महाद्युतिम,

तमोरिं सर्वपापघ्नं प्रण्तोऽस्मि दिवाकरम्

(इस मन्त्र का जाप ७००० बार रविवार से आरम्भ करना चाहिये)

२. चन्द्र:- चन्द्र सूर्य से एक लाख योजन दूर सौलह कलाओं से युक्त है, आकार अर्द्ध गोलाकार व रंग सफेद है। यह कर्क राशि का स्वामी है यह हरेक राशि में सवा दो माह रहता है। प्रभाव कम करने के लिये त्रपुर जाप करना चाहिये। मोती रत्न धारण करना चाहिये व धातु चान्दी का दान शुभ है। मित्र ग्रह रवि व बुद्ध शत्रुग्रह राहु है।

मन्त्र:- ह्रीं दधिशङ्ख तुषाराभं क्षीरोदार्ण वसम्भवम्

नमामि शशिनं सोमं शम्भोमुकुट भूषणम्

३.मंगल :- मंगल सूर्य से दस लाख योजन दूर पंाचवे आकाश पर स्थित है। उसका आकार ऋकोणव रंग लाल है। यह वृश्चिक एवं मेष राशियों का स्वामी है यह हरेक राशि में ड़ेढ माह तक रहता है।

प्रभाव कम करने के लिये रूद्रि जाप करना चाहिये। रत्न प्रवाल का धारण करना चाहिये। तथा धातु सोने का दान करना चाहिये मित्र गृह रवि, बृहस्पति चन्द्र है। शत्रुग्रह बुद्ध व राहु है।

मंत्र हीं धरणीगर्मसंभूतं विधुत्कान्ति समप्रभम्

कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्

(इस मंत्र का जाप १००० बार मंगलवार से करना चाहिये।)

४.बुधग्रह:- बुद्ध सूर्य से आठ लाख योजन दूर दूसरे आकाश पर स्थित है। आकार धनुष व रंग हरा है। यह मिथुन व कन्या राशियों का स्वामी है। यह हर राशि में एक माह तक रहता है। प्रभाव कम करने के लिये धातु कांसे का दान करना चाहिये। रत्न पन्ने का धारण करना चाहिये। मित्रग्रह रवि, राहु व शुक्र। शत्रु ग्रह चन्द्र है।

मंत्र:- हीं प्रियङ्गकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।

सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥

५. बृहस्पति:- बृहस्पति सूर्य से बारह लाख योजन दूर छठे आसमान पर स्थित है। आकार अष्ठदल व रंग पीला है। यह धनु व मीन राशियों का स्वामी है हर राशि में तेरह माह रहता है। प्रभाव कम करने के लिये उमावस्या का व्रत रखना चाहिये। रत्न पुखराज का धारण व दान हीरे का शुभ है। मित्र ग्रह रवि, चन्द्र व मंगल है। शत्रुग्रह बुद्ध व शुक्र है।

मंत्र:- हीं देवानां च ऋषीणां च गुंरू काञ्चन संनिभम्।

बुद्धिमूतं त्रिलोकेशं तं नमामि वृहस्पतिम्॥

(इस मंत्र का जाप ११०० बार बृहस्पति से करना चाहिये।)

६. शुक्र ग्रहः- शुक्र सूर्यसे ६ लाख योजना दूर तीसरे आकाश पर स्थित है। आकाश चतुष्ठकोण व रंग सफेद है। यह तुला व वृश राशि का स्वामी है। यह हर राशि में एक माह तक रहता है। प्रभासव कम करने के लिये गौदान करनी चाहिये। रत्न हीरा धारण व दान चान्दी का शुभ है। मित्र ग्रह राहु व शनि है। शत्रुग्रह रवि व चन्द्र है।

मंत्रः- ह्रीं मिकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरूम्।

सर्वशास्त्रप्रवत्तकारं मार्गवं प्रणमाम्यहम्॥

(इस मंत्र का जाप १००० बार शुक्र से आरम्भ करना चाहिये।)

७. शनिग्रहः- शनि देवता सूर्य से चौदह लाख योजन दूर सातवें आकाश पर स्थित है। आकार मनुष्य का व रंग काला है। यह मकर व कुम्भ राशियों के स्वामी है। यह हर राशि में तीस माह तक रहता है। प्रभाव कम करने के लिये मृत्यंजय मंत्र का जाप करना चाहिये। रत्न नीलम का धारण व दान लोहे का शुभ है। मित्र ग्रह बुद्ध राहु व शुक्र है। शत्रु ग्रह रवि, चन्द्र व मंगल है।

मंत्रः- ह्रीं नीलाञ्चनसमाभासं रिवपुत्रं यमाग्रजम्।

छायामांर्तडसंभूतं तं नमामि शनेश्चरम्॥

(इस मंत्र का जाप २३०० बार शनिवार से आरम्भ करना चाहिये।)

८. राहुग्रहः- राहु सूर्य से सौलह लाख योजन दूर नीरत्या करण में स्थित है। आकार मकर का व रंग काला है। राहु हर राशि में अठारह माह तक रहता है। प्रभाव कम करने के लिय

भजुंग दान करना चाहिये। रत्न गोमेद का धारण व धातु शीशे का दान शुभ है। मित्र ग्रह बुद्ध, शनि व शुक्र है। शत्रु ग्रह रवि, चन्द्र व मंगल है।

मंत्र ह्रीं अर्धकार्य महावीर्य चन्द्रदित्यविमर्दनम्।

सिंसिहकागर्भसंमूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥

(इस मंत्र का जाप १८००० बार बृहस्पति से आरम्भ करना चाहिये।)

९. केतु ग्रह:- केतु सूर्य से अठारह लाख योजन दूर वायुय कोण में स्थित है। आकार झंण्डे का व रंग काला है। यह हर राशि में अठारह माह तक रहता है। प्रभाव कम करने के लिये झण्डा दान करना चाहिये। रत्न लसन्या धारण करना व धातु लोहे का दान शुभ है।

मंत्र ह्रीं पलाशुपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।

रौद्रं रौद्रात्मकं घोंर तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥

इस प्रकार नव ग्रहों की स्थापना के पश्चात यह आश्रम जिज्ञासुओं के लिये जिज्ञासा का केन्द्र बन गया। पुष्कर राज में आने वाले हर यात्री यहां खींचकर आने लगा। यह विशाल बुलंद ताज महल जैसा सुन्दर आश्रम हरेक यात्री के आकर्षण का केन्द्र बन गया। यात्रियों को ज्ञान के साथ परम शान्ति प्राप्त होने लगी। इसकी सुगन्धि सारे भारत में फैलने लगी।

इस आश्रम की महिमा सुनकर एक बार दादी वसीजी अपने प्रेमियों की टोली को जयपुर से बस में बैठाकर सीधे पुष्कर राज वाले आश्रम पर पहुँचे दादी वसीजी अलोकिक आभा वाली संत मूर्ति है जिनका जयपुर के इन्द्रा मार्केट में एक स्वर्ग जैसा सुन्दर साफ सुथरा आश्रम है जहां हर रोज सत्संग का दीबाण लगता है।

दादी वसीजी अपने साथ खाने पीने की सामग्री भी साथ लायी थी परम पूज्य स्वामी जी ने उनसे कहा कि आप अपने बाबुल के घर आयी है। यह स्थान आपके मायके के समान

है। इस स्थान पर आपका पूर्ण अधिकार है। इसलिये इस खाद्य सामग्री को बिल्कुल बंद रखें। परम पूज्य स्वामी जी ने एक दम भोजन तैयार करवाने का आदेश दिया। जब तक भोजन तैयार हो तब तक सत्संग का दीबाण लगा लिया। इस सत्संग का आनन्द अलोकिक था इस स्वर्ग जैसे आश्रम में दो महान संत मूर्तियों ने मस्ती में आकर भजन गाये। ऐसा लग रहा था

जैसे इन्द्रपुरी स्वर्ग से पृथ्वी पर उत्तर आई है। सभी प्रेमी मस्ती से झूम रहे थे तथा भजनों का रसास्वादन कर रहे थे। उस समय वसी जी ने यह भजन बड़ी मस्ती में गाया।

हथ इन्दई कीन फकरी -२

जेसीं मन जी अथई अमीरी-२ हथ इन्दई

१. जेसी मोह ममत ना छदीं दे

मुंह दुनियां खां न मटींदे

जेसीं कोन छदीन्दे दिलगीरी-२ हथ ईन्दई...

२. जेसीं कन्दे न निवड़त न्याज़ी

तेसीं कीन खटन्दे बाजी

जेसीं कीन कन्दे तूँ हजूरी -२ हथ इन्दई...

३. जेसीं राजी रज़ा ते न रहन्दे

दुख सुख में सम ना थीन्दे

जेसीं कीन कन्दे तूँ सबूरी... हथ ईन्दई

४. जेसीं नीचों तूँ ना थीन्दे

तेसीं ऊचो कीन की थीन्दे

जेसीं अथई कन्ध में कीड़ी... हथ ईन्दई

५. लीलावत्ती ही गल्हि तू न मञींदे

कदहि कीन फकीर तूँ थीन्दे

चाहे भिटकीं उम्र समूरी... हथ ईन्दई

अर्थ:- इस भजन में कहा गया है कि जब तक मन से तुम फकीर नहीं बने हो तब तक तुम सच्चे अर्थ में फकीर नहीं बन सकते। जब तक मोह ममता नहीं छोड़ोंगे। दुनियां से दूर नहीं जाओंगे तब तक संत नहीं बन सकते। जब तक नम्र बनकर नहीं झुकोगे तब तक तुम यह बाजी नहीं जीत सकते। जब तक तुम नम्र नहीं बनोगे तब तक तुम संत नहीं बन सकते। जब तक तुम परमात्मा के हुक्म में रहकर राज़ी नहीं रहते। दुख ओर सुख में सम नहीं रहते जब तक तुम सब्र नहीं करते तब तक संत नहीं बन सकते। जब तक अभिमान छोड़कर तुम नीचे नहीं झुकोंगे तब तक तुम ऊँचे नहीं चढ़ सकते। संत कहते है यदि तुम ये बातें नहीं मानोंगे तो कभी भी संत नहीं बन सकते।

सत्संग समापत कर सबने बड़े प्रेम से प्रसाद ग्रहण किया उसके बाद परम पूज्य स्वामी जी दादी साहब को व उनकी भजन मण्डली को अजमेर आदर्श नगर वाले आश्रम पर ले आये। परम पूज्य स्वामी जी दादी साहब को कहने लगे कि हम आपके अन्दर अपने सतगुरू महाराज की ज्योति देख रहे है। परम पूज्य स्वामी जी ने दादी साहब को अपने पास आसन्न पर ब्राजमान कर खूब मान सम्मान दिया। दादी साहब इतना बड़ा मान सम्मान पाकर भाव विभोर होकर कहने लगी कि सतगुरू महाराज हमारे है और अब हम सतगुरू महाराज के हो गये है। समर्पण का कितना ऊँचा भाव है।

परम पूज्य स्वामी जी जब जयपुर वाले मेले में पधारे तब दादी साहब ने उन्हें स्वयं के आश्रम पर चलने के लिये विनती की। परम पूज्य स्वामी जी उनका इतना स्नेह एवं श्रद्धा देखकर एक दिन उनके आश्रम पर पधारे। दोनो महान संत मूर्तियों के मेलाप से सारा वातावरण सुगन्धित हो गया। उस दिन सत्संग में वृन्दावन वाली वह मौजमस्ती आगई जैसे कि साक्षात् भगवान श्री कृष्ण स्वयं वृन्दावन में रास रचा रहे है।

उस समय परम पूज्रू सवामी जी को दादी साहब के परम भक्त श्री बसन्त कुमार का एक भजन बहुत भाया जिसे बार बार तीन बार सुना:-

औखी आहे फकीरी,

औखो फकीर सदाइण

वहां सत्संग की मौज मचाने के पश्चात परम पूज्य स्वामी जी ने दादी साहब से विदा ली। दादी साहब ने उन्हें कार में बैठकर अमरापुर जाने के लिये निवेदन किया। परम पूज्य स्वामी जी उनकी विनती स्वीकार कर कार में बैठने लगे तब उनकी निगाह कार चलाने वाली कन्या पर पड़ी। उन्होंने अपना पांव बाहर ही रोक लिया। और दादी साहब से कहा कि हम कार में बैठने में मजबूर है। हमें यह फकीरी का स्वांग निभाना है। परम पूज्य स्वामी जी मर्यादा के मालिक थे। वे कभी भी किसी स्त्री के साथ कार में नहीं बैठते थे। सो पैदल दौड़ते हुए पांच बती तक चले गये।

दादी साहब ने परम पूज्य स्वामी जी से यह स्नेह का सम्बन्ध अन्त तक निभाया। परम पूज्य स्वामी जी में एक चुम्बकीय शक्ति आकर्षण था जो एक बार उनके शरण में आता था वह सदा सदा के लिये उनका हो जाता है।

दादी साहब सतगुरू महाराज जी के मेले पर विशेष रूप से परम पूज्य स्वामी जी के स्वास्थ्य के बारे में पूछने के लिये अपनी टोली सहित आदर्श नगर वाले आश्रम पर पधारे।

जब दादी साहब ने उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछा तब उन्होंने मुस्कराकर बड़े सहज ढंग से उत्तर दिया कि हम बिल्कुल ठीक है परम पूज्य स्वामीजी सब्र एवं शुक्र के मालिक थे। कभी कोई शिकायत नहीं करते थे।

उसके पश्चात परमपूज्य स्वामी जी के ज्योति ज्योत समाने पर अपनी मण्डली सहित अन्तिम दर्शन के लिये दादी साहब पधारे थे, इस प्रकार दोनों महान संत मूर्तियों ने यह स्नेह का सम्बन्ध अन्त तक निभाया।

उस समय इन महान संतों का संगम देखकर हम बहुत प्रभावित हुए थे दोनों ही एक दूसरे का बहुत सम्मान करते थे। दादी साहब की सोभ्य मूर्ति हमारे हृदय पटल पर सदा सदा के लिये अंकित हो गई। और जब हमने परम पूज्य स्वामी जी का जीवन दर्शन लिखना आरम्भ कियातब हम दादी साहब के आश्रम में उपस्थित हुए और जब हमने उनसे परम पूज्य स्वामी जी के सम्बन्ध में चर्चा आरभं की तो वे भाव विभोर होकर उनकी स्मृति में लीन हो गई और उन पुराने प्रंसगो काऐसा सजीव श्रद्धा से बयान किया कि जैसे परम पूज्य स्वामी जी हमारे बीच में ब्राजमान होकर दर्शन दे रहे हो। दादी साहब ने हमें भी परम पूज्य स्वामी जी का ही रूप जानकर इतना तो स्नेह एवं सम्मान दिया कि वह अलोकिक दर्शन भूले नहीं भुलाया जाता है। दादी साहब की सोभ्य मूर्ति आज भी हमारे हृदय में ब्राजमान है।

पुष्कर राज में अपने सतगुरू महाराज के आश्रम की स्थापना करने के पश्चात परम पूज्य स्वामी जी ने विचार किया कि अब हरिद्वार में भी सतगुरू महराज का आश्रम बनवाना चाहिये। परम पूज्य स्वामी जी के लिये हरिद्वार का बड़ा महत्व था। यह वह पवित्र स्थान है जहँा परम पूज्य स्वामी जी ने सन्यास धारण कर गेरू वस्त्र धारण किये थे। पवित्र गंगा के किनारे हरकी पौड़ी पर सतगुरू स्वामी टेऊँराम जी ने अपने शुभ हाथों से परम पूज्य स्वामी जी को गेरू वस्त्र धारण कर त्याग और वैराग्य का जीवन आरम्भ करवाकर दीक्षा दी थी।

इस प्रकार इसी स्थान पर परम पूज्य स्वामी जी ने संसार त्याग कर सन्यासी बनकर परमार्थ की राह पर पहला कदम रखा था। इसी स्थान पर सतगुरू महाराज स्वामी टेऊंराम जी ने अपनी महर मया से उनके हृदय में ज्ञान का दीपक प्रज्वलित कर सदा सदा के लिये उनकी राह रोशन कर ली थी। जिस राह पर खुद चलकर लाखों जिज्ञासुओं को प्रेम का प्रकाश देकर जीवन सफल बनाया था।

इसीलिये परम पूज्य स्वामी जी ने हरिद्वार में अपने सतगुरू महाराज जी की याद में उनका यश फैलाने के लिये आश्रम बनवाने का दृढ़ निश्चय किया। परम पूज्य स्वामी जी नेकदिल में अपने सतगुरू महाराजके लिये कितनी श्रद्धा व भक्ति थी। वे कहते थे कि सतगुरू महाराज जी की जितनी महिमा गाई जाए वह थोड़ी है। बिना सतगुरू के इस जीवन में अंधकार ही अधंकार है।

जे सौ चन्दा उगई, सूरज कोटि मिलाई

दादू गुरू गोबिन्द बिन तउ भी तिमर न जाई।

परम पूज्य स्वामी जी ने सोचा कि हरिद्वार सभी तीर्थों का मूल है। यहां पर लाखों यात्री आकर हरकी पौड़ी पर गंगा में डुबकी लगाकर आत्म शांति प्राप्त करते है। इस के अतिरिक्त यह वही स्थान है जहा कुम्भ का महान ऐतिहासिक मेला लगता है जिसमें सारे भारत वर्ष के साधु सन्यासी तथा लाखों श्रद्धालु आकर डुबकी लगाते है। इस स्थान पर परम पूज्य स्वामी जी स्वयं भी अपने सतगुरू महाराज जी के े साथ कुम्भ के मेले में पधारे थे। जहां सतगुरू महाराज जी ने अपने अलग पण्डाल में अन्न क्षेत्र चला कर साधु संतो की खूब सेवा की थी।

इसलिये परम पूज्य स्वामी जी ने सोचा कि इस स्थान पर सतगुरू महाराज जी का आश्रम बनवाकर उनके शिक्षाओं का प्रचार कर यश फैला सकेंगे। इस प्रयोजन से परम पूज्य स्वामी जी स्वयं यहां पर पधारे। और ऐसे स्थान की तलाश करने लगे जो हरकी पौड़ी के

निकट हो। जिससे जिज्ञासू आसानी से वहां पहुँचकर कर आन्नद पा सकें। यह सब सोच कर स्टेशन बस स्टैण्ड व हरकी पौड़ी के निकट जेसाराम मार्ग पर गुजराती लॉज के पास जमीन का टुकड़ा लिया।

यह स्थान शहर के बीच में होने के कारण यहां पुष्करराज व आदर्श नगर के समान बहुत बड़ा प्लाट मिलना सम्भव नहीं था। बड़े प्लाट शहर से बहुत दूर मिल रहे थे जहां प्रेमियों को पहुँचने में असुविधा होती। परम पूज्य स्वामी जी चाहते थे कि सतगुरू महाराज का आश्रम ऐसे स्थान पर बनवाया जाये जहां प्रेमी आसानी से पहुँच कर दर्शन कर सकें। इस दृष्टि से यह स्थान बहुत उपयुक्त था।

जमीन मिलने के पश्चात परम पूज्य स्वामी जी ने इस आश्रम के निर्माण कार्य को आरम्भ कर दिया कार्य के चलते बीच बीच में परम पूज्य स्वामी जी अजमेर आकर वहां से आश्रम व पुष्कर राज वाले आश्रम पर चल रहे कार्य को देख रेख करते रहते थे। इस आश्रम के निर्माण में उनके गुरू भाई श्री अर्जुन प्रकाश जी ने खूब सहयोग दिया। आश्रम के कमरे बन कर तैयार हो गये। परम पूज्य स्वामी जी की यह मनोकामना थी कि पुष्कर राज वाले आश्रम का कार्य सम्पन्न करवा कर फिर हरिद्वार चल कर रहेंगे और वहां रहकर सत्संग महाराज जी की मूर्ति की स्थापना कर कार्य पूर्ण करेंगे।

परन्तु पुष्कर राज वाले विशाल आश्रम का कार्य पूर्ण करवाते करवाते परम पूज्य स्वामी जी का स्वास्थ्य ऐसा नहीं रहा था कि हरिद्वार वहां के कार्य को पूर्ण करवा सकें। परम पूज्य स्वामी जी का ऐसा स्वास्थ्य देख कर मन में यह शंका रही कि अब यह कार्य कैसे पूर्ण होगा। जब कभी उनसे इस सम्बन्ध में पूछते थे तो मुस्करा कर उत्तर देते थे कि मेरे सतगुरू महाराज सर्व शक्तिमान है। वे अपने कारज अपने आप पूर्ण करेंगे। करने व करवाने वाले तो वे ही स्वयं है, हम तो केवल निमित मात्र है। यह सब उनके प्रेरणा से अपने आप

होंगे। इसलिये हमें यह गुमान ही नहीं करना चाहिये कि हमारे सिवाय ये कार्य होंगे ही नहीं । यह कहकर गुरूवाणी में से एक दृष्टान्त बताया।

दृष्टान्तः-अमृतसर वाली दरबार पर हर साल गुरूओं का मेला लगता था। उस मेले पर बहुत से सिक्ख आकर सेवा करते थे। एक पास वाले गाँव से सन्तुसिंह नाम का एक सिक्ख वहां सेवा करने आया। उसने श्रद्धा एवं लगन से ऐसी तो सेवा की जो सतगुरू महाराज ने प्रसन्न होकर उसे खूब आशीर्वाद दिया। सन्तुसिंह सतगुरू महाराज से आज्ञा लेने आया तब सतगुरू महाराज ने उससे कहा कि भाई! हम आपके सेवा से बहुत प्रसन्नहुए है। हमारी इच्छा है कि दो चार दिन और रहकर कार्य को समेट कर फिर चले जाना। परन्तु सन्तुसिंह ने उन्हें कहा कि महाराज मैं मजबूर हूँ। मेरे बच्चे छोटे है घर पर और कोई कार्य करने वाला नहीं है। इसलिये मैं जरूर जाऊँगा। नहीं तो सब भूखे मरेंगे। अब मैं यहां एक पल भी नहीं ठहर सकता। गुरू महाराज ने उसे बहुत समझाकर कहा कि तुम यहां सेवा करो सतगुरू महाराज अपने आप तुम्हारे कारज करेंगे। परन्तु सन्तुसिंह घर जाने के लिये जिद कर बैठा। आखिर सतगुरू महाराज ने विवश होकर उसे आज्ञा दी। परन्तु जाते समय उसे एक पत्र पास वाले गाँव में जमींदार को देने के लिये दिया सन्तुसिंह ने वह पत्र खुशी से लिया। क्योंकि वह गाँव उसके रास्ते में पड़ता था।

सन्तुसिंह पत्र लेकर सतगुरू महाराज से आज्ञा लेकर अपने गाँव के लिय रवाना हो गया। रास्तें में रूककर सत्गुरू महाराज वाला पत्र जाकर जमीन्दार को दिया। पत्र मिलते ही जमींदारने अपने पुत्रों को बुलाकर इस मेहमान की खूब सेवा करने की आज्ञा दी। उन सेवकों ने उसके कपड़े उतारकर उसे इत्तर फलेल से स्नान करवाकर नये कपड़े पहनाकर उसे गद्दो पर बिठाकर उसकी खूब सेवा की और आराम करने के लिये कहा। वह बेचारा उन्हें अनुनयविनय कर कहने लगा कि मुझे अपने गाँव जाने दो कि जाकर अपने बच्चों से मिलूं। परन्तु उन्होंने उस की एक भी नहीं सुनी। उन्होंने उसे बताया कि गुरू महाराज की इस चिट्ठी में लिखा हुआ है कि पत्र वाहक सिक्ख हमारा खास सेवक है उसे हमारा ही रूप जानकर

उसकी खूब सेवा करना और उसे छः महीने तक अपने पास ही रखना। और उसकी खूब खातिर करना। सो आपको हमारे पास छः महीने तक रहना पड़ेगा। हम गुरू महाराज की आज्ञानुसार आप की खूब सेवा करेंगे। आपको यहांकोई भी तकलीफ नहीं होगी।

बेचारे सन्तुसिंह ने बहुत कोशिश की परन्तु जमींदार ने उसकी एक भी नहीं सुनी। विवश होकर एक एक दिल पहाड़ सा समझकर गिन गिन कर काटने लगा। उसने समझा कि मेरे पीछे मेरे बच्चे भूख से मर गये होगें काम काज सब ठप्प हो गया होगा। सतगुरू महाराज ने पता नहीं किस खताकी सज़ा दी है। इतनी सेवा व खातिर होते हुए भी इस का मन यहां बिल्कुल नहीं लग रहा था। उसे घर परिवार की चिन्ता आठों पहर लगी रहती थी। इसलिये उसे कुछ भी नहीं भाता था।

उधर उसके गांव वालों ने जब देखा कि सन्तुसिंह इतने दिनों के बाद भी मेले से नहीं लौटा है और न ही उसका कोई समाचार ही मिला है सो उसे मरा हुआ मानकर भूल गये। उन सबने मिलकर विचार किया कि उसके बच्चे को किसी काम पर लगाना चाहिये ताकि वे अपनी रोजी रोटी कमा सकें। उसका बड़ा लड़का होशियार था सो उसे एक दुकान दे दी और छोटे लड़के का कपड़े की दुकान पर लगवा दिया। उस बच्चों के भाग्य प्रबल थे। बड़े लड़के की दुकान खूब चलने लगी। उसने उसमें से खूब कमाया और रहने के लिये पक्का मकान बनवा दिया। उनके दिनबदल गये सो अच्छा खाना और पहनने लगे। वे तो पहले से बहुत अच्छे हो गये। बाप के रहते वे रूखा खाकर व सादा पहनकर दिन गुजारते थे। अब तो वे सुखी व सम्पन्न हो गये। उनको अपने पिता की याद भी नहीं रही।

वहां बेचारे सन्तुसिंह ने कैद में बंद कैदी की भांति एक एक दिन कर काटा। आखिर उसका समय समाप्त हुआ। जमींदार ने बड़े मान सम्मान से खूब सौगातें देकर उसे बिदा किया। वह रास्ते पर सोचता रहा कि मेरे बच्चे मेरे बिना मर खप गये होंगे। पता नहीं उनका क्या हाल हुआ होगा। जैसे जैसे गांव के निकट पहुँच रहा था वैसे वैसे उसका हृदय जोर जोर से

धक धक करने लगा। आखिर वह गाँव में पहुँच गया। अपने घर के पास पहुँचकर उसने देखा कि वहां झोपड़ी के स्थान पर महल जैसा मकान खड़ा था डर डर कर किसी से पूछा कि यह किस का मकान है? उसी के उस गाँव वाले ने उसे बताया कि भाई! यह तुम्हारा ही मकान है। जब वह अन्दर जाकर अपने बच्चों से मिला तब उसके आश्चर्य का ठिकाना ही न रहा वे सब पहले से बहुत अच्छे हो गये थे। किसे ने भी उससे यह नहीं पूछा कि इतने दिन वह कहां पर था। उल्टा उसके बच्चों ने उसे कहा कि बाबा! हम सब बहुत खुश है आप भले जाकर दरबार में रहकर गुरू महाराज जी की सेवा करो।

यह सब देखकर उसका घमण्ड चूर हो गया। उसने जो सोचा था कि उसके सिवाय बच्चे भूख से मर जायेंगे सब समाप्त हो जायेगा। वह गुमान काफूर हो गया। सन्तुसिंह कहने लगा कि गुरू महाराज की माया अपरमपार है। सब कुछ करने करवाने वाले वे स्वयं है। मेरी अनुपस्थिति में गाँव वालों के मन में बैठकर मेरे बच्चों की पालना भी उन्होंने की है। अब मुझे चिन्ता करने की क्या आवश्यकता है।

परम पूज्य स्वामी जी यह दृष्टान्त बताकर प्रेमियों को कहने लगे कि हमारे सतगुरू महाराज तो अन्तर्यामी है। हरिद्वार में आश्रम बनवाने की हमारी अभिलाषा अवश्य पूर्ण होगी। वे किसी प्रेमी के दिल में बैठकर इस महान कार्य को करने की प्रेरणा अवश्य देंगे।

परम पूज्य स्वामी जी के ज्योति ज्योत समाने के बाद उनके ट्रस्टियों ने हरिद्वार वाले आश्रम को नया रूप देने के लिये सोचा उस समय श्री ठाकुरदास पंजाबी जो उनका अनन्य भक्त है, जिनका अपने सतगुरू में अटूट विश्वास है, जिसने अपने मकान का नाम ही 'गुरू कृपा' रखा है, उसने परम पूज्य स्वामी जी का नाम अमर करने के लिये वहां पर आश्रम के साथ उनके नाम पर धर्मशाला भी बनवाने का प्रस्ताव रखा। यह प्रस्ताव सबको बहुत अच्छा लगा। नक्शा पास करवाकर एकदम कार्य आरम्भ करवाया गया। वहां श्री ठाकुरदास व भाई रतनलाल ने वहां पर खड़े रहकर अपनी देख रेख में यह धर्मशाला एवं

आश्रम बनवाया इस धर्मशाला में पन्द्रह बड़े कमरे है। हरेक कमरे में डबलबेड, ड्रेसिंग टेबल बैठने के लिये कुर्सी और साथ साथ अन्दर ही टाईलेट बाथ भी है ताकि प्रेमियों को सम्पूर्ण आराम मिल सकें ताकि वे सतगुरू महाराज के गुणगान कर सकें।

प्रवेश द्वार के पास सतगुरू महाराज जी का मन्दिर बनवाया गया है। जिसमें सिहांसन्न पर ब्राजमान तीन शानदार मूतिर्या ब्रह्मा विष्णु व महेश के समान, बीच में सतगुरू महाराज स्वामी टेऊंराम जी एक तरफ परम पूज्य स्वामी माधवदास जी महाराज और दूसरी ओर परम पूज्य सर्वानंद जी महाराज की मूर्तिया स्थापित करवाई गयी है। ये मूतिर्या बहुत ही सुन्दर एवं सजीव है जिन का दर्शन करने से मन को अपार शांति मिलती है।

हरिद्वार में यह धर्मशाला परम पूज्य स्वामी माधवदास जी धर्मशाला के नाम से प्रसिद्व है। बस स्टैण्ड, स्टेशन तथा हरकी पौड़ी के निकट होने के कारण यात्री खींचकर यहांआते है तथा दर्शन कर आराम पाकर सतगुरू महाराज जी के गुण गान करते रहते है। इस प्रकार परम पूज्य स्वामी जी के इन परम श्रद्धालु शिष्यों ने अपने सतगुरू महाराज जी का नाम सदा सदा के लिये अमर कर दिया है। इस धर्मशाला एवं आश्रम की देख रेख करने की जिम्मेदारी श्री रतनचन्द जी ने अपने स्वइच्छा से अपने ऊपर ली है जोदिल्ली में रहते है और समय समय पर वहां से जाकर वहां की देख रेख कर अति सुन्दर व्यवस्था कर रहे है।

ये सुन्दर बेजोड़ मूर्तियां श्री ठाकुरदास तथा श्री मुरलीधर करनानी जी ने अपने मार्गदर्शन में जयपुर के सिद्धहस्त मूर्तिकार से बड़ी श्रद्धा एवं लगन के साथ बनवाई है। श्री मुरलीधर करनानी जी को परम पूज्य स्वामी जी के भिन्न भिन्न स्वरूप की मूर्तियां बनवाने में विशेष रूचि रही है। ऐसी सुन्दर मूर्तिया बनवाकर उन्होंने देश विदेश में भेजी है। ताकि प्रेमी परम पूज्य स्वामी के दर्शन पाकर प्रसन्न हो जाये।

स्वर्गीय श्री पुषोत्तमदास जी के छः सुपुत्र श्री जेठानन्द, श्री ठाकुरदास, श्री रतनचन्द, श्री आसनदास (आशा), श्री टीकमदास, श्री राजाराम व उनके कुटम्ब परिवार के सभी सदस्य परम पूज्य स्वामी जी की बड़ी श्रद्धा से सेवा कर अपना जीवन सफल बना रहे है।

परम पूज्य स्वामी जी एक ओर अपने सतगुरू महाराज के आश्रम बनवाकर उनके शिक्षाओं का प्रचार कर यश फैला रहे थे। दूसरी और मानव सेवा एवं सामाजिक कार्यों में भी अपना योगदान दे रहे थे। उनके हृदय में दीन दुखियों के लिये दया एवं करूणा थी। परम पूज्य स्वामी जी कहते थे कि दीन दुखियों की सेवा ही परमात्मा की सेवा है, परमात्मा दीन दुखियों अर्थात् दुखियों के हमराज व दीनानाथ अर्थातदीन दुखियों का मालिक कहा गया है। परम पूज्य स्वामी जी कहते थे कि:-

खालिक मांझि खलक,

खलक मांझि खलिक॥

परमात्मा हर प्राणी में निवास करते है इसलिये प्राणी मात्र की सेवा ही परमात्मा की सेवा है। यदि आप दूसरोंपर दया करेंगे तो प्रभू आप पर दया करेंगे। यह कुदरत का कानून है कि यदि आप दूसरों को सुखी करोगे तो परमात्मा आपको सुखी करेंगे।

इसलिये हमें मन वचन एवं कर्म से दूसरों को सुख देना चाहिये। दीन दुखियों की सेवा करने से हमारा मन निर्मल होता है। और हमें आन्तरिक सुख मिलता है।

दरिद्र नारायण की सच्ची सेवा ही परमात्मा की सेवा है। यह बात खोलकर समझाने के लिये परम पूज्य स्वामी जी ने एक दृष्टान्त बताया।

दृष्टान्तः- एक परमात्मा का सच्चा भक्त था। वह बेचारा मोची का काम करता था। जूतियां बनाते बनाते वह आठों पहर परमात्मा का स्मरण करता था। उसका हाथ काम में व

मन अपने महबूब के साथ जुड़ा रहता था। उसके मन में परमात्मा के दर्शन के लिये तड़प थी। बस वह चाहता था कि एक बार, केवल एक बार परमात्मा के दर्शन हो जाये।

परमात्मा ने अपने इस प्यारे भक्त की पुकार सुनी। एक दिन परमात्मा ने उसे सपने में कहा कि तुम मेरे प्यारे भक्त हो हम आपकी सेवा व भक्ति से बहुत प्रसन्न हुए है। इसलिये तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करने के लिये कल हम तुम्हारे पास आकर तुम्हें दर्शन देकर तुम्हारा मन प्रसन्न करेंगे।

यह सपना देखकर यह भक्त बहुत खुश हुआ। सुबह उठते ही स्नान साफ कपड़े पहनकर सारे घर को लीपकर पवित्र किया। और परमात्मा के बैठने के लिये साफ सुथरा आसन्न बिछाया। भगवान को भोग लगाने के लिये खूब पकवान बनाए। इस प्रकार सम्पूर्ण तैयारी कर बेताबी से परमात्मा की प्रतीक्षा करने लगा। इस लिये यह प्रतीक्षा के पल बहुत लम्बे हो गये। एक एक पल एक वर्ष के समान भासने लगा।

प्रतीक्षा करते करते आकर दोपहर का समय हुआ। इतने में किसीने दरवाजा खटखटाया सोचने लगा आखिर इन्तजार की घड़ियां समाप्त हुई मेरे महबूब आ ही गये। उसका दिल जोर जोर से धक धक करने लगा। कांपते कांपते उसने दरवाजा खोला। दरवाजा खोलकर देखा तो उसका मित्र जो वर्षो पहले उससेबिछुड़गया था सामने फटे हाल में खड़ा है। उसे प्यार से अन्दर ले आया और उससे हाल चाल पूछा उसके मित्र ने कहा कि भाई! मुझे बहुत भूख लगी है। मैंने दो दिन से कुछ भी नहीं खाया है। इसलिये मुझे कुछ खाने के लिये दो। यह सुनकर वह बेचारा असमन्जस्य में पड़ गया कि क्या करूं। मेरे पास तो केवल भगवान के लिये ही भोजन है। आखिर सोचा कि इस में से कुछ इसको खिलाकर शेष भगवान के लिये रखता हूँ। सो उसमें से थोड़ी सामग्री लेकर आकर प्रेम से अपने मित्र के सामने रखी। वह बेचारा जो दो दिन से भूखा था सो वह सामग्री झटपट खा गया और उसे कहा कि भाई थोड़ा बहुत और भी दो जो मेरा पेट नहीं भरा है। बेचारा अन्दर गया और शेष सामग्री लाकर

उसके सामने रखी। सब कुछ खाकर वह तृप्त हो गया। उसे खूब धन्यवाद देकर उस आसन्न पर जा कर सो गया। जो उसने बड़े स्नेह व श्रद्धा से भगवान के लिये बनाया था। वह बेचारा बहुत थका हुआ था सो लेटते ही उसे नींद आ गई।

थोड़ी देरे के बाद बादल छा गए और जोर से वर्षा होने लगी। उस समय किसने जोर से दरवाजा खट खटाया। सोचने लगा कि अब मेरा प्रीतम आ गया है। परन्तु अब मैं उसे क्या खिलाऊंगा? मेरे पास तो कुछ बचा ही नहीं है। और मैं उसको बिठाऊँगा कहां पर। इस आसन्न पर तो मेरा मित्र सो गया है। इसी पशोपेश में जैसे ही दरवाजा खोला तो देखता है कि एक स्त्री अपने बच्चे को बन्दरिया के समान सीने से चिपकाकर सर्दी में थड़थड़ कांप रही है। बुखार में उसका शरीर तवे के समान तप रहा था। उस स्त्री ने दीन मन होकर उसे थोड़े समय के लिये अपने पास शरण देने के लिये विनती की। इस भक्त को इस दुखियारी पर तरस आ गया। सो उसे अन्दर लाकर पहनने के लिये सूखे कपड़े दिये और पीने के लिये गरम गरम दूध दिया। जब वर्षा थम गई तब वह स्त्री अपने बच्चों को लेकर उसे दिल से दुआ देकर अपने रास्ते चली गयी।

थोड़ी देर बाद उसका मित्र जागा और उसे खूब धन्यवाद देकर उससे विदा लेकर चलने लगा। जैसे वह अपने मित्र को आगे छोड़ने गया तो वहां उसने लोगों की भीड़ देखी। जिज्ञासा वश वह उस तरफ चला गया। वहां उसने देखा कि एक खोमचे वाला एक अध नंगे बालक को पीट रहा था और दूसरे सब लोग तमाशबीन बनकर यह दृश्य देख रहे थे। इस मासूम बच्चे को पिटते हुए देखकर उस का दिल पसीज गया और उस बालक को गोदी में उठाकर खोमचे वाले से पूछा कि तुम इस मासूम बालक को बेरहमी से क्यों पीट रहे हो? उस पर खोमचे वाले ने उसे बताया कि इस बच्चे ने मेरे से मिठाई लेकर खाई और अब कहता है कि मेरे पास पैसे नहीं है।

इस भक्त ने बालक से पूछा कि क्या तुमने इससे मिठाई लेकर खाई ? इस पर बालक ने उत्तर दिया कि मैं दो दिन से भूखा हूँ भूख में बेहाल होकर मैने उससे मिठाई लेकर खाई। परन्तु मेरे पास पैसे तो नहीं ं है फिर मैं उसे कहां से दूं। पैसे नहीं देने के कारण वह मुझे बेरहमी से मार रहा है। इस भोले भक्त ने इस मासूम बालक पर तरस खाकर खोमचे वाले से और भी मिठाई लेकर बालक को खिलाई और उस सबके पैसे खोमचे वाले को देकर बालक के सर पर हाथ फेरकर अपने घर आ गया।

सारा दिन इंतजार करते करते वह बहुत थक गया था। सो उसे जल्दी नींद आ गई। सपने में भगवान ने उसे दर्शन देकर कहा कि मैं तुम्हारी सच्ची पुकार सुनकर तेरे पास तीन बार आया और तुमने मेरी सच्चे दिल से सेवा कर मुझे बहुत प्रसन्न किया। पहले में तुम्हारे भूखे दोस्त के रूप में आया। तुमने मुझे स्वादिष्ट पकवान खिलाकर तृप्त किया। और मैंने तुम्हे खूब आशीर्वाद दिया। दूसरी बार मैं उस बेसहाराबीमार स्त्री के रूप में सर्दी व बरसात में कांपते हुए सहारे के लिये तेरे पास आया। उस समय तुमने मेरे ऊपर तरस खाकर मुझे सहारा दिया। सूखे कपड़े पहनाकर व गर्म दूध पिलाकर मेरा दुख दूर किया। उस समय मैंने आपको हार्दिक आभार माना। तीसरी बार मैं तुम्हारे अर्द्धनग्न भूखे बालक के रूप में आया। तुमने प्यार से मेरी रक्षा कर मेरे पेट की व प्यार की भूख मिटाई।

दीन दुखियों की सेवा करने की मनोकामना से परम पूज्य स्वामी जी ने पुष्करराज वाले आश्रम में दो कमरे खास अस्पताल के लिये बनवाये थे। उनकी यह अभिलाषा थी कि धर्मार्थ अस्पताल खोलकर दीन दुखियों की सेवा कर उनके दुख दूर करने चाहिये।

पुष्कर राज वाले आश्रम का कार्य करीब करीब पूर्ण हो चुका था। अब वहां श्री भगवान दास मयाणी का संकल्प पूर्ण हो चुका था। सो परम पूज्य स्वामी जी ने उन्हें कहा कि आपका यह यज्ञ तो सम्पूर्ण हो चुका है। इसलिये हमारी यह मनोकामना है कि अजमेर में एक जसलोक जैसी बड़ी अस्पताल बनवाई जाये, जहां दीन दुखियों की नि:शुल्क सेवा हो सके।

अजमेर में बहुत गरीब रहते है जिनमें बड़े खर्चे कर उपचार करवाने का सामर्थ्य नहीं है। उन निर्धन व मजबूर दुखियों की सहायता के लिये एक अस्पताल खुलवानी चाहिये। ताकि वे दुखी जीव उपचार करवाकर दिल से दुआ देवें।

परम पूज्य स्वामी जी ने इस सम्बन्ध में डॉक्टर चेतन, डॉक्टर चिमनदास व अन्य समाज सेवकों से विचार विमर्श किया। सोच विचार करने के पश्चात आशा गंज में विशाल भूमि ली गई जहां बहुत से गरीब बसे हुए है।

इस अस्पताल के लिये बहुत अधिक धन की आवश्यकता थी। परम पूज्य स्वामी जी तो स्वयं बहुत बड़े दानी थे। सो उन्होंने इस महान यज्ञ के कार्य के शीघ्रता से आरम्भ करने के लिये बहुत बड़ी राशि अपने ओर से दान के तौर पर दी ताकि कार्य निर्विध्न चल सकें। और उस समय उतनी ही बड़ी राशि श्री भगवान दास मयाणी से भी दान के रूप में दिलवाई। इतनी बड़ीराशि मिलने पर अब सबको विश्वास हो गया कि यह भागीरथ कार्य अवश्य ही पूर्ण होगा। और फिर अच्छा मुर्हुत देखकर इस शुभ कार्य का शुभारम्भ करने के लिये परम पूज्य स्वामी जीने अपने ही पवित्र करकमलों से नींव का पत्थर रखा। उस उत्सव पर भी भगवान दास मयाणी एवं शहर के अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। उस समय परम पूज्य स्वामी जी ने श्री भगवान दास मयाणी से कार्य सम्पूर्ण करवाने का संकल्प करवाया। श्री मयाणी को कहा कि अब तक जो सेवा आप आश्रम की करते रहे है उसके लिये हम आपको बहुत बहुत धन्यवाद देते है। अब वह सेवा आश्रम के स्थान पर इस अस्पताल की करते रहे और इस अस्पताल का नाम 'मयाणी हास्पीटल' रहेगा।

इसके पश्चात परम पूज्य स्वामी जी के आज्ञानुसार श्री भगवान दास मयाणी इस अस्पताल का निर्माण करवाते रहे।

परम पूज्य स्वामी जी दोनोंहाथों से सामाजिक कार्यो में दान देते रहे। परम पूज्य स्वामी जी उस राजा के समान महान दानी थे जिसने अपने चार दरवाजे बनवाये थे। वह

सुबह को एक दरवाजे से दान देते थे। तो दोपहर दूसरे दरवाजे से दान देते थे। शाम को फिर तीसरे दरवाजे से दान देते थे। और रात्रि को सोते समय चौथे दरवाजे से दान देते थे। एक दिन यह याचकने राजा से कहा कि महाराज कल मैंने आपसे चारों दरवाजों से दान लिया परन्तु आपने मुझे पहचाना नहीं । उस पर राजा ने बड़ी विनम्रता से कहा कि भाई! देने वाला भी वही है और लेने वाला भी वही है फिर हमें देखने का क्या अधिकार है।

परम पूज्य स्वामी जी ने शिक्षा के क्षेत्र में खूब दान दिया। उनकी यह मान्यता थी कि विद्‌या इन्सान को नेक बनाती है। विद्‌या ग्रहण करने से इंसान विवेकवान बनता है। और पाप से दूर रहता है। विद्‌या इंसान का ज्ञान बढ़ाती है और ज्ञान बढ़ने से उसका मान शान बढ़ता है। विद्‌या के सम्बन्ध में परम पूज्य स्वामी जी यह भजन कहते थे।

शब्द (सुरतिलंग)

चाह करे तूँ इलिमु पिराइ

जग में पंहिजों शान वधाई।

१. इलिमु इन्सान खे नेक बणाए

पाप छदाए धर्म बधाए

विवेकवान बनाई प्रीतम

२. इलिमु इंसान जो ज्ञान बधाए

मान बधाए शान बधाए

सच्ची दे साञाई प्रीतम

३. इलिमु इंसान जो अनुभव खोले

वचन अदूली मुखसां बोले

शान्ति पद में समाइ प्रीतम।

४. माधव इलिम सा बणे इन्सान

नेकु निशान प्रेम प्रधान

इलिम ते अमलु कमाई प्रीतम।

अर्थः- स्वामी जी इस भजन में कहते है कि तुम मन लगाकर विद्या ग्रहण करो। क्योंकि इससे तुम्हारा जग में शान बढ़ेगा। विद्या इन्सान को नेक बनाती है। पाप छुड़ाकर धर्म बढ़ाती है तथा वह उसे विवेकवान बनाती है। विद्या इन्सान का ज्ञान बढ़ाती है और ज्ञान से मान व शान बढ़ता है और विद्या इन्सान को सच्ची नेक राह बनाती है। विद्या से व्यक्ति का अनुभव खुलता है। और जो कुछ बोलता है वह पहले उसे तोलता है। और वह शान्ति पद को प्राप्त करता है। स्वामी जी कहते है कि विद्या से मनुष्य नेक बनता है व उसके हृदय में सबके लिये प्रेम पनपता है, जब वह उस विद्या पर अमल करता है।

परम पूज्य स्वामी जी विशेष कर स्त्री शिक्षा पर अधिक बल देते थे। उनका विचार था कि उत्थान के लिये उच्च शिक्षा परम आवश्यक है। क्योंकि जहां स्त्री का सम्मान किया जाता है वहां देवता निवास करते है। स्त्री को वह मान सम्मान केवल विद्या के द्वारा ही मिल सकता है। इसलिये परम पूज्य स्वामी जी स्त्री शिक्षा पर बहुत बल देते हैं। वे कहते थे कि स्त्री दीपक के समान है। जो सारे कुल को रोशन कर सकती है। वह मर्यादा की पुतली है और स्त्री द्वारा ही समाज में सुधार आ सकता है।

जो भी संसार में महान व्यक्ति हुए है उनकी महानता के पीछे स्त्री की ही प्रेरणा रही है। छत्रपति शिवाजी की महानता के पीछे उनकी माताजी जीजा बाई की प्रेरणा थी। उनकी माताजी की गोद बालक के लिये पहला और सबसे महत्वपूर्ण विद्यालय है। जो संस्कार

बालक माता द्‌वारा प्राप्त करता है वे उसमें जीवन भर रहते है। शिक्षित माता ही उच्च संस्कारों द्‌वारा मर्यादा वाले विवेकी इन्सान बना सकती है जो समाज एवं देश का नाम रोशन करेंगे।

इसलिये परम पूज्य स्वामी जी ने स्वर्गीय झमटमल टिलवानी जी को कन्याओं के लिये कॉलेज खोलने के लिये कहा। तथा इस कार्य में परम पूज्य स्वामी जी ने पूर्ण सहयोग दिया। उनके प्रेरणा से ही यह कॉलेज खुल सका। परम पूज्य स्वामी जी हर वर्ष सात जुलाई को इस कॉलेज में पधार कर अपने पवित्र कर कमलों से कन्याओं में पुस्तकें वस्त्र आदि बांटते थे।

इस कॉलेज की कन्याओं की वर्ष में एक बार एन.एस.एस. कैम्प लगती है। परम पूज्य स्वामी जी वह कैम्प सदा अपने पुष्कर राज वाले आश्रम में लगवाते थे। जहांप्रतिदिन स्वयं पधार कर कन्याओं को फल एवं मिठाईयां देेतेथे। उनकी सुविधा और सुरक्षा के लिये पूर्ण व्यवस्था करते थे।

जब प्रथम बार यह कैम्प पुष्कर वाले आश्रम में लगवाई थी तब परम पूज्य स्वामी जी ने कन्याओं की सुरक्षा हेतु पूरी बाऊड्री वाल तीन तीन फुट ऊँची कर सम्पूर्ण आश्रम को मजबूत किले का रूप दे दिया। जिससे कभी बाहर वाले व्यक्ति की निगाह अन्दर कन्याओं पर नहीं पड़ सकें।

इस महान कार्य के लिये आशीर्वाद लेने के लिये स्वर्गीय श्री झमटमल जी टिलवानी एवं दादी सुन्दरी केवलरामानी समय समय पर उनकी शरण में आते रहते थे।

परम पूज्य स्वामी जी उन्हें खूब सम्मान देते थे। विद्वानों का खूब कदर करते थे तथा उन्हें योग्य सम्मान देते थे। जब भी वे परम पूज्य स्वामी जी का अपने कॉलेज में आने का निमंत्रण देते थे तो वे सहर्ष कॉलेज में जाकर कन्याओं को शिक्षादायक प्रवचन देते थे।

परम पूज्य स्वामी जी उन्हें कहते थे कि सुलक्षणी पुत्री दोनों कुल तार देती है एक मायके का दूसरा ससुराल का कुल। गुणवन्ती कन्या स्नेह सेवा व त्याग द्वारा घर को स्वर्ग बना सकती है। स्त्री प्रकृति का रूप है। जैसे प्रकृति सदा सब कुछ देती रहती है उसी तरह स्त्री भी सदा देती रहती है। इसी कारण उसका आदरसे प्रात: काल स्मरण किया जाता है।

अहिल्या द्रोपदी, सीता,

तारा, मन्दोदरी तथा।

पंच कन्या स्मरे नित्यं,

महा पातक नाशनं।

अहिल्या, द्रोपदी, सीता, तारा व मन्दोदरी ने ऐसा तो त्याग एवं तपस्या की जो प्रात:काल के समय केवल उनका स्मरण करने से पाप नाश हो जाते हैं। स्त्री शक्ति का रूप है। वह अबला नहीं किन्तु सबला है। इस लिये आप अपनी शक्ति को पहचानकर सब कुछ प्राप्त कर सकती हैं। इस प्रकार परम पूज्य स्वामी जी सदा उन्हें आगे बढ़ने के लिये प्रेरणा देते रहते थे।

परम पूज्य स्वामी जी को छोटे बालकों से भी बड़ा लगाव था। परम पूज्य स्वामी जी बालकों को प्यार करने व उनका मार्गदर्शन देने के लिये बालकों की बारी में जाया करते थे। वर्ष में एक बार बालकों की बारी के समस्त बालकों को आर्दश नगर वाले आश्रम में बुलवाकर उन्हें खूब प्यार करते थे उस दिन आश्रम में बड़ी चहल पहल मच जाती थी बालकों को स्वादिष्ट भोजन खिलवाकर खूब प्रसन्न होते थे। बालकों को फल, मिठाइयां व प्रसाद देकर पखर पहनाकर आशीर्वाद देते थे।

परम पूज्य स्वामी जी कहते थे कि बालक देश के स्तम्ब है। जैसे संस्कार उनके बचपन में पड़ेगे बड़े होकर वे उसी प्रकार से इंसान बनेगे। इसलिये बालकों की बारी जैसी

संस्थाओं का यह कर्तव्य है कि इन नाजुक कलियों को बुराई से बचाकर अच्छे संस्कार डालें। खेल कूद व शारीरिक व्यायाम विकास करवाना चाहिये जिससे वे मजबूत इंसान बनकर शक्तिशाली समाज की नींव डाल सकें बालकों को खुश करने के लिये उन्हें मनोरंजन एवं शिक्षा प्रद कहानियां बतानी चाहिये। तथा बालकों की बारी पत्रिका फुलवाड़ी पढ़ने के लिये उत्साहित करना चाहिये जिससे अच्छा साहित्य पढ़कर वे अच्छे गुण प्राप्त कर सकें।

परम पूज्य स्वामी जी बालकों की बारी में बालकों के बीच में बैठकर उन्हें यह शिक्षा देते थे कि माता पिता और गुरू की खूब सेवा कर उनका सम्मान करें। बालकों के लिये माता पिता ही भगवान के सम्मान है। उनकी सेवा कर अपना जीवन सफल बना सकते है। माता पिता के आशीर्वाद से सब कुछ प्राप्त कर सकते है। इस बात को समझाने के लिये परम पूज्य स्वामी जी ने बालकों को एक बार यह दृष्टान्त दिया।

दृष्टान्तः- दक्षिण भारत के एक गांव में विट्ठल नाम का एक बालक रहता था। उसके माता पिता वृद्ध एवं अपाहिज थे। वह अपने माता पिता की स्नेह एवं लगन से आठो पहर सेवा करता था। प्रातःकाल उठकर उन्हें स्नान करवाकर अपने कोमल हाथों से भोजन तैयार करता था। भोजन तैयार होने के पश्चात अपने माता पिता को अपने हाथों से भगवान समझकर भोजन करवाता था। उसके पश्चात सारा दिन मजदूरी फिर आकर उनकी सेवा में लग जाता था। रात्रि का भोजन करवाने के बाद उनके पांव दबाकर दूध पिलाकर उनको सुलाकर फिर स्वयं विश्राम करता था।

इस प्रकार आठों पहर माता पिता की सेवा करते हुए बेचारे विट्ठल को यह भी पता नहीं चलता था कि कब दिन हुआ और कब रात हुई। भगवान इस बालक की सेवा से बहुत प्रसन्न हुए सो उसकी परीक्षा लेने के लिये एक दिन उसकी झोपड़ी के बाहर आकर खड़े हो गये और विट्ठल को बाहर आने के लिये बुलाया। परन्तु विट्ठल ने उससे कहा कि मैं इस समय अपने माता पिता की सेवा कर रहा हूँ। इसलिये बाहर नहीं आ सकता। इस पर भगवान ने कहा कि

मैं भगवान हूँ और तेरे से मिलने आया हूँ। यदि तुम बाहर नहीं आ सकते तो मैं अन्दर आ जाँऊ? विट्ठल ने निम्रता से उत्तर दिया कि भगवान आप मुझे क्षमा करे जो मैं आपको अन्दर भी नहीं बुला सकता जो आपके अन्दर आने से मेरे माता पिता की सेवा करने में विघ्न पड़ेगा। इसलिये आपको बाहर ही बैठकर प्रतीक्षा करनी होगी। यह कहकर एक ईंट चुपचाप भगवान को बैठने के लिये दी, क्योंकि उसकी झोपड़ी में बैठने के लिये और कोई चीज थी ही नहींं।

भगवान उस भक्त की श्रद्धा से दी हुई ईंट पर बैठकर उसकी प्रतीक्षा करने लगा। विट्ठल ने अपने माता पिता की सम्पूर्ण सेवा करने के पश्चात भगवान की सेवा में उपस्थित होकर उनसे बाहर बैठकर प्रतीक्षा करने की क्षमा याचना कर उनकी चरण वन्दना की। भगवान ने विट्ठल के सर पर हाथ फेर कर आशीर्वाद देकर प्रसन्न होकर कहा कि विट्ठल! अपने माता पिता की इस उच्च कोटि की भक्ति एवं सेवा पर हम बहुत प्रसन्न हुए है। और तुम्हें यह वरदान देता हूँ कि माता पिता की इस अनमोल सेवा के कारण तुम सदा अमर हो जाओगे। यह कहकर भगवान तो अन्तरध्यान हो गये किन्तु जहां भगवान जिस ईंट पर बैठें थे वहां भगवान की पत्थर की बैठी हुई मूर्ति बन गई जिस को आज भी विट्ठल भगवान के नाम से पूजा जाता है।

विट्ठल भगवान की कहानी बताकर स्वामी जी ने बालकों को कहा कि आप भी माता पिता की सेवा व आदर कर श्रवण कुमार की भान्ति अपने आपको अमर बना सकते हैं। माता पिता के समान जीवन में गुरू का भी बड़ा महत्व है। गुरू में श्रद्धा रखकर हम उससे सच्चा ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। गुरू कितना भी ज्ञानी व योग्य क्यों न हो परन्तु यदि हमारे मन में उनके लिये श्रद्धा व आदर नहीं होगा तो हम उनसे कुछ भी नहीं सीख सकते। एकलव्य ने अपनी श्रद्धा व भक्ति के बल पर गुरू की मूर्ति बनाकर गुरू से दूर रहते हुए भी वह कुछ प्राप्त किया जो कौरव और पाण्डव उसके सामने रहते हुए भी प्राप्त नहीं कर सके। इसीलिये गुरू के

लिये सदा आदर की भावना रखनी चाहिये। इससे ही सब कुछ प्राप्त होगा। एक कहावत है कि-

बाअदब बा नसीब,

बेअदब बे नसीब।

परम पूज्य स्वामी जी कहते थे कि बालकों की बारी जैसी संस्थाएं खोलकर बालकों के चरित्र का निर्माण करना चाहिये। बालकों में संस्कार डालना है जड़ को पानी देना। बड़े होने पर संस्कार बड़ी कठिनाई से पड़ते हैं। उस समय संस्कार डालना है पत्तों को पानी देने के बराबर।

इस लिये परम पूज्य स्वामी जी बालकों की बारी के बालकों के बीच में जाकर उन्हें सुन्दर शिक्षाए देते रहते थे। परम पूज्य स्वामी जी बालकों की बारी के संचालकों को कहते थे कि जब कभी बालकों की बारी की पिकनिक रखो वह हमारे ही आश्रम में रखो। वे उन्हें कहते थे कि भोजन के अतिरिक्त परम पूज्य सवामी जी बालकों को फल, मिठाइयां एवं अन्य खाने की चीजें खिलाकर खूब प्रसन्न होते थे। परम पूज्य स्वामी जी बालकों को भगवान का रूप मानकर उन्हें खूब प्यार करते थे। उन्हें कहते ही थे 'बाल भगवान' ।

परम पूज्य स्वामी जी सदा अपने प्रेमियों को फलने फूलने का आशीर्वाद देते रहते थे। उनकी आशीर्वाद एवं कृपा से अब उनके प्रेमी रोटी रोजी की चिन्ता से मुक्त होकर अपने आवास बनाने लगे थे। अच्छे मकान बनाकर रहने की दृष्टि से वे शहर से दूर कालोनियां बनाकर रहने लगे।

इसी प्रकार नेहरू हाउसिंग सोसाइटी बनी। सोसाइटी वालों ने अजयनगर में पहाड़ी पर शाही जमीन लेकर वहां पर प्लाट काटकर अपने सदस्यों को बांट दिये। ये प्लाट शहर से अधिक दूर होने के कारण सोसायटी के मेम्बर वहां मकान बनाकर रहने की हिम्मत नहीं कर

पा रहे थे। आखिर कुछ साहसी सदस्यों ने वहां मकान बनाकर रहना आरम्भ किया किन्तु नगर में पानी की तंगी होने के कारण जलदाय विभाग ने पानी के कनेक्शन नहीं दिये।

उन प्रेमियों को बिना पानी के वहां रहने में कठिनाई होने लगी। बिना पानी के एक दिन भी गुजर करना सम्भव नहीं था। इस समस्या का समाधान करने के लिये व प्रेमी परम पूज्य स्वामी जी की शरण में आये। परम पूज्य स्वामी जी ने उन्हें सुझाव दिया कि कॉलोनी में बड़ा कुआं खुदवाओं और उस पर मोटर लगवाकर भागीरथ घर घर में गंगा पहुँचाओ। सभी प्रेमियों को यह प्रस्ताव बहुत अच्छा लगा। परम पूज्य स्वामी जी से आशीर्वाद लेकर शुभ मुहुर्त में कुएं की खुदाई आरम्भ कर दी। थोड़े ही दिनों में कुआं खुदकर तैयार हो गया। सतगुरू महाराज की कृपा से जल्दी ही पानी की अच्छी सीर निकल गई।

अजय नगर हाऊसिंग सोसायटी के सभी प्रेमी दौड़ते हुए यह शुभ समाचार बताने के लिये परम पूज्य स्वामी जी की शरण में आये। और उन्हें विनम्र निवेदन किया कि अच्छा मुहुर्त देखकर वहां पधार कर कुएं में अपने शुभ कर कमलों से छींटा लगाकर आशीर्वाद दें ताकि उसमें से मीठा जल निकले जिससे अमृत को पीकर कॉलोनी वाले सुख से वहांरह सकें।

परम पूज्य स्वामी जी ने उन्हें आश्वासन देते हुए कहा कि हम आपकी विनती स्वीकार करते है और वहां आकर सतगुरू महाराज जी को विनती करेंगे कि वे आपकी मन की मुराद पूर्ण करें। सतगुरू महाराज जी रिद्धि सिद्धि के मालिक है। उन्होंने टण्डे आदम में अमरापुर दरबार पर सूखे हुए कुए में छीटां लगाकर उसे पानी से लबालब भर दिया था। उनके द्वार पर किसी बात की कमी नहीं है। वे दया के सागर है सो हमारी विनम्रता अवश्य स्वीकार करेंगे।

आखिर वह शुभ दिन आ ही गया। परम पूज्य स्वामी जी अजय नगर के प्रेमियों के सस्नेह निमंत्रण पर कुएं का उद्घाटन करने हेतु अजय नगर पधार गए। परम पूज्य स्वामी जी के नगर पधारने का समाचार सुनकर नगर के कोने कोने से प्रेमी वहां पहुँच गये और वहां

पर खूब मेला लग गया। परम पूज्य स्वामी जी विधि विधान से पूजा कर वरूण देवता दूलह दरियाशाह को मनाने लगे।

सचनि जो दूलह दरियाशाह आहे रावंलराई,

जाहिर परि जमीन ते, सो मालिक बेपरवाह,

दरिया शाह जे दर जा आहिनि, चारो वरण पुजारी,

देवी देवता कनि था शेवा, श्रद्धा सां सधिवारी,

दुनियां जे सभि देशनि जा था पूजिनि नर ऐं नारी,

बारे जोतियूँ गुल फुल चाढीन, चित में धारे चाहु,

सवें हजारे अची सुवाली, सभ जा कारज करे,

पलव प्रेम सां पाईन जेके, तिनि जी झोल भरे।

आश वन्दनि जी आश पुजाए, दुखिडा दर्द हरे।

बुन्दनदडनि जा थो बेडा पुजाए, हीणनि जा हमराज!

अर्थ:- इसभजन में वरूण देवता की स्तुति की गई है और कहा गया है कि दरियाहशाह महान है शहनशाह सर्वशक्तिवान है वे इस पृथ्वी पर प्रकट होकर सब का कल्याण कर रहे है वे सर्व शक्तिमान एवं सर्वेसर्वा है। दरियाशाह के द्वार के चारों वरण पुजारी है। दरियाशाही की सेवा देवी देवता भी बड़ी श्रद्धा से करते है। संसार के समस्त नर नारी इनकी श्रद्धा से पूजा करते है। सभी पुजारी श्रद्धा से इन पर ज्योति जलाते है और फल फूल चढ़ाते है। उनके द्वार पर सैकड़ों हजारों सवाली आकर मनोति मांगते है और दरियाशाह सबकी मन की मुरादें पूर्ण कर कारज संवारते है। जो इस द्वार पर प्रेम व श्रद्धा से पलव पाता है। उसकी झोलिया भर

देते है। जो भी यहा कोई आस लेकर आता है वह पूर्ण करते है और उनके सब दर्द दूर कर देते है। यह दरियाशाह डूबती नाव को तैराते है क्यों कि ये है ही दीन दुखियों के सहायक।

झूले लाल साहब का पलव डालने के पश्चात परम पूज्य स्वामी जी ने सतगुरू महाराज जी की आरती की और उनकी जय जयकार करने के पश्चात उनका ध्यान धरकर कुएं में छीटां डाला सतगुरू महाराज की महर मया से उस कुएँ का पानी अमृत जैसा मीठा बन गया। जिसको पीकर प्रेमियों ने परम पूज्य स्वामी जी की जय जयकार मनाई।

जिस समय पूजा चल रही थी उस समय प्रेमियों के बीच में पूजा स्थल पर एक कुत्ता आकर खड़ा हो गया। सब प्रेमी उसे धुधकार कर दूर भगाने लगे। परन्तु कुत्ता वहां से हटने का नाम ही नहीं लेवे। कुछ प्रेमी कुत्ते को भगाने के लिये पत्थर से मारने लगे। परन्तु परम पूज्य स्वामी जी ने उन्हें समझाकर कहा कि कुत्ता भले खड़ा रहे उसे धुधकारो मत इसमें भी जीव आत्मा है और परमात्मा का वही प्रकाश है। यह कहकर प्रेमियों को एक दृष्टान्त बताया।

दृष्टान्त:- भक्त नामदेव परमात्मा का परम भक्त था। उसकी प्रेमा भक्ति पर प्रसन्न होकर परमात्मा ने उसे बावन बार दर्शन दिया था। वह भोजन करने से पूर्व भगवान पर भोग लगाते थे। यह उसका पक्का नियम था। एक दिन उसकी पतिव्रता पत्नी ने नियम अनुसार भगवान के लिये भोजन तैयार किया परन्तु घर पर घी न होने के कारण भक्त नामदेव के बाजार से घी लाने के लिये भेजा। भक्त नामदेव तैयार होकर बाजार से घी लेने गया।

भक्त नामदेव जैसे बाजार से घी लेकर आ रहा था तो उसने देखा कि उसके घर से एक कुत्ता भगवान के लिय तैयार की गई रोटी मुंह में दबाकर बाहर आ रहा है। भक्त नामदेव कुत्ते के पीछे दौड़ने लगा और दौड़ते दौड़ते कुत्ते को कहने लगा कि हे भगवान! रूखी रोटी मत खाओ। मुझे घी तो लगाने दो, फिर भली प्रेम से भोग लगाओ। यह घी मैं अपने लिये ही लाया हूँ।

आगे कुत्ता और पीछे भक्त नामदेव दौड़ता रहा। दौड़ते दौड़ते ठोकर खाकर भक्त नामदेव गिर पड़ा। भक्तके गिरते ही कुत्ता खड़ा हो गया और परमात्मा का रूप धारण कर भक्त नामदेव को अपने हाथों से उठाकर अपनी गोद में बिठाकर खूब प्यार कर कहने लगा कि हम आपकी भक्ति एवं सच्चे प्यार पर बहुत प्रसन्न हुए है। आपने कुत्ते में भी मेरा रूप देखकर स्नेह और श्रद्धा से भोग लगाया है सो आप धन्य है।

परम पूज्य स्वामी जी यह दृष्टान्त बताकर प्रेमियों को कहने लगे कि सभी जीवों में परमात्मा ही वास करते है। इसलिये किसी भी जीव को सताना नहीं चाहिये। यथा शक्ति उनका पालन पोषण करना चाहिये।

अजय नगर कॉलोनी का नींव का पत्थर रखने के लिये श्री तारा सिंह मनसुखानी एवं श्री टी भगत मैजिस्ट्रेट साहब, जिनके प्रेरणा एवं प्रयास से यह नेहरू हाऊं सिग सोसायटी बनी थी। उन्होंने परम पूज्य स्वामी को निमंत्रण देकर बुलवाया था क्योंकि उन सबकी परम पूज्य स्वामी जी में अटूट श्रद्धा था। जिस कॉलोनी की नीव ही उन्होंने अपने शुभ कर कमलों से झोली थी सो उनकी यह अभिलाषा थी कि यह कॉलोनी बसे व फले फूले। परम पूज्य स्वामी जी कहते थे कि जिस स्थान को बसाना हो वहां परमात्मा का मन्दिर बनवा दो। वहां परमात्मा की मूर्ति स्थापित कर उसे बारमबार विनती करनी चाहिये कि हे परम पिता परमेश्वर तुम जंगल में मंगल करो। परम पिता परमेश्वर की कृपा से वह स्थान शीघ्र ही शाद और आबाद हो जायेगा।

यह विचार कर परम पूज्य स्वामी जी ने अपने परम भक्त स्वर्गीय श्री जीवतराम कृपालानी को उस स्थान पर मन्दिर बनवाने की प्रेरणा दी। श्री जीवतराम जी शिव जी के परम भक्त थे। सो उन्होंने वहां भोलेश्वर महादेव भगवान शिव का विशाल शिवालय बनवाने का संकल्प किया। परम पूज्य स्वामी जी के आशीर्वाद से वहां अति सुन्दर एवं विशाल शिवालय बन गया। यहां पर भोलेश्वर महादेव भगवान शिव की ऐसी तो आकर्षण

एवं ज्योति वाली मूर्ति है जो ऐसा लगता है कि साक्षात् भगवान शिव प्रकट होकर अपने श्रद्धालू भक्तों को दर्शन दे रहे है। इस मन्दिर को दर्शन के योग्य एवं आकर्षक बनाने के लिये तथा जिज्ञासुओं के ज्ञान हेतु, मन्दिर के बाहर सनातम धर्म के सभी देवी देवताओं तथा महान संतों की सुन्दर मूर्तिया बनवाई गयी है।

इसके अतिरिक्त यहां पर महामण्डलेश्वर सतगुरू स्वामी टेऊंराम जी महाराज एवं अन्य प्रेम प्रकाशी सन्तों की संगमरमर की मूर्तिया बनवाई गयी है। इसके साथ यहां माता दुर्गा देवी का मन्दिर भी बनवाया गया है जहां नौ दुर्गा की स्थापना की गई है। यह मन्दिर माता के श्रद्धालू भक्तों के लिये श्रद्धा एवं भक्ति का आकर्षण केन्द्र है। इस मन्दिर की चारों ओर शाही जमीन है जिस में बाग बगीचे एवं फुलवाडी लगाकर इसे अति सुन्दर एवं रमणीक बनाया गया है।

परम पूज्य स्वामी जी इस भोलेश्वर मन्दिर पर बड़े स्नेह एवं श्रद्धा से आते रहते थे जब कभी स्वर्गीय श्री जीवतराम जी अजमेर आते थे तो बड़े स्नेह एवं श्रद्धा से परम पूज्य स्वामी जी को इस मन्दिर में आने का आग्रह करते थे। श्री जीवनराम जी परम पूज्य स्वामी जी के परम श्रद्धालू भक्त थे। सो वहां पधारने पर वे उनकी बडे स्नेह एवं श्रद्धा से सेवा करते थे। परम पूज्य स्वामी जी का भी इस मन्दिर के साथ विशेष लगाव था, इसीलिये परम पूज्य स्वामी जी के जो भी पे्रमी बाहर से आते थे वे उनको भोलेश्वर मन्दिर अवश्य भेजते थे।

परम पूज्य स्वामी जी महाशिवरात्रि के शुभ पर्व पर सम्पूर्ण दिवस यहां रहकर हवन पूजन करते थे। इस अवसरपर स्वर्गीय श्री जीवतराम जी परम पूज्य स्वामी जी को विशेष निमंत्रण देकर यहां पर आयोजित समस्त कार्यक्रमों में पधारने की विनती करते थे। परम पूज्य स्वामी जी के पधारने के पश्चात ही हवन एवं पूजन आरम्भ किया जाता था। परम पूज्य स्वामी जी इस पवित्र पूर्व पर विधि विधान से भोलेश्वर भगवान शिव की पूजा करते थे। तथा सारा दिन यहां रहकर हर कार्यक्रम में भाग लेते थे।

परम पूज्य स्वामी जी वहां पर आये हुए समस्त प्रेमियों को अपने शुभ कर कमलों से फल एवं प्रसाददेते थे। जो प्रेमी उनके चरणों में आकर बैठते थे उनको महाशिव रात्रि के महत्व के बारे में ज्ञान देते थे। परम पूज्य स्वामी जी कहते थे कि भगवान शिव सभी देवों के देव महादेव है। वे कल्याणकारी भोलों के भगवान है, इसीलिये उन्हें भोलेश्वर महादेव कहते है। भक्तों की पुकार सुनकर उनका कल्याण करने के लिये भगवान शिव शीघ्र प्रकट होकर उनके कष्ट दूर करते है। परम पूज्य स्वामी जी कहते थे कि महाशिव रात्रि का बहुत बड़ा महत्व है।

भगवान शिव को महीने में बारह व्रतअति प्रि्रय है। वे है दो अष्टमियां जिन में केवल फलहार करना है। दो एकादशियां जिसमें शुक्ल पक्ष की एकादश निर्जल करनी है। दोनों तेरस पर व्रत रखकर भगवान शिव का स्मरण करना है। दो चौदस के बरत जिसमें कृष्ण पक्ष की चौदस पर निर्जल बरत रखना है। महीने के हर सोमवार को भगवान शिव का व्रत रखना है, चन्द्र दर्शन के दिन भी व्रतरखकर भगवान शिव की पूजा करने से भगवान शिव उस भक्त पर प्रसन्न होकर उसे मुक्ति प्रदान कर अपने चरणों में शरण देते है।

जिस जिज्ञासू को उपरोक्त व्रत रखने का सामर्थ्य नहीं है वह केवल महाशिव रात्रि का वर्त रखकर श्रद्धा व स्नेह से भगवान शिव की पूजा करे व हृदय से उनका स्मरण करे तो उस जिज्ञासू के सब कष्ट दूर होंगे और वह मुक्त होकर भगवान शिव के चरणों में वास करेगा।

परम पूज्य स्वामी जी प्रेमियां को इस महान पर्व पर महाशिव रात्रि की कथा भी सुनाया करते थे। जो सभी प्र्रेमी बड़ी श्रद्धा व स्नेह से सुनते थे।

व्यतीत कल्प में जब प्रलय हो गई तब ब्रह्मा और विष्णु के बीच में धमासान युद्ध हुआ। ब्रह्मा कहने लगा कि में सृष्टि की उत्पति करने वला हूँ। मैं ब्रह्मा, स्वयंभू, परमेष्ठी व मैं ही विधाता हूँ। सो मैं सब से बड़ा हूँ। मेरी तीनों लोको में पूजा होनी चाहिये। भगवान विष्णु कहने लगे कि मैं जगदीश हूँ और मैं ही तीनों लोकों का पलान पोषण करता हूँ। सारी सृष्टि में

ही बल से चलती है। इसलिये मेरी ही तीनोंलोकों में पूजा होनी चाहिये। और मैं देवों का देव हूँ। तुम ब्रह्मा तो मेरे पुत्र हो और मेरी नाभि में से उत्पन्न हुए हो। उनका वाद विवाद बहुत बढ़ गया और दोनो के बीच में शाक्ति परीक्षण के लिये धमासान युद्ध हुआ। उस युद्ध में भगवान विष्णु ने प्रलय करने वाला माहेश्वर बाण छोड़ा। और ब्रह्मा ने पाशुपत्यत्सर बाण छोड़ा जिसके प्रकाश में तीनों लोक प्रकाशित हो गये। दोनों एक दूसरे के सम्मुख खड़े रहकर अपने शास्त्रों से प्रलय मचाने लगे। उस समय देवता भयभीतहोकर भगवान भोलेनाथ शिव के शरण में गये। उन्हें सम्पूर्ण वृतान्त बताकर विनती की कि हे देवों के देव महादेव! आप हमारी रक्षा करो नहीं तो इस युद्ध में प्रलय हो जायेगी और सम्पूर्ण पृथ्वी जलकर खाक हो जायेगी। भगवान शिव देवताओं की पुकार सुनकर अपने दलबल के साथ वहां पधारे जहां ब्रह्मा और विष्णु का युद्ध चल रहा था। भवगान शिव ने उन्हें समझाने का बहुत प्रयास किया परन्तु अहंकार के आग के कारण उन्होंने कोई भी ध्यान नहीं दिया। तब भगवान शिव कुपोतित होकर विशाल अग्नि खम्भ का रूप धारण कर दोनों के बीच में प्रकट हुए जिससे उनके बाण पीछे हट गये । भगवान विष्णु व ब्रह्मा युद्ध बंद कर यह विचार करने लगे कि आखिर यह अग्नि खम्भ है क्या? और उसका अन्त कहां है। दोनों ने यह निर्णय किया कि जो इस अग्नि खम्भ का अन्त लेकर आयेगा वही बड़ा माना जायेगा।

ब्रह्मा हंस का रूप धारण कर आकाश में उड़कर उस लिंगेश्वर का अन्त लेने के लिये गया और विष्णु भगवान शिव का रूप धारण कर पाताल में उनका अन्त लेने गया। भगवान विष्णु पाताल से जल्दी लौट आये और कहा कि इस लिंगेश्वर का अन्त कहां है, यह मालूम करने में मैं असमर्थ हूँ। परन्तु ब्रह्मा आकाश से लौट कर कहने लगा कि मैंने इस अग्नि खम्भ का अन्त प्राप्त कर लिया है और साक्षी देने के लिये केतकी का फूल अपने साथ ले आया।

ब्रह्मा का मिथ्या भाषण सुनकर भगवान शिव उस अग्नि खम्भ से प्रकट हुए और भगवान विष्णु की सच्चाई पर प्रसन्न हुए और उन्हें वरदान दिया कि मेरे समान आपकी भी

तीनों लोकों में पूजा होगी। और ब्रह्मा के असत्य भाषण पर नाराज होकर कहा कि तुम्हारी तीनों लोकों में पूजा नहीं होगी। परन्तु ब्रह्मा की क्षमा याचना पर उन्हें क्षमा किया और कहा कि विनायक मुख करमाद में तुम गुरू बनोंगे व पूर्ण हिस्सा प्राप्त करोगे।

भगवान शिव सभी को कहने लगे कि यह लिगेंश्वर मेरा निष्कल रूप है और यह मैंने आपको समस्त अंगो सहित दर्शन दिया है कि यह मेरा सकल रूप है, सगुण रूप है, आज से मेरी इन दोनों रूपों में पूजा होगी। और में इस विशाल अग्नि खम्भ का सूक्षम रूप देता हूँ। और मेरा स्वरूप सदा इस लिंग में रहेगा। मेरे इस लिंग की पूजा मेरी ही पूजा मानी जायेगी। मेरे भक्त मेरे इन दोनोंअर्थात सगुण और निर्गुण रूप में पूजा कर सकेंगे और दोनों पूजाओं का फल समान होगा और जिस स्थान पर यह अग्नि खम्भ प्रकट हुआ है उसको लिंगेश्वर के नाम से पुकारा जायेगा और वह स्थान अरूणाल के नाम से प्रसिद्ध होगा। और जिस दिन यह अग्नि खम्भ भगवान शिव का निराकार रूप प्रकट हुआ है उसे सदा शिव रात्रि के नाम से पुकारा जायेगा जो भक्त इस दिन बरत रखकर भगवान शिव का पूजन करेगा व उनका स्मरण करेगा वह सभी पापों से मुक्त होकर परम पद को प्राप्त करेगा।

उस दिन से लेकर हर वर्ष महाशिव रात्रि का महान पर्व, शिव भक्त स्नेह व श्रद्धा से मनाते है। भगवान शिव भक्तों की पुकार पर बारह स्थानों पर साकार रूप में अवतार धारण कर प्रकट हुए है उन स्थानो पर ज्योति लिंगो की स्थापना की गई है। उन बारह स्थानों को भगवान शिव ज्योति लिंगों के नाम से पुकारा जाता है। ये बारह तीर्थ स्थान अति पवित्र है जिनके दर्शन मात्र से सब पाप नष्ट होते है और भगवान शिव के चरणों का वास मिलता है।

यह बारह ज्योतिलिंग है (१) सौराष्ट्र में सोमनाथ (२) श्री शेल में मल्लिकार्जुन (३) उज्जयिनी में महाकालेश्वर (४) विन्ध्याचल ओंकार में औंकारेश्वर (५) हिमालय पर्वत पर केदारनाथ (६) डाकिनी में भीमशंकर (७) काशी में विश्वनाथ (८) गोमती तट पर त्र्यम्बकेश्वर

महादेव (९)आयोध्या पुरी (दारूक वन) में नागेश्वर (१०) चिताभूति में वैद्यनाथ (११) सेतुबंध में रामेश्वर (१२) देवसरोवर में घूश्मेश्वर

परम पूज्य स्वामी जी का इस भोलेश्वर मन्दिर से ऐसा तो लगाव था कि ज्योति समा जाने के पश्चात उनके परम भक्त स्वर्गीय श्री जीवनराम ने उनकी पवित्र याद में एक सुन्दर मन्दिर बनवाया जहांउनकी संगमरमर की एक बड़ी सुन्दर मूर्ति की स्थापना की। जहां सुबह शाम श्रद्धा से आरती की जाती है। यह मन्दिर स्वर्गीय श्री जीवनराम ने अपने निवास स्थान के बिलकुल पास में बनवाया जिस से आते जाते वे परम पूज्य स्वामी जी के पवित्र दर्शन कर मन की शांति पा सकें। इस प्रकार इस परम भक्त ने अपने स्नेह का नाता अन्त समय तक अपने सतगुरू महाराज परम पूज्य स्वामी जी से निभाया।

नेहीं निमणो माणु छदे माइलु थियो,

रही साध संगत सां, विधि सां विकाणो,

परिची लधाई पंहिजो प्रीतम पुराणो,

भगवन्त जो भाणो सामी रखियाई सिर ते।

अर्थ:- परमात्मा को प्यार करने वाला अपने मन से मान त्यागकर विनम्र बन कर उसको प्यार करता है। वह परमात्मा के प्यारों का संग कर अपने आपको पूर्ण रूप से समर्पित कर देता है। अपने सच्चे प्यार व लगन से वह परमात्मा को प्राप्त कर लेता है। वह सदा परमात्मा की रज़ा पर राज़ी रहता है।

इस प्रकार परम पूज्य स्वामी जी अजमेर में रहकर पुष्कर राज वाले स्वर्ग के समान आश्रम को सम्पूर्ण करने के साथ सामाजिक कार्यो में भी लगे रहे।

इस व्यस्तता के कारण उनके भ्रमण का कार्यक्रम लम्बे समय तब बिल्कुल बंद हो गया था। देश विदेश से उनके प्रमी उनके शुभ दर्शन के लिये उन्हें बार बार विनती करने लगे।

जब भी वे मेले पर अथवा किसी विशेष अवसर पर दर्शन के लिये आश्रम में आते थे तब उन्हें अपने पुराने प्रेमियों को दर्शन देने के लिये निवेदन करते हुए कहे थे कि।

लाई वेर वदी सजण सिक सोडिहो कयो,

अची अध मूअनि ते कन्दे महर कदी,

तडिफी तडिफी तन मं़, वेन्दों साहु जदी

सामी चवे तदी, मेलो कन्दे किन सां।

अर्थ:- आप ने आने में बहुत देर की है, आपके प्यार ने बहुत तड़पाया है। आप कबइस अधमरे हुए लोगों पर कृपा दृष्टि करेंगे? क्या आप तब आपका दर्शन देंगे जब इन तन से तड़प तड़पकर प्राण निकल जायेंगे? सामी साहब कहते है कि फिर आप किस के साथ आकर मिलेंगे?

जाकरता के उनके परम भक्त प्रेमी श्री शंकर गोप सामताणी व उनकी पूज्य माता साहब कृष्णा देवी उन्हें हर बार जाकरता आकर अपने शुभ चरण घुमाने के लिये निवेदन करते रहते थे। सो उन्होंने सोचा कि इतनी लम्बी यात्रा करने से पूर्व अपने ही देश में थोड़ी दूर पर यात्रा करनी चाहिये ताकि पता लग जाये कि हमारा स्वास्थ्य इतनी लम्बी यात्रा बर्दाश्त कर सकेगा या नहीं । तो हमें आज्ञा की कि हम रेल मार्ग से बड़ौदे पहुँच जाये। आज्ञानुसार हम बड़ौदे पहुँच गये। परम पूज्य स्वामी जी भी कार द्वारा अपने कुछ प्रेमियों के साथ बड़ौदे पहुँच गये। बड़ौदे पहुँचने पर उनकी बम्बई वाले बहुत से प्रेमी उनके दर्शन हेतु उन्हें बम्बई पधारने का निमंत्रण देने हेतु बड़ौदे पहुँच गये। हमें बुलाकर यह आज्ञा दी की अहमदाबाद के मन्दिर देखकर हम शीघ्र अजमेर पहुँच जाये। उन मन्दिरों में गीता प्रदर्शनी को देखने के लिये विशेष आदेश दिया। और कहा कि हमारा स्वास्थ्य बम्बई जाने जैसा नहीं है इसलिये हम कल अजमेर पहुँच जायेंगे।

वास्तव में दूसरे दिन सायं छः बजे अपने वचन के अनुसार परम पूज्य स्वामी जी अजमेर पधार गये। परन्तु इस यात्रा के कारण उनका स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया था। इसलिये उनके श्रद्धालु भक्त डॉ. बलराम चौधरी को बुलाकर उनके स्वास्थ्य की जाँच करवाई। डॉक्टर साहब ने उन्हें निवेदन किया कि उन्हें पूर्ण विश्राम की आवश्यक है। सचमुच विश्राम करने से उनका स्वास्थ्य पूर्ण रूप से ठीक हो गया था। सो डॉक्टर साहब को कहने लगे कि हम अब बिल्कुल ठीक है। सो कल हम जयपुर मेले पर जायेंगे। परन्तु डॉक्टर साहब ने उन्हें विनम्रता पूर्वक विनती की कि इस समय आपको विश्राम की बहुत आवश्यकता है इसलिये जयपुर जाना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। परन्तु परम पूज्य स्वामी जी तो मर्यादा की मूर्ति थे, सो अपना नाता अन्त तक निभाया। प्रेमियों के बार बार निवेदन करने पर भी परम पूज्य स्वामी जी नियमानुसार सदा की भांति जयपुर मेले पर पधार गये।

इस यात्रा का उनके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा वहां से लौटने पर उनकी स्थिति चिन्ता जनक बन गई। उनकी यह गम्भीर हालत देखकर प्रेमियों ने उनके श्रद्धालु भक्त डाक्टर चेतन को परामर्श के लिये बुलाया। डाक्टर चेतन ने राय दी कि परामर्श के लिये कुछ अन्य डाक्टरों को भी बुलवाया जाये। उन डाक्टरों ने जांच करने के पश्चात यह परामर्श दिया कि परम पूज्य स्वामी जी को अविलम्ब अस्पताल में भर्ती करवाया जाये। परन्तु परम पूज्य स्वामी जी आश्रम छोड़कर अस्पताल भरती होने के लिये राजी नहीं हुए। डाक्टर बलराम चौधरी ने अन्य डाक्टरों से परामर्श कर आश्रम में अपनी देखरेख में उनका उपचार आरम्भ कर दिया। डाक्टर बलराम चौधरी ने रातें जागकर परम पूज्य स्वामी का श्रद्धा व भक्ति से उपचार व सेवा की। अब उनके स्वास्थ्य में सुधार होने लगा।

उनकी ऐसी नाजुक स्थिति देखकर अजमेर के प्रेमियों ने देश विदेश के प्रेमियों को यह समाचार भेजा। समाचार मिलते ही उनके प्रेमी दौड़ते हुए अपने परमात्मा स्वरूप सत्गुरू महाराज के दर्शन के लिये अजमेर पहुंच गये उनकी यह नाजुक स्थिति देखकर बहुत दुखी

होने लगे। परम पूज्य स्वामी जी तो परम ज्ञानी थे सो ऐसी स्थिति में भी सभी को सांत्वना देने लगे-

शब्द

कुदरत सन्दे कमनि में, नाहे मज़ाल कंहिजी,

ईश्वर सन्दे अमन में, नाहे मजाल कंहिंजी।

1. ईश्वर बणाई आहे, कुदरत पंहिंजे कल सा,

   प्रभूअ सन्दे चमन में, नाहे मजाल कंहिंजी।

2. ही जे हलनि था हरदम

   प्राण जीवनि जे पिंड में

   रोकण सन्दी उन्हनि में

   नाहे मजाल कंहिंजी।

3. प्रभूअ रख्यियो आहे पंहिंजे

   वस में ही जमु ऐं मौत

   जीवन संदे दमनि में

   नाहे मजाल कंहिंजी।

4. हथ में सभेई हयतियूं

   माधव तांहि मालिक जे

खालिक सन्दे गुलनि में

नाहे मजाल कंहिंजी।

(अर्थ:- इस भजन में परम पूज्य स्वामी जी प्रेमियों को बताते है कि कुदरत अपना काम कर रही है उस में किसी का बस नहीं चलता है। ईश्वर रचित इस संसार में किसी का भी हस्तक्षेप नहीं है। ईश्वर ने यह कुदरत आदी शक्ति से बनाई है। इस परमात्मा के चमन में किसी का भी बस नहीं चलता है। ये प्राणी जो सभी जीवों में चल रहें है उनको रोकने की शक्ति किसी में भी नहीं है, परमात्मा ने जन्म और मरण अपने ही हाथ में रखा है इस सांस पर केवल परमात्मा का ही अधिकार है। परम पूज्य स्वामी जी कहते है कि सम्पूर्ण जीवन परमात्मा के बनाये हुए इस संसार में किसी का बस नहीं चलता है।)

परम पूज्य स्वामी जी की ऐसी नाजुक स्थिति देखकर उनके प्रेमी चिन्ता में पड़ गये। परन्तु परम पूज्य स्वामी जी सदा मुस्कराते हुए सभी को सांत्वना देते रहे। प्रति दिन डाक्टर मरहम पट्टी के समय देखने वालों का कलेजा हिल जाता था। परन्तु परम पूज्य स्वामी जी परम योगी थे सो भीष्मपितामह के समान तीरों की सेजा पर सोते हुए भी योग स्थिति में चाचरी मुद्रा साध कर ध्यान तृकुटी में लगा कर आत्म स्थित होकर दुख सुख से ऊपर निर्लेपिप्त हो जाते थे।

अपने प्रमियों को चिंतित देखकर उन्हें समझाकर कहते थे कि श्रीमदभ्गवदगीता में श्री कृष्ण भगवान ने अर्जुन को इस आत्मा के अमरता के बारे में कहा कि-

नैनं छिन्दन्ति शस्त्रणि नैनं दहति पावक:।

न चैन केल्लदयन्त्यापो न शोषयति मारूत:।

अच्छेद्यो यमदाहो यम के द्यो शोष्य एव च।

नित्य: सर्वगत: स्थाणुर चलोयं सनसतन:।

इस आत्मा को शस्त्रादि नहीं काट सकते है और इसको आग नहीं जला सकती है इसको जल नहीं गीला कर सकता है और वायु नहीं सुखा सकती है। क्यों कि यह आत्मा अच्छेद्य है, यह आत्मा अदाहय, अकेलद्य और अशोष्य है तथा यह आत्मा नि:सन्देह नित्य, सर्वव्यापक, अचल, स्थिर रहने वाला और सनातत है।

इस लिये इस शरीरिक कष्ट के लिये शोक नहीं करना चाहिये। परमात्मा अपने भक्तों को जब अपने शरण में स्वीकार करते है तब उनके अगले पिछले कर्मों का हिसाब चुका कर उन्हें मुक्त कर परम पद प्रदान करते है। यह बात समझाने के लिये परम पूज्य स्वामी जी ने प्रमियों को महाभारत में से महान योगी भीष्म पितामह का उदाहरण बताया।

महाभारत के युद्ध में जब महान योद्धा भीष्म पितामह तीरों की सेज पर सो रहे थे तब उसने भगवान श्री कृष्ण से पूछा कि हे मधुसूदन । मेरे दिल में एक शंका है, कृपया आप उसका समाधान करने की कृपा करे। क्यों कि आप अन्तर्यामी है आपको सब मालूम है। मैने इस जन्म में ब्रह्मचर्य का पालन कर सत्य की राह पर चलकर हर प्रकार पुन्य का कार्य किया है और आठों पहर केवल आपके चरणों का ध्यान किया है और कोई भी पाप कर्म नहीं किया है। फिर मुझे यह कड़ी सज़ा क्यों मिली है? न केवल इस जन्म में किन्तु पिछले सात जन्मों में मैंने कोई भी पाप कर्म नहीं किया है जो मुझे इस प्रकार सज़ा देकर मेरे अंग अंग को तीरों से छेदा गया है।

श्री कृष्ण भगवान ने एसे सांत्वना देते हुए, कहा कि आप मेरे प्रिय परम भक्त है।तुम्हारी तपस्या एवं पुन्य कर्म के कारण मैं तुम्हें अपनी शरण में लेने के लिये तुम्हारे से सब कर्म काटकर हिसाब समाप्त कर परम पद प्रदान कर रहा हूँ। एक दिन आप शिकार पर जा रहे थे। मार्ग में एक सर्पणी आपका रास्ता रोक कर खड़ी थी। आपने घमण्ड में आकर उसे रास्ते से हटाने के लिये आने तीर का निशाना बनाया। वह सर्पणी जखमी होकर उछल कर जाकर कांटों की बाढ़ पर गिरी जहां उसके अंग अंग में कांटे चुभ गये। उसने तड़प तड़प

कर प्राण दिये। आज तुम इन तीरों की सेजा पर सो कर वह पुराना कर्जा चुकाकर मुक्त हो रहे है।

इस प्रकार परम पूज्य स्वामी जी अन्त समय तक प्रेमियों को सांत्वना देते रहे। सदा उनके मुख से सब्र और शुक्र के यह शब्द निकलते थे कि तेरा भाड़ा मीठा लागे। सदा उसकी रजा पर राजी रहते थे। ऐसी नाजुक स्थिति होते हुए भी अपने प्राणों को अपने वश में रखा था। अपने सतगुरू महाराज के वरसी उत्सव में किसी प्रकार का विघ्न नहीं पड़े इस लिये योग साधना के बल से शरीर को स्थिर रखकर मेले के हर कार्य में भाग लेकर उसकी शोभा बढ़ाते रहे और प्रेमियों को सांत्वना देते रहे।

इस वरसी उत्सव में उनका प्रिय परम भक्त श्री वाशी दीपा अपने प्रिय मित्र श्री ठाकुरदास केसवानी को परम पूज्य स्वामी जी से नाम दान लेने के लिये आने साथ ले आये थे। श्री ठाकुरदास परोक्ष में परम पूज्य स्वामी जी को अपना गुरू मान चुका था। और नियम से नाम का स्मरण करता था। उसने बचपन में अपने नौकर को नाम का स्मरण करते हुए देखा था। सो उसे कहा कि मुझे भी नाम स्मरण का तरीका बताओ। बेचारा नौकर बाल हठ को टाल नहीं सका से विवश होकर उसे बहलाने के लिये उसने नाम समरण की विधि बताई। श्री ठाकुरदास बाल्य अवस्था से ही अपने नौकर के समान नाम का समरण करता आया था।

जब वाशी दीपा ने उसे अजमेर जाने का कार्यक्रम बताया तो उसने जिज्ञासा वश उन से पूछा कि आप जो हर वर्ष दौड़कर अपने सतगुरू महाराज जी का दर्शन करने जाते हैं कृपया उनकी महिमा के संबंध में मुझे कुछ बताओ। श्री वाशी दीपा ने जब श्रद्धा से अपने सतगुरू महाराज जी की महिमा के संबंध में उसे बताया तब उसे याद आया कि उस नौकर ने भी सतगुरू महाराज की वैसी ही महिमा बताई थी। सो उसने अपने मित्र श्री वाशी दीपा से आग्रह किया कि भाई! मुझे भी अजमेर ले चलो तांकि मैं सतगुरू महाराज के पवित्र चरणों में बैठकर

विधि विधान से उनसे नाम दान लेकर अपना जीवन सफल बना सकूं। वैसे तो मैंने परोक्ष में अपना सतगुरू मानकर नाम का स्मरण किया है परन्तु यह नाम दान अधूरा है।

श्री वाशी दीपा अपने मित्र श्री ठाकुरदास को परम पूज्य स्वामी जी के शरण में ले आये। परन्तु परम पूज्य स्वामी का स्वास्थ्य देखकर उन्हें नाम दान देने का कष्ट नहीं देना चाहते थे। सो श्री वाशी दीपा ने उन्हें नाम दान के लिये निवेदन ही नहीं किया। बेचारा ठाकुरदास दुखी होकर कहने लगा कि परम पूज्य स्वामी जी से नाम दान लेना शायद मेरे भाग्य में ही नहीं है।

परन्तु परम पूज्य स्वामी जी तो अवतारी पुरूष थे वे कोई भी कार्य अधूरा नहीं छोड़ने वाले थे। सो जैसे श्री वाशी दीपा मेले की समाप्ति के पश्चात परम पूज्य स्वामी जी से आज्ञा लेने गये तब उन्होंने श्री वाशी दीपा से कहा कि भाई! तुम जिस मित्र को नाम दान के लिये अपने साथ लाये हो क्या उसे बिना नाम दान के वापस ले जाओगे। तुम उसे बुलाकर लाओ तांकि हम उसे नाम दान देकर उसकी आशा पूर्ण करें। यह सुनकर श्री वाशी दीपा आश्चर्य में पड़ गये कि परम पूज्य स्वामी जी तो अन्तर्यामी हैं। उन्हे हमारी इस आस की आखिर खबर पड़ गई। वे दौड़ते हुए अपने मित्र श्री ठाकुरदास के पास गये और कहा कि भाई! तुम्हारे भाग्य खुले है जो परम पूज्य स्वामी जी ने स्वयं तुम्हें नाम दान के लिये बुलवाया है। परम पूज्य स्वामी जी ने श्री ठाकुरदास को विधि विधान के साथ नाम दान देकर अपना बृद पाला। अन्त मैं यह भारत अपने ऊपर से उतार गये।

अब सुख से मेला समाप्त हुआ। सभी प्रेमियो को पखर पहनाकर प्रसाद देकर खुशी खुशी विदा किया। सभी प्रेमियों को विदा करने के पश्चात अब परम पूज्य स्वामी जी निश्चित होकर परम समाधि में जाने की तैयारी करने लगे। वे तो रूके हुए ही मेले की सुखद समाप्ति के लिये थे। आखिर ११ जून १९८४ सांय काल ४ बजे परम पूज्य स्वामी जी यह संसारी चोला छोड़कर अनन्त समाधि में लीन हो गये। यह शोक समाचार देश विदेश में

बिजली की तरह फैल गया। यह दुखद समाचार जब उनके प्रेमियों तक पहुँचा तो कई प्रेमी जो अभी गाड़ी में ही थे और अपने घर तक भी नहीं पहुँचे थे, वह वहीं से वापस लौट आये।

परम पूज्य स्वामी जी के अन्तिम दर्शनों के लिये प्रेमी हजारों की संख्या में आश्रम में पहुँच गये। सभी के मुखमण्डल पर दुख व मायूसी छायी हुई थी। अपने महबूब के वियोग में सभी आंसू बहा रहे थे। परम पूज्य स्वामी जी के वियोग में सभी अपने आपको अनाथ समझने लगे। सारे आश्रम में सन्नाटा छाया हुआ था।

परम पूज्य स्वामी जी के अन्तिम दर्शनों के लिये उनके पार्थिक शरीर को दो दिन के लिये सजाकर आश्रम में रखा गया तांकि देश विदेश के उनके प्रेमी आकर अपने प्रियतम को श्रद्धांजलि अर्पण कर सकें। परम पूज्य महामण्डेश्वर स्वर्गीय स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज एवं अन्य प्रेम प्रकाशी संत भी वहां पधार गये। परम पूज्य स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज जी तो महान ज्ञानी थे सो उन्होंने सभी प्रेमियों को इस महान कष्ट की घड़ी में सांवत्ना देते हुए कहा-

सन्त मरे क्या रोइये, जो अपने घर जाइ,

रोइये साकत बापड़ा जो हाटो हाट बिकाइ।

१३ जून १९८४ को पूर्णमासी के दिन एक सुन्दर डोली में बिठाकर प्रेमियों ने अपने महबूब सतगुरू महाराज जी की शोभा यात्रा निकाली। हजारो प्रेमी इस शोभा यात्रा में सम्मिलित हुए। अजमेर के प्रेमियों ने अपने दिलबर सतगुरू महाराज के अन्तिम स्वागत के लिये सारे नगर में सुन्दर स्वागत द्वार बनवाये उनके अन्तिम दर्शनके लिये सड़क की दोनों और हजारों माताऐं, बहिने व प्रेमी सुबह से ही कतारें बनाकर हाथों में फूलों की मालाऐं नारियल व पखर लेकर आखें बिछाकर प्रतीक्षा कर रहे थे। सारे शहर में हड़ताल हो गई। सभी प्रेमी दुखी ह्रदय से उनके अन्तिम दर्शन के लिये प्रतीक्षा कर रहे थे। इस शोभा यात्रा में प्रेमी भजन कीर्तन करते हुए और परम पूज्य स्वामी जी की जय जयकार करते हुए सारे शहर की

प्रिक्रमा करने लगे। जहां जहां उनकी डोली पहुचंती थी वहां प्रेमियो ने बड़ी श्रद्धा से मालाएं चढ़ाकर पखरें पहनाकर फूलों की खूब बरखा की। सारा रास्ता फूलो से छा गया। श्रद्धालू प्रेमियों ने हजारो रूपये उनके ऊपर वार वार कर फैंक दिये। यह दृश्य अलोकिक था। इतना बड़ा जलूस अजमेर शहर में इससे पहले कभी नहीं निकला। अजमेर नगर में प्रेमी परम पूज्य स्वामी जी का बड़ा आदर करते थे। उनके दिलों में परम पूज्य स्वाजी जी के लिय अगाध श्रद्धा थी। परम पूज्य स्वामी जी के वियोग ने उनके हृदय को बड़ा आधात पहुँचाया था।

अजमेर की परिक्रमा पूर्ण कर यह शोभा यात्रा उनके प्रेम प्रकाश आश्रम पुष्कर राज में पहुँची जहां पुष्कर राज के हजारों प्रेमी उनके अन्तिम दर्शनों के लिये आये हुए थे। सभी ने उनके ऊपर श्रद्धा सुमन चढ़ाकर वेद मंत्रो का उच्चारण कर उन्हें अन्तिम विदाई दी। पुष्कर राज से होकर यह शोभा यात्रा आदर्श नगर वाले आश्रम पर पहुँची।

सभी प्रेमयों ने यह निर्णय लिया कि परम पूज्य स्वामी जी का अन्तिम संस्कार उन्हीं के आदर्श नगर वाले आश्रम पर विधि विधान से किया जाये। उसके लिये जिला कलेक्टर से विशेष आज्ञा ली गई। आश्रम में जहां पर परम पूज्य स्वामी जी की पवित्र समाधि जी है वहां पर एक भव्य प्लेटफार्म बनवाया गया। जहां पर परम पूज्य स्वामी जी का पार्थिक शरीर समाधि अवस्था में ब्राजमान किया गया चन्दन के लकड़ियों की वेदी बनाई गयी। और वेद मंत्रों के साथ अग्नि प्रज्वलित की गई। उस समय का दृश्य हृदय विदारक था। सभी प्रेमी अपने प्रियतम को शारीरिक रूप से विदा होता हुआ देखकर जारों जार रोने लगे। परम पूज्य स्वामी जी की जय जयकार से आसमान गूंजने लगा परम पूज्य महा मण्डलेश्वर इस महा शोक की घड़ी में प्रेमियों को सांत्वना देकर समझाने लगे कि परम पूज्य स्वामी जी तो अमर है। उन्होंने अपने योग साधना से अमरता प्राप्त की है। ऐसे महान पुरूष जन्म मरण रहित, नित्य सनातन एवं प्राचीन है। शरीर नाश होने पर भी ये नाश नहीं होते। इनका व्यक्तित्व योग साधना एवं तपस्या द्वारा इतना तो विशाल एवं विस्तृत हो गया कि वे हर प्रेमी के दिल में समा चुके है फिर ऐसे महान संत प्रभू के प्यारे के लिये शोक नहीं करना चाहिये। वे सदा

हमारे पास थे, हमारे पास है और सदा हमारे पास रहेंगे। हम सब उनके आदर्शों पर चलकर उन्हें सदा अमर रखेंगे।

अग्रि देवता की पवित्र लपटे इस प्रभू के प्यारे को सदा सदा के लिये अपने आगोष में समाने के लिये तेज हाकर आसमान को छूने लगी चन्दन की लकड़ियों से सारा वातावरण सुगन्धित हो गया। सभ प्रेमी अपने प्रियतम को अन्तिम बिदाई देने क लिये बेदी के चारों ओर परिक्रमा कर उनके पवित्र चरणों में नारियल चढ़ाकर भारी मन से अपनी अपनी मंजिल की ओर लौटने लगे। सभी के जाने के पश्चात भी उने कुछ अनन्य भक्त उनके चरणें में अन्त समय तक बैठे रहे। उस समय एक देवी घटना घटी जिसका कथन इस बुद्धि से परे है। अचानक सभी लकड़ियों एक एक कर नीचे गिरने लगी उन लकड़ियों के गिरने पर एक अलोकिक दृश्य प्रकट हुआ जिसे देखकर आंखे फटी की फटी रह गई दिमाग चकरा गया। अग्नि देवता के आगोष में परम पूज्य स्वामी जी का विस्मय में डालने वाला अलोकिक दर्शन हुआ। उनका हाथ आशीर्वाद के लिये ऊंचा उठा हुआ था। और उनके मस्तिष्क पर भगवान शिव का त्रिशूल चमचमा रहा था। ऐसा लग रहा था कि यह शिव स्वरूप अपने प्रेमियों को आशीर्वाद देकर वापस शिव में लीन हो रहा है। यह समाचार बिजली की भांति चारों ओर फैल गया। प्रेमी यह अलोकिक दृश्य के लिये उमड़ पड़े। यह अजीब लीला देखकर सभी विस्मय में पड़ गये। वे प्रेमी बड़भागी है जिन्होंने सतगुरू महाराज की कृपा से अपने प्रियतम के यह अलोकिक अन्तिम दर्शन कर आनन्द प्राप्त किया।

अजाइब ऐनक सामी दिनी सत्गुरूअ

दिठी तंहिले आसरे पलक में झलक

थियों निर्मल निर्धक, कटे जीउ जंजीर सभ।

चौथे रोज परम पूज्य स्वामी जी की पवित्र याद में स्मृति सभा बुलाई गई। जिस में परम पूज्य महामण्लेश्वर स्वर्गीय शांति प्रकाश महाराज जी, प्रेम प्रकाश मण्डली के संतों व

देश विदेश के विद्वानों ने परम पूज्य स्वामी जी के महान त्याग, घोर तपस्या व उनके उच्च आदर्शों की प्रशंसा करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किये। परम पूज्य स्वर्गीय स्वामी शांति प्रकाश जी ने सभी प्रेमियों से कहा कि परम पूज्य स्वामी जी के आदर्शों का अनुसरण कर हम इस परमार्थ की राह पर चलकर परम आनन्द प्राप्त कर सकते है। यही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। परम पूज्य स्वामी जी हमारे ह्रदय में प्रेम ज्योति जगाकर गये है। यह ज्योति सदा प्रकाशित रहेगी और उनकी पवित्र याद सदा कायम रहेगी। वे प्रभू के प्यारे महान संत सदा अमर अजर हैं।

तेरवें दिन वैदिक विधि से हवन करवाया गया। समस्त पाठ रखवाये गये पवित्र गं्रथो के पाठों के भोग साहब डाल गये ब्रह्मभोज कर सभी ब्रह्माणों को दिल खोलकर दान दिया गया। परम पूज्य स्वामी जी की पवित्र स्मृति में अन्न दान वस्त्र दान एवं मोक्षा दान देकर सभ को तृप्त किया गया। सभी प्रेमियों के लिये भण्डारा किया गया।

परम पूज्य स्वामी जी का पवित्र नाम अमर और अजर करने के लिये उनके श्रद्धालू ट्रस्टियों ने प्रेम प्रकाश आश्रम आदर्श नगर अजमेर में उस स्थान पर जहां परम पूज्य स्वामी जी का अन्तिम संस्कार किया गया था, वहां संगमरमर की अति सुन्दर पवित्र समाधि बनवाई है। श्रद्धालू प्रेमियों के लिये यह पवित्र समाधि तीर्थ स्थली बन गई है। जो सवाली यहां अकीदत के साथ आता है वह कभी खाली नहीं जाता। परम पूज्य स्वामी जी सभी की झोलियां भर कर उनके मन की मुरादें पूर्ण करते है। सभी प्रेमी यहां स्नेह एवं श्रद्धा से अकीदत के फूल चढ़ा कर उनके चरणों में शीष झुका कर, उनकी रहमत के लिये विनती करते है।

परम पूज्य स्वामी जी के शुभ जन्म दिन पर इस पवित्र समाधि पर शानदार मेला लगता है। उस दिन संध्या की बेला में बेशुमार मोमबत्तियां जला कर रोशनी की जाती है। समाधि को रंगीन सुन्दर फूल से सेजा के समान सजाया जाता है। बैण्ड,बाजे व शहनाई वाले

खूब धूम मचाते है। देश विदेश से आये हुए प्रेमी सतगुरू महाराज की स्तुति कर उनकी महिमा के भजन गाते है। उस समय के अलोकिक दृश्य का बयान करने से बाहर है।

परम पूज्य स्वामी जी के ज्योति ज्योत सामने के पश्चात प्यासे प्रेमियों की आखें अपने सतगुरू महाराज के दर्शनों के लिये तरस गई। इस प्यास को बुझाने के लिये उनके श्रद्धालू ट्रस्टियों ने आश्रम में एक मन्दिर बनवाकर उस में परम पूज्य की एक विशाल, सुन्दर संगमरमर की मूर्ति स्थापित करवाई। यह मूर्ति सुन्दर, आकर्षक एवं ज्योतमय है जिसके दर्शन करने से आंखें ठण्डी हो जाती है व हृदय में चेतनता उत्पनन हो जाती है। इस मन्दिर में परम पूज्य स्वामी जी के समान ही उनके श्रद्धालू ट्रस्टियों ने उनके जीवन दर्शन की चौबीस बड़ी सुन्दर मूर्तियां भी लगवाई है।

न केवल इतना परन्तु तीर्थराज पुष्कर वाले आश्रम में भी मन्दिर बनवाकर उस में परम पूज्य स्वामी जी की एक संगमरमर की विशाल एवं सुन्दर खड़ी मूर्ति स्थापित करवाई है। इस के साथ यहां पर भी परम पूज्य स्वामी के जीवन दर्शन की चौबीस मूतियां लगवाकर उनके नीचे उनका संक्षिप्त जीवन दर्शन लिखवाया गया है ताकि दर्शनार्थियों को इस महान तपस्वी के जीवन एवं उनके द्वारा किये गये महान कार्यों का परिचय मिल सकें।

परम पूज्य स्वामी जी के ज्योति ज्योत समाने के पश्चात स्वामी मुरलीधर महाराज ने अपना धर बार एवं कारोबार त्याग कर आश्रम में रहकर आश्रम का खूब विकास एवं विस्तार किया गया है तथा अनेक परोपकार के कार्य आरम्भ किये है। जैसे बेसहारा विधवाओं की प्रतिमाह आर्थिक सहायता, गरीब बालकों की फीस जमा करवाना तथा उनको वस्त्र दान करना। वर्ष में दो बार सिन्धी समाज की गरीब कन्याओं का कन्या दान करवाना। इस प्रकार स्वामी मुरलीधर महाराज के त्याग एवं प्रशसंनीय कार्यो के उपलक्ष्य में सन १९९८ वाले वरसी उत्सव के पुनीत अवसर पर सभी ट्रस्टियों ने उनको गेरू दुपट्टा पहनाकर उनको सम्मानित किया।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमदं पूर्णात्पूर्ण मुदच्यते

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेववाव शिष्यते

ॐ शान्ति। शान्ति। शान्ति।